स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(प्रथम तथा द्वितीय खण्ड)

१ समिति का अर्द्ध शताब्दी इतिहास एवम् परिचय

२ भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि

तमसोमाज्योतिर्गमय

स्थापित १९१२ ई०

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(प्रथम खण्ड)

समिति का अर्द्ध-शताब्दी इतिहास एवं परिचय

लेखक

डा० कुंजबिहारी लाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी,

तमसोमाज्योतिर्गमय

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

स्थापित १९१२ ई०

प्रकाशक

मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संवत् २०१७

आभार प्रदर्शन

आज स्वर्ण जयन्ती के इस सुअवसर पर समिति के गत ५० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन करने में विशेष प्रकार का आनन्द तथा गौरव का अनुभव हो रहा है। अपने स्वल्प साधनों से अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी 'समिति' ने जो अपना वर्तमान रूप ग्रहण किया है, वह आज आपके सम्मुख है। प्रारम्भ काल से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार का कार्य ही समिति का मुख्य ध्येय रहा है, और इस कार्य में 'समिति' ने सफलता भी प्राप्त की है। यह ग्रन्थ भी इसी ध्येय की पूर्ति की एक कड़ी है। 'समिति' के पिछले एवं वर्तमान साहित्य-सेवियों के प्रति जिनके अहर्निशि परिश्रम एवं लगन के फलस्वरूप 'समिति' आज इस स्वरूप को प्राप्त कर सकी है, आभार प्रदर्शन करते हुए मुझे परम हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ के लेखन में 'समिति' के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारी लाल गुप्त, एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी० ने जो अथक परिश्रम किया है उनका मैं परम आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के प्रकाशन एवं अन्तिम रूप देने में श्री राम-दत्तजी शर्मा, एम० ए०, बी० एड्०, साहित्यरत्न, शास्त्री, भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं वर्तमान केन्द्र-व्यवस्थापक ने जो मूल्यवान योग देकर इस कार्य को सफल बनाया है, उसके लिये भी मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

मेरे अन्य समस्त सहयोगियों एवं कार्यकर्त्ताओं का भी मैं आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस सहज एवं सामयिक सहायता के लिये समिति उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर
१२ फरवरी, १९६१

मदनलाल बजाज
प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के जन्मदाता :
समिति के संस्थापक (सन् १९१२)
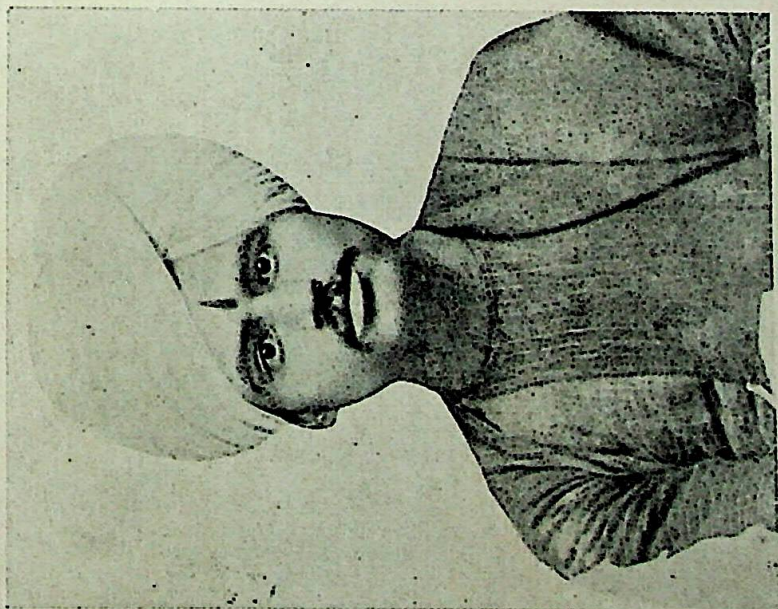
श्री गंगाप्रसाद जी शास्त्री
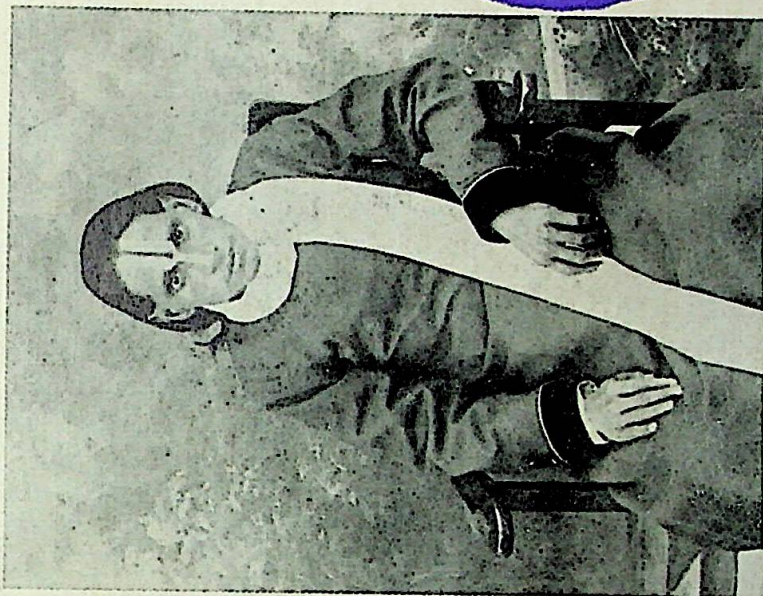
श्री अधिकारी जगन्नाथ दास जी विद्यारत्न (राज्यगुरु)

विषय-सूची

	पृष्ठ संख्या
१. वक्तव्य	१
२. स्थापना	३
३. नाम, उद्देश्य और अधिकार	७
४. संगठन	१०
५. पुस्तकालय	११
६. समिति भवन (प्राचीन)	१६
७. नवीन भवन	१९
८. हिन्दी प्रचार और जन-सेवा	२२
अधिवेशन	२२
परीक्षा	२६
प्रौढ़-शिक्षा	२७
नागरी पाठशाला	२९
कवि-गोष्ठी	२९
नाट्य-समिति	३०
राज्य-स्तर पर हिन्दी की प्रगति के लिए प्रयास	३३
समाज-सेवा	३३
परिशिष्ट-क्रम	
परिशिष्ट १—वार्षिक सदस्य-संख्या-सूचक	३६
परिशिष्ट २—आजीवन सदस्य-सूची	३७
परिशिष्ट ३—संरक्षक-सूची	३७
परिशिष्ट ४—विषयानुसार पुस्तक-संख्या	३८
परिशिष्ट ५—पाठक विवरण	३९
परिशिष्ट ६—भवन निर्माण के लिए दान देने वालों की सूची	३९
परिशिष्ट ७—समिति के पदाधिकारी (१९१२ से १९६१ तक)	४२
परिशिष्ट ८ (अ)—विवरण पुस्तक आदान-प्रदान (१९४२-६०)	४७
परिशिष्ट ८ (व)—सूची दानदाता—नवीन भवन निर्माण (१९५७-५८)	४८
परिशिष्ट ९—समिति का ५० वर्षीय आय-व्यय-सूचक	५०
परिशिष्ट १०—परीक्षार्थी विवरण	५२
परिशिष्ट ११—कतिपय विशिष्ट व्यक्तियों की सम्मतियाँ	५३
परिशिष्ट १२—स्वर्ण जयन्ती महोत्सव	६५
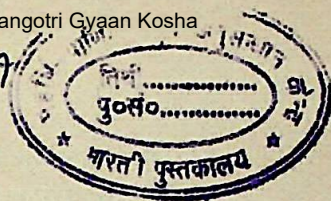
श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संस्थापक

१—श्री अधिकारी जगन्नाथदास जी विद्यारत्न
२—श्री पं० गंगाप्रसादजी शास्त्री
३—श्री ठा० ओंकारसिंह प्रमार, एल. एम. एस. (मैडीकल ऑफीसर)
४—श्री पं० नारायनदास सुपरिन्टेन्डेण्ट पी. डब्ल्यू. डी.

संरक्षक

१—श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन
२—श्री सेठ सन्तोषीलाल मंहगाये वाले
३—श्री सेठ हरिचरनलाल नई मण्डी
४—श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद दीपक, गुरु नानक आइरन स्टील कं०, भरतपुर

वर्तमान पदाधिकारी

१—डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त, एम. ए. (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच. डी., अध्यक्ष
२—श्री मोतीलाल जी अरोड़ा (उपाध्यक्ष)
३—श्री मदनलाल जी बजाज (प्रधान मंत्री)
४—श्री ओमप्रकाश जी दुबे (उप-मंत्री)
५—श्री रामदत्त जी शर्मा, एम. ए., बी. एड्., साहित्यरत्न (केन्द्र-व्यवस्थापक)
६—श्री प्रभूदयाल जी 'दयालु', साहित्यरत्न (पुस्तकालयाध्यक्ष)
७—श्री भगवानदास जी गोठी (कोषाध्यक्ष)
८—श्री रामनारायण जी वकील, बी. ए., एल-एल. बी. (आय-व्यय-निरीक्षक)

सदस्य वर्तमान कार्यकारिणी (१९५८ से १९६१)

(१) डा० कुंजबिहारीलाल गुप्ता
(२) श्री मोतीलाल जी अरोड़ा
(३) श्री मदनलाल जी बजाज
(४) श्री ओमप्रकाश जी दुबे
(५) श्री रामदत्त जी शर्मा
(६) श्री प्रभूदयालजी 'दयालु'

(७) श्री भगवानदास जी गोठी
(८) श्री रामनारायण जी वकील
(९) श्री मदनमोहन जी पोद्दार
(१०) श्री भारतभूषण जी भार्गव
(११) श्री गिर्राजप्रसाद जी सर्राफ
(१२) श्री प्रो० हरसहाय जी
(१३) श्री मा० श्रीचन्दजी गुप्त
(१४) श्री मा० बद्रीप्रसाद जी शर्मा
(१५) श्रीमती शान्तीदेवी शर्मा
(१६) श्री मा० अयोध्याप्रसाद जी महेश्वरी
(१७) श्री सेठ सन्तोषीलाल जी मंहगाये वाले
(१८) श्री पं० नत्थनलाल जी शर्मा फोटोग्राफर
(१९) श्री पं० सांवलप्रसाद जी चतुर्वेदी
(२०) श्री मा० राधेलाल जी शर्मा
(२१) श्री वैद्य रामशरण जी शास्त्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की कार्य-कारिणी (सन् १९५८-६१)
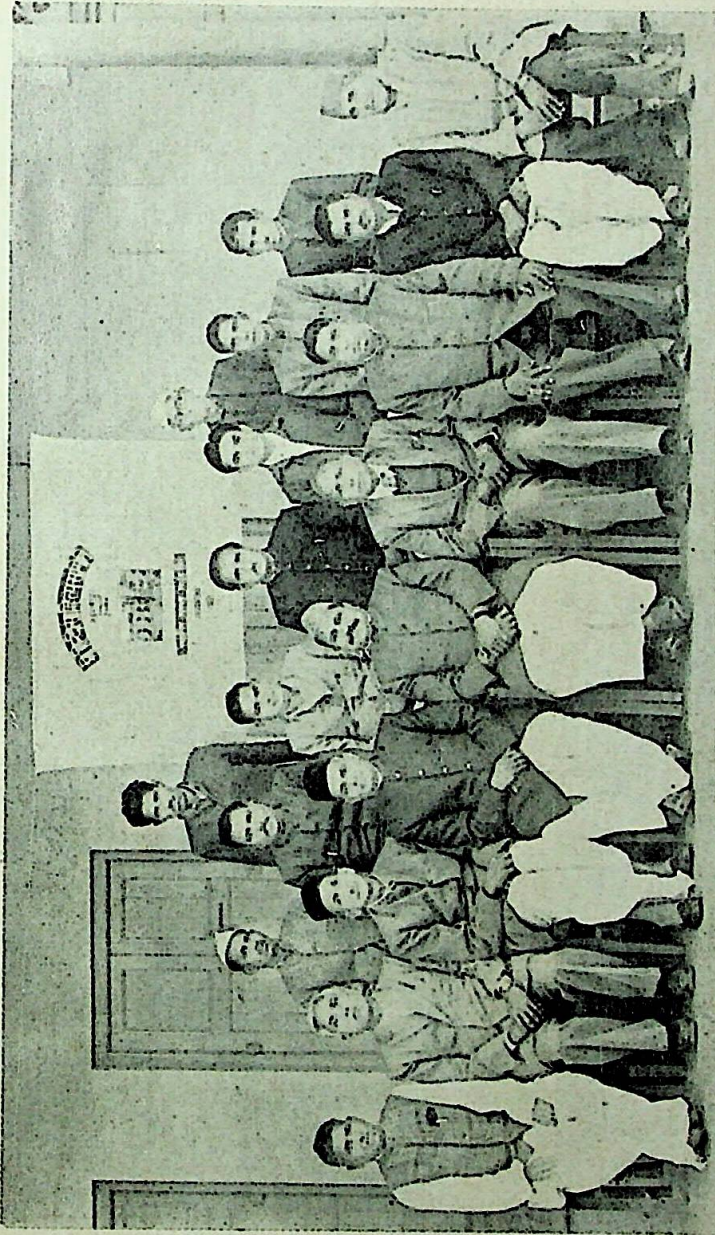
प्र० पं०—श्री सांवल प्र० चतु०, श्री राम ना० वकील (ग्रा० निरीक्षक), श्री नल्पन लाल शर्मा, श्री मदनलाल वजाज (प्र. मं.)
श्री से० संतोषीलाल (संरक्षक), डा० कुं० बिहारीलाल गुप्त (अध्यक्ष), श्री मोतीलाल अरोड़ा (उपाध्यक्ष)
श्री भगवानदास गोठी (कोषाध्यक्ष), श्री प्रभूदयाल (पुस्तकालयाध्यक्ष)
द्वि० पं०—श्री प्रभूलाल (ला० वैत०), श्री रामदत्त शर्मा (केन्द्र व्यवस्थापक), श्री गिर्राज प्रसाद स०, वैं० रामशरण शास्त्री
श्री ओमप्रकाश दवे (उप मंत्री), श्री राधेलाल शर्मा, श्री अ० प्रसाद मा० ★ त० पं०—श्री मोहर सिंह, श्री. नानग राम

वक्तव्य

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, का स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (प्रथम खण्ड) आपके सम्मुख है। समिति की कार्यकारिणी के नियमानुसार बहुत कुछ प्रयत्न करते हुए भी, सम्पूर्ण ग्रन्थ एक बार मुद्रित न होकर, दो खण्डों में विभाजित करना पड़ा, इसके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। जिस समय इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन की योजना बनाई गई थी, उस समय मैंने उन कठिनाइयों की कल्पना भी न की थी जो लेखन-कार्य प्रारम्भ करने के बाद सामने आईं। सोचा यह था कि दो तीन मास में ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जायेगा, किन्तु पीछे ज्ञात हुआ कि स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अति व्यस्त कार्य-क्रम के साथ-साथ लगभग ५०० पृष्ठों का ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित करना सरल कार्य नहीं है। पाठकों को यह जानकर सन्तोष होगा कि सम्पूर्ण ग्रन्थ की पांडुलिपि तो बनकर तैयार हो चुकी है, किन्तु समयाभाव के कारण मुद्रित न हो सकी है। इस समय केवल प्रथम खण्ड प्रकाशित हो सका है। ग्रन्थ का विभाजन निम्न प्रकार दो खण्डों में किया गया है :—

(१) प्रथम खण्ड में समिति के विगत लगभग ५० वर्षों का सिंहावलोकन है।

(२) दूसरे खण्ड में भरतपुर के विगत २५० वर्षों में होने वाले कवियों का संक्षिप्त जीवनवृत्त है।

इस ग्रन्थ को लिखते समय मेरे सामने प्रमुखतः दो उद्देश्य थे :—

एक तो यह कि ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य समिति के विगत जीवन का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाये जिससे यहाँ के नागरिकों को समिति के संस्थापकों, कर्णाधारों एवम् उत्साही कार्यकर्ताओं के साहित्यानुराग से समिति की सेवा करने की प्रेरणा मिले।

दूसरा यह कि हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के विगत २५० वर्षों में होने वाले सभी कवियों एवं साहित्यिकों का संक्षिप्त जीवन-वृत्त प्रकाशित कर उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें, जिन्होंने अपना समस्त जीवन हिन्दी में ज्ञानवर्द्धक वाङ्मय की सृष्टि में व्यतीत किया। इससे न केवल भावी कवियों को नूतन काव्य-सृजन की प्रेरणा ही मिलेंगी, अपितु समिति अपने उत्तरदायित्व को भी पूरा करेगी।

समिति के इस इतिहास में अधिकतर तथ्यों का ही संग्रह किया गया है। मैंने प्रत्येक विषय को यथास्थान, यथावश्यक और यथार्थ रूप में सामने लाने का प्रयास किया है। ग्रन्थ के अन्त में दिये गये परिशिष्टों में यथासाध्य उन सभी हिन्दी प्रेमियों के नाम उद्धृत किये हैं, जिन्होंने आर्थिक सहायता देकर समिति के विशाल भवन के निर्माण में सहायता दी अथवा अपना अमूल्य समय देकर उसके उद्देश्यों की पूर्ति में योग दिया। ११वें परिशिष्ट में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् करेंगे, कार्यक्रम दिया गया है। इस महोत्सव का विस्तृत वर्णन दूसरे खण्ड में दिया जायेगा।

इतिहास के दुहराने में मेरे पुराने मित्र श्री प्रेमनाथजी चतुर्वेदी बी० ए०, सहायक सम्पादक, नवभारत टाइम्स, नई देहली, ने मेरा हाथ बँटाया। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी साथियों तथा समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभूलाल गोयल का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

वसन्त पंचमी
२१-१-६१

कुंजबिहारीलाल गुप्ता

स्थापना

भरतपुर व्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल से ही व्रजभाषा के उच्चकोटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सोमनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति को भारत के कोने कोने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने व्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में सदैव से योग दिया, पर काल की गति का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगलों और अंग्रेजों से टक्कर लेने वाले फारसी, उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रह सके। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व को भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब व्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया, किन्तु इस स्थिति को जन-मानस ने स्वीकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था से तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर से भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार-पत्र और पुस्तक पठन-पाठन के कार्यक्रम को जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ कीं। पंडित रामचन्द्र और मुंशी जानकीबल्लभ ने एक स्थान पर समाचार-पत्रों और पुस्तकों के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश में कार्य चलने भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हो अपने अस्तित्व को ही खो बैठा। पर जागा जन-मानस आसानी से

सोने वाला नहीं था; अधिक उत्साही और जीवट के हिन्दी-प्रेमियों का उदय हुआ। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कतिपय हिन्दी प्रेमियों ने १३ अगस्त १९१२ को श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना कर दी। नवस्थापित हिन्दी संस्था के प्रथम मंत्री पंडित सुन्दरलाल जानी की प्राप्त प्रथम विज्ञप्ति (१३-८-१९१२) का मूल अंश अविकल रूप से नीचे उद्धृत किया जाता है :—

प्रिय हिन्दी हितैषीगण,

कदाचित् आपको अविदित न होगा कि हमारी मातृभाषा सर्व गुण आगरी नागरी के प्रचार के लिये प्रायः भारतवर्ष के सभी नगर निवासी उन्नति कर रहे हैं परन्तु खेद है कि हमारा भरतपुर व्रजभाषा का केन्द्र होने पर भी इस ओर से सर्वथा पीछे हटा हुआ है। अवश्य ही हम लोगों का कर्त्तव्य है कि इस त्रुटि को दूर करने का प्रयत्न करें। हम सहर्ष आपको संवाद देते हैं कि यहाँ के कतिपय हिन्दी हितैषी सज्जनों ने यहाँ पर हिन्दी प्रचार के लिये एक हिन्दी साहित्य समिति स्थापित करदी है जिसका स्थान धर्मसभा में है। आप जानते हैं कि समस्त कार्य अर्थमूलक हुआ करते हैं फिर इसके लिये द्रव्य होना अत्यन्त आवश्यक है किन्तु यों कह सकते हैं कि इस पौधे को आप द्रव्य जल से सिंचित न करेंगे तो यह कुम्हला ही न जायगा किन्तु नष्ट-भ्रष्ट भी हो जायगा। इसमें निश्चित हो चुका है कि हिन्दी प्रचार के विशेष साधन समाचार-पत्र मंगाये जाँय। अतः हिन्दी की सहायता के साथ-साथ हमें सांसारिक समाचार तथा उत्तम लेख पढ़ने को मिलेंगे, इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि का होना भी स्वयंसिद्ध है, फिर इस स्वार्थ और परमार्थ के साधक कार्य में कौन महानुभाव होंगे जो सहायता न देंगे। हम आपकी सेवा में सविनय सादर प्रार्थी हैं कि आप भी इसमें सहायक बन इस लोक और परलोक में यशोभागी बनें।

पंडित सुन्दरलाल जानी की इस मार्मिक अपील का गहरा प्रभाव पड़ा। ६ सितम्बर १९१२ को एक वृहद् सभा का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग १५० व्यक्ति उपस्थित हुए। सब ने

श्री हिन्दी साहित्य समिति के आधार स्तम्भ :

(सर्वप्रथम सभापति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)

श्री डा० ओंकारसिंह जी प्रमार, एल० एम० एस०
(चीफ मेडीकल आफीसर)
(जिनके कार्य-काल में समिति की स्थापना हुई)

(सर्वप्रथम उपसभापति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)
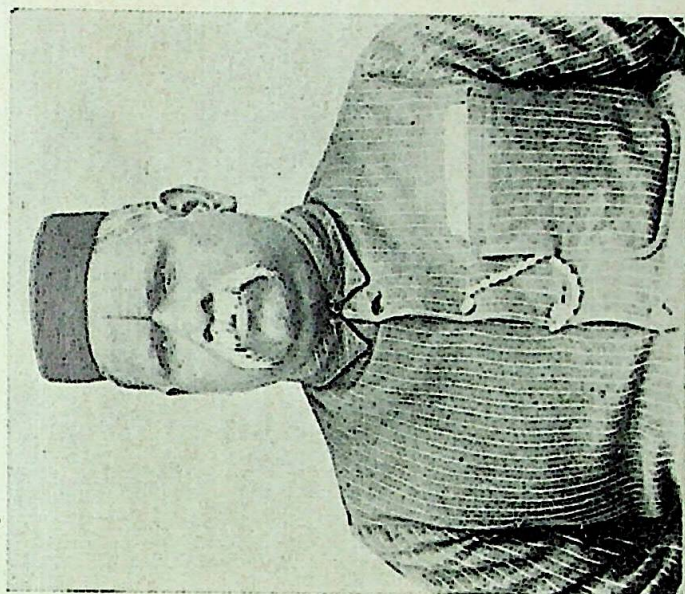
श्री नारायन दास जी
सुपरिण्टेन्डेन्ट पी० डब्ल्यू० डी०
(जिनके निरीक्षण में सन् १९१८ में समिति भवन का निर्माण हुआ)

एक स्वर से संस्था की स्थापना का स्वागत किया और नामकरण हुआ श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर।

समिति के जन्मदाताओं में पंडित गंगाप्रसाद शास्त्री और अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्हीं दो व्यक्तियों की कल्पना, भावना और उत्साह के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना हुई तथा अनेकानेक योग्य और प्रभावशाली व्यक्तियों का आरम्भ से ही संस्था को सहयोग प्राप्त होने लगा। उपरोक्त सभा में संस्था के संचालन के लिये निम्नलिखित महानुभावों को पदाधिकारी निर्वाचित किया गया :—

श्री डा० ओंकारसिंह प्रमार, एल०एम०एस०, मैडिकल औफीसर (प्रधान)

श्री पं० नारायनदास, सुपरिन्टेन्डेट पी० डब्ल्यू० डी० (उप-प्रधान)

श्री अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न (मंत्री)

श्री पं० गंगाप्रसाद शास्त्री, साहित्याचार्य (सहायक मंत्री)

श्री पं० गुलाबजी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)

श्री खोंखनलाल पोद्दार, आनरेरी मजिस्ट्रेट (कोषाध्यक्ष)

श्री पं० सुन्दरलाल त्रिपाठी, एकाउन्टेन्ट पी० डब्ल्यू० डी० (आय-व्यय-निरीक्षक)

दिनांक १५ सितम्बर १९१२ को पुनः एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई, जिसमें समिति के उद्देश्य एवं नियम निर्धारित किये गये तथा कार्यकारिणी का संगठन किया गया जिसमें निम्न महानुभावों को निर्वाचित किया गया :—

श्री भट्ट मधुसूदन शर्मा, सरदार राज्य

श्री पं० तोताराम शास्त्री, संस्कृत अध्यापक, सदर हाई स्कूल

श्री पं० सुन्दरलाल जानी

श्री पं० गंगाशंकर पंचोली, हैडमास्टर, सदर हाई स्कूल

श्री पं० ब्रजबिहारीलाल, हैडमास्टर, नोबिल्स स्कूल

श्री चौबे हरिशंकर, एकाउन्टेन्ट जनरल, भरतपुर राज्य
श्री पं० मयाशंकर याज्ञिक, सुपरिन्टेन्डेट कस्टम्स, भरतपुर
श्री पं० बलदेवप्रसाद, नाजिम एवं डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
श्री पं० रामशरन शर्मा दिल्ली वाले, निरीक्षक वर्नीवालान

प्रारम्भिक काल में श्री हिन्दी साहित्य समिति का स्थान सनातन धर्म सभा भवन में बाजार की ओर का केवल एक छोटा कमरा था।

नाम, उद्देश्य और अधिकार

पहिले वतलाया जा चुका है कि १५ सितम्बर १९१२ को समिति के उद्देश्य निर्धारित करने के लिये एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई थी। समिति ने आरम्भ में ही जिन कार्यों को अपने हाथ में लेने का विचार किया वे ये हैं :—

१. हिन्दी भाषा के महत्व का प्रचार व प्रसार करना।
२. व्यावहारिक और न्यायालय आदि के कार्यों में देवनागरी लिपि की सुगमता, मनोरमता, तथा वैज्ञानिकता आदि गुणों का सर्वसाधारण में प्रचार करना।
३. उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने एवं बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।
४. हिन्दी भाषा में आवश्यक उत्तम विषयों के ग्रन्थ तैयार कराकर प्रकाशित करना।
५. हिन्दी के ग्रंथकारों, लेखकों, प्रकाशकों, प्रचारकों और सहायकों को उत्साहित करने के लिये उन्हें पुरस्कार, पदक आदि से सम्मानित करना।

उपर्युक्त कार्यों को लक्ष्य बनाते हुए यह भी निश्चय किया गया कि इस समिति में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार के अतिरिक्त अन्य किसी राजनीतिक अथवा साम्प्रदायिक विषय पर विचार नहीं किया जायगा।

दिनांक २६–११–५० को कार्यकारिणी समिति ने पुराने नियमों और उद्देश्यों पर पुनः विचार कर निम्नलिखित नाम, उद्देश्य एवं अधिकार स्वीकृत किये जो आज तक प्रचलित हैं :—

नाम

(अ) इस संस्था का नाम श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर होगा।

(व) इस समिति का कार्यक्षेत्र भरतपुर जिला होगा। इस जिले के अतिरिक्त यदि किसी अन्य स्थान की संस्था समिति से सम्बन्धित होना चाहेगी तो उस पर भी विचार किया जा सकेगा।

उद्देश्य

(क) हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति एवं प्रचार करना।

(ख) हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये आवश्यक विषयों के ग्रंथों से उसे अलंकृत करना, प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें संग्रहीत कर सुरक्षित रखना।

अधिकार

१. इस संस्था को अधिकार होगा कि अपने उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त स्थावर एवम् जंगम सम्पत्ति एकत्रित करे, तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिये उसके रूप में परिवर्तन करे। स्थायी सम्पत्ति जैसे दुकानादि क्रय करे, धन सम्बन्धी पत्रकों का लेन-देन करे, तथा अन्य ऐसे व्यवहार करे जिससे आर्थिक उन्नति के साथ-साथ इसके उद्देश्यों की पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।

२. समिति की समस्त आय और सम्पत्ति इसके उद्देश्यों की पूर्ति में लगाई जायगी। इसकी कोई सम्पत्ति अथवा उसका कोई अंश इसके किसी सभासद् अथवा पदाधिकारी के किसी प्रकार के लाभ व आय के लिये नहीं दिया जायगा, किन्तु समिति के किसी कर्मचारी अथवा सभासद् या किसी अन्य व्यक्ति को जो समिति का कोई कार्य करे, वेतन या पुरस्कार देने में यह नियम बाधा न डालेगा। संकटकालीन स्थिति में समिति के कर्मचारियों को ऋण दिया जा सकेगा।

३. समिति का एक स्थायी कोष होगा, जिसमें वर्ष के अंत में

बचत का वह अंश, जिसे समिति की कार्यकारिणी स्वीकार करे, प्रति वर्ष जमा हुआ करेगा ।

४. स्थायी कोष की धन-राशि में से कोई व्यय तथा स्थावर सम्पत्ति का रूपान्तर तब तक नहीं किया जायेगा जब तक समिति की कार्यकारिणी के कम से कम दो-तिहाई सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त न हो जाये ।

५. समिति के आय-व्यय का वार्षिक लेखा आय-व्यय-निरीक्षक के प्रमाण-पत्र देने के पश्चात् प्रति वर्ष कार्य-कारिणी के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा । तदुपरान्त यह लेखा समिति के सदस्यों के सूचनार्थ प्रकाशित किया जायेगा ।

नियम

समिति की पूर्ण नियमावली प्रथक् से प्राप्त है ।

संगठन

सार्वजनिक संस्था का शरीर उसके सभासद होते हैं। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव होते हैं उसी प्रकार संस्था के सदस्यों की संख्या एकसी नहीं रहती, उसमें घटा-बढ़ी होना स्वाभाविक है। जिस दिन समिति की स्थापना हुई उस समय केवल ५ महानुभाव उपस्थित थे और वही इसके सर्वप्रथम सदस्य थे, किन्तु प्रथम मास के अन्त में ही ७०-७५ सदस्य हो गये और वर्ष की समाप्ति तक यह संख्या २०२ पहुँच गई। फिर यह संख्या ४ वर्ष तक निरन्तर बढ़ती ही गई। सन् १९१६ में २२५ सभासद थे किन्तु इसके बाद यह संख्या घटने लगी और १९२६ ई० तक बराबर घटती गई। इसका मुख्य कारण भरतपुर नगर पर प्रथम महायुद्ध की मंहगाई, इन्फ्लूएन्ज़ा, महामारी और पानी की बाढ़ आदि के प्रकोप थे जो क्रमशः एक पर एक इस प्रकार आते रहे जैसे पानी में लहरों का आवेग होता है। दूसरा कारण यह भी था कि १९१८ में मासिक सहायता बढ़ाकर ४ आने करदी गई। सन् १९२७ से यह संख्या बढ़ने लगी और १९४१ में २९१ तक पहुँच गई। सन् १९४५ के बाद इस संख्या में और भी वृद्धि होने लगी जो बराबर बढ़ रही है।

समिति के सदस्य तीन प्रकार के हैं :—

१. साधारण,
२. आजीवन, और
३. संरक्षक।

अब तक के सभासदों की संख्या, आजीवन सदस्यों तथा संरक्षकों की नामावली, और पदाधिकारियों की नाम-सूची परिशिष्ट (२, ३, ७) में दी गई है।

पुस्तकालय

हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के पश्चात् पुस्तकालय की आवश्यकता का अनुभव होना स्वाभाविक ही था। स्थापना के १८ दिन बाद श्रावण शुक्ला ८ संवत् १९६९ विक्रम मंगलवार (२० अगस्त १९१२) को समिति के तत्वावधान में पुस्तकालय की स्थापना की गई। पं० गंगाप्रसाद शास्त्री के यहाँ से श्री देवकीनन्दन आचार्य ने ११ पुस्तकें लाकर श्री सनातन धर्म सभा की १ कोठरी में रखकर पुस्तकालय का श्रीगणेश किया। इसके तुरन्त बाद ही अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न आदि उत्साही व्यक्तियों ने लगभग २५० पुस्तकें एकत्रित कर पुस्तकालय की श्रीवृद्धि का प्रयास आरम्भ कर दिया।

खड़कविलास प्रेस, बांकीपुर के अध्यक्ष कुँ० रामदीनसिंह ने अपने प्रेस की तथा राजपूत औरिएन्टल प्रेस के स्वामी कुँ० हनुमन्त सिंह ने अपनी पुस्तकें अर्धमूल्य में देकर पुस्तकालय को परिपुष्ट किया। प्रथम वर्ष की समाप्ति होते होते पुस्तकालय में इतिहास, जीवन-चरित्र, वेद, नाटक, चिकित्सा, स्त्री-शिक्षा, साहित्य, वेदान्त, शिल्पकला, उपन्यास, कहानी, अर्थशास्त्र, विज्ञान, कृषि, भूगोल, धर्म, काव्य आदि आदि सभी प्रमुख विषयों की लगभग १,४०० पुस्तकें संग्रहीत हो गईं। इनमें अधिकांश पुस्तकें दानदाताओं द्वारा प्रदत्त थीं, जिनमें धाऊ रामशरण की धर्मपत्नी, पं० भोलानाथ, पं० नारायनदास, लाला किशोरीलाल व्यानियाँ, पं० गंगाप्रसाद शास्त्री, जगन्नाथदास अधिकारी, शंकरलाल वर्मा, पं० सुन्दरलाल त्रिपाठी, बाबू चक्खनलाल, गोकुलचन्द दीक्षित, पं० गुलाब मिश्र, पं० बालाप्रसाद, पं० द्वारकाप्रसाद, पं० बालकृष्ण दुबे, रामनारायण शर्मा, सचीकान्त भट्ट, डा० ओंकारसिंह, पं० नन्दकिशोर, नन्नेमल,

गोस्वामी हरिनारायण, प्यारेलाल शर्मा, गिर्राजप्रसाद शर्मा (कुम्हेर), पं० मदनलाल मिश्र ज्योतिषी एवं निरंजन शर्मा अजित आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार पुस्तकों की संख्या तो उत्तरोत्तर बढ़ने लगी किन्तु समिति के पास उन्हें रखने के लिए उपयुक्त स्थान का अभाव था। पुस्तकालय के साथ ही वाचनालय भी आरम्भ कर दिया गया। यद्यपि स्थान छोटा था, किन्तु जनता की साहित्यिक अभिरुचि के कारण प्रथम वर्ष ही ५,००० पुस्तकों का आदान-प्रदान हुआ। इसी बीच हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधारों और सनातन धर्म सभा के संचालकों में कुछ मनमुटाव हो गया। परिणामस्वरूप समिति का पुस्तकालय २४ नवम्बर १९१३ को सभा से हटाकर निकट के मकान में ले जाया गया। नये स्थान में भी पुस्तकालय पर्याप्त प्रगति करता रहा। दिनांक २७, २८ एवं २९ सितम्बर, १९१३ को हिन्दी साहित्य समिति का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में जनता ने पूर्ण सहयोग दिया।

इस प्रकार समिति का पुस्तकालय उत्तरोत्तर वृद्धि करने लगा। सन् १९३७ में चतुर्वेदी उमरावसिंह मिश्र ने अपने पूर्वज कविवर सोमनाथ के हस्तलिखित ग्रन्थ भेंट किये। सन् १९४३ में हीराशंकर पंचोली ने श्री गंगाशंकर पंचोली की स्मृति में १४१ पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय को भेंट किया। १९५२ में भरतपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र (महाराज जी) ने १७५ पुस्तकों का संग्रह अपने पूज्य पितामह श्री पं० घासीराम के नाम पर समिति को प्रदान किया। यह दोनों संग्रह पृथक् पृथक् अलमारियों में सजाकर रख दिये गये हैं।

कुछ समय बाद हिन्दी प्रेमी जनता की माँग तथा विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होने लगा कि समिति नवीन उच्चस्तरीय पुस्तकों का क्रय करे। गत तीन वर्षों से प्रति वर्ष कार्यकारिणी समिति ने १,५०० रुपया पुस्तक क्रय के

श्री हिन्दी साहित्य समिति के त्यागी एवं कर्मठ सेवी :

(जिनके समय में समिति ने आशातीत प्रगति की)
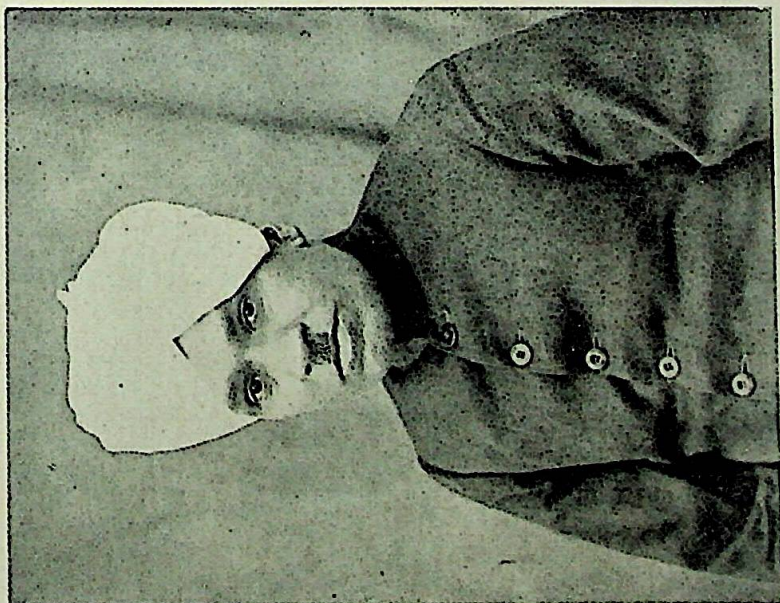
श्री पं० बालकिशन जी दुबे एस० डी० ओ०
प्रधानमन्त्री :१९२१ से ३४ तक सभापति सन् १९३८ से ५२ तक
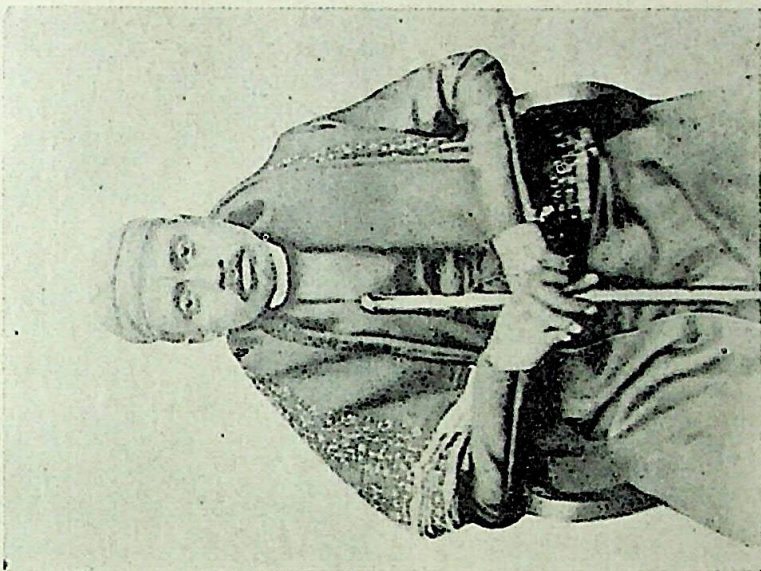
श्री पं० गुलाब जी मिश्र (पुस्तकालय के कर्णधार)
पुस्तकालयाध्यक्ष : सन् १९१२ से १९२९ तक

लिए स्वीकृत किये हैं। सन् १९५१ से १९६० तक ३,१११ पुस्तकें क्रय की गईं, जिनमें शोध सम्बन्धी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हैं। इस समय समिति में लगभग १२,३०० पुस्तकें हैं जिनमें हस्तलिखित भी हैं (देखिए परिशिष्ट ४)। हमें खेद है कि कुछ हस्तलिखित पुस्तकें सन् १९५५ के बाद से, जब से जैनमुनी श्री कान्तीसागरजी महाराज ने उनका वर्गीकरण किया है, समिति में दिखाई नहीं देतीं।

सन् १९४३ में समिति ने एक चलता फिरता पुस्तकालय खोला जिसका उद्देश्य नगर की पर्दानशीन महिलाओं को लाभ पहुँचाना था। इस कार्य के लिये एक महिला को रखा गया जो घर घर जाकर पुस्तकें वितरित करती और पुनः एक सप्ताह बाद उन्हें ले आती थी। यह पुस्तकालय एक वर्ष तक चलता रहा, किन्तु अधिक सफलता न मिलने पर बन्द कर देना पड़ा। इसका समस्त व्यय सेठ मनोहरलाल कलकत्ता वालों ने दिया।

पुस्तकालय का कार्य पुस्तकालयाध्यक्ष की देख-रेख में होता है जो समिति की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। पुस्तकालय के लिये सर्व श्री गुलाबजी मिश्र तथा प्रभूलाल गोयल एवं पं० प्रभूदयाल दयालु तथा पं० देवकीनन्दन आचार्य (वैतनिक कर्मचारी) की सेवाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सन् १९६० से इस पुस्तकालय में कार्ड प्रणाली आरम्भ की गई जिससे पुस्तकों के आदान प्रदान में सुगमता हो और इस पुस्तकालय की गणना आधुनिक ढंग के पुस्तकालयों में हो सके। यद्यपि इस नवीन (कार्ड) प्रणाली के प्रचलन में अनेक कठिनाइयाँ आईं किन्तु समिति के प्रधान मंत्री श्री मदनलाल बजाज के धैर्य, योग्यता तथा परिश्रम ने उन पर विजय पाई और इस नवीन प्रणाली का प्रचलन सफल हुआ।

इस वर्ष पुस्तकालय में एक भी पुस्तक ऐसी नहीं जिसकी जिल्द न बँधी हो। पुस्तकों की सूची के मुद्रण का कार्य शेष है जो धनाभाव के कारण पूर्ण नहीं हो सका है। विषय-क्रम से सूची की कई हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करा ली गई हैं।

राज्य सहायता

सन् १९२५ में स्वर्गीय महाराजा किशनसिंह के राज्यकाल में पुस्तकें खरीदने के लिए ४० रुपये की मासिक सहायता समिति को मिलने लगी। सन् १९४७-४८ में मत्स्य सरकार से १०० रुपये मासिक सहायता मिली। राजस्थान सरकार ने १९५६-५७ में ३,००० रुपये वार्षिक सहायता देकर समिति पुस्तकालय को प्रोत्साहित किया। इस सहायता के मिलने का बहुत कुछ श्रेय जिला शिक्षा निरीक्षक श्री हरिहरलाल गुप्ता, एम० ए०, बी० टी० को है। कुछ समय पश्चात् उक्त सहायता को घटाकर १२४२ रुपया कर दिया जिससे पुस्तकालय पर आर्थिक संकट आ गया। बहुत प्रयत्न तथा पत्र-व्यवहार करने पर अब राजस्थान सरकार ने १९६० में १९०६ रुपया की सहायता प्रदान करना स्वीकार किया है। इस सम्बन्ध में समिति के सदस्य श्री राजबहादुर (केन्द्रीय जहाजरानी मंत्री) बहुत प्रयत्नशील हैं।

आरम्भ में स्थानीय नगरपालिका ४ रुपया मासिक सहायता देती थी। सन् १९५९ में यह सहायता बढ़ाकर ३० रुपया मासिक कर दी गई है जो अब तक मिल रही है। इसके अतिरिक्त मकर संक्रान्ति के दिन समिति के उत्साही कार्यकर्ता नगर में भ्रमण कर समिति के लिए पुस्तकों एंवं रुपयों की भिक्षा माँगते हैं। हमें हर्ष है कि विगत तीन चार वर्षों से यह भिक्षावृत्ति प्रति वर्ष लगभग ८००) रुपये हो जाती है।

सन् १९५९ में श्री हुमायूँ कबीर (केन्द्रीय सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक अनुसन्धान मंत्री) की प्रेरणा से केन्द्रीय सरकार के शिक्षा विभाग की ओर से नई पुस्तकें खरीदने के लिए पुस्तकालय को १,००० रुपये का अनुदान मिला। इसी वर्ष राजस्थान शिक्षा विभाग से भी ९१८ रुपये की सहायता पुस्तक क्रय करने के लिए विशेष रूप से प्रदान की गई।

पुस्तकों को सुरक्षित रखने के लिए पुस्तकालय में ७० काँच की अलमारियाँ हैं।

इस पुस्तकालय का प्रयोग प्रति वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। शोध-कार्य के लिए समय-समय पर बाहर के विद्वान् समिति में पधार कर लाभ उठाते रहते हैं।

१९५९ में सुधीन्द्र कवि सोमनाथ पर खोज और अनुशीलन के लिए दिल्ली से आये और यथेष्ठ लाभ उठाया। समिति अनुसन्धान करने वाले ऐसे विद्यार्थियों को यथासम्भव हर प्रकार की सुविधाएँ देती है।

हस्तलिखित एवं मुद्रित पुस्तकों का विशाल भण्डार होने के कारण यह समिति सदैव से हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वानों को आकर्षित करती रही है। परिशिष्ट (१२) में कुछ सम्मतियाँ उद्धृत की गई हैं।

समिति भवन में वाचनालय भी है। पुस्तकालय में प्रथम वर्ष २६ समाचार-पत्र दानस्वरूप आये जिनमें २० मासिक, ४ साप्ताहिक, १ अर्ध-साप्ताहिक और १ दैनिक था। इन पत्रों के पढ़ने वालों की संख्या प्रथम वर्ष में ७९०० रही। दूसरे वर्ष समाचार-पत्रों की संख्या ३० हो गई। यह संख्या उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। सन् १९६० में आने वाले पत्रों की संख्या ५३ है जिनमें दैनिक ४, साप्ताहिक १४, मासिक २९, पाक्षिक ३ और त्रैमासिक ३ हैं। परिशिष्ट (५) को देखने से ज्ञात होगा कि गत १० वर्षों से कितने पाठक इससे लाभ उठाते रहे हैं ?

समिति भवन (प्राचीन)

श्री हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना श्री सनातन धर्म सभा भवन के एक छोटे से कमरे में की गई थी। यह कमरा इतना छोटा था कि समिति की बृहत् बैठकें अधिकारी श्री जगन्नाथदास के स्थान विरक्त मन्दिर पर सम्पन्न करनी पड़ती थीं। समिति के संचालकों को यह बात बहुत अखरती थी किन्तु धनाभाव के कारण वे कुछ कर सकने में असमर्थ थे। कुछ समय पश्चात् सभा के निश्चयानुसार समिति पुस्तकालय को सभा भवन से हटा लिया गया और सभा भवन के पार्श्ववर्त्ती मकान में श्री सुदर्शन भंडारी कुम्हेर वालों से २।।।) मासिक किराये पर लेकर मिति भाद्रपद शुक्ला ११ संवत् १९७० वि० दिनांक २४–११–१३ ई० को पुस्तकालय स्थानान्तरित कर दिया गया। जनवरी १९१४ की मकर संक्रान्ति के दिन श्री धाऊ बख्शी रघुवीरसिंह सी० आई० की अध्यक्षता में एक महती सभा का आयोजन किया गया जिसमें समिति के संरक्षक श्री पं० गिरधर शर्मा 'नवरत्न' (झालरापाटन) ने उपस्थित जनता के सामने समिति भवन निर्माण की आवश्यकता को मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक शब्दों में प्रतिपादित किया। फलस्वरूप उसी समय ९००) के वचन जनता से प्राप्त हुए। निर्माण कार्य को सम्पादित करने के लिए कुछ उत्साही एवं प्रभावशाली व्यक्तियों की एक समिति का गठन कर लिया गया जिसने उत्साह व लगन से अपना कार्य आरम्भ कर दिया। समिति के पुस्तकालय से पुस्तकों के आदान-प्रदान और पाठकों की संख्या दिन-प्रतिदिन इतनी अधिक बढ़ती जा रही थी कि वर्तमान स्थान भी अपर्याप्त प्रतीत होता था अतः समिति भवन के लिए स्थान की खोज होने लगी और दिनांक २७-२-१७ को ६३०=) में दो दुकानें तथा कुछ भूमि, जहाँ समिति का वर्तमान भवन स्थित है, क्रय कर ली गईं।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के भवन के दोनों रूप

वर्तमान विशाल भवन
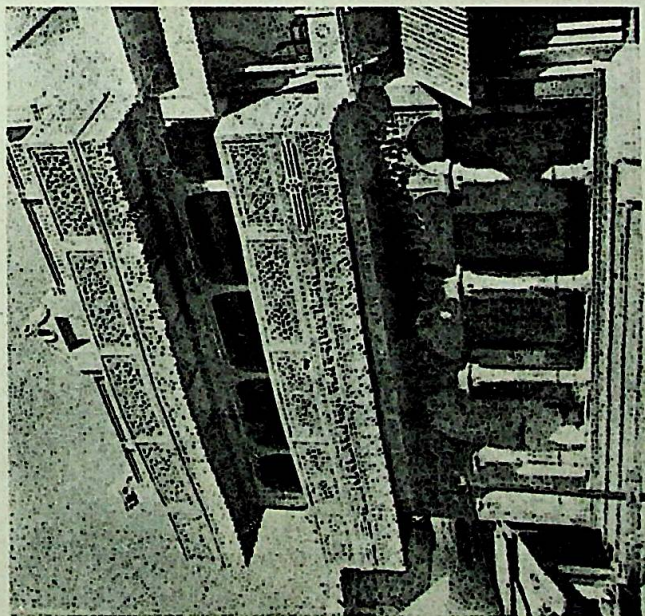
पुन निर्मित सन् १९५७ ई०

प्राचीन भवन
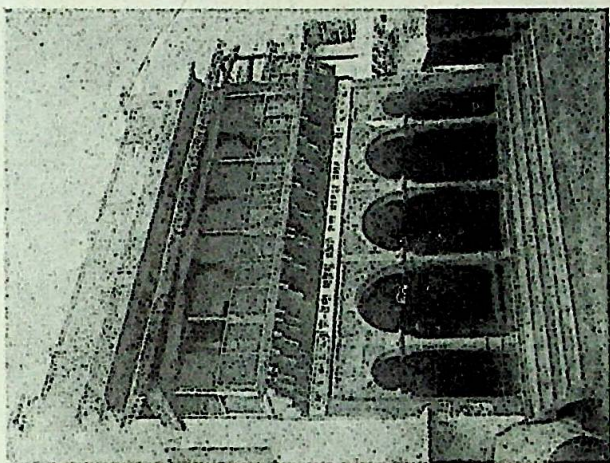
निर्मित सन् १९१८ ई०

समिति भवन बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने का उद्योग आरम्भ हुआ जिसके लिये दिनांक १८-३-१७ को कार्यकारिणी की बैठक में दो उप-समितियाँ बनाई गईं। इन समितियों में निम्न-लिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

सर्वश्री सुन्दरलाल त्रिपाठी, पं० गुलाबजी मिश्र, अधिकारी जगन्नाथदास, पं० बालकृष्ण दुबे, खोंखनलाल पोद्दार, गंगाप्रसाद शास्त्री, पं० द्वारकाप्रसाद एवं वैद्य सदानन्द।

यह समिति सर्वसाधारण से चन्दा एकत्रित करने का कार्य करती रही तथा विशिष्ट जनों से चन्दा प्राप्त करने के लिए सर्वश्री डा० ओंकारसिंह प्रमार, नारायणदास, कन्हैयालाल, कर्नल जुगल-सिंह, बाबू बल्देवप्रसाद एवं अधिकारी जगन्नाथदास को चुना गया। दोनों समितियों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में १२००) की धनराशि एकत्रित करली। ज्येष्ठ शुक्ला १२ सं० १९७४ को समिति भवन का शिलान्यास श्री गंगाप्रसाद शास्त्री के कर कमलों द्वारा उल्लास सहित सम्पन्न हुआ। भवन का निर्माण-कार्य श्री नारायणदास सुपरिन्टेन्डेण्ट पी० डब्ल्यू० डी०, तथा शास्त्रीजी की देखरेख में होने लगा। अभी समिति का हॉल तथा सामने का भाग ही बन पाया था कि अचानक शास्त्रीजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। समिति को अपने ऐसे कर्मठ कार्य-कर्ता और संस्थापक की मृत्यु से अपार क्षति पहुँची। निर्माण-कार्य कुछ समय के लिये अवरुद्ध हो गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय का कार्य नवीन भवन में सुचारु रूप से चल सके इसे ध्यान में रखते हुए साधारण निर्माण-कार्य पूरा करा लिया गया।

यद्यपि समिति भवन का जो नक्शा प्रारम्भ में सोचा गया था वह पूरा न बन पाया था किन्तु समिति का हॉल पुस्तकालय एवं वाचनालय के लिए पर्याप्त था। दिनांक २३-११-१८ को समिति का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपने नवीन निजी भवन में आ गया। यह गृह-प्रवेशोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भरतपुर के गण्यमान व्यक्तियों के अतिरिक्त सरकारी अधिकारीगण तथा

बाहर से आमंत्रित व्यक्ति एवं अपार जन-समूह उत्सव में सम्मिलित हुआ।

भवन के इस निर्माण कार्य में ५१६७।।।-)। व्यय हुआ जिसमें ३४२९।।)। चन्दा द्वारा एकत्र हुआ। शेष १७३८।-) समिति पर ऋण रहा जिसके लिए समिति ने सरकार से निवेदन किया किन्तु उसमें सफलता न मिली और यह धन शनैः शनैः चुकाया जाता रहा। इस निर्माण कार्य में धन द्वारा सहायता देने वालों के नाम परिशिष्ट (६) में दिये गये हैं।

समिति के निजी भवन में आने के पश्चात् इसके पीछे की भूमि, जो खाली पड़ी थी और जिसकी समिति को अत्यन्त आवश्यकता थी, किराये पर ले ली गई। कुछ समय बाद २३-९-४२ को यह जमीन भी २५४-)।।। में क्रय करली गई। समिति भवन का जो भाग अभी तक पूरा होने को शेष था उसे पूरा करने के लिए सतत् प्रयत्न जारी थे। अतः १९२५ ई० में २३ नवम्बर को भरतपुर नगर के सेठ दामोदरलाल ने २५००) दान देकर इस कार्य को पूरा कराया। समिति भवन के पीछे वाला भाग दक्षिण की ओर से कुछ टेढ़ा तथा कुरूप था। इसको सन् १९५४ में तत्कालीन सभापति श्री चिरंजीलाल पोद्दार ने बड़े प्रयत्न तथा साहस से सीधा कराया।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के मुख्य संरक्षक
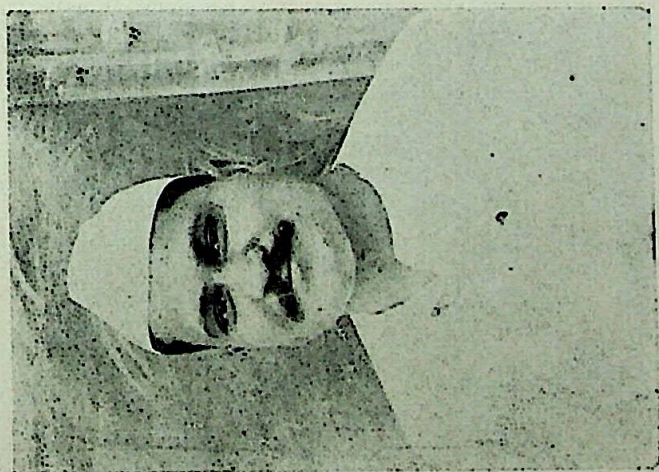
श्री सेठ सन्तोषीलाल जी गोयल
(जिनके अनुदान से समिति के विशाल भवन का सुन्दर फ़र्श निर्मित हुआ)

श्री सेठ हरिचरणलाल जी
(जिनके अनुदान से समिति का अग्रिम उच्च भाग पुन निर्मित हुआ)

नवीन भवन

समिति भवन के पूर्ण बन जाने पर उसके वाचनालय, पुस्तकालय तथा कवि-कोष्ठी का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। लगभग २५ वर्ष हो पाये थे कि पुस्तकालय का विस्तार इतना बढ़ गया कि समिति हॉल तथा अन्य कक्षों में पुस्तकों के लिये पर्याप्त स्थान नहीं रहा। दूसरे सभाओं, सम्मेलनों आदि के समय बहुत अड़चनें आती थीं। स्थान की संकीर्णता का अनुभव दिन-प्रतिदिन होने लगा। वाचनालय तथा पुस्तकालय की उत्तरोत्तर वृद्धि को देखकर यह बात निश्चित रूप से मान ली गई कि भवन का विस्तार किये बिना काम न चलेगा। समिति के ४१वें वार्षिकोत्सव पर श्री पं० बालकिशन दुबे ने समिति भवन के विस्तार की आवश्यकता को जनता के सामने मार्मिक शब्दों में व्यक्त किया किन्तु सफलता नहीं मिली। १९५६ में ४४वें वार्षिकोत्सव के समय यह प्रश्न फिर जनता के समक्ष रखा गया। इस समय कुछ आशा दिखाई देने लगी। दिनांक १२-१-५७ की कार्यकारिणी के अधिवेशन के समय पर तय किया गया कि समिति भवन का पुनर्निर्माण कार्य शीघ्रातिशीघ्र आरम्भ कर दिया जाय। दिनांक २१-२-५७ की कार्यकारिणी की बैठक में बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर द्वारा निर्मित भवन के पुनर्निर्माण की योजना प्रस्तुत की गई जिसमें अनुमानित १२०००) रु० का व्यय बतलाया गया। इस योजना को सर्वसम्मति से स्वीकृत कर लिया गया और निम्नलिखित महानुभावों की एक उप-समिति बनाई गई जिसकी देख-रेख में १-३-५७ से यह कार्य आरम्भ कर दिया गया :—

श्री प्रो० कुंजबिहारीलाल गुप्ता	अध्यक्ष
श्री मदनलाल बजाज	उपाध्यक्ष
श्री मदनमोहनलाल पोद्दार	संयोजक

श्री भारतभूषण भार्गव
श्री भगवानदास गोठी
श्री बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर

निर्माण को आरम्भ हुए कुछ ही दिन व्यतीत हुए होंगे कि विघ्न उपस्थित होने लगे। सर्वप्रथम सनातन धर्म सभा के पदाधिकारियों ने भवन निर्माण की भूमि पर बहुत बड़ी आपत्ति उठाई, किन्तु श्री सेठ सन्तोशीलाल और श्री हरिदत्त वकील की मध्यस्थता से यह झगड़ा शान्त हो गया। दूसरी बाधा समिति के दक्षिणी भाग के, जो सेठ चिरंजीलाल माढ़ौनी वालों के गृह की तरफ है, सीधे करने की थी, किन्तु यह समस्या भी उक्त सेठ जी की उदारता एवं योग के कारण बड़ी सरलता से हल हो गयी। समिति के हॉल में दक्षिणी भाग से श्री राधेलाल सर्राफ के मकान की मोरी समिति भवन के अन्दर आती थी जिससे भवन को भारी क्षति पहुँचती थी और भवन निर्माण में बड़ी बाधक थी। श्री राधेलाल जी ने उसे बन्द कराकर अपनी उदारता का परिचय दिया।

निर्माण कार्य पुनः द्रुतगति से चलने लगा किन्तु रुपया इकट्ठा करने की समस्या पूर्ववत् विघ्न-बाधाओं से कहीं अधिक जटिल मालूम होने लगी। ऐसे गाढ़े समय में समिति के उत्साही कार्य-कर्त्ताओं ने अहर्निशि नगर में भ्रमण करके जो धन-राशि इकट्ठी की वह कल्पना से कहीं अधिक थी। इस कार्य में सर्व श्री डा० कुंज-बिहारी लाल गुप्ता, मोतीलाल बजाज, मदनलाल बजाज, रामदत्त शर्मा मंत्री, भगवानदास गोठी, गिर्राजप्रसाद सर्राफ, मदनमोहन-लाल पोद्दार, भारतभूषण भार्गव, गोपालदास गोयल, पं० सुरेश-कुमार सूर्यद्विज, सीताराम खूटैंटिया, गौरीशंकर दलाल, लक्ष्मीकान्त शर्मा, कु० बनैसिंह, चम्पालाल कविशेखर, के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सबसे अधिक सहायता श्री विष्णुदत्त शर्मा जिलाधीश भरतपुर ने विकास-खण्ड से बड़ी धनराशि दिला कर की।

इस प्रसंग में सर्व श्री विद्याव्रत शास्त्री और शंकरलाल ठेकेदार के नाम भी विशेष रूप से लिखना उचित है जिन्होंने अपना

श्री हिन्दी साहित्य समिति के वर्तमान विशाल भवन के निर्माणकर्ता :

(जिनके निरीक्षण एवं अहर्निश परिश्रम से समिति का वर्तमान भवन निर्मित हुआ)

श्री ला० मदनमोहन लाल जी पोद्दार
(संयोजक नवीन भवन निर्माण समिति सन् १९५७)
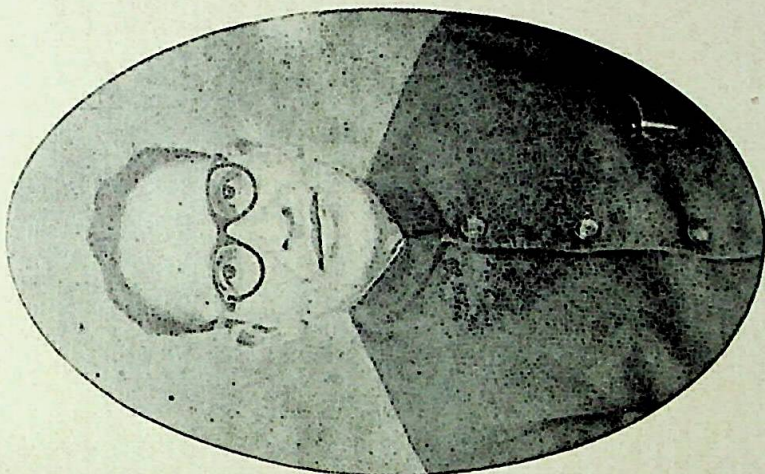
श्री बाबू गोविन्द प्रसाद जी ओवरसीयर
(नवीन भवन निर्माण योजना के निर्माता)

अमूल्य समय देकर समिति को पत्थर व ईंट विशेष कमीशन के साथ दिलाने में सहायता की।

केवल सात, आठ महीने के अथक परिश्रम के फलस्वरूप भवन तो बन कर तैयार हो गया किन्तु भवन के अनुरूप फर्श नहीं बन पा रहा था जिसको श्री मदनलाल बजाज उपाध्यक्ष के सद्प्रयत्नों से सेठ श्री सन्तोशीलाल जी मंहगाया वालों ने पूरा करा कर समिति भवन में चार चांद लगा दिये। समिति के बाहरी हिस्से को सेठ श्री हरिचरनलाल जी नई मंडी ने अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में नवीन रूप देकर रहे सहे कार्य को पूरा करा दिया।

भवन निर्माण में कुल लगभग २७०००) रु० व्यय हुए जब कि आरम्भ में केवल १२०००) रु० ही व्यय आँका गया था। इस बड़ी राशि को देने वाले दाताओं के नाम परिशिष्ट (८) में दिये गये हैं।

इस भवन के नव-निर्माण का समस्त कार्य श्री मदनमोहन लाल पोद्दार तथा बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर को सौंपा गया था जिसको उन्होंने बड़ी योग्यता, परिश्रम और लगन के साथ पूरा किया। समिति के कर्मचारी पं० कुन्दनलाल ने भी रात दिन उत्साह व परिश्रम से कार्य किया जिसके लिये समिति ने उन्हें १००) रु० पारितोषिक प्रदान किया।

मुख्य भवन के अतिरिक्त समिति की अचल सम्पिति में तीन दुकानें और हैं जो भवन के निकट ही शहर के मुख्य बाजार में स्थित हैं। इन दुकानों को श्री शान्तिस्वरूप जी बौहरे (दही गली) ने अपने पूज्य पिता श्री हीरालालजी बौहरे की पुण्य स्मृति में समिति को भेंट किया। इस कार्य में समिति तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री डा० गोपाललाल शर्मा का प्रयत्न उल्लेखनीय है।

हिन्दी प्रचार और जन-सेवा

इस समिति का लक्ष्य राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करना रहा है। इसका समस्त इतिहास इसका साक्षी है। सब प्रकार से हिन्दी की प्रगति हो इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये निम्न प्रकार के प्रयास किये गये हैं :—

१. अधिवेशन
२. परीक्षा
३. प्रौढ़-शिक्षा
४. नागरी पाठशाला
५. कवि-गोष्ठी
६. नाट्य समिति
७. राज्यस्तर पर हिन्दी की मान्यता की चेष्टाएँ

१. अधिवेशन

आरम्भ से ही इस समिति द्वारा मासिक एवं वार्षिक अधिवेशनों की व्यवस्था की गई। इनके अतिरिक्त समय-समय पर हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवियों की स्मृति में एवं वसंत, होली आदि पर्वों पर भी अधिवेशन होते रहते हैं।

मासिकोत्सव

प्रत्येक मास के अन्तिम शनिवार को समिति का साधारण अधिवेशन हुआ करता था, जिसमें लिखित निबन्ध एवं कविताओं का पठन होता था। इसका लक्ष्य लेखन-कला का अभ्यास एवं भाषण देने की योग्यता प्राप्त कराना था। प्रतिभाशाली विद्वानों के सम्मिलित होने से ये अधिवेशन और भी आकर्षक बन जाते थे। इन अवसरों पर स्टेट कौंसिल के मेम्बर साहिबान भी समिति में पधारते और सभापति का आसन ग्रहण करते थे। सन् १९१२

में काजी ग्रजीजुद्दीन अहमद साहब मेम्बर कौंसिल भी इन भाषणों में पधारे और इतने प्रभावित हुए कि समिति के सदस्य भी बन गये। सन् १९१४ से साहित्यिक भाषणों के अतिरिक्त विज्ञान पर भी भाषणों की व्यवस्था की गई।

वार्षिक उत्सव

समिति का प्रथम वार्षिक उत्सव २७, २८ ग्रौर २९ सितम्बर, १९१३ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। समस्त नगर बहुरंगी पताकाग्रों एवं झंडियों से सुसज्जित किया गया। जनता में एक नवीन उत्साह था। एक स्थान पर ग्रधिवेशन पण्डाल का निर्माण किया गया। पण्डाल के दरवाजे पर जो बोर्ड लगाया गया उसका प्रथम ग्रक्षर दस बाई छः फुट रंगीन कागजों का बनाया गया था, इसके निर्माण का श्रेय स्वर्गीय लाला नारायणलाल मुनीम को था। दूर-दूर से सहस्रों दर्शक एवं अनेक विद्वान् उसमें भाग लेने के लिये पधारे। राज्य की ग्रोर से सब प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की गईं। बाहर से पधारे हुए प्रतिनिधियों में निम्नलिखित महानुभाव विशेष उल्लेखनीय हैं :—

१. रायबहादुर बाबू बैजनाथ बी० ए०, भूतपूर्व जज आगरा
२. गोस्वामी मकसूदन लाल वृन्दावन
३. श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
४. पं० माधव शुक्ल
५. पं० पन्नालाल शर्मा, सम्पादक, स्वदेश बान्धव, आगरा
६. पं० मिट्ठनलाल ग्रागरा
७. पं० जीवानन्द काव्यतीर्थ
८. पं० सत्यनारायण, कविरत्न, आगरा
९. पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी आर्यमित्र

यद्यपि यह ग्रधिवेशन तीन दिन तक चला किन्तु दर्शकों की भींड़ इतनी अधिक रही कि पण्डाल प्रातःकाल से ही भरा रहता था। अधिवेशन के साथ-साथ समिति ने सावित्री सत्यवान् नाटक के अभिनय का भी आयोजन किया था जिसने उत्सव की शोभा

को द्विगुणित कर दिया। जब तीन दिन के कार्यक्रम से जनता सन्तुष्ट न हुई तो अधिवेशन एक दिन के लिये और बढ़ा दिया गया। इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री राज्यपुरोहित पं० कृष्णबख्श जी थे। जिन महानुभावों ने सभापति पद ग्रहण किया था उनके नाम निम्न प्रकार हैं :—

प्रथम दिन—रायबहादुर श्री धाऊ बख्शी रघुवीरसिंह जी
द्वितीय दिन—पं० श्री रघुनाथसहाय जी
तृतीय दिन—गोड़ेश्वराचार्य गोस्वामी श्री मधुसूदनलाल जी
चतुर्थ दिन—स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

द्वितीय वार्षिकोत्सव सन् १९१६ में मनाया गया। वह भी अद्वितीय रहा। सम्मिलित होने वाले महानुभावों में से निम्नलिखित के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं :—

१. श्री पं० श्रीकृष्ण शास्त्री प्रोफेसर पटियाला
२. श्री पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर
३. श्री पं० गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन
४. श्री पं० लक्ष्मीधर बाजपेयी कानपुर
५. श्री पं० सत्यनारायण जी कविरत्न, धांधूपुरा, आगरा
६. श्री पं० श्रीदामाजी सामवेदी आगरा।

इस प्रकार वार्षिक उत्सव मनाने की पद्धति चल निकली। अब तक समिति में चवालीस वार्षिक उत्सव मनाये जा चुके हैं। वैसे तो सभी अधिवेशन बड़ी धूमधाम से मनाये गये, किन्तु तेतीसवें और चवालीसवें अधिवेशन के समय विशेष जनोत्साह देखा गया। तेतीसवाँ वार्षिक उत्सव १९४५ में आगरा के बाबू गुलाबराय के सभापतित्व में मनाया गया। इस अवसर पर कवि कौंसिल का अभिनय अत्यंत रोचक रहा जिसका श्रेय स्वर्गीय गोकुलचन्द जी दीक्षित को है। इसके अतिरिक्त रसदरबार, हिन्दी उर्दू समानार्थक परीक्षा व कवि सम्मेलन का कार्यक्रम भी अधिक आकर्षक रहा। इस अधिवेशन के संयोजक तत्कालीन उप-मन्त्री श्री मदनलाल बजाज थे।

समिति के इतिहास में सबसे अधिक आकर्षक ४४वां अधिवेशन

श्री हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधार

(जिनके भागीरथ प्रयत्नों से समिति का विशाल भवन १९५७ में पुनर्निमित हुआ)

वर्तमान अध्यक्ष (सन् १९५५ से १९६२ तक)
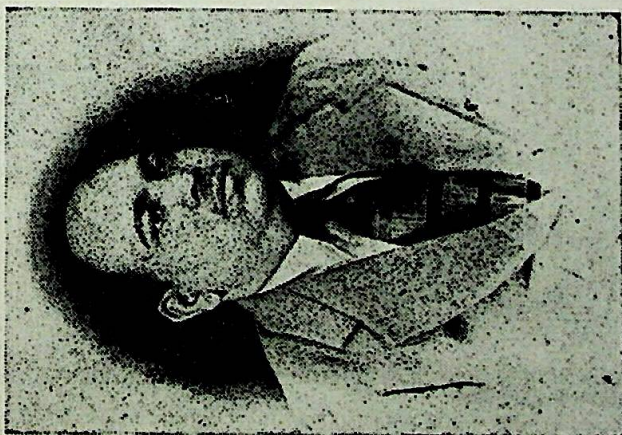
श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त,
एम. ए. (हिन्दी एवम् राजनीति विज्ञान) पी-एच. डी.

वर्तमान उपाध्यक्ष (सन् १९५८ से १९६२ तक)
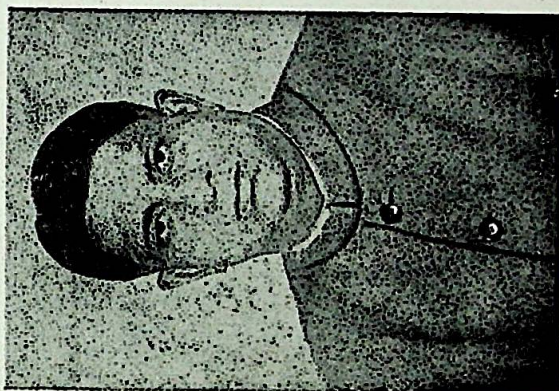
श्री मोतीलालजी बजाज

था जो १६, १७ व १८ सितम्बर, १९५६ ई० को डा० रामविलास शर्मा के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। यह अधिवेशन १६ सितम्बर को बालरवि रश्मियों के प्रस्फुटित होते ही शांति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में समिति के घेर में प्रारम्भ किया गया। वाद्ययन्त्रों की मनोहारी ध्वनि के बीच हिन्दी साहित्य समिति का पीताम्बरी ध्वज स्वच्छ आकाश में भरतपुराधीश श्री बृजेन्द्रसिंह जी के कर कमलों द्वारा फहराया गया। स्वागताध्यक्ष श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्ता ने भरतपुर नगर के महत्त्व का वर्णन करते हुए बताया कि यह स्थान व्रजभाषा साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और इस व्रज भू-खंड को व्रजभाषा के उच्चकोटि के कवि सोमनाथ और सूदन ने जन्म लेकर गौरवान्वित किया है। अन्त में अधिवेशन में पधारे हुए सभी हिन्दी प्रेमियों का स्वागत करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी की बहुमुखी प्रगति जगत की भाषाओं के बीच सर्वोच्च आसन ग्रहण करने में समर्थ होगी।

सांयकाल को डा० कमलेश जी का प्रभावपूर्ण भाषण तथा एक विराट् कवि-सम्मेलन हुआ। व्रजभाषा और खड़ीबोली के कवियों की सरस, सुन्दर एवं प्रभावोत्पादक कविताओं ने जनमानस को मंत्र-मुग्ध कर दिया। इस बृहत् कवि-सम्मेलन के अतिरिक्त दूसरे व तीसरे दिन गीता प्रवचन, अतांक्षरी, वादविवाद, गायन आदि का भी आयोजन किया गया। सबसे अधिक आकर्षक संसदीय रूपक था जिसमें संसदीय परम्पराओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया। इस रूपक में राष्ट्रपति का भाषण, प्रश्नोत्तर, सरकारी विधेयक, गैरसरकारी विधेयक, स्थगत प्रस्ताव सभी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किये गये थे। सरकारी पक्ष और विरोधी पक्ष के उत्तर-प्रत्योत्तर एवं अन्य बातें दिल्ली में होने वाली संसद की कार्यवाही से किसी प्रकार कम न थीं। इस प्रदर्शन में निम्नलिखित महानुभावों के भाषण विशेष सराहनीय रहे :—

सर्व श्री डा० कुंजबिहारीलाल, प्रो० हरसहाय, प्रो० किशन किशोर महर्षि, मा० उत्तमगोपाल, मा० नत्थीलाल, मा० अनूपसिंह,

पं० सुरेशकुमार सूरध्वज, श्री रामदत्त शास्त्री, श्री मुकुटबिहारीलाल वकील।

विशेष अधिवेशन

समिति का मुख्य लक्ष्य जनता में हिन्दी का प्रचार करना रहा है। इसके लिये उपर्युक्त वार्षिक अधिवेशनों के अतिरिक्त मार्च १९४४ में विक्रम द्विसहस्त्राब्दि समारोह का भी आयोजन किया गया। समिति के इस वृहद् कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त स्थानीय संस्थाओं ने पूर्ण सहयोग दिया। राज्य की ओर से भी राजकीय कार्यालयों में पूरे दिवस का अवकाश रहा।

नगर में एक वृहद् जलूस निकाला गया जिसमें समस्त स्थानीय संस्थाओं के झण्डे थे। यह जुलूस समिति के अहाते में बने विशाल पंडाल में पहुँचकर सभा के रूप मे परिवर्तित हो गया। श्री गोकुलचन्द दीक्षित द्वारा आयोजित विक्रम दरबार का रूपक प्रदर्शित किया गया। इस रूपक के कविरत्नों का परिचय दीक्षित जी द्वारा (बन्दीजन स्वरूप में) दिया गया। यह अभिनय इतना सुन्दर बन पड़ा कि उपस्थित जनता मन्त्र-मुग्ध सी हो गई।

इस उत्सव में सम्मिलित होने वाले विशिष्ट व्यक्तियों में भरतपुर नरेश श्री बृजेन्द्रसिंह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष दिनांक १२-२-६१ से १४-२-६१ तक समिति स्वर्ण जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मना रही है। इसी अवसर पर साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित मत्स्य क्षेत्रीय एक उपनिषद् समिति के तत्वावधान में होगा जिसका विषय है लोकरुचि और साहित्य। इस महोत्सव का उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के कर कमलों द्वारा होगा (इसका कार्यक्रम परिशिष्ट में देखिये)।

२. परीक्षा

समिति ने हिन्दी भाषा के प्रचार एवं ज्ञानवृद्धि के हेतु जो

अनेक प्रयत्न किये उनमें सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित करना भी एक है। दिनांक १४-७-२६ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने इस समिति को प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं का केन्द्र स्वीकार किया। सितम्बर १९२६ में प्रथम बार परीक्षाएँ आरम्भ हुईं जिनमें केवल दो परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए और दोनों उत्तीर्ण भी हुए। राज्यभाषा उर्दू होने से उन दिनों इन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने से कोई राजकीय नौकरी प्राप्त नहीं होती थी अतः परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में समिति शुल्क देकर भी विद्यार्थियों को परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित करती थी। धीरे-धीरे विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने लगी जो १९४३ के बाद उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। सन् १९४७ में हिन्दी राज्यभाषा घोषित करदी गई। सन् १९५० में प्रो० कुंजबिहारीलाल गुप्ता केन्द्र-व्यवस्थापक नियुक्त हुए और उनके प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने १९५१ से समिति को उत्तमा का केन्द्र भी स्वीकार कर लिया। तब से परीक्षार्थियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही गई। सन् १९६० की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या २२२ है जिसका विवरण इस प्रकार है :—

उत्तमा ५३, मध्यमा ४२, प्रथमा ६, वैद्य विशारद ८६, कृषि-विशारद ८ एवं उप-वैद्य २४। यह संख्या पिछले ४ वर्षों में रही संख्या में सबसे अधिक है जिसके लिए समिति केन्द्र के वर्तमान केन्द्र-व्यवस्थापक श्री रामदत्तजी शर्मा, एम० ए०, बी० एड्० की व्यवस्था सराहनीय है। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा होने से लगभग २ मास पूर्व रात्रि पाठशाला की व्यवस्था की जाती है जिनका संचालन इस वर्ष वैद्य रामशरन जी शास्त्री तथा श्री रामदत्त जी शास्त्री, एम० ए०, बी० एड्०, केन्द्र-व्यवस्थापक ने किया। इस बीच परीक्षार्थियों को पाठ्य-पुस्तकों की विशेष सुविधा भी दी जाती है।

३. प्रौढ़-शिक्षा

अक्टूबर १९४४ में समिति का शिष्ट मण्डल राजकीय सहायता

प्राप्त करने के लिये भरतपुर राज्य के तत्कालीन दीवान साहब से मिला। विचारों के आदान-प्रदान के समय दीवान साहब ने सुझाव रखा कि समिति को हिन्दी प्रचार के लिए नगर के प्रौढ़ों को साक्षर बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। इस सुझाव पर विचार करने के लिए १२-१०-४४ को कार्यकारिणी का अधिवेशन बुलाया गया और यह निश्चय किया गया कि बड़े जोरों से 'साक्षर बनो' आन्दोलन आरम्भ होना चाहिये। इस कार्य के लिये १६०) रुपये की स्वीकृति प्रदान की गई तथा निम्नलिखित महानुभावों की समिति बनाई गई :—

१. बाबू अयोध्याप्रसाद डी० पी० आई० (परामर्शदाता)
२. पं० नन्दकुमार शर्मा विशारद (संयोजक)
३. पं० गोकुलचन्द दीक्षित
४. प्रो० मोतीलाल
५. प्रो० हरसहाय
६. ला० चिरंजीलाल पोद्दार
७. पं० बालकृष्ण दुबे

योजना स्वीकृत हो जाने के पश्चात् कार्य आरम्भ कर दिया गया। भरतपुर नगर में ३ स्थानों पर प्रौढ़ शिक्षा के लिए पाठशालाएँ स्थापित कर दी गईं : (१) समिति भवन (२) वीरनारायण दरवाजा (३) कुम्हेर दरवाजा। तीनों केन्द्रों के लिये ३ अध्यापक २७ रु० मासिक पर रखे गये। शिक्षा निरीक्षक का कार्य श्री दिनेशचन्द्र चतुर्वेदी तथा छेदालाल चतुर्वेदी को सौंपा गया। ता० १२-१०-४४ को ब्याने के आर्य समाज के मन्त्री श्री गनेशीलाल आर्य की देख रेख में वहाँ के वमनपुरा नामक एक मोहल्ला में भी एक केन्द्र स्थापित हुआ। अल्पकाल में ही ये केन्द्र आशातीत उन्नति करने लगे और अशिक्षित जनता के आकर्षण-बिन्दु बन गये। प्रौढ़ों को आकर्षित करने के लिए पुस्तक, स्लेट, पेन्सिल आदि समिति से दी जाती थीं। यह कार्यक्रम चार मास तक चलता रहा। लगभग ६५ विद्यार्थियों ने इससे लाभ उठाया। थोड़े समय में ही उनको अक्षरों और मात्राओं

का ज्ञान हो गया। आगे धनाभाव के कारण मार्च १९४५ में सभी केन्द्र बन्द कर देने पड़े।

समिति इस योजना को सफल बनाने के लिये निरन्तर प्रयत्न करती रही। १२ जनवरी १९५४ को पुनः दो केन्द्र स्थापित किये गये: (१) समिति भवन (२) गुलालकुण्ड हरिजन बस्ती। श्री सुरेशचन्द्र खन्ना और श्री उमाशंकर शर्मा ने सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य किया। लगभग ७५ विद्यार्थियों को साक्षर बनाया गया। १६ अप्रैल १९५४ को धनाभाव के कारण यह कार्य पुनः बन्द कर देना पड़ा।

४. नागरी पाठशाला

हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिए इस संस्था ने १९१४ में एक पाठशाला खोलने की योजना बनाई जिसके दो विभाग खोले गये। पहिला आरम्भिक शिक्षा विभाग जिसमें अपर प्राइमरी कक्षाएँ थीं और दूसरा उच्च साहित्यिक शिक्षा विभाग जिसमें इतिहास, विज्ञान, भूगोल, गणित, साहित्य और अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा रखी गई। दोनों भागों के लिये दस अध्यापकों को २४१) रु० मासिक वेतन भी स्वीकार किया गया। स्त्रियों को भी शिक्षित करने के लिए व्यवस्था सोची गई, किन्तु अर्थाभाव के कारण यह योजना अधिक दिन न चल सकी।

५. कवि-गोष्ठी

भरतपुर के कवि-समाज की कृतियों को प्रकाश में लाने तथा उनकी प्रतिभा को विकसित करने के लिये सन् १९३४ में एक साहित्य गोष्ठी की स्थापना की गई, जिसके संयोजक श्री गोपाललाल जी महेश्वरी थे। इस गोष्ठी की एक वर्ष तक प्रति मास बैठकें होती रहीं, फिर साप्ताहिक कर दी गईं। इन बैठकों में स्थानीय कवियों द्वारा जो रचनाएँ सुनाई जाती थीं, उनकी अगली बैठक में आलोचना भी प्रस्तुत की जाती और श्रेष्ठ रचना पर पुरस्कार भी दिया जाता था। इन गोष्ठियों में कविता पाठ के अतिरिक्त निबंध, अन्ताक्षरी तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ भी होती थीं। सन् १९३७

में संयोजक महोदय का आकस्मिक स्वर्गवास हो जाने के कारण यह कार्य-क्रम कुछ काल के लिए स्थगित हो गया। सन् १९४१ व ५३ में इनको पुनः चालू किया गया परन्तु कवियों में उत्साह की कमी के कारण कार्य अधिक न चल सका। अब केवल विशेष अवसरों पर ही कवि-गोष्ठियाँ होती हैं। इन अवसरों पर रस दरबार, कवि संसद तथा कवि दरबार आदि भी किये जा चुके हैं। लोकनृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी समय-समय पर होते रहे हैं।

इस गोष्ठी के अन्तर्गत सन् १९५४ से जसवन्त प्रदर्शनी के अवसर पर एक वृहत् कवि-सम्मेलन प्रदर्शनी पंडाल में प्रति वर्ष होता रहा है जिसमें सर्वोत्कृष्ट रचनाओं पर पुरस्कार दिया जाता है। सन् १९५७ से इस कवि-सम्मेलन का आयोजन सरकार द्वारा किया जाता है।

साहित्य-गोष्ठी में भाग लेने वाले कुछ सज्जनों के नाम इस प्रकार हैं :—

सर्व श्री नन्दकुमार शर्मा, सूर्यनारायण शास्त्री, चम्पालाल मंजुल, गोपाललाल महेश्वरी, श्री गोकुलचन्द दीक्षित, कविकुल शेखर, जयशंकर चतुर्वेदी, रामचन्द विद्यार्थी, राधारमण वैद्य मोहन, छोटेलाल ब्रह्मभट्ट, गिर्राजप्रसाद मित्र, कृष्णचन्द्र शास्त्री एम० ए०, देवकीनन्दन आचार्य, रावत चतुर्भुजदास चतुर्वेदी, प्रो० प्रेमनिधि शास्त्री, इन्द्रभूषण महर्षि, तुलसीराम चतुर्वेदी, दिनेशचन्द चतुर्वेदी, सूरजप्रसाद शर्मा, प्रभूदयाल जी दयाल, तोताराम शुक, शिवदत्त शर्मा, प्रो० कुंजबिहारीलाल गुप्ता, मा० झम्मनलाल, जगन्नाथ-प्रसाद कम्पाउण्डर, हरीशचन्द हरीश, बृजेन्द्रबिहारी शर्मा कौशिक, बालस्वरूप शर्मा, गौरीशंकर मयंक, रमेशचन्द चतुर्वेदी और रामदत्त शर्मा एम० ए०।

६. नाट्य-समिति

जो कार्य अनेकों पुस्तकों के पढ़ने और सैकड़ों व्याख्यानों के सुनने से नहीं होता वह नाटकों के देखने से सहज में हो जाता है। दृश्य साहित्य का जनता पर जितना प्रभाव पड़ता है उतना श्रव्य

एवं पाठ्य का नहीं। इस विचारधारा से प्रेरित होकर भरतपुर के कुछ उत्साही युवक एक ऐसी नाट्य समिति की आवश्यकता प्रतीत करने लगे जो भरतपुर में सुन्दर एवं शिक्षाप्रद नाटकों का अभिनय कर सके।

समिति के प्रथम वार्षिकोत्सव के समय कुछ सज्जनों द्वारा अभिनीत नाटक सावित्री सत्यवान का जनता पर इतना प्रभाव पड़ा कि यह माँग की जाने लगी कि एक नाट्य समिति की स्थापना की जाय जो समय-समय पर अभिनय द्वारा सदाचार का प्रचार करे। उपर्युक्त माँग को लेकर दिनांक २८ नवम्बर १९१३ को एक असाधारण सभा बुलाई गई जिसमें नगर के गण्यमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित हुए। सभा का सभापतित्व मा० बृजबिहारीलाल ने किया। बहुत विचार-विमर्श के पश्चात् सर्वसम्मति से हिन्दी नाट्य समिति की स्थापना की गई जिसके संचालन हेतु निम्न समिति बनाई गई :—

१. श्री ओंकारसिंह प्रमार	प्रधान
२. श्री बालकृष्ण दुबे	मन्त्री
३. श्री बाला प्रसाद	उपमन्त्री
४. श्री ला० हजारीलाल पोद्दार	कोषाध्यक्ष
५. श्री छोटेलाल	आय-व्यय-निरीक्षक

नाट्य समिति के लक्ष्य को कार्यान्वित करने के लिये धन की आवश्यकता थी, अतः उसी समय उपस्थित व्यक्तियों द्वारा १०१) रु० का चन्दा एकत्रित किया गया और एक हारमोनियम की व्यवस्था भी कर दी गई।

यह नाट्य समिति श्री हिन्दी साहित्य समिति का एक अंग थी समिति की कार्यकारिणी ने तारीख ४ जनवरी १९१४ की बैठक में इसकी स्थापना को स्वीकार करते हुए निम्न नियम निर्धारित किये—

१. किसी नाटक के अभिनय करने से पूर्व नाट्य समिति को कार्यकारिणी समिति से आज्ञा प्राप्त करनी होगी।

२. प्रत्येक मास में नाट्य समिति के आय-व्यय का लेखा

समिति के कार्यलिय में भेजा जायेगा और उसका जमा-खर्च भी समिति के हिसाब में किया जायेगा।

३. हिन्दी साहित्य समिति, नाट्य समिति को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देगी, प्रत्युत नाट्य समिति का कर्त्तव्य होगा कि वह अपने प्रत्येक खेल की आय का कम से कम १०वां अंश समिति को दे।

४. आवश्यकता पड़ने पर समिति का कर्त्तव्य होगा कि वह नाट्य समिति को शारीरिक एवं प्राविधिक सहायता दे।

५. नाट्य समिति का यह कर्त्तव्य ठहराया गया कि वह प्रत्येक वर्ष अपने अभिनयों का पूर्ण विवरण समिति को भेजे।

ज्योंही इस समिति की स्थापना हुई, इसके उत्साही कार्यकर्त्ता इसके कार्य में जुट गये। जिन नाटकों का अभिनय किया गया वे सब शुद्ध हिन्दी में लिखे हुए थे। अभिनयों को देखने के लिये भरतपुर की जनता इतनी उत्सुक रहती थी कि पंडाल में बैठने को स्थान बड़ी कठिनता से मिलता था। तत्कालीन भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिंहजी इस नाट्य समिति से विशेष सहानुभूति रखते थे। थोड़े समय में ही इस समिति ने आशातीत सफलता प्राप्त करली और अपने ध्येय के अतिरिक्त सैकड़ों रुपये का आवश्यक सामान भी एकत्रित कर लिया। वार्षिक अधिवेशनों पर तो नाटक होते ही थे किन्तु अन्य अवसरों पर भी शिक्षाप्रद नाटकों के अभिनय की व्यवस्था की जाती। प्रथम विश्व युद्ध में आर्थिक सहायता देने के लिये समिति ने कई नाटक खेले और उनसे प्राप्त आय को युद्ध की सहायता हेतु भेज दिया गया। इन नाटकों को देखने के लिए भरतपुर नरेश बाहर से आने वाले अंग्रेजों एवं भारतीय अतिथियों सहित सम्मिलित होते थे। इन सभी अतिथियों ने नाट्य समिति के कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

स्व० श्री दादीजी साहिबा श्री गिर्राज कौर नाट्य समिति से पूर्ण सहानुभूति रखती थीं और प्रत्येक अभिनय में पधार कर समिति का उत्साहवर्द्धन करती थीं।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के उत्साही एवं कर्मठ पदाधिकारी

वर्तमान प्रधान मंत्री

जिनकी कार्य प्रणाली के फलस्वरूप समिति ने अभूतपूर्व उन्नति की है।
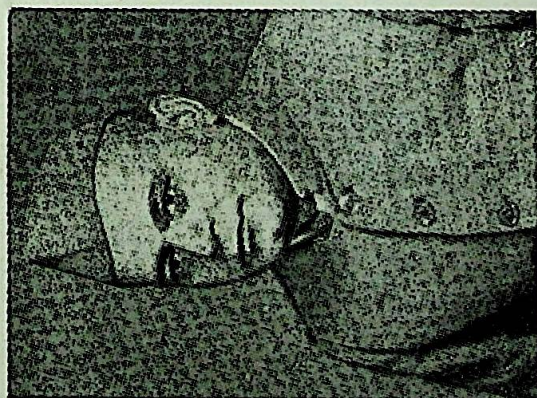
श्री मदनलालजी बजाज

उपाध्यक्ष (१९५५ से ५८ तक)

प्रधानमंत्री (१९५८ से ६२ तक)

(स्वर्णजयन्ती ग्रन्थ के प्रकाशक तथा भवन पुनर्निर्माण के प्रेरक)

भूतपूर्व प्रधान मंत्री

जिनके मंत्रित्व काल में समिति का विशाल भवन पुनर्निर्मित हुआ।

श्री रामदत्तजी शर्मा एम.ए.बी.एड., साहित्य रत्न, शास्त्री

प्रधान मंत्री (१९५६ से ५८ तक)

केन्द्र व्यवस्थापक (१९५६ से ६१ तक)

नाट्य समिति द्वारा अभिनीत नाटकों में निम्नलिखित अभिनय विशेष आकर्षक बन पड़े—

१. सावित्री सत्यवान
२. स्वामिभक्त
३. वीर अभिमन्यु
४. रणधीर प्रेम मोहनी
५. वसन्त सुन्दरी
६. सत्यवादी हरिश्चन्द्र
७. शकुन्तला

सन् १९२० में यह नाट्य समिति इतनी अधिक लोकप्रिय हो गई कि भरतपुर नरेश महाराजा श्री कृष्णसिंहजी ने इसको समिति से पृथक कर अपने आश्रय में ले लिया।

७. राज्य-स्तर पर हिन्दी की प्रगति के लिए प्रयास

जनवरी १९१९ में स्वर्गीय भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिंह को राज्याधिकार प्राप्त हुए। अभी तक राजकीय भाषा उर्दू थी। समिति ने एक शिष्टमंडल भेज कर महाराजा से राज्यभाषा हिन्दी घोषित करने के लिए निवेदन किया। भरतपुर नरेश ने जो स्वभावतः ही हिन्दी के बड़े प्रेमी थे, राज्याधिकार प्राप्त होते ही हिन्दी को राज्यभाषा घोषित कर दिया और आज्ञा प्रदान की कि ३ मास की अवधि में सभी राज्यकर्मचारी हिन्दी सीख लें, अन्यथा वह राज्य-कार्यालय में नहीं रह सकेंगे। इस कार्य की सिद्धि के लिए समिति ने पूर्ण सहयोग दिया और हिन्दी से नितान्त अनविज्ञ सज्जनों को भी हिन्दी के पठन-लेखन योग्य बनाया।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् राज्यभाषा हिन्दी घोषित तो कर दी गई किन्तु व्यवहार अंग्रेजी का ही चल रहा है, इसके लिये समिति ने समय-समय पर भारत सरकार से विशेषकर १९५६ के अधिवेशन पर एक प्रस्ताव द्वारा निवेदन किया है कि भारत में हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो सुगम और सरल है और प्रत्येक प्रान्त में बोली और समझी जा सकती है इसके लिये हिन्दी को सर्वत्र शीघ्रातिशीघ्र प्रचलित किया जाय।

८. समाज-सेवा

समिति का कार्यक्षेत्र जनता में केवल साहित्यिक अभिरुचि

उत्पन्न करने तथा संस्कृति की रक्षा करने तक ही सीमित न रहा अपितु जब जब दैवी प्रकोप के कारण जनता पर इन्फलूएन्जा, जलप्लावन एवं महामारी आदि की विपत्तियाँ आईं, तब ही तब समिति के कार्यकर्त्ताओं ने अपनी जान की बाजी लगा कर जनता की सेवा की। यही कारण है कि यह संस्था सेवा समिति के नाम से अधिक विश्रुत है।

सन् १९१८ में भरतपुर में इन्फलूएन्जा का भयंकर प्रकोप हुआ नित्यप्रति सैकड़ों मनुष्य मृत्यु के मुख में जाने लगे। यह एक ऐसा संकट-काल था जब एक दूसरे की सेवा-सुश्रूषा करना तो दूर रहा, मृतकों को श्मशान भूमि तक पहुँचाने वाला भी कोई नहीं मिलता था। यह परिस्थिति समिति के उत्साही कार्यकर्त्ताओं से नहीं देखी गई। स्व० श्री माजी साहिबा श्री गिरिराज कौर जी को उन्होंने नगर की वास्तविक परिस्थिति से अवगत कराया। जनता की सच्ची राजमाता और परम हितैषिनी माजी साहिबा ने तत्काल ५०००) रु० जनता की सेवार्थ समिति को प्रदान किये और वैद्यों एवं चिकित्सकों को इस सेवा-कार्य में समिति की पूर्ण सहायता प्रदान करने का आदेश दिया। कर्नल श्री गणेशीलाल जी की अध्यक्षता में समिति के स्वयंसेवकों ने दृढ़तापूर्वक सेवा-कार्य किया और अन्न, दूध, खिचड़ी, व रजाई आदि रोगियों को वितरित कीं। इस सेवा के फलस्वरूप सैकड़ों असहाय रोगियों की जीवन-रक्षा हो सकी।

इसी प्रकार प्लेग के समय सन् १९२१ में तथा १९२४ के जलप्लावन के समय में समिति ने जनता की सेवा कर सैकड़ों जानें बचाईं।

स्व० भरतपुर नरेश कृष्णसिंह जी के राज्यकाल में भरतपुर के न्यायालयों से इधर उधर से अपहरित महिलाओं को किसी भी व्यक्ति की संरक्षणार्थ जमानत पर दे दिया जाता था। मुसलमान और ईसाई ऐसे अवसरों की ताक में रहते थे और उससे अनुचित लाभ उठाते थे। हिन्दू लोक-लाज के कारण ऐसी स्त्रियों को संरक्षण में लेने से हिचकते थे पर इस दुर्व्यवस्था की टीस उनके हृदय में भी

वनी रहती थी। अतः कुछ उत्साही नवयुवकों ने समिति की देख-रेख में एक विधवाश्रम की स्थापना की जिसमें स्त्रियों को न्यायालय से लेकर रखा जाता था। कुछ काल तक यह आश्रम ठीक प्रकार चलता रहा परन्तु महिलाओं के विवाह कर लेने के पश्चात् आश्रम रिक्त हो गया और समिति को धनाभाव के कारण भी इसे बंद कर देना पड़ा।

सन् १९२६ में हिन्दी साहित्य समिति के संरक्षण में श्री गिर्राज सेवादल नामक एक दल की स्थापना की गई। इस दल का उद्देश्य राज्य और जनता की सेवा करना था जैसे पीड़ित जनता में औषधि वितरण, आग बुझाना, पानी में डूबे व्यक्तियों को निकालना, सफाई सप्ताहों का आयोजन, श्रावण मास में होने वाली स्थानीय मंदिरों की रासलीला के अवसरों पर उचित प्रबन्ध एवं खोये-विछुड़े बालकों को उचित स्थानों पर पहुँचाने का प्रवन्ध आदि।

सन् १९२७ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के १७ वें अधिवेशन पर भी इस दल ने विशेष सेवा की यद्यपि उत्साही युवकों के बाहर चले जाने के कारण यह दल एक वर्ष की अल्पावधि के पश्चात् ही छिन्न-भिन्न हो गया। किन्तु समिति समाज-सेवा के लक्ष्य को भुला न सकी और ऐसे दल की स्थापना के लिये निरन्तर प्रयत्न-शील रही।

दिनांक १० अप्रेल १९४३ को तत्कालीन दीवान कु० श्री हीरासिंह के इंगित पर इस दल को पुनर्जीवित किया गया। इस समय इस दल के सभापति स्वयं श्री कु० साहब ही निर्वाचित किये गये। स्थापित होते ही यह दल समाज-सेवा में तल्लीन हो गया किन्तु किन्हीं कारणों से दल का कार्य अधिक न चल सका।

परिशिष्ट १

वार्षिक सदस्य-संख्या-सूचक

क्रमांक	सत्र	सदस्य-संख्या	क्रमांक	सत्र	सदस्य-संख
१	१९१२-१३	२०२	२३	१९३९-४०	२१४
२	१९१३-१४	३५१	२४	१९४०-४१	२६०
३	१९१४-१५	३००	२५	१९४१-४२	२८५
४	१९१५-१६	२२५	२६	१९४२-४३	२९१
५	१९१६-१७	१७०	२७	१९४३-४४	२९३
६	१९१७-१८	१५३	२८	१९४४-४५	३१९
७	१९१८-१९	१४५	२९	१९४५-४६	३३७
८	१९१९-२०	१३०	३०	१९४६-४७	३९७
९	१९२०-२१	१७७	३१	१९४७-४८	४८२
१०	१९२६-२७	२२८	३२	१९४८-४९	३९०
११	१९२७-२८	२०४	३३	१९४९-५०	३६४
१२	१९२८-२९	१६४	३४	१९५०-५१	३७५
१३	१९२९-३०	१००	३५	१९५१-५२	४३३
१४	१९३०-३१	१७४	३६	१९५२-५३	३९९
१५	१९३१-३२	१९६	३७	१९५३-५४	३८९
१६	१९३२-३३	१७०	३८	१९५४-५५	३५५
१७	१९३३-३४	२१८	३९	१९५५-५६	४०८
१८	१९३४-३५	२३५	४०	१९५६-५७	२९६
१९	१९३५-३६	२३४	४१	१९५७-५८	४३०
२०	१९३६-३७	२२८	४२	१९५८-५९	४५६
२१	१९३७-३८	२३३	४३	१९५९-६०	५०१
२२	१९३८-३९	२०७	४४	१९६०-६१	५५०

परिशिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

१. श्री श्यामलाल धीया
२. श्री हीराशंकर पंचोली
३. श्री चतुर्भुजदास चतुर्वेदी
४. श्री मास्टर प्रभूलाल गोयल
५. श्री चिरंजीलाल पोद्दार
६. श्री जवाहरलाल नाहटा
७. श्री फूलचन्द जैन ठेकेदार ब्याना
८. श्री रायबहादुर सेठ भागचन्द सौनजी अजमेर
९. श्री श्यामलाल गुप्ता सुपुत्र श्री किरोड़ीलाल मुनीम
१०. श्री डा० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
११. श्री नत्थीलाल शर्मा टाटानगर
१२. श्री झम्मनलाल रिटायर्ड स्टेशन मास्टर
१३. श्री हरीराम श्रीराम एजेन्ट बर्मा शैल
१४. श्री रामजीलाल मँहगाये वाले
१५. श्री मेजर धीरीसिंह चौहान
१६. श्री रामस्वरूप मोतीलाल बजाज
१७. श्री बल्लाराम बद्रीप्रसाद ब्याना
१८. श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी
१९. श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बाबू हरिदत्तजी एडवोकेट
२०. श्री गंगासहाय मदनमुरारी ठेकेदार

परिशिष्ट ३

संरक्षक सूची

१. श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न, राजगुरु, झालरापाटन
२. श्री सेठ संतोशीलाल मंहगाये वाले
३. श्री सेठ हरिचरनलाल नई मण्डी
४. श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद, दीपक, गुरु नानक आइरन स्टील कं०

परिशिष्ट ४

विषयानुसार पुस्तक-संख्या

१	वेद	३६	त	प्राकृतिक चिकित्सा	१२८
२	उपनिषद्	४३	२४	शिक्षा विज्ञान-मनोविज्ञान	५२
३	कर्मकाण्ड	१०	थ	विभिन्न भाषा	३१
क	कर्मकाण्ड	४६	२५	बाल साहित्य	५१९
४	दर्शन	१६४	२६	महिला साहित्य	१६५
५	स्मृति	२१	२७	ग्राहंस्थ्य शास्त्र	११३
६	पुराण महात्म्य	१५४	२८	समाज-रचना	५४
ख	स्तोत्र	१००	न	समाज-सुधार	१८७
७	गीता	७०	२९	काव्य-रचना	८९
८	रामायण	८०	प	काव्य-संग्रह	८३४
९	महाभारत	१८	३०	गद्य काव्य निबंध	१७६
१०	अन्य धार्मिक ग्रन्थ	३८६	३१	आलोचना	३४७
११	तंत्र-मंत्र	३०	फ	साहित्य-इतिहास	१५२
१२	व्याकरण	७६	३२	भूगोल	३५
१३	कोश	४३	३३	यात्रा	७३
१४	चिकित्सा	१९२	३४	इतिहास-भारतीय	२११
१५	ज्योतिष	९९	ब	,, अन्य देशीय	६१
१६	गणित	२५	३५	जीवन-चरित्र	४०५
१७	राजनीतिक	३६३	३६	नाटक	४६३
ग	विधान-कानून	४६	३७	आख्यायिका	१३७
घ	उपदेश	११०	भ	कहानी	४३३
१८	अर्थशास्त्र	६३	३८	उपन्यास-एति०पोरा०	३०३
१९	ग्रामोपयोगी	८९	च	,, सामाजिक	१०७२
२०	व्यापार	१६	छ	,, जासूस ऐयारी	३४६
२१	उद्योग	६५	ज	,, फुटकर	१०४
२२	विज्ञान	६०	३९	संगीत शास्त्र	१८०
२३	व्यायाम, युद्ध, खेल	१७			

४०	संग्रह	५०	४४	पंचोली संग्रह	८०
४१	परीक्षोपयोगी	१०५	४७	सर्वोदय साहित्य	४४
४२	चित्रावली	१०	४८	पुस्तकालय साहित्य	६
४३	प्रेमचन्द-साहित्य	३८		हस्तलिखित	९९८
					१२३३७

परिशिष्ट ५

पाठक विवरण

सत्र	पाठक-संख्या
सन् १९५०-५१	१७२१७
,, १९५१-५२	११३३८
,, १९५२-५३	१०९११
,, १९५३-५४	१८२०९
,, १९५४-५५	२१७४४
,, १९५५-५६	२६४३३
,, १९५६-५७	२२२५५ भवन निर्माण के कारण वाचनालय अधिकांश वन्द रहा।
,, १९५७-५८	३६९७५
,, १९५८-५९	५४५४२
,, १९५९-६०	६६३४३
,, १९६०-६१	६८२५६ (दिसम्बर तक)

टिप्पणी—सन् १९५० से पूर्व का विवरण प्राप्त नहीं है।

परिशिष्ट ६

भवन-निर्माण के लिए दान देने वालों की सूची

(सन् १९१७-१९)

१. श्री गिरधरजी शर्मा झालरापाटन २)
२. श्री छोटेलाल जी घीया २५१)
३. श्री खोंखनलाल पोद्दार २२५)
४. श्री पं० नारायनदास २०१), १०१) ३०२)

५.	श्री गुरुदयाल ठेकेदार	१०१)
६.	श्री नत्थीलाल ठेकेदार डीग	१०१)
७.	श्री बाबू रतनलाल	३०)
८.	श्री नन्नेमल	६०)
९.	श्री ला० कन्हैयालाल	५१)
१०.	श्री ला० गनेशीलाल	५१)
११.	श्री पं० नारायनलाल जानी	२५)
१२.	श्री पं० फतेहसिंह वकील आबू	२०)
१३.	श्री पं० चतुर्भुजी पुरोहित	५१)
१४.	श्री अधिकारी जगन्नाथदास ४०) ५)	४५)
१५.	श्री पं० गंगाप्रसाद शास्त्री	५)
१६.	श्री पं० गुलाबजी मिश्र	३५)
१७.	श्री वैद्य गोपीलालजी	१०)
१८.	श्री भट्ट मधसूदन जी	१४)
१९.	श्री पं० हीराशंकर पंचोली	३०)
२०.	श्री पं० सुखलाल जोशी	५)
२१.	श्री ला० सुन्दरलाल नाजिर	३०)
२२.	श्री श्यामलाल जानी सब-ओवरसीयर	२१)
२३.	श्री पं० प्यारेलाल सूर्यद्विज	१७)
२४.	श्री पं० हरभजनलाल मास्टर	११)
२५.	श्री पं० बालकिशन दुबे	१५)
२६.	श्री एक हिन्दी-प्रेमी १५) २५)	४०)
२७.	श्री एक महिला	२५)
२८.	श्री भट्ट श्रीकान्त शचीकान्त	१३)
२९.	श्री पं० द्वारकाप्रसाद	११)
३०.	श्री पं० हनुमानदास शमा	१९)
३१.	श्री ला० रंगबहादुर सेवर	१५)
३२.	श्री गुसाईं गंगाचरन सदाव्रत	८)
३३.	श्री पं० नत्थीलाल शर्मा	७)
३४.	श्री मा० जगन्नाथप्रसाद (नारायनलाल जी)	११)
३५.	श्री वैद्य सदानन्द	११)
३६.	श्री पं० तोताराम शास्त्री	१०)
३७.	श्री मा० अशरफीलाल कायस्थ	३)
३८.	श्री गंगाप्रसाद पांडेय	६)

३९. श्री नारायनप्रसाद पांडेय ५)
४०. श्री मुरलीधर शास्त्री चक्रपाणि ५)
४१. श्री पं० रामप्रसाद जी गोवरधन वाले ५)
४२. श्री सीताराम कोंतू ५)
४३. श्री पं० प्यारेलाल शर्मा लाइब्रेरियन समिति ४)
४४. श्री ला० नारायनप्रसाद सदाव्रत १)
४५. श्री ला० किशोरीलाल व्यानिया ५)
४६. श्री ला० गोपीलाल वाईस ५)
४७. श्री नत्थीलाल जी मिश्र पापटे वाले ५)
४८. श्री जगन्नाथप्रसाद, नारायनजी सूबेदार ३)
४९. श्री ला० ग्यासीराम जी मुनीम २)
५०. श्री बाबू जानकीशरण कायस्थ १)
५१. श्री पं० जनककिशोर काश्मीरी १)
५२. श्री ला० श्रीकृष्ण (नन्नेमल) ११)
५३. श्री मदनलाल वौहरे २)
५४. श्री वाबू कन्हैयालाल जैन २४)
५५. श्री दुर्गाप्रसाद वौहरे नीमदरवाजा २५)
५६. श्री ज्वालाप्रसाद चतुर्वेदी हैडक्लर्क ११)
५७. श्री बाबू मदनमोहनलाल सब-ओवरसीयर ३१)
५८. श्री सुन्दरलाल त्रिपाठी ८०)
५९. श्री हजारीलाल, चुन्नीलाल २१)
६०. श्री दुर्गाप्रसाद, केला वर्क्स २१)
६१. श्री नारायनदास रामस्वरूप खत्री वजाज ३१)
६२. श्री प्रतापसिंह वकील ११)
६३. श्री महन्त नारायनदास १५)
६४. श्री ला० किशोरीलाल नाजिर २)
६५. श्री बुद्धालाल सर्राफ गंगा मन्दिर ५)
६६. श्री श्यामलाल बाँस वाले ५)
६७. श्री बिहारीलाल शंकरलाल सर्राफ ५)
६८. श्री मंगलराम सर्राफ ३)
६९. श्री शेख बूँदेखाँ ५)
७०. श्री गोपालदास खत्री २१)
७१. श्री रामशरण ओवरसीयर ३१)
७२. श्री मोतीलाल दरोगा ११)

७३.	श्री कन्हैयालाल स्टोरकीपर	५)
७४.	श्री मक्खनलाल सदाव्रत	१)
७५.	श्री गणेशराम टेलीफोन इन्स्पेक्टर	५)
७६	श्री पूज्यचरण वल्लभाचार्य जी महाराज का भवन	१०१)
७७.	श्री धाऊ बख्शी रघुवीरसिंह जी	१२५)
७८.	श्री चतुर्भुज गिर्दावर	५)
७९.	श्री सेठ मूलचन्द नेमीचन्द	१०१)
८०.	श्री बाबू चुन्नीलाल	५१)
८१.	गुप्तदान	४००)
८२.	श्री पं० लोकमन प्रसाद	५)
८३.	श्री पं० सीताराम	५)
८४.	श्री बाबू गोविन्दस्वरूप	५)
८५.	श्री बाबू गोविन्दप्रसाद	५)
८६.	श्री बाबू चक्खनलाल	५)
८७.	श्री मिस्त्री गोपाललाल	५)
८८.	श्री बाबू बिहारीलाल	२)
८९.	श्री पं० बिशनलाल	५)
९०.	श्री मुन्शीलाल ठेकेदार	११)
९१.	श्री पं० दीनदयाल	१)
९२.	श्री बाबू मोतीलाल सब-ओवरसीयर	५)
९३.	श्री गडर चपरासी	२)
९४.	श्री मुहम्मद अकाल	३)
९५.	श्री हरप्रसाद पुलिस	१५)
९६.	श्री राधाचरन ओवरसीयर	११)
९७.	श्री बालमुकन्द मोटर ड्राइवर	२७)
		३०१३)

परिशिष्ट ७

समिति के पदाधिकारी (१९१२ से १९६१ तक)

१९१२ से १९३४ तक

प्रधान

(१) श्री डा० ओंकारसिंह प्रमार (१९१२-१९)
(२) ,, भट्ट मधसूदन लाल (१९१९-२३)

(३) श्री चौबे हरीशंकर जी (१९२३-२५)
(४) „ कर्नल घमण्डीसिंह जी (१९२५-३४)

उपप्रधान

(१) श्री पं० नारायनदास जी (१९१२-१९)
(२) „ कर्नल जुगलसिंह जी (१९२३-२५)
(३) „ पं० मयाशंकर जी याज्ञिक (१९२५-२८)
(४) „ सेठ दामोदरलाल जी (१९२५-२८)
(५) „ बा० कन्हैयालाल जी (१९२९-३४)

प्रधान मन्त्री

(१) श्री सुन्दरलाल जी जानी
(२) „ अधिकारी जगन्नाथदास जी (१९१२-२१)
(३) „ पं० बालकृष्ण जी दुबे (१९२१-३४)

उप-मन्त्री

(१) श्री गंगाप्रसाद जी शास्त्री (१९१२-१७)
(२) „ बालकृष्ण जी दुबे (१९१७-२१)
(३) „ हरीशंकर जी पंचोली (१९२०-२१)
(४) „ हरभजनलाल जी (१९२१-२५)
(५) „ द्वारकाप्रसाद जी शर्मा (१९२५-२८)
(६) „ चौबे युधिष्ठिरप्रसाद जी (१९३३-३४)

पुस्तकाध्यक्ष

(१) श्री पं० गुलाबजी मिश्र (१९१२-२९)
(२) „ पं० रामस्वरूप जी मिश्र (२९-३४)

उप-पुस्तकाध्यक्ष

(१) श्री पं० बालकृष्ण जी दुबे (१९१२-१९)
(२) „ पं० शचीकांत जी भट्ट (१९१९-२१)
(३) „ अधिकारी जगन्नाथदास जी (१९२१-२८)
(४) „ पावनीप्रसाद जी

कोषाध्यक्ष

(१) श्री खोंखनलाल जी पोद्दार (१९१२-२९)
(२) „ हजारीलाल जी पोद्दार (१९२०-३५)

आय-व्यय-निरीक्षक

(१) श्री सुन्दरलाल जी त्रिपाठी (१९१२-२०)
(२) „ बा० कन्हैयालाल जी (१९२०-२९)

सन् १९३४-३६

श्री बाबू रघुवीरसहाय जी पी० डब्ल्यू० डी० (प्रधान)
„ वैद्य गोपीलाल जी (उप-प्रधान)
„ डा० काशीप्रसाद जी (उप-प्रधान)
„ जगन्नाथप्रसाद जी अरोड़ा (मन्त्री)
„ रमाकांत जी शर्मा (३५) (मन्त्री)
„ युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी (उप-मन्त्री)
„ पं० रामस्वरूप जी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)
„ ला० प्रभुलाल गोयल (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष)
„ कोठारी जगन्नाथदास जी (आय-व्यय-निरीक्षक)

सन् १९३६-३८

श्री बा० रघुवीरसहाय जी प्रधान
„ डा० काशीप्रसाद जी उप-प्रधान
„ कन्हैयालाल जी „
„ रमाकांत जी शर्मा मन्त्री
„ युधिष्ठिर प्रसाद जी चतुर्वेदी उप-मन्त्री
„ पुरुषोत्तमलाल जी „
„ वैद्य देवीप्रकाश जी अवस्थी पुस्तकालयाध्यक्ष
„ पं० प्रेमनिधि जी शास्त्री उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
„ रामस्वरूप जी मिश्र उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
„ कोठारी जगन्नाथदास जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९३८-४०

श्री बालकृष्ण जी दुबे प्रधान
„ सुन्दरलाल जी जानी उप-प्रधान
„ चिरंजीलाल जी पोद्दार „
„ कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक
„ मा० चम्पाराम जी मन्त्री
„ युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी उप-मन्त्री
„ पं० नन्दकुमार जी „

श्री चम्पालाल जी कवीश्वर पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुलाल गोयल उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, जयशंकर जी चतुर्वेदी ,,

सन् १९४०-४३

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, सुन्दरलाल जी जानी उप-प्रधान
,, चिरंजीलाल जी पोद्दार ,,
,, पं० नत्थनलाल जी शर्मा मन्त्री
,, युधिष्ठिरप्रसाद जी उप-मन्त्री
,, मदनलाल जी बजाज ,,
,, प्रेमनिधि जी शास्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुदयाल जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, तुलसीराम जी ,,
,, कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९४३-४६

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, चिरंजीलाल जी पोद्दार उप-प्रधान
,, चतुर्भुजदास जी चतुर्वेदी ,,
,, पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
,, प्रभुदयाल जी दयालु उप-मन्त्री
,, प्रेमनाथ जी चतुर्वेदी पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुलाल गोयल उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९४६-४९

श्री बालकृष्ण जी दुवे (प्रधान)
, चिरंजीलाल जी पोद्दार (उप-प्रधान)
,, चन्द्रशेखर जी शर्मा ,,
,, पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
,, प्रो० हरसहाय जी उप-मन्त्री
,, प्रभुलाल गोयल पुस्तकालयाध्यक्ष
,, श्रीचन्द्र जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, बनवारीलाल जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९४९-५०

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, प्रो० किशोरीलाल जी उप-प्रधान
,, प्रो० हरसहाय जी मन्त्री
,, शान्तिदेवी जी उप-मन्त्री
,, प्रभुलाल गोयल पुस्तकालयाध्यक्ष
,, प्रभुदयाल जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
,, गोपालदास जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९५१

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, चिरंजीलाल जी पोद्दार उप-प्रधान
,, प्रो० कुंजविहारी लाल जी मन्त्री
,, गोपालदास जी गोयल उप-मन्त्री
,, प्रभुदयाल जी दयालु पुस्तकालयाध्यक्ष

सन् १९५२

श्री बालकृष्ण जी दुवे प्रधान
,, चिरंजीलाल जी पोद्दार उप-प्रधान
,, युधिष्ठिरप्रसाद जी आय-व्यय-निरीक्षक
,, कैलाशचन्द्र जी खन्ना मन्त्री
,, गोपालदास जी उप-मंत्री
,, योगेन्द्रदत्त पाराशर पुस्तकालयाध्यक्ष

सन् १९५३-५५

श्री चिरंजीलाल जी पोद्दार प्रधान
,, डा० गोपाललाल जी उप-प्रधान
,, कैलाशचन्द्र जी खन्ना मन्त्री
,, गोपालदास जी उप-मन्त्री
,, नत्थनलाल जी कोषाध्यक्ष
,, प्रभुदयाल जी दयालु पुस्तकालयाध्यक्ष
,, नत्थीलाल जी आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९५५-५८

श्री डा० कुंजविहारी लाल जी प्रधान
,, मदनलाल जी बजाज उप-प्रधान

श्री भगवानदास गोठी कोषाध्यक्ष
,, प्रो० किशनकिशोर जी मन्त्री (१९५५-५६)
,, मा० रामदत्त जी शर्मा मन्त्री (१९५६-५८)
,, नत्थीलाल जी पुस्तकालयाध्यक्ष
,, गोपालदास गोयल आय-व्यय-निरीक्षक

सन् १९५८-६१

श्री डा० कुंजविहारी लाल गुप्त प्रधान, एम० ए० पी-एच० डी०
,, ला० मोतीलाल जी वजाज उप-प्रधान
,, ला० मदनलाल जी वजाज मन्त्री
,, पं० ओमप्रकाश जी दुबे उप-मन्त्री
,, पं० रामदत्त जी शर्मा एम० ए०, बी० एड्०, केन्द्र-व्यवस्थापक
,, पं० प्रभूदयाल जी दयालु पुस्तकालयाध्यक्ष
,, पं० रामनारायण जी वकील बी० ए०, एल-एल०बी०, आय-व्यय-निरीक्षक
,, ला० भगवानदासजी गोठी, कोषाध्यक्ष

परिशिष्ट ८ (अ)

विवरण पुस्तक आदान-प्रदान (१९४२ से १९६० तक)

१.	१९४२-४३	६८१६
२.	१९४३-४४	९५८१
३.	१९४४-४५	११३५६
४.	१९४५-४६	१०४३८
५.	१९४६-४७	१४७२३
६.	१९४७-४८	१३२२६
७.	१९४८-४९	१०२३८
८.	१९४९-५०	८२९०
९.	१९५०-५१	१००५०
१०.	१९५१-५२	९६१९
११.	१९५२-५३	९९६५
१२.	१९५३-५४	११४८३
१३.	१९५४-५५	१०३६५
१४.	१९५५-५६	१२१५४
१५.	१९५६-५७	१०१७६

१६.	१६५७-५८	१२६६१
१७.	१६५८-५६	१४८५७
१८.	१६५६-६०	१७६५१
१६.	१६६०-६१	२१८५७

टिप्पणी—सन् १६४२ से पूर्व का विवरण उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट ८ (ब)

सूची दानदाता—नवीन भवन निर्माण हेतु (सन् १६५७)

१.	विकास विभाग राजस्थान	३५००)
२.	नगरपालिका भरतपुर	३०००)
३.	श्री सन्तोषीलाल जी मँहगाये वाले	समिति भवन का फर्श
४.	श्री हरिचरनलाल जी नई मण्डी	१५५१)
५.	महन्त श्री नारायणदास जी मन्दिर श्री मोहनजी किला	७०१)
६.	श्री रामजी जगन्नाथ जी दीपक गुरु नानक स्ट्रीट नई मण्डी	५०१)
७.	श्री मुरारीलाल जी चतुर्वेदी	१५२)
८.	श्री तोताराम, रामजीलाल जी मँहगाये वाले	१५१)
९.	कोठी हरभानसिंह जी	१५१)
१०.	श्री धीरीसिंह जी चौहान	१५१)
११.	श्री मुरलीधर महेन्द्रकुमार जी मथुरा	१५१)
१२.	श्री भरतपुर आइरन एण्ड सिन्डीकेट गंगामन्दिर	१५१)
१३.	श्री हरीराम, श्रीराम बर्मा शैल	१५१)
१४.	श्री बल्लीराम, बद्रीप्रसाद जी व्याना	१५१)
१५.	श्री रामस्वरूप, मोतीलाल जी अरोड़ा	१५१)
१६.	श्री रामचन्द जी माथुर	१५१)
१७.	श्री भगवानदास जी गोठी	१५१)
१८.	श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बा० हरिदत्त जी ऐडवोकेट	१५१)
१९.	श्री रामजीलाल, बद्रीप्रसाद सर्राफ	१०१)
२०.	श्री रामशरन, गोविन्दशरन जी सर्राफ	१०१)
२१.	श्री भजनलाल जी प्रेसीडेण्ट नई मण्डी	१०१)
२२.	श्री प्रोहित विद्याधर जी	१०१)
२३.	श्री मदनलाल जी वकील	१०१)
२४.	श्री सूरजमल, प्रभूलाल जी छोंकार	१०१)
२५.	श्री साधूराम जी ठेकेदार	५१)

२६.	श्री दुर्गाप्रसाद निरंजनलाल बजाज	५१)
२७.	श्री रामचन्द कृष्णलाल बजाज	५१)
२८.	श्री राघेलाल जी गणेशीलाल जी सर्राफ	५१)
२९.	श्री रामनारायन मटोलीरामजी मँहगाये वाले	५१)
३०.	श्री नत्थीलाल जी शर्मा टाटानगर	५१)
३१.	श्री नत्थीलाल प्यारेलाल आड़तिया	५१)
३२.	श्री कन्हैयालाल बद्रीप्रसाद जी उच्चैन	५१)
३३.	श्री मिट्ठनलाल जगन्नाथप्रसाद मँहगाये वाले	५१)
३४.	श्री सांवलसिंह पन्नालाल जी उच्चैन	५१)
३५.	श्री सामलियाराम रामचरनलाल जी कसेरे	५१)
३६.	श्री कन्हैयालाल छैलबिहारी जी सौदागर	५१)
३७.	श्री चुन्नीलाल रामप्रसाद जी बजाज	५१)
३८.	श्री ठा० मेवाराम जी रिटायर्ड अफसर कोठी खास	२१)
३९.	श्री गोपालदास जी गोयल एम० कॉम०	११)
४०.	श्री बैजनाथ जी सर्राफ	११)
४१.	श्री प्यारेलाल जी सर्राफ	११)
४२.	श्री बाबूलाल जी हलवाई	११)
४३.	श्री तन्नूलाल जी साईकिल वाले	११)
४४.	श्री हुकमचन्द जी गुप्ता महल खास	११)
४५.	श्री छोटेलाल नारायनलाल जी परचूनिया	११)
४६.	श्री मोहनलाल जी सर्राफ गढ़ी नं० ९७	११)
४७.	श्री कैलाशचन्द जी गढ़ी नं० १८१	११)
४८.	श्री चौ० दौलतराम जी चतुर्वेदी	१२)
४९.	श्री रमनलाल जी बजाज गढ़ी नं० १८१	७)
५०.	श्री राधारमन बूरे वाले गढ़ी नं० ४२	७)
५१.	श्री राधारमन बूरे वाले गढ़ी नं० ४६०	७)
५२.	महन्त श्री गंगादास जी महाराज	५)
५३.	श्री स्योबख्श जी पटवारी	५)
५४.	पं० गौरीशंकर जी दरोगा	५)
५५.	श्री रामसहाय जी नाटानी	५)
५६.	श्री केलाबक्सजी गोयलगढ़	५)
५७.	श्री रामकिशन जी अनाह गेट	५)
५८.	श्री सूरजभान, चन्द्रभान	२)
५९.	श्री ब्रजेन्द्रसिंह जी गोपालगढ़	२)

६०. श्री सोहनलाल जी हलवाई ५)
६१. श्री शान्तीशाल जी गोपालगढ़ ५)
६२. श्री सुरेन्द्रसिंह जी राजाजी ५)
६३. श्री सम्पूर्णदत्त जी शास्त्री २)
६४. श्री महावीरप्रसाद जैन २)
६५. श्री बाबूलाल जी कटारा २)
६६. श्री चन्दनसिंह जी गोपालगढ़ १)
६७. श्री पदमसिंह जी गोपालगढ़ १)
६८. श्री मा० नारायनलाल जी १)
६९. श्री जगदीशप्रसाद जी थानेदार १)
७०. श्री प्रकाशचन्द्र जी कम्पाउण्डर १)
७१. श्री पदमसिंहजी ठेकेदार १)
७२. श्री बहादुरसिंह जी १)
७३. श्री उदयभानसिंह जी १)
७४. श्री फतेहसिंह जी १)

परिशिष्ट ६

आय-व्यय श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

क्रम	सत्र	आय		व्यय	
१	सन् १९१२-१३	८०९.७२	न० पै०	६९०·४१	न० पै०
२	,, १९१३-१४	१०२५·०९	,,	१०२७·३७	,,
३	,, १९१४-१५	५५६·००	,,	५४६·१२	,,
४	,, १९१५-१६	३०९·८८	,,	३९१·००	,,
५	,, १९१६-१७	३३१६·३७	,,	२७९०·७३	,,
६	,, १९१७-१८	२७७४·००	,,	३१३६·५८	,,
७	,, १९१८-१९	१८४१·६२	,,	१८७४·९८	,,
८	,, १९१९-२०	२५५·८८	,,	२३७·५९	,,
९	,, १९२०-२१	६६६·३७	,,	४०४·८८	,,
१०	,, १९२१-२२	५४४·९१	,,	३८७·७१	,,
११	,, १९२२-२३	५७३·०२	,,	५६०·९६	,,
१२	,, १९२३-२४	४४९·२२	,,	३१९·२७	,,
१३	,, १९२४-२५	९५१·८८	,,	३९९·५३	,,
१४	,, १९२५-२६	४०७६·६२	,,	२८२९·७८	,,
१५	,, १९२६-२७	९१२·३३	,,	१९३१·३३	,,

१६	,,	१९२७-२८	११०७·९३	,,	१३९३·६८	,,
१७	,,	१९२८-२९	६७६·७५	,,	५५७·१७	,,
१८	,,	१९२९-३०	३११·२५	,,	३२४·०५	,,
१९	,,	१९३०-३१	३८३·२५	,,	२८९·५६	,,
२०	,,	१९३१-३२	४१७·५०	,,	४३३·२३	,,
२१	,,	१९३२-३३	५२५·८०	,,	३७५·९४	,,
२२	,,	१९३३-३४	६६३·१६	,,	८३०·९१	,,
२३	,,	१९३४-३५	५४१·८८	,,	५५२·९०	,,
२४	,,	१९३५-३६	६६१·६०	,,	४८८·६०	,,
२५	,,	१९३६-३७	६७१·२७	,,	६९३·३४	,,
२६	,,	१९३७-३८	६२०·७५	,,	५४५·०५	,,
२७	,,	१९३८-३९	५२४·२५	,,	५३२·७५	,,
२८	,,	१९३९-४०	७१६·४३	,,	५५२·४२	,,
२९	,,	१९४०-४१	८२३·३९	,,	७७६·५६	,,
३०	,,	१९४१-४२	८८२·१६	,,	७२६·५०	,,
३१	,,	१९४२-४३	८६८·४१	,,	८३५·३३	,,
३२	,,	१९४३-४४	२०३७·८१	,,	१४३९·५६	,,
३३	,,	१९४४-४५	२२५०·८१	,,	१७९८·५०	,,
३४	,,	१९४५-४६	२२७९·१६	,,	१९७३·७३	,,
३५	,,	१९४६-४७	२६५५·६९	,,	२२८२·६४	,,
३६	,,	१९४७-४८	३२०८·१७	,,	२५९०·००	,,
३७	,,	१९४८-४९	३११२·७८	,,	२२२४·७८	,,
३८	,,	१९४९-५०	३६०८·८७	,,	३१४२·११	,,
३९	,,	१९५०-५१	३०५९·३१	,,	३१११·९८	,,
४०	,,	१९५१-५२	३०४१·३१	,,	२५३१·०३	,,
४१	,,	१९५२-५३	३७५५·७८	,,	३७५४·७२	,,
४२	,,	१९५३-५४	४५६८·९१	,,	३९६२·७८	,,
४३	,,	१९५४-५५	५७४१·२८	,,	५९४९·५८	,,
४४	,,	१९५५-५६	५०७१·६२	,,	४९८४·९३	,,
४५	,,	१९५६-५७	१०२९९·९१	,,	८५६७·८३	,,
४६	,,	१९५७-५८	२४०८२·४१	,,	२४१२४·३६	,,
४७	,,	१९५८-५९	७४७०·३७	,,	७९०५·५९	,,
४८	,,	१९५९-६०	८०५३·७४	,,	६४१६·७९	,,
४९	,,	१९६०-६१				

परिशिष्ट १०

परीक्षार्थी विवरण, परीक्षा केन्द्र : स्थापित १ सितम्बर १९२६ प्रथमा, मध्यमा, (उत्तमा १९५१)

सन्	प्रथमा	मध्यमा	उत्तमा	वै. वि.	कृ. वि.	उपवैद्य
१९२६	१	१				
१९२७	१	२				
१९३०	२	१				
१९३४	×	२				
१९३५	४	१	×	४	×	×
१९३६	५	×	×	४	×	×
१९३७	१	२	×	२	×	×
१९३८	×	१	×	१	×	×
१९३९	×	६	×	×	×	×
१९४०	१	१	×	×	×	×
१९४१	१	४	×	१	×	×
१९४२	१	८	×	१	×	×
१९४३	×	१०	×	१	×	×
१९४४	३	२	×	×	×	×
१९४५	३	१	×	×	×	×
१९४६	×	१२	×	×	×	×
१९४७	१०	१४	×	×	×	×
१९४८	२७	४०	×	×	×	×
१९४९	२३	५२	×	१८	×	×
१९५०	८	४२	×	१३	×	×
१९५१	१८	७१	४३	९	१	×
१९५२	२८	९८	६८	१८	३	९
१९५३	९	५१	५३	२९	२	७
१९५४	३	३०	४२	१९	×	३
१९५५	१२	३७	३९	१९	६	९
१९५६	९	१९	३५	२८	३	६
१९५७	७	२५	३१	२४	३	६
१९५८	२	१९	१९	३६	१	९
१९५९	×	१०	३३	६४	२	२९
१९६०	४	३२	४३	६८	८	२२

रामदत्त शर्मा, एम० ए०, बी० एड्०, साहित्यरत्न,
केन्द्र-व्यवस्थापक

परिशिष्ट ११

समिति में समय-समय पर आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों की कतिपय

सम्मतियाँ

भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति का अवलोकन किया। चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। इसका पुस्तकालय भी देखा। पुस्तकों का संग्रह भी खासा है। इससे हिन्दी का प्रचार मजे में हो रहा है। इसके संचालक बड़े उत्साही और कार्यकुशल हैं। भगवान करे इसकी दिन-दिन उन्नति हो।

जेठ कृष्णा २ सं० १९७२ —जगन्नाथ चतुर्वेदी कलकत्ता

भरतपुर की "हिन्दी साहित्य समिति" उन उत्साहियों से संचलित संस्था है जिनमें प्राण है, जिन्हें भाव है और हृदय है। भारत के इस प्रांत में इस संस्था का होना आवश्यक है यह बात केवल इस संस्था की सफलता से प्रमाणित होती है। इसकी अधिक सफलता की आशा करना तो हमारा कर्त्तव्य ही है परन्तु उससे मूल्यवान कर्त्तव्य यहाँ के उत्साही विद्वानों का है जिनके प्रयत्न पर हमारी आशा की पूर्ति है।

आसा-कृ० १२--७२ वि० —साहित्याचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
'शारदा' सम्पादक प्रयाग

मैंने स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण किया और कार्यकर्त्ताओं के स्वाभाविक उत्साह और कार्यनिष्ठता देखकर मैं बहुत संतुष्ट हुआ हूँ। इस 'समिति' द्वारा हिन्दी देवनागरी जगत की बहुत कुछ आशा उन्नति के लिये रखता हुआ ईश्वर से इसकी दृढ़ता के लिये प्रार्थी हूँ।

दि० २०-९-१५ —गणेशदत्त शास्त्री

हिन्दी साहित्य-समिति-भरतपुर का पुस्तकालय देखने का आज मुझको सौभाग्य प्राप्त हुआ-देख कर बड़ा आनन्द हुआ—सभासदों का उत्साह अत्यंत प्रंशसनीय एवं अनुकरणीय है। भरतपुर राज्य में अनेक उत्तमोत्तम हिन्दी कवि हुए हैं—उनके हस्तलिखित बहुमूल्य ग्रन्थों की खोज और उनके संग्रह व प्रकाशन से हिन्दी संसार को बहुत लाभ पहुँच सकता है। आशा है कि समिति यथा-

शक्ति इस कार्य को भी हाथ में लेगी—ईश्वर से प्रार्थना है कि समिति की उत्तरोत्तर उन्नति हो और हिन्दी की सेवा में इसको पूर्ण सफलता प्राप्त हो।

दि० २१-१०-१६ —जीवनशङ्कर याज्ञि
एम० ए०, एल-एल०बी०, अलीग

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के सभ्यों का यत्न बड़ा ही प्रशंसनी है। राजपूताने में यह पहली साहित्य समिति है। उत्साही सभ्यों ने बड़ी उदारता के साथ द्रव्य-दान कर समिति का सुन्दर मकान भी बना दिया है पुस्तकों की संख्या भी अच्छी है। मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों की संख्या भी अच्छी है। यहाँ के पुस्तकों आदि के पढ़ने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। ऐसी समितियों से जनता को बहुत लाभ पहुँच सकता है। चार वर्ष पहले मैंने इस संस्था को देखा था। उसमें और आज की दशा में बहुत अंतर है और आशा है कि इसके उत्साही सभासद इसको और भी उन्नति देकर जनता के ज्ञान-संपादन में सहायक होंगे। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को इसकी सहायता करनी चाहिए। इस समिति की वर्तमान उन्नत दशा देखकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ।

दि० ३-२-२१ —गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और इसके इतिहास को जानकर इसके संचालकों के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उनके हिन्दी-प्रेम, लगन और सत्साहस के लिये मैं उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

समिति निस्सन्देह राजपूताने की श्रेष्ठ संस्थाओं में से है। इसके द्वारा जो काम हुआ है, वह अभिनन्दनीय है; और अब, भविष्य में, उसके द्वारा जो हिन्दी साहित्य की सेवा होने वाली है, आशा है, वह हिन्दी संसार के लिए प्रेम और गर्व की चीज होगी।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि समिति उत्तरोत्तर उन्नति करे और इसके संचालकगण अपने सौभाग्य के दिनों में उन दिव्य गुणों को न भूलें, जिनके बल पर वह समिति को इस रूप में लाने में समर्थ हुए हैं।

समिति का प्रबन्ध अच्छा है। प्रबन्धक स्वयं विद्यारसिक हैं, इसलिये वे वैसे ही प्रेम से काम करते हैं जैसे माली अपने लगाये हुए वृक्षों की ममता के साथ देखरेख करता है।

भरतपुर
२-४-२७ —क्षमानन्द राहत

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण करने पर यह पता चला कि समिति का कार्य ठोस है। पुस्तकालय और वाचनालय का प्रबन्ध जिस उत्तमता से किया जाता है वह एक आदर्श की वस्तु है। यहाँ समिति को शहर के बड़े-बड़े धनीमानी सज्जनों का सहयोग प्राप्त है और वे लोग बड़े सेवाभाव से उसके प्रत्येक कार्य में योग देते हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि समिति में मासिक सभाएँ होती हैं और उनके द्वारा साहित्य की समस्याओं पर विचार होता है। समिति को अपनी इन सभाओं में कुछ रचनात्मक कार्य भी जोड़ना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों के जिम्मे साहित्य के प्रमुख अंगों का अध्ययन और परिशीलन का कार्य सुपुर्द करके स्थायी कार्य का प्रयत्न भी करना चाहिए। साथ ही आगरा और मथुरा के निकट होने का लाभ भी, वहाँ के साहित्यिकों से सदैव रचनात्मक कार्य के लिये आमन्त्रित करके, प्राप्त करना चाहिये। भगवान समिति के कार्य को उत्तरोत्तर बढ़ावें, यही कामना है।

भरतपुर
१४-४-४१

—पद्मसिंह शर्मा

भरतपुर साहित्य समिति का कार्य देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ के कार्यकर्त्ताओं का सद्भाव, स्नेह और सेवा का आदर्श भी वस्तु है। समिति को भी एक सजीव संस्था के रूप में पिछले ३९ वर्षों से कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसके पास अपना भवन है, पुस्तकालय है, वाचनालय है। २०० से अधिक सदस्य हैं और सबसे अधिक जनता की सहानुभूति प्राप्त है। भरतपुर राज्य में साहित्य सेवा का जो सराहनीय कार्य समिति कर रही है, उसकी अधिक प्रशंसा न कर मैं यही कहना चाहूँगा कि वह अपना कार्यक्षेत्र बढ़ावे। राज्य के स्थान-स्थान, ग्राम-ग्राम में साहित्य के केन्द्र स्थापित करे और अपने सम्पर्क को राज्य के बाहर भी स्थापित रखे। मैं समिति की पूरी सफलता चाहता हूँ।

भरतपुर
१४-४-४१

—जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
व्रज साहित्य मंडल, मथुरा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के वार्षिकोत्सव पर मेरा यहाँ आना हुआ। समिति का कार्य देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। समिति की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए हृदय से शुभाकांक्षी हूँ। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि समिति सम्मेलन की परीक्षाओं को लोकप्रिय बनाने में योग दे रही है। आशा है कि यह समिति हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार तथा अभिवृद्धि में योग देगी।

१४-४-४१

—गुलाबराय एम० ए०
प्रो० सेंट जोन्स कालिज आगरा, रिटायर्ड
प्राइवेट सेक्रेटरी, छतरपुर दरबार

आज हिन्दी साहित्य समिति के वार्षिक समारोह के अवसर पर उसके कार्यालय तथा पुस्तकालय को देखने का अवसर मिला। समिति अत्यन्त उपयोगी कार्य कर रही है और यह प्रसन्नता की बात है कि उसका संचालन सुयोग्य हाथों में है। कार्याधिकारीगण उचित समझें, और सम्भव हो तो यहाँ व्रज साहित्य के अध्ययन-अध्यापन का और प्राचीन व्रज-साहित्य के प्रकाशन का भी प्रबन्ध करें। इसके लिए भरतपुर बहुत ही उपयुक्त स्थान है क्योंकि यह मथुरा और आगरा के निकट और तथा व्रजभूमि के केन्द्र में स्थित है।

—महेन्द्र
सम्पा० 'साहित्य सन्देश'

१४-४-४१

भरतपुर से स्वर्गीय मयाशंकर जी याज्ञिक ने प्राचीन पुस्तकों के खोज-कार्य में अच्छा प्रयत्न किया है। समिति उसे ध्यान में रख कर कार्य करे तो शुभ है।

—गोपालप्रसाद व्यास

मैंने सौभाग्यवश श्री भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति को देखा। मैं समझता हूँ, समस्त प्रान्त में यही एक ऐतिहासिक हिन्दी का स्थान है राजस्थान (राजपूताने) में तो हिन्दी का यही एक सुन्दर-सुघड़ मन्दिर है। हिन्दी के इस आश्रम को देखकर किस हिन्दी भक्त की आँखें शीतल न होंगी? राजस्थान के इस हिन्दी निकेत से मैंने एक स्थाई प्रेरणा प्राप्त की है, प्रत्येक रियासत में हिन्दी के ऐसे भरेपूरे आश्रम स्थापित होने चाहिये। जहाँ तक राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सवाल है, उसे हम उस समिति के कार्यकर्त्ताओं के अथक तथा अविराम उत्साह तथा प्रयत्न से उदाहरण ग्रहण करना चाहिये।

आज जब हिन्दी पर चतुर्मुखी प्रहार हो रहा है, समिति के सदस्यों की हिन्दी भक्ति देखकर यह विश्वास होता है, कि राजस्थान में तो हिन्दी का बाल बाँका न होगा। समृद्ध पुस्तकालय, विस्तृत वाचनालय तथा एक सजीव वातावरण एक सार्वजनिक संस्था के लिए स्थायी प्राणधाराएँ हैं। मैं समिति के कर्मनिष्ठ अधिकारियों तथा सजीव उत्साही सदस्यों से नम्रतापूर्वक प्रार्थना करूँगा कि वे समिति के अधीन रात्रि-पाठशालाएँ खोलें, जहाँ निरक्षर पढ़ाये जायें। समिति के पास प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह भी है। क्या अच्छा हो, उनकी एक बिबिलोग्राफी बन जाय।

बाकी तो मैं सीखकर ही जा रहा हूँ। मैं समिति के अतीत और आज के सभी तपस्वी कार्यकर्त्ताओं को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता तथा उन सबका अभिनन्दन करता हूँ।

—जनार्दनराय नागर
प्रधान मन्त्री, राजस्थान हि० सा० सम्मेलन

२७-६-४१

बहुत दिनों की बात है; जब मैं अपने परम सुहृद श्री अधिकारी जी के यहाँ भरतपुर में अतिथि हुआ था, उस समय भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति नवजात शिशु थी। उस घटना के ऊपर से ढाई दशक से भी अधिक वर्षों का प्रवाह प्रवाहित हो चुका है। आज मुझे पुनः इस संस्था के जिसमें अनेक तेजस्वी आत्माओं का सर्वस्व ओत-प्रोत है—इस समिति के माननीय मन्त्री पंडित श्री नत्थनलाल जी शर्मा के साथ अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। समिति के अपने सुन्दर भवन में सुन्दर वृहत् पुस्तकालय को देखकर परमानन्द हुआ। वह पुस्तकालय जो राष्ट्र, धर्म, समाज के पवित्र और ओजपूर्ण तत्त्वों के साथ खड़े हैं, अवश्य ही प्रजा के उत्कर्ष के सम्पादक हैं। मैंने देखा कि समिति के इस पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह विचारपूर्ण उदारता के साथ हुआ है। वैदिक साहित्य का भी संग्रह है लौकिक साहित्य का भी संग्रह है। हिन्दी के प्राचीन और नवीन कवियों के काव्यों का अधिक मात्रा में संग्रह है। पुस्तकालय राष्ट्र की एक बड़ी भारी सम्पत्ति होती है। पुस्तकालय राष्ट्रीय कवियों, लेखकों और वक्ताओं का चिरस्थायी स्मारक होता है। अतः इसके प्रति श्रद्धापूर्ण भक्ति का होना स्वाभाविक है। पुस्तकों के अतिरिक्त यहाँ दैनिक, साहित्यिक, मासिक पत्रों का भी समावेश है जिससे भरतपुर की जनता को अत्यधिक लाभ उठाने का सुअवसर मिलता है। यहाँ हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों का भी संग्रह है। पुस्तकालय की सुव्यवस्था को देखकर यह निर्व्याज प्रतीत होता है कि इसके कार्यकर्त्ता उत्साही और महानुभाव हैं। इनके उत्साह की वृद्धि हो और यह समिति अनेक लोकोपयोगी कार्यों के सम्पादन करने में सफल हो, यह मेरी शुभेच्छा है।

—स्वामी भगवदाचार्य
चम्पा गुफा, माउन्ट आबू

फा० शु० १२-१९९८ वि०

भरतपुर में आज प्रसंगवश आकर जो सबसे अद्भुत वस्तु मुझे मालुम हुई वह स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति है। राजस्थान की यह अद्वितीय संस्था राजस्थान के प्रगतिहीन वातावरण को चुनौती सी देती हुई भूत और भविष्य को वर्तमान आशावाद के सूत्र से संयोजित कर रही है और कर्मण्यता का जीवित उदाहरण उपस्थित कर रही है। इस संस्था के संचालकों से भेंट कर मुझे उस अध्यवसायशीलता तथा अदम्य उत्साह का परिचय मिला जिसे होने पर ही महत् कार्यों को सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति उत्तरोत्तर उन्नति करती हुई राजस्थान के अन्य प्रान्तों में भी जीवन-संचार कर सकेगी।

दि० २-५-४२

—रामकृष्ण शुक्ल

भरतपुर सदा से हिन्दी साहित्य की भूमि है, व्रज से सम्बन्ध होने के कार तो यह महत्त्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ एक बार अखिल भारतवर्षीय हिं साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन भी तो हो चुका है—ऐसे नगर में हि साहित्य के अच्छे वाचनालय का होना परमावश्यक था ही;—हर्ष की बात है स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति ने इसकी अधिकांश में पूर्ति की है। मुद्रि तथा हस्तलिखित पुस्तकों का यहाँ यथेष्ट संग्रह है। फिर भी इस संग्रह उत्तरोत्तर वृद्धि ही करते रहना चाहिये। जहाँ पाठकों की पुस्तकें पढ़ते-पढ़ तृप्ति होती नहीं है; वहाँ ही तो सरस्वती रहती है मूर्त्तिमान। वाचनालय स्वर्गीय नरेश, अधिकारी जी और भाई सत्यनारायण कविरत्न के मैंने चि भी देखे; सभी की मुझे याद आ गई क्योंकि इन सभी से मेरा अच्छा परि था। समिति का भवन अभी बनना बाकी है—आशा है यहाँ के दानवीर सज्ज शीघ्र ही इसे पूरा करेंगे। अन्त में यही लिखना है कि समिति को देखकर मु बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जगन्नियन्ता इसकी उत्तरोत्तर उन्नति करें, यही मे शुभकामना है।

९-५-४३ —राधेश्याम कथावाचक (वानप्रस्थ

आज अकस्मात् ही हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व हिन्दी समि के सदस्यों का दर्शन कर चित्त प्रसन्न हुआ। समिति के कार्यकर्त्ताओं व सद में हिन्दी के प्रति अनुराग है, समिति का अपना भवन तथा समिति पुस्तकालय इसका प्रभाव है। मुझे विश्वास है कि यह समिति अवश्य उन्न करेगी और समस्त भरतपुर राज्य में हिन्दी साहित्य के प्रचार में सफल होगी

दि० ५-१०-४३ —कृष्णच
सम्पादक 'अर्जु

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व वाचनालय देखने मुझे प्रसंग मिला। मुझे प्रसन्नता है कि इस समिति द्वारा हिन्दी की सेवा जा रही है। मुझे अनुमान है कि इसके कार्यकर्त्ता उत्साही और त्यागशी सज्जन हैं। तभी तो इसकी उन्नति इतनी है। परमात्मा इसकी दिनों उन्नति करे।

२०-५-४६ —घनश्याम सिंह गु
स्पीकर, मध्यप्रान्तीय विधान स

आज मुझे श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर का दर्शन-लाभ हुआ इस संस्था ने न केवल राजस्थान में, परन्तु भारतवर्ष में हिन्दी की जो सेवा है वह गौरवप्रद बात है। इस संस्था की ओर से एक समृद्ध पुस्तकालय औ

सर्वांगीण वाचनालय चल रहा है। भरतपुर की यह एक विशिष्ट संस्था है। संस्कार दान का यह उत्तम साधन है। भरतपुर के नागरिकों को ऐसी संस्था चलाने के लिये धन्यवाद दिये विना नहीं रहा जाता। आशा है कि इस संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति होती रहेगी। सब संचालकों का परिश्रम सुफलित हुआ है। भगवान संस्था पर दया बरसाता रहे।

भरतपुर
५-१-५४

—गोकुलभाई भट्ट

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर को आज मुझे देखने का अवसर मिला। यों तो मेरा भरतपुर से बहुत पुराना घनिष्ठता का सम्वन्ध है परन्तु समिति के संचालकों ने मुझे पहले यहाँ आने का अवसर नहीं दिया। आज इस संस्था की विशालता को देखते हुए यह मेरी शिकायत का कारण वन गई, ऐसा मैं मानता हूँ।

सचमुच ही यह एक गौरव की बात है कि यह संस्था पिछले ४५ वर्ष से काम कर रही है और दिनोंदिन उन्नति करती जा रही है। यह स्वयं में इस संस्था की लोकप्रियता का एक सबूत है। संचालकों ने मुझे वताया कि इस संस्था ने कई प्रकार के उतार-चढ़ाव देखे हैं, परन्तु अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा के कारण अपनी प्रगति जारी रखने में सफल हुई है। आज इसे राज्य से भी ठीक सी सहायता मिलने लगी है इसीलिए संस्था के संचालकों को शायद यह उत्साह हुआ है कि इसके लिये सुन्दर भवन बनायें। इसके लिये प्रयास भी शुरू हो गये हैं। मैं ऐसी पुरानी और लोकप्रिय संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ। पूर्व सेवा-कार्य और इतिहास दानी महानुभावों को इस संस्था को और भी उपयोगी वनाने के कार्य में सहायता करने के लिये प्रभावित करेगा, ऐसी मेरी पूर्ण आशा है ?

भरतपुर
१०-४-५४

—भोलानाथ तिवारी
शिक्षा-मन्त्री, राजस्थान

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की प्रमुख सांस्कृतिक संस्था है। यहाँ एक ही हाईस्कूल है, एक ही कालेज है, एक ही सिनेमा है और एक ही साहित्यिक संस्था है। समिति के पास अच्छा पुस्तकालय है और उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। यहाँ की जनता का सांस्कृतिक स्तर ऊँचा करने के लिये यह सराहनीय प्रयत्न कर रही है। मैं उसकी निरन्तर सफलता चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामबिलास शर्मा

मैंने इस पुस्तकालय को देखा। चित्त प्रसन्न हुआ। लगभग ४५ वर्ष से य
संस्था जनता की अनुपम सेवा कर रही है। इस संस्था को राजस्थान की
प्राचीनतम संस्थाओं में समझा जा सकता है। पुस्तकालय समाज के बौद्धिक
जीवन का प्राण है। इसमें सर्वोपयोगी ग्रन्थ हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ दे
कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस पुस्तकालय के लिये भवन निर्माण का प्रश्न है
संस्था के कार्यकर्त्ताओं का उत्साह देखकर यह प्रतीत होता है कि यह कल्पना
मूर्त्तरूप धारण कर लेगी।

—रामचन्द्र वामन कुंभा

११-१-५५ डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग, जयपुर

समिति बहुत समय से लगातार साहित्य प्रचार का काम करती रही है
पुस्तकालय और वाचनालय का कार्य उत्तरोत्तर प्रगति पर है। जो भाई इसमें
योग दे रहे हैं वे धन्य हैं। कार्य बहुत उत्तरदायित्व का है। किस पाठक को
कैसी चीज पढ़ने को दी जाय और कौनसी सामग्री पुस्तकालय में रखने योग्य
है, इस विषय में सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है। पुस्तकाध्यक्ष का अध्ययन
और मनोवैज्ञानिक ज्ञान बहुत उच्च स्तर का होना ही चाहिए। आशा है, राज
और समाज का इस संस्था को यथेष्ट सहयोग मिलता रहेगा।

भारतीय ग्रन्थमाला —भगवानदास केला
दारागंज (प्रयाग) १६-६-५५

मैंने आज इस संस्था को देखा। वास्तव में यह एक ठोस सेवा कर रही है।
आशा करता हूँ कि थोड़े समय में यह एक विशाल रूप धारण कर लेगी।

—विक्रमप्रसाद

१४-१२-५५ डिप्टी सेक्रेटरी, शिक्षा-विभाग

मुझे आज इस पुरानी और प्रतिष्ठित साहित्य संस्था और इसके वाचनालय
को देखकर बहुत हर्ष हुआ। कई पुरानी स्मृतियाँ ताजी हुईं। यही खेद रहा
कि अधिक समय यहाँ नहीं दे सका। इसमें नई से नई हिन्दी पुस्तकों का संग्रह
है—यह इस बात का सबूत है कि यहाँ के निवासी समय के साथ हैं। साहित्य
केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का ही अच्छा साधन नहीं है, बल्कि
समाज को नई चेतना देने और निर्माण का भी जबर्दस्त प्रेरक साधन है।
आशा है, भरतपुर के निवासी इससे पूरा लाभ उठाते होंगे। मैं इसकी हर तरह
उन्नति चाहता हूँ।

—हरिभाऊ उपाध्याय

दि० १७-२-५६ वित्त-मन्त्री, राजस्थान

आज भरतपुर नगर की श्री हिन्दी साहित्य समिति के वाचनालय और उसके पदाधिकारियों और कर्मचारियों के उत्साह को देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ। किसी भी देश के लिये उसका पुराना इतिहास और संस्कृति एक गौरव की बात होती है। विना अपने साहित्य को जाने कोई भी व्यक्ति देश-भक्त और देश-सेवक होने का अधिकारी नहीं हो सकता। यह जानकर मुझे और अधिक प्रसन्नता हुई कि यह संस्था ५० वर्ष से मातृ-भाषा की सेवा कर रही है। मुझे पूरी आशा है कि नगर-निवासी और राष्ट्रीय कर्मचारीगण इस संस्था को उचित सहायता करेंगे।

—महावीर त्यागी
रक्षा-मन्त्री, केन्द्रीय सरकार

दि० १-३-५६

आज समिति की मुलाकात ली। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। भारतवासियों की हिन्दी साहित्य द्वारा सेवा करने का समिति के संचालकों तथा सदस्यों की मनोकामना पूरी हो।

—उच्छृङ्गराय नवलशंकर ढेबर
कांग्रेस अध्यक्ष

२७-२-५७

आज मुझे हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समिति का भवन एक सुन्दर स्थान है, पुस्तकों के रखने का ढंग बहुत अच्छा है। पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह बहुत लाभप्रद है।

समिति एक बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है और उसे भरतपुर के सभी वर्गों से सहयोग व सहायता मिल रही है।

—जे० डी० वैश्य
डिप्टी डायरेक्टर, शिक्षा-विभाग, कोटा

११-११-५७

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के कार्य को देखा। मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इस समिति के पास अच्छे कार्यकर्त्ता हैं और उन्होंने सुन्दर भवन का निर्माण किया है। आशा है शेष कार्य भी सब के सहयोग से सम्पूर्ण हो जायगा और यह स्थान हिन्दी की सेवा का प्रमुख कारण बनेगा।

—मोहनलाल सुखाड़िया
मुख्य मन्त्री, राजस्थान

२-१२-५७

अच्छी संस्था, अच्छे कार्यकर्त्ता और अच्छा काम। हिन्दी की सेवा विशेष रूप से सराहनीय, ईश्वर से प्रार्थना कि संस्था के विकास में सहायता करे।

—शम्भूलाल शर्मा
डिप्टी डायरेक्टर

४-१२-५७

मैं आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन देख सका। बड़ा अच्छा लगा। बड़ा सुन्दर प्रयास है। जो सज्जन इस संस्था को चलाने में लगे हैं, बड़े उत्साही और धुन के पक्के मालुम हुए। मुझे आशा है उनके इन प्रयत्नों से जनता को पूरा लाभ मिलेगा और हिन्दी की उन्नति होगी।

—डा० राममनोहर लोहिया

यहाँ Andio-Visual Education का केन्द्र बड़ा अच्छा वन सकता है और चल सकता है। मैं जो सहायता दिलवा सकता हूँ, दिलवाने की कोशिश करूंगा।

—आर० पी० श्रीवास्तव

२६-३-५८

संयुक्त शिक्षाध्यक्ष, राजस्थान सरकार

मैं अपने दो वर्ष के कार्यकाल में इस संस्था की गतिविधि को निकट से देखता रहा हूँ। समिति के पुस्तकालय में विविध विषयों की पुस्तकों का अच्छा संग्रह है और समिति भवन भी अब सुन्दर बन गया है। समिति के पास साहित्य-साधना की दीर्घकालीन परम्परा भी है और देश की हिन्दी सेवा संस्थाओं में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मैं समिति की उत्तरोत्तर उन्नति की शुभकामना करता हूँ।

—विष्णुदत्त शर्मा

२५ अप्रैल ५८

जिलाधीश एवं जिला न्यायधीश, भरतपुर

मैंने बहुत समय से यह सुन रखा था कि भरतपुर में हिन्दी साहित्य समिति है। पर मैं अवकाश के अभाव में इस संस्था की प्रवृत्तियों से परिचय न प्राप्त कर सका था। आज मैंने समिति के नये भवन में स्थान पाने वाले संग्रहालय (पुस्तक) को देखा। नया भवन जितना सुन्दर है उतना ही यहाँ का पुस्तक-संग्रह है। राष्ट्रभाषा पद पर आसीन होने वाली हिन्दी भाषा का यह मन्दिर हम सब भारतीयों के लिये गौरव का द्योतक है। आशा है इस मन्दिर को साहित्यिक ही नहीं वरन् अन्य भी अपनायेंगे। प्रजातन्त्रीय युग में ऐसी संस्था का निजी स्थान है। इसकी तन-मन-धन से सेवा करना हम सब का पुनीत कर्त्तव्य है।

मैं इस संस्था की उत्तरोत्तर वृद्धि का आकांक्षी हूँ।

—सत्य प्रकाश

१२-६-५८

निर्देशक, पुरातत्त्व संग्रहालय विभाग,
राजस्थान सरकार

आज मैं हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के भवन में आया। भवन को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। वास्तव में इस क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रगति के लिये जो भी सेवाएँ समिति कर रही है वे अत्यन्त सराहनीय हैं। यह एक बहुत पुरानी संस्था है। इसकी प्रगति के लिये मैं हृदय से कामना करता हूँ।

—डा० कालूलाल श्रीमाली
शिक्षा-मन्त्री, भारत सरकार

आज हिन्दी साहित्य समिति भवन को मुझे देखने और उसके कार्यकर्त्ताओं से इसके संक्षिप्त इतिहास व वर्तमान स्थिति के विवरण सुनने का सुअवसर मिला। मुझे इस सुन्दर भवन व इसमें सुसज्जित पुस्तक-भण्डार को देखकर बड़ा हर्ष हुआ। वास्तव में यह संस्था हिन्दी-जगत् की व भरतपुर की जनता की बड़ी सेवा कर रही है और इसको सब हिन्दी-प्रेमियों व राज्य सरकार द्वारा उत्साहवर्धन के हेतु समुचित सहायता देना श्रेयस्कर ही होगा।

—अजितप्रसाद जैन
१-११-५८
खाद्य एवं कृषि मन्त्री, केन्द्रीय सरकार

आज हिन्दी साहित्य समिति-भवन आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह समिति गत ४७ वर्षों से हिन्दी-प्रसार और साहित्य-विस्तार के लिये प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इस समिति का देश के अनेक महान् साहित्य-महारथियों से सम्बन्ध रहा है। समिति का पुस्तकालय बड़ा सुन्दर है, उसमें पचासों हस्तलिखित प्रतियाँ हैं जो, आशा है, शीघ्र ही प्रकाश में आयेंगी। यह समिति सरकारी साहाय्य और जनता के सहयोग की पूर्ण अधिकारिणी है। मैं समिति की सफलता के लिए शुभ कामना करता हूँ।

६-११-५६
—हरिशंकर शर्मा, कविरत्न, डी० लिट्

हिन्दी साहित्य-समिति-पुस्तकालय भरतपुर एक साहित्यिक तीर्थ है। स्वच्छ स्वस्थ वातावरण में लगभग बारह हजार छपी पुस्तकें और साढ़े छः सौ के आसपास हस्तलिखित ग्रन्थ यहाँ केवल आलमारियों की शोभा नहीं बढ़ाते, लोग उनका उपयोग भली-भाँति करते हैं। सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र भी यहाँ है। श्रीमन्तों की सदेच्छा से हस्तलिखित ग्रन्थों की वृद्धि व रक्षा की आवश्यकता है। राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थ बिखरे पड़े हैं विदेशों से लोग आ आकर उन्हें खरीद ले जाते हैं।

सबसे बड़ी बात जो यहाँ देखी वह है सौजन्य और सद्व्यवहार। भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति व पुस्तकालय फले-फूले।

—शम्भुप्रसाद बहुगुणा
३०-११-५६ हिन्दी अध्यापक, आई० टी० कालेज, लखनऊ

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति का भवन एवं पुस्तकालय देखा। इसे देखकर प्रसन्नता होती हैं कि व्रजभूमि के इस साहित्य केन्द्र में आज भी साहित्य साधना के लिये उपयुक्त स्थान विद्यमान है और उनकी दिनोंदिन उन्नति भी होती जा रही है। इस केन्द्र द्वारा यदि इस भरतपुर क्षेत्र के विगत साहित्यकारों की खोज एवं उनकी कृतियों के संरक्षण और उद्धार का काम किया जावेगा तो एक वहुत वड़ा महत्वपूर्ण कार्य होगा। मैं हृदय से इस समिति की उन्नति चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि साहित्य-प्रचार एवं ज्ञान-प्रसार के साथ ही प्राचीन साहित्य की खोज तथा संरक्षण की भी ओर समिति पूरा-पूरा ध्यान देती रहेगी।

—रघुवीरसिंह
१२-९-६०
सदस्य, राज्य-सभा

मैंने आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन तथा पुस्तकालय देखा। भरतपुर जैसे स्थान में इतना सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। समिति के पास पुस्तकों तथा हस्तलिखित पुस्तकों का एक बहुमूल्य संग्रह है। समिति के कार्यकर्त्ता इसके लिये बधाई के पात्र हैं। पुस्तकालय तथा वाचनालय के अतिरिक्त समिति सम्मेलन परीक्षाओं का केन्द्र है तथा परीक्षाओं के लिये प्रशिक्षण की सुविधा भी यहाँ है। यह संस्था भरतपुर की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकता को पूरा करती है। ऐसी उपयोगी साहित्यिक संस्था को राज्य तथा जनता का आश्रय मिलना ही चाहिये।

—शंकरसहाय सक्सेना
१८-१२-६०
शिक्षा-संचालक, राजस्थान

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

का

संक्षिप्त कार्य विवरण

रविवार दि० १२-२-६१

प्रातः १० बजे—

१. ध्वजा-रोहण
२. ध्वज-वन्दना
३. मंगलाचरण
४. स्वागत गायन
५. स्वागताध्यक्ष का भाषण
६. उद्घाटन भाषण
७. धन्यवाद

रात्रि ७॥ बजे से—

१. गायन
२. कवि सम्मेलन (कविताएँ स्वतन्त्र होंगी)

सोमवर दि० १३-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

१. उपनिषद्
२. अन्ताक्षरी

मध्याह्न ३ बजे से—

१. गायन
२. उपनिषद्

रात्रि ७॥ बजे से—

गीता प्रवचन

मंगलवार दि० १४-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

उपनिषद्

मध्याह्न ३ बजे से—

१. उपनिषद्
२. वाद-विवाद प्रतियोगिता

रात्रि ७॥ बजे से—

१. वार्षिक रिपोर्ट मन्त्री द्वारा
२. संगीत सम्मेलन
३. धन्यवाद

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का संक्षिप्त विवरण

भरतपुर के साहित्यिक जीवन में १२ फरवरी १९६१ का शुभ दिन वि
उल्लेखनीय है। उस दिन यहाँ की प्रमुख साहित्यिक संस्था श्री हिन्दी सा
समिति ने अपना अर्द्ध शताब्दी स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक उल्लासपूर्ण वाता
में मनाया था। इस साहित्यिक मेले के लगभग ६ मास पूर्व इस सस्था की
कारिणी ने दिनांक ३-८-६० की बैठक में यह निश्चय किया था कि 'राज
साहित्य अकादमी उदयपुर' द्वारा आयोजित उपनिषद् तथा 'समिति' का
जयन्ती महोत्सव दोनों एक साथ आगामी नवम्बर सन् १९६० में मनाये
किन्तु थोड़े ही दिन पश्चात् अकादमी के निर्देशानुसार फरवरी सन्
में इस महोत्सव का आयोजन निश्चित् कर दिया गया। सन् १९६
आरम्भ से ही महोत्सव की तैयारी प्रारम्भ करदी गईं और 'समिति' के
कार्यकर्त्ता पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कार्य-क्रम स्थिर करने में जुट ग

धन संग्रह:—महोत्सव के कार्य-क्रम को 'समिति' के स्तर के अनुरूप
करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता धन की थी। एतदर्थ महोत्सव के कार्य
की निम्न रूपरेखा घोषित करते हुए जनता से अपील की गई कि इस आ
के निमित्त 'पत्रं-पुष्पं' 'समिति' के प्रधान मंत्री के पास शीघ्र भेजें। महोत्
प्रमुख आकर्षण इस प्रकार घोषित किये गए:—

१—भारत के उप-राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् द्वारा जयन्ती उद्
२—राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद्,
३—स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ का प्रकाशन,
४—कवि सम्मेलन एवं अन्य रोचक साहित्यिक कार्य-क्रम,
५—गीता प्रवचन,
६—संगीत सम्मेलन,

भरतपुर की हिन्दी प्रेमी एवं जागरूक जनता ने 'समिति' की इस
का हार्दिक स्वागत करते हुए आर्थिक सहायता भेजना प्रारम्भ कर दिया
थोड़े ही समय में प्रचुर धनराशि एकत्रित हो गई।

मुख्य उत्सव:—दिनाँक १२ फरवरी सन् १९६१ को प्रातः काल बाल र
के प्रस्फुटित होते ही समस्त नगर में एक अद्भुत उल्लासपूर्ण वातावरण
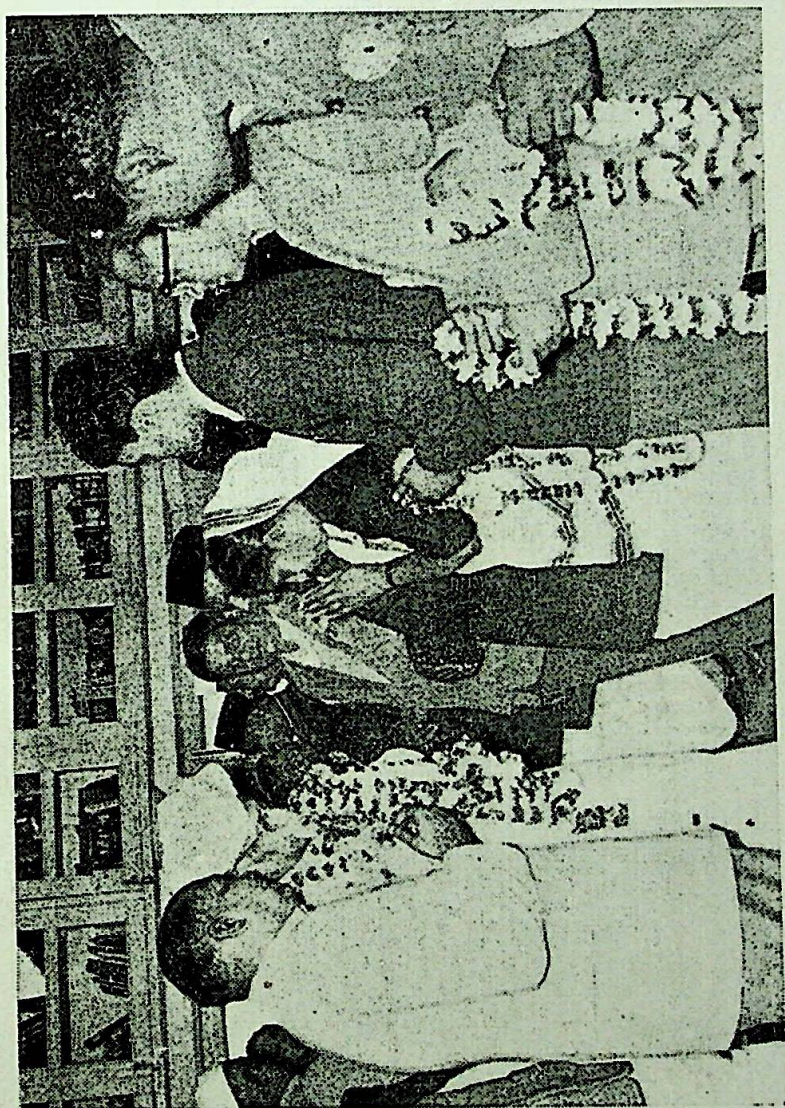
समिति के अध्यक्ष श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त,
उप-राष्ट्रपति को कार्य-कारिणी के सदस्यों का परिचय देते हुए

गोचर होने लगा। रेलवे स्टेशन से लेकर 'समिति' भवन तक मुख्य मार्ग रंग विरंगी सुन्दर पताकाओं से सुसज्जित था और स्थान २ पर भव्य तोरण बने हुए थे, जिनकी संख्या अर्द्ध शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष में ५० थी। सैकड़ों नर-नारी आबाल वृद्ध 'समिति' भवन में एकत्रित होने लगे।

सर्व प्रथम १० बजे वाद्य यंत्रों की मनोमुग्धकारी ध्वनि के बीच 'समिति' के पुराने सदस्य श्री राजबहादुर केन्द्रीय मंत्री ने, 'समिति' का पीताम्बरी ध्वज फहरा कर महोत्सव का कार्य शुभारंभ किया। विशाल जन समुदाय ने करतल ध्वनि कर ध्वज का अभिनन्दन किया। इसके अनन्तर मध्याह्न ३ बजे स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उद्घाटनार्थ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्यकार भारत के उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् नगर के प्रमुख बाजारों में होते हुए समिति भवन पधारे, जहाँ एक सुसज्जित पंडाल बना हुआ था। लाल, पीले, नीले, तथा हरे रंग की पताकाएं मंडप को आच्छादित कर अद्भुत सौन्दर्य प्रदान कर रहीं थीं। सुन्दर तथा कलात्मक अक्षरों में लिखे हुए साहित्यकारों के अमृत-मय उपदेश जनता को जागरूकता प्रदान कर साहित्य के प्रति अभिरुचि की अभिवृद्धि कर रहे थे। समस्त मंडप नर-नारियों से खचाखच भरा हुआ था, जिनमें भरतपुर की सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि, प्रेस प्रतिनिधि, राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, पी० डबल्यू० डी० मंत्री महाराज हरिश्चन्द्र, भरतपुर नरेश श्री सवाई वृजेन्द्रसिंह, राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर तथा डायरेक्टर श्री मोतीलाल मेनारिया और राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य प्रमुख थे।

महोत्सव के मुख्य अतिथि डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् अपनी कीर्त्ति के समान ही दुग्ध धवल अचकन, श्वेत धोती और शुभ्र पगड़ी के परिधानों से विभूषित थे। उनके स्थान ग्रहण करते ही नगर के सुप्रसिद्ध पंडित श्री रामस्वरूप मिश्र ने सस्वर वेद मंत्रों द्वारा मंगलाचरण किया। इसके अनन्तर सुरजीत संगीत विद्यालय की बालिकाओं ने महामहिम के स्वागत में एक छोटा किन्तु सुमधुर गायन प्रस्तुत किया। इस साहित्यिक मेले के अवसर पर हिन्दी साहित्य समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन करते हुए बताया कि यह समिति लगभग ५० वर्षों से हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में अनवरत् रूप से लगी हुई है। इस संस्था के गौरवमय अतीत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भरतपुर के लिये यह एक परम सौभाग्य की बात है कि राधा और कृष्ण की क्रीड़ास्थली वृज भूमि के इस प्रदेश को अपने चरणों से पवित्र बनाने के लिये स्वयं राधाकृष्ण (राधाकृष्णन्) यहां पधारे हुए हैं। क्या इसे बृजवासियों तथा गोपियों की विरह व्यथा क्रन्दन का ही प्रतिफल

समझा जावे ? राधाकृष्ण के सुन्दर साहित्यिक प्रयोग पर उप-राष्ट्रपति मु
गए, क्योंकि निकट में बैठे हुए केन्द्रीय मंत्री श्री राजबहादुर ने उसका स्प
घाटन कर दिया। पुन: नन्ही नन्ही बालिकाओं ने अपने संगीतमय नृत्य
उपस्थित जन-समुदाय का मनोरंजन किया। इन्हीं बालिकाओं ने सुरजीत
कला विद्यालय द्वारा निर्मित एक विशेष प्रकार की गुड़िया मुख्य अतिथि
भेंट की। इसके अनन्तर समिति के उप-प्रधान श्री मोतीलाल अग्र
भरतपुर की चिर विख्यात् शिल्प वस्तु चन्दन की चौरी, पंखी, तथा स्वर्ण
पुस्तिका भेंट की। हजारों नर नारियों से भरे हुए मैदान में जब मुख्य अ
भाषण देने के लिये खड़े हुए तब तालियों की गड़गड़ाहट तुमुल ध्वनि
समय तक निरंतर चलती रही। महामहिम उप-राष्ट्रपति ने सरल
प्रभावोत्पादक अंग्रेजी भाषा में उद्‌घाटन भाषण किया, जिसका हिन्दी अनु
अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर ने तुरन्त पढ़कर सुनाया। भा
का सार इस प्रकार है:—

"साहित्य यों तो प्रत्येक रचनात्मक कृति को कहा जा सकता है,
स्थाई और शाश्वत महत्व रखने वाले साहित्य का अपना विशेष महत्व
'साहित्य समाज का दर्पण हैं', वाली उक्ति का प्रमुख रहस्य यही है कि
तत्कालीन समाज की गति विधियों, उसके रूप और दृष्टिकोण को अपने
ही शाश्वत और अमर बना दे वही सत्साहित्य है। सत्साहित्य के निर्मा
योग देना जीवन की परम आवश्यकता है जिसे कर्तव्य समझकर हमें अप
चाहिये। कहानी कविता आदि लिख देना साहित्य का एक अंग अवश्य है,
पूर्णत: साहित्य के दर्शन के लिये हमें एक दूसरे को प्रसन्न रखने की भा
परस्पर आदर व सत्कार का विचार और संतुलित व स्वस्थ परामर्श का
प्रदान करने वाली त्रिवेणी में अवगाहन करने पर ही साहित्य का
आनन्द प्राप्त हो सकता है। सत्साहित्य की तरह मानव के सत्कार्य भी
प्रेरणादायक व शाश्वत होते हैं, किन्तु सत्कार्यों को शाश्वत रूप देना साहित्य
आधारित है। यह एक अनुभूति है और मधुर अनुभूति है। साहित्य सृजन
तुष्टि, आत्मानन्द और आत्म विकास का श्रोत तो है ही, लेकिन शुद्ध सा
में वह अपार शक्ति भी निहित है जो सामाजिक विकारों को दूर करके
'सत्समाज' का रूप प्रदान कर सकती है। साहित्य व कार्यों में 'सत्' लग
से वे शाश्वत बन जाते। हाँ, 'धर्म' में भी 'सनातन' शाश्वत प्रतीक है जि
अर्थ अपरिवर्तनशील नहीं वरन् 'अक्षुण्य' है। अत: सत् वातावरण के नि
के लिये सत्साहित्य सत्कार्य व सत् धर्म का स्वस्थ समन्वय करना हो
डा० सर्वं पल्ली राधाकृष्णन् ने कहा कि:—

महामहिम उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन
स्वर्ण जयन्ती का उद्घाटन भाषण करते हुए

"विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों, परम्पराओं और विचार-धाराओं वाले देश भारत का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल इस कारण लगता है कि इसमें आई हुई विषमताओं में जल्दी ही सामंजस्य स्थापित हो जाएगा और तब भारत ही विश्व क्षितिज पर पथ प्रदर्शक होगा। यों, हमें नहीं भूलना चाहिये कि कला, धर्म, विज्ञान व साहित्य सब एक ही हैं, जिनके समायोजन से राष्ट्र का वास्त-विक विकास संभव है।"

अंत में समिति के प्रधान मंत्री श्री मदनलाल बजाज ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित जनता के प्रति आभार प्रदर्शित किया। उप-राष्ट्रपति डा० राधा-कृष्णन् ने समिति भवन तथा पुस्तकालय का निरीक्षण किया और समिति की प्रगति के प्रति सन्तोष प्रकट करते हुए प्रस्थान किया।

कवि सम्मेलन:—इसी दिन रात्रि को समिति ने एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसके अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर थे। इस अवसर पर अनेक रस भरी तरंगें प्रवाहित की गईं। कहीं शृंगार का आकर्षण था तो कहीं वीरता का विगुल; कहीं करुण का हृदय विदारक चित्र उपस्थित किया गया तो कहीं हास्य के फब्बारे चल रहे थे, कहीं गीतों का माधुर्य था तो कहीं ओजपूर्ण कवित्त पढ़े जा रहे थे, मुक्तकों की मादकता एवं नये प्रयोगों की नई सूझ बूझ आकर्षण बिंदु बन रही थी। अनेक रस धाराओं से युक्त इस सरोवर में अवगाहन करने वाले कविगण ने काव्य सागर की उज्ज्वल तरंगों से काव्य प्रेमी श्रोताओं को सरावोर कर दिया। श्री कुलशेखर की 'अमृत ध्वनि' को सुनते ही समस्त पंडाल करतल ध्वनि से गूंज उठा। श्री ब्रजेन्द्रबिहारी कौशिक की 'चीन को चुनौती' में युवक हृदय की उमंगों से परिपूर्ण उद्गार थे। "तुम क्यों दर्पण देख रहे हो, तुमको अब क्या आशंका है। दर्पण तो वह देखा करते जिनका रूप ढला करता है", गाकर श्री वीरसवसेना जयपुर ने आत्म निरीक्षण की बांसुरी बजा दी। मथुरा निवासी प्रो० राकेश के कंठ से निकला गीत "यदि तुम अपने नयनो से नभ के दीप जला दो तो मैं पागल परवानों का प्यार तुम्हें दे दूंगा" सुनकर श्रोताओं के मन मयूर नृत्य कर उठे। जहां एक ओर श्री 'भारत-रत्न भारद्वाज' जयपुर तथा प्रो० हरीराम आचार्य "अमिताभ" के मुक्तक हृदय स्पर्शी थे वहां दूसरी ओर श्री राजावत ने राजस्थानी गीतों में प्रदेश की संस्कृति को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। श्री शांतिप्रकाश भारद्वाज 'राकेश' ने अपने सरस गीतों के अतिरिक्त अन्य कवियों पर सूक्ष्म टिप्पणी प्रस्तुत कर इस सम्मेलन के कार्यक्रम को अधिक रोचक बना दिया। श्री 'मित्र' तथा श्री कुंजबिहारीलाल पांडेय मध्य प्रदेश के हास्य रस के फब्बारे कई बार छोड़े

गये। स्थानीय तथा बाहर के लगभग २५ कवियों ने अपनी सुन्दर २ र
सुना कर हजारों श्रोताओं को मंत्र मुग्ध बना दिया। यह सम्मेलन अर्द्ध रात्रि
शांतिमय वातारण में चलता रहता।

उपनिषद्:—इस त्रिदिवसीय स्वर्ण जयंती महोत्सव पर राजस्थान सा
अकादमी द्वारा आयोजित एक उपनिषद् १३ व १४ फरवरी को सम्पन्न हु
उपनिषद् का विषय था "साहित्य और लोक रुचि"। इस कार्यक्रम में सर्व
प्रो० हरदत्त शास्त्री, प्रो० विजेन्द्रपालसिंह, मा० शिवलाल गुप्त, मा० गोपालप्र
'मुद्गल', साँवलप्रसाद चतुर्वेदी, शक्ति त्रिवेदी, कुसुम चतुर्वेदी और रा
शास्त्री के निबंध पुरस्कृत हुए। उपनिषद् की बैठकों की अध्यक्षता सर्व
जनार्दनराय नागर, डा० मोतीलाल मेनारिया, श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय और
निरंजननाथ आचार्य ने की।

अन्य साहित्यिक कार्यक्रम:—इस अवसर पर अन्त्याक्षरी तथा
विवाद प्रतियोगिता का भी सुन्दर आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय एम० ए
जे० कालेज तथा अन्य सभी विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया।
दिन तक चलती रहने वाली अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में अन्ततः राजकीय
उद्देशीय विद्यालय का दल बाजी मार ले गया। बाद विवाद प्रतियोगि
श्री प्रमिला भटनागर, श्री अचला कुमार, श्री गायत्री गुप्त और श्री जगदीशप्र
भारद्वाज को पुरस्कृत किया गया।

गीता प्रवचन:—गीता प्रवचन का कार्यक्रम महोत्सव का विशेष आक
था। यह आयोजन श्री शांतिस्वरूप बोहरे द्वारा प्रदत्त निधि से प्रतिवर्ष कि
जाता है। इस अवसर पर भारतविख्यात् श्री दीनानाथ 'दिनेश' ने गीता
महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को अपना जीवन गीतामय बनाने
परामर्श दिया। भरतपुर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री युधिष्ठिरप्रसाद चतु
ने गीता के १४ वे अध्याय में वर्णित 'गुणातीत' होने की साधना पर एक सु
प्रवचन किया तथा श्री सांवलप्रसाद चतुर्वेदी ने साधक के स्तर और 'महाप्र
की खोज के विषय में वैदिक मत और गीता के मत का सुन्दर स्पष्टीकरण कि

संगीत सम्मेलन:—इस महोत्सव के अन्तिम कार्य-क्रम 'संगीत सम्मे
की जनता ने विशेष सराहना की। इस कार्य-क्रम में देहली के अनेक ख्यातिप्र
कलाकारों ने भाग लिया, जिनमें श्री नसीर अहमद तान कप्तान, श्री जहूर अह
और श्री जफर अहमद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। भरतीय आकाशवाणी
प्रसिद्ध कलाकार श्री सुरजीतसिंह तथा श्री जसबन्तसिंह के गिटार वादन
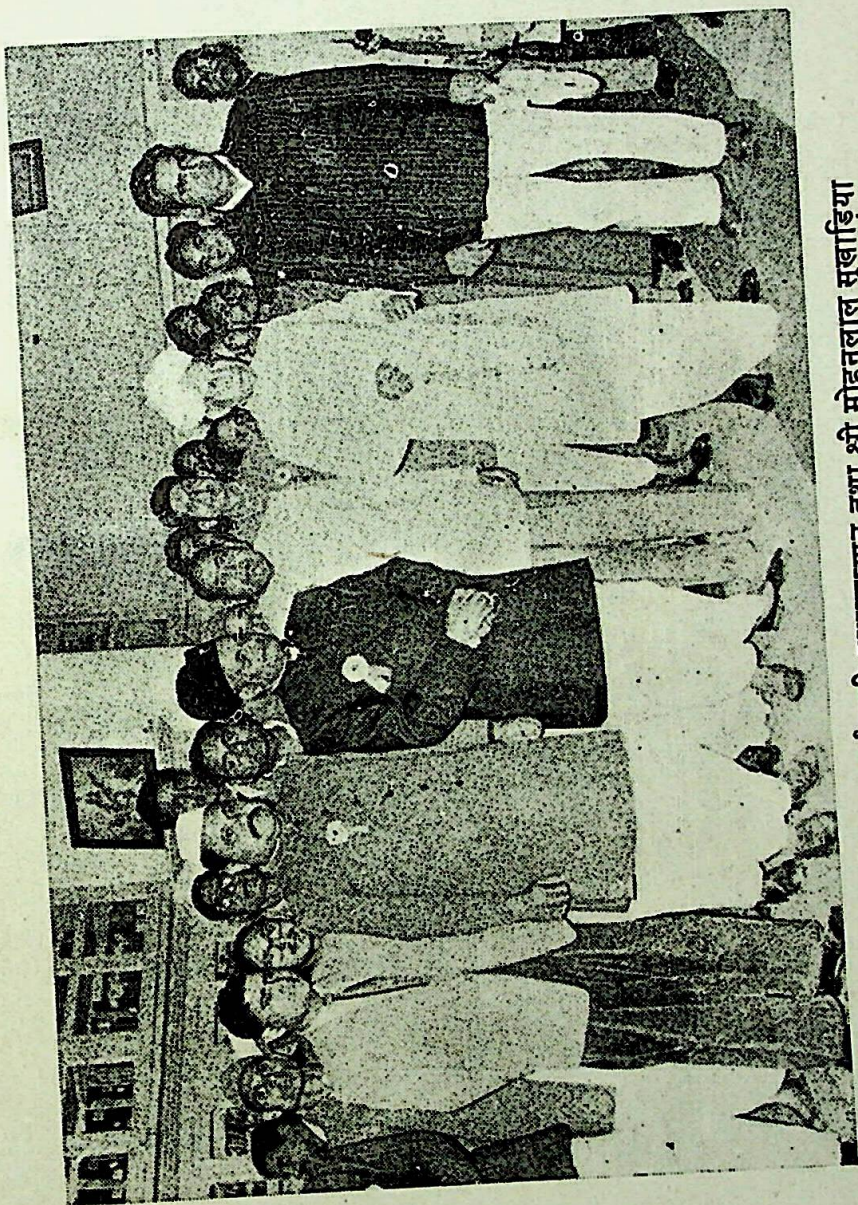
उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् तथा श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मन्त्री राजस्थान) के साथ समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता

ोताओं ने बहुत पसन्द किया। भरतपुर के प्रसिद्ध कलाकार श्री मा० दुरगसिंह, ो बूलचन्द तथा श्री रमनलाल का कला प्रदर्शन भी विशेष प्रशंसनीय रहा। श्री ानिकचन्द के शास्त्रीय गायन और श्री सरला कपूर के सरल संगीत ने तो इस भा को इतना आकर्षित बना दिया कि जाड़े की स्थिति में भी रात्रि के दो बजे क तीन चार हजार व्यक्तियों का विशाल समुदाय मंत्र मुग्ध होकर संगीत का ास्वादन करता रहा।

चित्र-प्रदर्शिनी:—स्वर्ण जयंती महोत्सव पर एक चित्र प्रदर्शिनी का विशेष ायोजन किया गया जो जनता के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जयपुर के कला-ार श्री हीरालाल सक्सेना ने लगभग २५०० रंगीन चित्र बड़े आकार में बने हुए प्में प्रदर्शित किये। इन चित्रों में हिन्दी और संस्कृत साहित्य के इतिहास तथा ८५७ ई० से १९४७ ई० तक के भारत के सुविख्यात् सपूतों और सैनानियों के न्दर चित्र प्रदर्शित किए गए।

इसी अवसर पर दिल्ली स्थित भरतपुरिया समाज के प्रतिनिधि मंडल ने मिति को ११ नवीन पुस्तकें भेट कीं और समिति की प्रगति की सराहना की।

अन्त में श्री मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री श्री हिन्दी साहित्य समिति ने ास्थित समुदाय के बीच अपनी अर्द्ध शताब्दी रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई और उन भी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शिति किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय और न देकर शारदा के इस अर्द्ध शताब्दी मेले को सम्पन्न कराने में योग दिया।

———

स्वागताध्यक्ष

डा० श्रीं कुंजबिहारीलाल गुप्त

अध्यक्ष

हिन्दी साहित्य समिति

का

स्वागत भाषण

तत्र भवान् उपराष्ट्रपति जी ;

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के स्वर्ण जयन्ती एवं राजस्
साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद् समारोह के उद्घाटन अवसर पर
भाषा के प्रमुख केन्द्र भरतपुर नगर में आपका स्वागत करते हुए जिस अपार आ
एवं गौरव का अनुभव हमें हो रहा है उसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता
स्वर्ण जयन्ती मनाना समिति के लिए महत्व का विषय हो सकता है, परन्तु आ
जैसे विश्व विख्यात साहित्यिक एवं महान् दार्शनिक का यहाँ पधारना उससे
अधिक गौरव की बात है।

यद्यपि साहित्य और संस्कृति की अनन्त और अविस्मरणीय सेवाओं त
साधना के कारण आपकी गणना भारत के महान् पुरुषों में ही नहीं अपितु वि
की महान् विभूतियों में की जाती है, परन्तु हम ब्रजवासियों के लिये तो आप
की वही साक्षात् मूर्ति 'राधाकृष्ण' ही हो जिनको प्रतीक्षा में हम इतने दिनों
पलक पांवड़े बिछाये हुए थे।

हमारे अकिंचन नम्र निवेदन पर आपने अपना अमूल्य समय देकर य
पधारने की जो अनुकम्पा की है वह आपके हिन्दी के प्रति प्रगाढ़ स्नेह औ
साहित्यानुराग का परिचय देती है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आपके उदात्त व्यक्तित्व में हमें प्राचीन गौरव
भारत के धर्म, ज्ञान व संस्कृति की तीन सुन्दर-सुन्दर झाँकियाँ एक साथ देखने
मिलती हैं। जहाँ आप (श्री राधाकृष्णन्) का नाम भारत के महान् धर्म संस्
पक एवं गीता की अमृतमय वाणी सुनाने वाले कृष्ण का स्मरण दिलाता है, व
आपकी सरल वेषभूषा एवं शान्त व गम्भीर मुद्रा तथा प्रखर विद्वत्ता हमा
प्राचीन संस्कृति एवं ऋषियों के जीवन की याद दिलाती है।
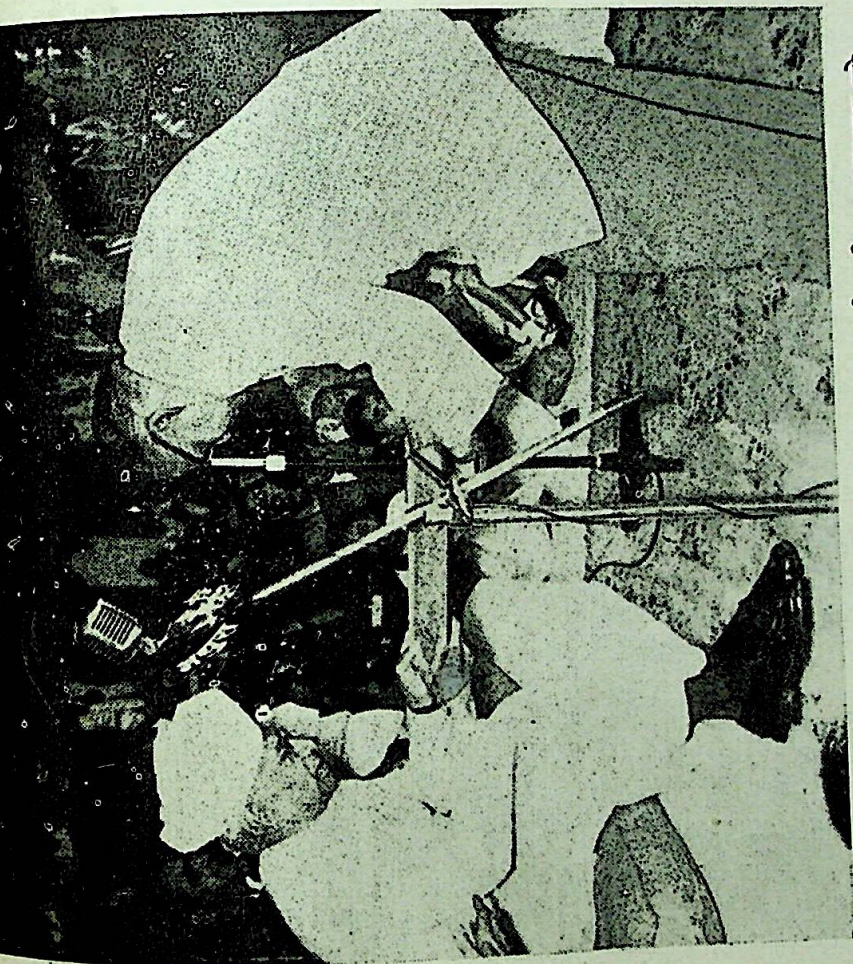
स्वागताध्यक्ष द्वारा महामहिम उप-राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को अभिनन्दन-पत्र भेंट

हमें पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे महानुभावों के वरद हस्त की छत्रछाया में राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव तो बढ़ेगा ही, साथ ही हिन्दी का प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति जैसी संस्थाएं भी युग-युगों तक पल्लवित एवं पुष्पित होती रहेंगी।

आपका अभिनन्दन करने वाली इस संस्था के स्थापन का निश्चय आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व मातृ-भाषा हिन्दी के कुछ भक्तों ने श्रावण कृष्णा तृतीय गुरुवार संवत् १९६९ तदनुसार १ अगस्त सन् १९१२ (शक सँवत् १८३४) को श्री तुलसी जयन्ती के पुण्य पर्व पर किया था। हिन्दी प्रचार हेतु इस सँस्था की स्थापना में सर्व श्री गंगाप्रसाद शास्त्री और जगन्नाथदास अधिकारी का विशेष हाथ था। स्थापना काल में सँस्था के अत्यन्त हितैषियो में डा० ओंकारसिंह पमार, पं० मयाशंकर याज्ञिक, पं० नारायणदास, पं० गुलाब मिश्र 'भूमि कंज' और श्री बालकृष्ण दुवे का नाम उल्लेखनीय हैं। इन्हीं महानुभावों के अथक प्रयत्न व परिश्रम के बल पर खड़ी होकर यह सँस्था दिन दूनी व रात चौगुनी उन्नति करती हुई वर्तमान स्थिति पर पहुँच सकी है। किराये के एक छोटे से कमरे में जन्म लेने वाली यह संस्था भरतपुर के हिन्दी प्रेमियों के सद् प्रयत्नों से आज निज के भव्य भवन में प्रतिष्ठित है। सँस्था के पुस्तक भण्डार में विविध विषयों की १३ हजार से भी अधिक हिन्दी पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त सँस्कृत तथा हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थ भी हजार से ऊपर ही हैं। इस समिति की ओर से हिन्दी प्रचार के लिये अनेकवार भागीरथ प्रयत्न किये गये। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप हिन्दी प्रेम की गूंज झोपड़ियों से लेकर महलों तक सुनाई देने लगी। इसी गूंज के फलस्वरूप सन् १९१९ में हिन्दी प्रेमी भरतपुर नरेश महाराजा कृष्णसिंहजी ने सर्व प्रथम हिन्दी को राज्य भाषा घोषित किया तथा उसके प्रचार के लिये अनेक प्रयत्न किये। उसी का यह परिणाम था कि राजस्थान में सबसे पहले भरतपुर में ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १७ वाँ अधिवेशन १९२७ में हुआ। उस अवसर पर श्री पं० मदनमोहन मालवीय, श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, श्रीमती लक्ष्मीबाई किवे श्री माखनलाल चतुर्वेदी जैसे दिग्गज विद्वान् तथा अनेक हिन्दी प्रेमी भरतपुर पधारे। इनके अतिरिक्त इस संस्था को अब तक अनेक साहित्यिक और राजनैतिक महानुभावों का आशीर्वाद और परामर्श भीं समय समय पर मिलता रहा है।

राजनीति से अलग रहते हुए इस संस्था ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार तथा प्रसार के लिये जो अथक और स्मरणीय प्रयत्न किये हैं वे किसी से छिपे नहीं हैं। यह समिति हिन्दी पुस्तकों के पठन-पाठन के प्रति रुचि, हिन्दी की परीक्षाओं के प्रति आकर्षण और हिन्दी की प्रतिष्ठा बृद्धि के लिये

सदैव से प्रयत्नशील रही है और रहेगी। इस पुण्य पर्व पर समिति की कठिनाइ एवं आवश्यकताओं की ओर संकेत कर देना भी मैं अपना परम कर्त्तव्य समझ हूं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये धनाभाव के अतिरिक्त समिति का भवन सर्व अपर्याप्त है और सैकड़ों सुन्दर-सुन्दर पाण्डुलिपियों के होते हुए भी इसके प कोई मुद्रणालय नहीं है।

अन्त में आपके यहां पधारने के लिये आपके प्रति मैं अपनी, हिन्दी साहि समिति तथा भरतपुर नगर की समस्त हिन्दी प्रेमी जनता की ओर से कृतज्ञ प्रकट करता हूँ और आपका हृदय से स्वागत करता हूँ।

जय हिन्दी–जय भारती

स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(द्वितीय खण्ड)

भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि

भरतपुर राज्य के स्थापन काल से वर्तमान काल तक के कवियों का संक्षिप्त जीवन-वृत एवं साहित्यिक परिचय

सम्पादक

डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी०

तमसोमाज्योतिर्गमय

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर

स्थापित १९१२ ई०

प्रकाशक

मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर

सं० २०१८ वि०

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार

डा० गुलाबराय, एम० ए०, डी० लिट्, आगरा

का

आशीर्वचन

"भरतपुर कवि-कुसुमाँजलि नाम के पद्य संग्रह को उसके सम्पादक महोदय डाक्टर कुंजबिहारीलाल ने मुझे दिखाने की कृपा की। इस संग्रह में भूतपूर्व भरतपुर राज्य के कवियों की रचनाओं का संकलन है। इन कवियों में कुछ जैसे 'सोमनाथ' और 'सूदन' तो इतिहास प्रसिद्ध हैं और कुछ का नामोल्लेख मात्र मिश्रवंधु-विनोद में हुआ है और कुछ स्थानीय ख्याति के ही रहे। इस संग्रह में कवियों का कालक्रमानुकूल परिचय और विवरण है। इस संग्रह की कविताओं का मूलविषय नायिका भेद नखशिख वर्णन शृंगार है इसके साथ वीर और भक्ति रसों का भी समावेश हुआ है। ब्रज भाषा के अमित रत्न भण्डार की जितनी रक्षा की जाय उतना ही अच्छा है। इस संग्रह में सम्पादक महोदय की सुरुचि और संयोजन शक्ति का परिचय मिलता है। स्थानीय साहित्य की रक्षा स्थानीय लोग ही अच्छी तरह कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह संग्रह रसिक जनों का मनोरंजन कर ब्रज भाषा की गौरव वृद्धि में अपना योगदान करेगा।"

सम्मति

डा० मोतीलाल गुप्त,

एम० ए०, बी० टी०, पी-एच० डी०, एफ० आर० ए० एस०,
एम० पी-एच० एस० (लन्दन)

"मत्स्य प्रदेश के हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज करते समय भरतपुर के साहित्य से मेरा परिचय बढ़ा। यह साहित्य इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ कि मुझे भरतपुर की साहित्य-चेतना की जागरूकता पर आश्चर्य होने लगा। इतनी अशान्ति, लड़ाई—झगड़े का समय और भरतपुर के साहित्यकार इतने श्रजनशील! साथ ही उन आश्रय दाताओं की भी प्रशंसा करनी पड़ेगी जिनके प्रोत्साहन और विद्या प्रेम से यह सब कुछ संभव हो सका। कवियों को आश्रय देना, राज कवि रखना उस समय की एक प्रचलित परम्परा थी, और भरतपुर में भी इस परम्परा का समुचित निर्वाह किया गया। भरतपुर दरबार से सम्बद्ध कवि अनेक वर्ग और जातियों के थे ब्राह्मण, चौबे, वैश्य, जाट, मुसलमान, कायस्थ आदि, जिनके द्वारा प्रायः सभी विषयों पर लिखा गया। प्राप्त साहित्य का विश्लेषण करते समय मैंने उसे प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण करने की चेष्टा की थी—रीति और श्रृंगार, भक्ति और नीति, इतिहास और शिकार, अनुवाद और गद्य सभी प्रकार का साहित्य प्राप्त हुआ, और उच्च कोटिका।

क्षेत्र कुछ विस्तृत होने से भरतपुर के कवियों का सम्यक अध्ययन सम्भव नहीं हो सका था, और मेरा ध्येय भी व्यक्तिगत मूल्यांकन की अपेक्षा प्रवृति मूलक अधिक था। जब भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति के विद्या प्रेमी उत्साही कार्य कर्त्ताओं ने 'भरतपुर कवि-कुसुमाँजलि' का प्रणयन कर प्रारंभिक परिचयात्मक सामिग्री यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध कर दी है और मेरा अनुमान है कि प्रस्तुत सूत्रों के आधार पर बिस्तृत अध्ययन की ओर अग्रसर होने में मूल्यवान सहायता मिलेगी। मेरा विश्वास है कि भरतपुर में कुछ तो ऐसे विशिष्ट प्रतिभा शाली कवि हुए जिन पर स्वतंत्र रूप से काफी काम किया जा सकता है। सोमनाथ, रसानन्द, कलानिधि, उदयराम, शिवराम कुछ ऐसे ही नाम हैं। इन कवियों की जीवन सामग्री के साथ २ इनकी कृतियों की उपलब्धि और उस पर शोध कार्य विशेष उपयोगी हो सकते हैं। मैं तो चाहूँगा कि समिति के तत्वाविधान में ही इस कार्य को भी पूर्ण करने की ओर सक्रिय पग उठाया जाय। वैसे शोध इच्छुक विद्यार्थी भी इन साहित्य सृष्टाओं का सफलता पूर्वक उपयोग कर सकते हैं।

कवियों की कृतियों का अध्ययन प्रायः साहित्यिक दृष्टियों से ही किया जा
रहा है, किन्तु इन कृतियों के दो एक पहलू और हैं। भाषा विषयक और शास्त्री
अध्ययन भी वैज्ञानिक अनुसंधान के अंग होते हैं। अपनी विदेश यात्रा में
देखा कि साहित्य और भाषा दो अलग अलग दृष्टि कोण हैं। और आज के युग
भाषा सम्बन्धी अध्ययन अधिक महत्व पूर्ण और आवश्यक माना जाता है। एडि
बरा के हैलिडे का नाम इस प्रसँग में आदर के साथ लिया जा सकता है जिन्हों
एक चीनी पुस्तक का भाषा विषयक अध्ययन अभी अभी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी में इस प्रकार का अध्ययन अभी आरम्भ नहीं हुआ है, सोमनाथ
काव्य का भाषा मूलक अध्ययन करने का किंचित प्रयत्न मैं भी कर रहा हूँ
अलवर के कवि जीवण का 'प्रताप-रासो' मेरे द्वारा की गई भाषा विश्लेषणा
त्मक टिप्पणी सहित जोधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा शीघ्र
प्रकाशित होने को है। मैं चाहता हूं कि साहित्यिक अध्ययन के साथ २ भरतपु
के कवियों की भाषा का भी विधिवत विश्लेषण हो। कवियों द्वारा प्रतिपादि
सिद्धान्तों के शास्त्रीय विवेचन पर भी विद्वानों का ध्यान आकर्षित होना चाहि
मेरी मान्यता है कि भरतपुर के कलाकारों का अन्य क्षेत्रों के कवियों के सा
तुलनात्मक अध्ययन करने पर यहाँ के कवियों की उत्कृष्टता निश्चय रूप से प्रम
णित होगी।

'समिति' द्वारा प्रकाशित इस परिचयात्मक पुस्तक का मैं हृदय से स्वाग
करता हूँ और आशा करता हूँ कि विविध विद्वानों की सृजनात्मक प्रवृत्ति द्वा
'समिति' को एतद्विषयक बल निरंतर मिलता रहेगा।"

विषय-सूची

१—आभार च
२—सम्पादकीय निवेदन ज
३—भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि १ २५५

प्रकरण १

सोमनाथ—काल

१-सोमनाथ १
२-टहकन १४
३-हरिप्रसाद १५
४-कृष्णलाल १७
५-महाराज बदनसिंह २०
६-माधौराम २१

प्रकरण २

सूदन—काल

७-सूदन २३
८-रंगलाल २६
९-अखैराम २६
१०-लाल २८
११-हरिवंश ३०
१२-शिवराम ३१
१३-पतिराम ३२
१४-शोभ ३३
१५-दत्त ३४
१६-केशव ३४
१७-जुलकरन ३५
१८-भूधर ३६
१९-वीरभद्र ३७
२०-सुधाकर ३८
२१-राम ३८
२२-रंगलाल ३९
२३-मुरलीधर ३९
२४-भोलानाथ ४०
२५-मोतीराम ४०
२६-बृजचन्द ४१
२७-शोभनाथ ४२
२८-महाकवि देव ४२
२९-गोधाराम ४३
३०-मोहनलाल ४४
३१-चतुराराय ४५
३२-उदयराम ४६
३३-राजेश ४७
३४-बंशीधर ४७
३५-गुलाम मोहम्मद ४८
३६-बालकृष्ण ४९
३७-हुलासी ५०
३८-मूलराय ५०
३९-देवेश्वर ५०

४०–पदमाकर ५१
४१–मुरलीधर ५३
४२–धोंकल मिश्र ५४
४३–सूरतराम ५४
४४–भागमल्ल ५५
४५–बृजेश ५६
४६–गणेश ५८
४७–जसराम ५८
४८–गंगाधर ५६
४९–प्रसिद्ध ६०
५०–रमेश ६१
५१–मिश्र सुखदेवगंगाकिशोर ६२
५२–रसनायक ६३
५३–मोतीराम ६५
५४–महाराज बलदेवसिंह ६८
५५–महारानी अमृतकौर ६९
५६–जयदेव ७०
५७–धरानन्द ७०

प्रकरण ३

राम—काल (पूर्वार्द्ध)

५८–रामलाल ७२
५९–रसरासि ८२
६०–नथुआसिंह ८३
६१–भोलानाथ ८४
६२–ललिताप्रसाद ८४
६३–बिहारी ८५
६४–बलदेव ८६
६५–नवीन ८७
६६–वटुकनाथ ८९
६७–पद्म ९०
६८–गोपालसिंह ९०
६९–रामकृष्ण ९१
७०–धनेश
७१–ब्रजचन्द
७२–सुन्दरलाल
७३–नरहरिदास
७४–लाल
७५–श्रीधर
७६–वैद्यनाथ
७७–महाराज बलवन्तसिंह

प्रकरण ४

राम—काल (उत्तरार्द्ध)

७८–रसानन्द
७९–देवीदास
८०–रूपराम
८१–जीवाराम
८२–लक्ष्मीनारायण
८३–रामानन्द
८४–रामबख्श
८५–सेवाराम
८६–चतुर्भुज मिश्र
८७–युगलकिशोर
८८–मणिदेव
८९–हनुमन्त
९०–छत्रमल
९१–रामबख्श
९२–धाऊ गुलाबसिंह
९३–काशीराम
९४–शोभाराम
९५–रावराजा अजीतसिंह
९६–रामधुन
९७–रामद्विज
९८–पीरू
९९–हरिनारायन

१००–रामदयाल १३४
१०१–साधूराम १३४
१०२–दिगम्बर १३५
१०३–गंगाबख्श १३५
१०४–ठाकुरलाल १३६
१०५–रामनारायण १३८
१०६–बालमुकुन्द १३८
१०७–प्यारेलाल १३९
१०८–देवीराम १४०
१०९–नत्थीलाल १४०
११०–जानीबिहारीलाल १४१
१११–जानीश्यामलाल १४३
११२–मुकुन्द १४३
११३–जुगलकिशोर १४३
११४–मंगलसिंह १४४
११५–घनश्याम १४५
११६–मुरलीधर १४७
११७–नवलकिशोर १४९
११८–कृष्णदास १५०
११९–ऊपरराय १५१
१२०–कृष्णलाल १५२
१२१–कर्नल बहादुरसिंह १५२
१२२–बाबू कन्हैयालाल १५४
१२३–गुलाबजी मिश्र १५५
१२४–लक्ष्मीनारायन काजी १५६
१२५–सुन्दरलाल १५८
१२६–माजी श्री गिरिराजकुंवर १५८
१२७–शंकरलाल १५९
१२८–सत्यनारायन 'कविरत्न' १६०
१२९–गंगाप्रसाद १६४
१३०–वैद्य देवीप्रकाश अवस्थी १६५
१३१–बलदेवप्रसाद १६८
१३२–हीरालाल १६९
१३३–मंगलदत्त १७०
१३४–आचार्य सूर्यनारायन १७१

प्रकरण ५

वर्तमान—काल

१३५–साहित्यवाचस्पति गोकुलचन्द दीक्षित १७४
१३६–किशोरीलाल १७७
१३७–पन्नीलाल १७७
१३८–प्यारेलाल १७८
१३९–हरिकृष्ण 'कमलेश' १७९
१४०–रामचन्द्र विद्यार्थी १८०
१४१–गिर्राजप्रसाद 'मित्र' १८१
१४२–रघुवरदयाल १८३
१४३–रामप्रिया माथुर १८४
१४४–रावत चतुर्भुजदास साहित्याचार्य १८६
१४५–नंदकुमार 'साहित्य रत्न' १८८
१४६–सांवलप्रसाद चतुर्वेदी १९१
१४७–कुम्भनलाल 'कुलशेषर' १९३
१४८–छोटेलाल ब्रह्मभट्ट १९५
१४९–प्रभूदयाल 'दयालु' १९६
१५०–राधारमन शर्मा 'मोहन' १९८
१५१–नानिगराम २०१
१५२–जयशंकर चतुर्वेदी 'जय' २०१
१५३–चम्पालाल 'मंजुल' २०३
१५४–शिवचरणलाल २०७
१५५–रावजी यदुराजसिंह २०९
१५६–मदनलाल गुप्त 'अग्र' २१२
१५७–श्रीनिवास ब्रह्मचारी २१३
१५८–गोपाललाल माहेश्वरी २१४
१५९–शिवदत्त शर्मा एम० ए० २१६
१६०–डा० रांगेय राघव २१९

१६१–विश्वबन्धु शास्त्री २२१
१६२–तुलसीराम चतुर्वेदी २२३
१६३–इन्दुभूषण 'इन्दु' २२५
१६४–सम्पूर्णदत्त मिश्र एम० ए० २२७
१६५–राधाकृष्ण गुप्त 'कृष्ण' २३०
१६६–रमेशचन्द्र चतुर्वेदी २३१
१६७–छुट्टनलाल 'सेवक' २३४
१६८–गोपालप्रसाद 'मुद्गल' २३५
१६९–गोपेशशरण शर्मा २३८
१७०–रामबाबू वर्मा
१७१–हरिश्चन्द्र 'हरीश'
१७२–दीनदयालु
१७३–गौरीशंकर 'मयंक'
१७४–शक्तिस्वरूप त्रिवेदी
१७५–कमलेश जैन
१७६–मोतीलाल अरोड़ा
१७७–बृजेन्द्रबिहारी

४—कवि नामावलि (अकारादिक्रम)

५—शुद्धि–पत्र

———

आभार

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, की स्वर्ण जयन्ती की योजना बनाते समय यह सोचा गया था कि इस अवसर पर एक ग्रन्थ दो खण्डों में प्रकाशित किया जावे - प्रथम खण्ड में समिति के गत ५० वर्षों की सेवाओं का सिंहावलोकन हो और दूसरे में भरतपुर राज्य के स्थापन काल से लेकर आज तक के कवियों का संक्षिप्त परिचय। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर प्रथम खण्ड तो मुद्रित हो ही चुका है, दूसरा खण्ड, जो किन्हीं कठिनाइयों के कारण न छप सका था, आज प्रकाशित हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में भरतपुर के अनेक विद्वानों का, जिनका उल्लेख 'सम्पादकीय निवेदन' में किया गया है, पर्याप्त सहयोग तथा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ समिति उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है।

समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम० ए०, पी-एच० डी० ने वर्तमान काल के अधिकांश कवियों के जीवन-वृत तथा रचनाएं एकत्रित करने तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अपने साहित्य-प्रेम और कार्य-कुशलता का प्रशंसनीय परिचय दिया। यथार्थ में यह उन्हीं के अहर्निशि परिश्रम का फल है कि यह ग्रन्थ इस रूप में निकल रहा है। इसके लिए 'समिति' उनके प्रति चिर ऋणी है। मैं श्री चम्पालाल 'मंजुल' के प्रति भी हार्दिक आभार अर्पित करता हूँ जिन्होंने छः मास निरंतर परिश्रम करके वर्तमान पाँडुलिपि के 'पाठान्तर दोष' को दूर करके रचनाओं को शुद्ध रूप दिया। समिति के लायब्रेरीयन श्री प्रभुलाल गोयल ने जिस तत्परता से इस ग्रन्थ के लिए दो मास काम किया, वह सराहनीय है।

श्री नारायनलाल प्रधानाध्यापक रा० मा० विद्यालय जघीना और श्रीरमेशचन्द्र चतुर्वेदी अध्यापक रा० मा० विद्यालय अवार ने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने तथा प्रूफ पढ़ने में योग दिया, इस लिए समिति उनकी कृतज्ञ है।

मदनलाल बजाज
प्रधान मन्त्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्रांति सं० २०१८ वि०

सम्पादकीय निवेदन

वैसे तो राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार भरतपुर की गणना राजस्थान के अन्तर्गत ही की जाती है और विशेषतया वर्तमान समय में जब कि बिलीनीकरण के अनन्तर यह उसका एक प्रमुख जिला बन चुका है, किन्तु वास्तव में यह भू-भाग ब्रज प्रदेश का ही अंग है, और अति प्राचीन काल से यह ब्रज भाषा, ब्रज साहित्य और ब्रज-संस्कृति का एक सुविख्यात् गढ़ माना जाता रहा है। एक समय था जब मथुरा, बृन्दावन और गोवर्धन आदि भरतपुर राज्यान्तर्गत थे और यहां के नरेशों की बिजय पताका समस्त ब्रज-प्रान्त पर फहराती थी। यहां के नरेश 'ब्रजेन्द्र' कहलाते थे और हिन्दी तथा हिन्दुत्व के रक्षक और उन्नायक माने जाते थे। जहां ये नरेश अद्भुत शौर्य एवम् पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे, वहां कला-प्रेमी और साहित्य मर्मज्ञ होने के लिए भी। इनमें से अधिकांश कवि थे और जो कवि न थे, वे काव्य प्रेमी अवश्य थे और कवियों को आश्रय देते थे। ऐसा अनुकूल वातावरण पाकर यहाँ अनेक जाज्वल्यमान ग्रहों का अभ्युदय हुआ, जिन्होंने न केवल ब्रज साहित्याकाश को अपनी काव्य प्रतिभा से देदीप्यमान ही किया अपितु साहित्य की अभिवृद्धि एवम् विकास में स्पृहणीय योग भी दिया। चन्द्र और सूर्य के समान महाकवि सोमनाथ और सूदन ने क्रमशः श्रृंगारिक एवम् शौर्य, कमल तथा कुमुदवन को विकसित कर अनेकों कवियों को काव्य सृजन की प्रेरणा दी। इन कवियों की अमर वाणी ब्रज साहित्य की अमूल्य निधि ही नहीं वरन् अभिन्न अंग भी है, क्यों कि इन काव्य ग्रन्थों से साहित्य की श्रीवृद्धि के साथ २ उसके प्रचार एवम् प्रसार में पर्याप्त योग मिला। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि ब्रज साहित्य की उन्नति में भरतपुर वासियों को उतना ही श्रेय है जितना मथुरा वासियों को। भरतपुर जितना ब्रज भाषा पर गर्व करता है उतना ही ब्रज भाषा भरतपुर के कवियों पर भी।

ब्रज भाषा के उत्तरालंकृत-काल (१७९१—१८८९) के पाँच उप विभागों में से तीन के प्रमुख कवियों-देव, सूदन और पदमाकर-का भरतपुर से विशेष सम्बन्ध रहा है। वर्तमान-काल में ब्रज भाषा के गौरव सत्यनारायन 'कविरत्न' ने भी अनेकों वर्ष भरतपुर में रहकर काव्य सृजन किया।

भरतपुर राज्य को स्थापित हुए तो केवल २३९ वर्ष ही हुए हैं, किन्तु इससे बहुत दिन पूर्व यह भू-भाग साहित्य सृजन के लिए पर्याप्त उर्वर रहा है। यह भूमि, जहाँ आजकल भरतपुर बसा हुआ है, अति प्राचीन काल से कवियों को

जन्म देती रही है। वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज भी हिन्दी के शैशव काल से ही कवियों को आश्रय देकर हिन्दी की निरंतर अक्षुण्य सेवा करते रहे हैं। विक्रम की ११ वीं शताब्दी में बयाना में वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज विजयपाल नामक यदुवंशी नरेश राज्य करते थे। इन्हीं नरेश ने प्रसिद्ध यवन आक्रमणकारी महमूद गजनवी के भाँजे सालार मसूद गाज़ी तथा अबूबकर-कंधारी जैसे आततायियों का, हिन्दू धर्म की रक्षा के हेतु, अपूर्व शौर्य एवम् कौशल से सामना किया था। वीर होने के साथ २ ये बड़े रसिक और काव्य प्रेमी भी थे। इनके इस युद्ध का मार्मिक वर्णन 'विजयपाल-रासो' नामक ग्रन्थ में प्रसिद्ध कवि नल्लसिंह ने किया है। यह ग्रन्थ प्रारम्भिक हिन्दी-काव्य का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

वर्तमान राज्य के स्थापित होने के बहुत दिन पूर्व १७ वीं शताब्दी में सुकवि प्रसविनी भरतपुर भूमि ने प्रसिद्ध कवि टहकन को जन्म दिया, जिन्होंने संस्कृत महाभारत के 'जैमिनाश्वमेध' अंश को सरल और सरस भाषा में अनुवाद कर जन साधारण को सुलभ बनाया।

औरङ्गजेब की धर्मान्धतापूर्ण नीति के परिणाम स्वरूप सन् १७२२ ई० में महाराज बदनसिंह ने भरतपुर राज्य की स्थापना की और यहाँ के शासन एवं राज्य विस्तार का भार रणबाँकुरे युवराज सूरजमल (सूदन-कृत सुजान चरित्र के नायक) को सोंपा गया।

भरतपुर के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि राज्य के संस्थापक महाराज बदनसिंह सरस कवि थे और कवियों को आश्रय भी देते थे। जिस राज्य के कर्णधार स्वयं काव्य प्रेमी हो वहाँ कविता का विकास क्यों न हो? बदनसिंह की इस साहित्यिक अभिरुचि का इनकी संतति पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इनके दो पुत्र सूरजमल और प्रतापसिंह, जो क्रमशः भरतपुर और वैर के शासक थे, बड़े काव्य प्रेमी थे और दोनों ने ही अपने समय में ललित कलाओं को श्लाघनीय प्रोत्साहन दिया। यदि दीग के भव्य भवन सूरजमल की कलाप्रियता का अक्षुण्ण यशोगान करते हैं तो वैर के सुन्दर महल, नोलखा बाग और फुलवारी प्रतापसिंह की कीर्ति का। यदि महाकवि सूदन ने अपने आश्रय दाता सुजान के शौर्य वर्णन के लिये 'सुजान चरित्र' की रचना की तो आचार्य सोमनाथ ने प्रतापसिंह की सरस प्रवृतियों की तुष्टि के लिये मनोमुग्धकारी 'रस पीयूष निधि' ग्रन्थ की। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ में सोमनाथ और सूदन को समकालीन होते हुए भी दो विभिन्न कालों के उन्नायकों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। शौर्य काव्य की दृष्टि से सूदन तो महाकवि हैं हीं, किन्तु काव्य प्रतिभा के साथ २ जिस आचार्य गुण का होना अपेक्षित होता है वह महाकवि सोमनाथ में देखने को मिलता है

इन दोनों महाकवियों द्वारा शृंगार और शौर्य की जो धाराएं प्रवाहित की गईं वे साहित्य प्रेमी मानस को अपनी सरस लहरियों से आप्लावित करती हुईं उद्दाम वेग से प्रवाहित होने लगीं और इनके युगल सजल तटों पर आसीन कवि विहंग रस सीकरों का पान कर अनिर्वचनीय आनंद का अनुभव करने लगे। कुछ काल के अनन्तर नगर निवासी भागीरथ रूपी राम कवि ने भक्ति रस रूपी सुर सरिता को प्रवाहित किया जिससे भरतपुर की काव्य धारा को नया मोड़ मिला। शौर्य शृंगार और भक्ति की यह त्रिवेणी इतने वेग से उत्तरोत्तर बढ़ी कि इसका प्रवाह आज तक जन मानस को रसानुभूति करा रहा है।

यह त्रिवेणी वहने ही पाई थी कि समय परिवर्तित होने लगा। अंग्रेजों के अत्याचारों के परिणाम स्वरूप जनता में राष्ट्रीय भावना का अभ्युदय हुआ। पद्य के साथ २ गद्य का प्रचलन बढ़ा और ब्रज भाषा के स्थान पर शनैः २ खडी बोली को प्रोत्साहन मिलने लगा। ऐसे संक्रमण काल में श्री गोकुलचन्द दीक्षित जैसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यिकार उत्पन्न हुए, जिन्होंने कहानी, नाटक, इतिहास, दर्शनशास्त्र आदि गद्य रचनाओं द्वारा साहित्य की श्रीवृद्धि की। इस प्रकार वर्तमान काल के प्रारम्भ होते ही कवियों ने ब्रज और खड़ी दोनों भाषाओं में काव्य सृजन प्रारम्भ कर दिया। अब जहाँ डा० राँगेय राघव खड़ी बोली में सामयिक रचना कर भरतपुर के साहित्यिक क्षेत्र को गौरवान्वित कर रहे हैं वहां श्री चम्पालाल 'मंजुल' और श्री कुलशेषर आदि कवि ब्रज भाषा की सरस रचनाओं द्वारा भगवती वीणापाणि की अर्चना करने में संलग्न हैं। इस प्रकार सरस्वती के इन वरद पुत्रों ने भरतपुर में जन्म लेकर जो अमर काव्य रचना की है वह केवल भरतपुर को ही नहीं वरन् समस्त हिन्दी जगत के लिए एक अमूल्य देन है।

शारदा के इन सुपुत्रों की वाणी के अमरत्व को सुरक्षित बनाये रखने की दृष्टि से हिन्दी साहित्य समिति के स्थापन काल से ही अनेक भागीरथ प्रयत्न किए जारहे हैं। सर्व प्रथम सन् १९११-१२ में यहाँ के तत्कालीन साहित्यकार श्री मयाशंकर याज्ञिक और विद्यारत्न अधिकारी श्री जगन्नाथदास विशारद ने भरतपुर के प्राचीन कवियों के ग्रन्थों की शोध की और अनेक अमूल्य ग्रन्थ ढूंढ़ निकाले। इन्हीं ग्रन्थों में सोमनाथ कृत 'माधव विनोद' नामक ग्रन्थ मिला, जिसे पढ़कर श्री सत्यनारायन कविरत्न को 'मालती माधव' लिखने की प्रेरणा मिली। खेद का विषय है कि अनुकूल परिस्थित न होने के कारण ये शोध कार्य स्थगित हो गया और प्राप्त ग्रन्थ भी श्री मयाशंकर याज्ञिक के पास ही रह गए सुने जाते हैं। इसके अनन्तर सन्१९३७ ई० के आरम्भ में श्री बालकृष्ण दुबे ने इस कार्य को नवीन ढ़ंग से करने का स्मरणीय पग उठाया। उनके देख रेख में सर्व श्री वैद्य देवी प्रकाश, कविवर नन्दकुमार, प्रेमनाथचतुर्वेदी, प्रभुदयाल 'दयालु' तथा मा०प्रभुलाल

गोयल ने बड़ी तत्परता से कार्य किया और अथक परिश्रम के पश्चात् 'भरत कवि स्मारक ग्रन्थ' प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त सामिग्री एकत्रित करली, किन्तु दुर्भाग्यवश यह स्मारक ग्रन्थ प्रकाशित न हो सका और कुछ सामिग्री स्व॰ कविवर नन्दकुमार के पास ही रह गई। स्वर्गीय दुवेजी हताश न हुए और सर्व श्री प्रेमनाथ चतुर्वेदी, प्रभुदयाल 'दयालु', प्रभुलाल गोयल, चम्पालाल 'मंजुल' तथा कवि हरीश आदि के सहयोग से प्राचीन कवियों का जीवनवृत और उनकी कविताओं के उद्धरण पुनः संकलित करने में जुट गये, किन्तु दुवेजी की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण स्मारक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि तैयार न हो सकी और न यह ग्रन्थ मुद्रित ही हो सका।

सन् १९५५ ई० में 'समिति' के सभापति पद का कार्य-भार सम्हालने के अनन्तर मेरी भी यह उत्कट अभिलाषा हुई कि यहां के कवियों के 'स्मारक ग्रन्थ' को शीघ्रातिशीघ्र सम्पादित कर स्वर्गीय दुवेजी के स्वप्न को साकार करूं किन्तु 'समिति' के नवीन भवन के निर्माण-कार्य में व्यस्त हो जाने के कारण मैं अपने विचारों को मूर्त रूप न दे सका। दिनांक १७-१०-६० को कार्यकारिणी की बैठक में मेरे साथियों ने मुझे यह कार्य अविलम्ब सम्पादित करने को विवश किया। अतः मित्रों के आग्रह के फलस्वरूप मैंने यह कार्य ... प्रारम्भ कर दिया, परन्तु इसको जितना सरल समझे हुए था उतना न निकला। प्राचीन कवियों की रचनाएं तो थीं, किन्तु प्रतिलिपिकों की असावधानी के कारण काव्य सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ आगई थीं जिनका निराकरण करना अनिवार्य था; दूसरे वर्तमान-काल के बहुत से कवियों के जीवन-बृत तथा रचनाएं न थीं और प्राचीन कवियों के जीवन वृतान्त भी पुनः लिखने को थे। इस कार्य में सहयोग देने के लिए मैंने श्री प्रभुदयाल जी 'दयालु' से निवेदन किया। श्री दयालु ने बड़ी तत्परता से कार्य प्रारम्भ किया, किन्तु अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाने के कारण वे अधिक समय न दे सके। ऐसी स्थिति में मेरे पुराने मित्र श्री चम्पालाल 'मंजुल' ने सक्रिय कदम उठाया और छः मास का अथक परिश्रम करके प्राचीन कवियों की रचनाओं को उनकी मूल प्रतियों से (जो समिति के पुस्तकालय में एकत्रित की हुई थीं) मिलाकर शुद्ध किया। यथार्थ में यदि 'मंजुलजी' जैसा काव्य-मर्मज्ञ इतना परिश्रम न करते, तो यह कार्य असम्भव तो नहीं, कठिन अवश्य था। समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभुलाल गोयल का भी पर्याप्त सहयोग मिला।

जैसा पहले कहा जा चुका है, यह ग्रन्थ बहुत जल्दी में तैयार करना पड़ा है। अतः प्रूफ सम्बन्धी भूलों के अतिरिक्त, वर्तमान-काल के अनेक प्रतिभा सम्पन्न कवियों के वृतान्त जल्दी में रह गए होंगे। आशा है सहृदय पाठक इन त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा करेंगे।

यदि इस 'कुसुमांजलि' के अवलोकन से भरतपुर के कवियों की हिन्दी साहित्य को देन और उनका अन्य कवियों के बीच स्थान निर्धारित हो सका तथा हिन्दी जगत के मनीषियों को भरतपुर के कवियों पर शोध-कार्य के लिए कुछ भी प्रेरणा मिल सकी, तो मैं अपने इस प्रयास को पर्याप्त सफल समझूंगा।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्रांति सं० २०१८ वि०

डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त

प्रकरण १

सोमनाथ–काल

महाकवि सोमनाथ:—भरतपुर राज्य वंश के आश्रय में रह कर ब्रज-भाषा काव्य को पल्लवित एवम् पुष्पित करने वाले कवियों में महाकवि सोमनाथ प्रमुख हैं। ये 'शशिनाथ' 'सोमनाथ' और 'नाथ' नाम से काव्य रचना किया करते थे।

महाकवि सोमनाथ के जन्म एवम् कविता काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। मिश्रबन्धु विनोद के अनुसार इन्होंने अपना प्रमुख रीति ग्रन्थ "रस पीयूषनिधि" भरतपुर राज्य के संस्थापक महाराजा बदनसिंह के शासन काल में सं० १७९४ की ज्येष्ठ वदी १० को पूर्ण किया, परन्तु ठाकुर शिवसिंह सेंगर इनका जन्म संम्वत् १८८० विक्रम बतलाते हैं। हम ठाकुर साहब के मत से सहमत नहीं है क्यों कि "रस पीयूषनिधि" निश्चित रूप से महाराजा बदनसिंह के समय में लिखा गया और महाराजा बदनसिंह का शासन काल सं० १७७५ विक्रमी से १८१२ विक्रमी तक ही रहा। इसलिये मिश्रबन्धु-बिनोद का मत ही उचित ठहरता है। इनके मरणकाल के विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनका जन्म मथुरा नगर के चतुर्वेदी (छिरौरा) वंश में हुआ था। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध में लिखा है कि छिरौरा वंशी नरोत्तम मिश्र के देवकीनन्दन एवं कण्ठ नामक दो पुत्र थे। देवकीनन्दन के नीलकण्ठ, मोहन, महामणि और राजाराम नामक चार पुत्र हुए, जिनमें नीलकण्ठ के उजागर, गंगाधर और सोमनाथ उत्पन्न हुए। नरोत्तम मिश्र जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह (राज्यारोहण-काल संवत् १७२४) के मंत्र-गुरु थे। सोमनाथ जी के पिता नीलकण्ठ मिश्र अपने समय के प्रसिद्ध कवियों व ज्योतिषियों में गिने जाते थे।

बाल्यकाल श्री कृष्ण भूमि मथुरा में व्यतीत कर सोमनाथ जी नवाब आजमखाँ के यहाँ गये और उनके लिये इन्होंने 'नवाबोल्लास' नामक ग्रन्थ की रचना की। तत्पश्चात् ये महाराजा बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रतापसिंह जी के आश्रय में आकर स्थायी रूप से भरतपुर में रहने लगे। यहीं पर इन्होंने अनेक

सुन्दर ग्रन्थों की रचना की। बदनसिंह के बड़े पुत्र इन दिनों युवराज थे। प्रतापसिंह को वैर की जागीर व किला मिला हुआ था, जहां वे रहते थे। वंशज अभी तक भरतपुर में रहते हैं। उन्हें राज्य की ओर से दानाध्यक्ष पद प्राप्त है तथा खानपान आदि मिलता है। इनके निम्न हस्त-लिखित ग्रन्थ मिलते हैं:—

(१)	नवाबोल्लास	(नवाब आजमखाँ के लिये) लिखित
(२)	शशिनाथ-विनोद	(शिव विवाह)
(३)	रामकलाधर	(अध्यात्म रामायण)
(४)	रस-पीयूषनिधि	(रीति ग्रन्थ)
(५)	ध्रुव-विनोद	(ध्रुव चरित्र)
(६)	राम-चरित-रत्नाकर	(बाल्मीकि रामायण का अनुवाद)
(७)	माधव-विनोद	(मालती माधव का अनुवाद)
(८)	रास-पंचाध्यायी	(कृष्ण लीलावली)
(९)	संग्राम-दर्पण	(ज्योतिष पर विचार)
(१०)	प्रेम-पच्चीसी	
(११)	रस-विलास	(नायिका भेद)
(१२)	सुजान-विलास	(सिंहासन वत्तीसी का अनुवाद)
(१३)	ब्रजेन्द्र-विनोद	(भागवत उत्तरार्द्ध)

सोमनाथ का सभी साहित्य ब्रज भाषा काव्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है, किन्तु खेद का विषय है कि यह अभी तक अप्रकाशित है। इनका 'रस-पीयूषनिधि' रीति का अपने ढंग का अकेला ग्रन्थ है जिसकी मिश्र बन्धुओं ने अपने 'मिश्रबन्धु-विनोद' में भूरि भूरि प्रशंसा की है। इसमें कवि ने पिंगल, काव्य लक्षण, प्रयोजन, कारण और भेद, पदार्थ-निर्णय, ध्वनि, भाव, रस, रसाभास, भावाभास, दोष, गुण, अनुप्रास, यमक, चित्र-काव्य तथा अन्य अलंकारों का बोधगम्य सरस वर्णन किया है। इस दृष्टि से यदि इन्हें हिन्दी रीति-शास्त्र का मम्मटाचार्य कहदें तो अत्युक्ति न होगी। पदार्थ-निर्णय में देव की भाँति इन्होंने भी वाच्य, लक्ष्य और व्यंग्य के अतिरिक्त तात्पर्यार्थ भी माना है। रस का लक्षण कितना यथार्थ है:—

> सुनि कवित्त को चित्त मधि, सुधि न रहैं कछु और।
> होय मगन वहि मोद में, सो रस कहि सिर मौर॥

इस ग्रन्थ में नायिका भेद विस्तार पूर्वक वर्णित है। सर्वत्र इनकी बहुज्ञता की छाप मिलती है। भाषा में प्रौढ़ता के साथ साथ सरलता, शैली की रोचकता

और सरसता तथा वर्णनों की सजीवता देखते ही बनती है। इनकी रचनाएं गुर्जर समाज में बड़े चाव से पढ़ी–सुनी जाती हैं। रसों के विवेचन में प्रतापसिंह के हाथी, घोड़ों का वर्णन अच्छा बन पड़ा है। सोमनाथ ने दशाँग कविता को अकेले इसी ग्रन्थ में बड़ी कुशलता पूर्वक प्रस्तुत किया है।

रीति–आचार्यों में इनके स्थान के सम्बन्ध में मिश्र-बन्धुओं ने अपने विनोद में जो विचार प्रकट किये है उनको ज्यों का त्यों उद्धृत कर हम हिन्दी–संसार से निवेदन करते हैं कि वह इनके साहित्य का अध्ययन और प्रकाशन कर व्रज भाषा साहित्य की श्री-वृद्धि करें।

“ श्रीपति और दास जी के सिवा इनका (सोमनाथ का) रीति ग्रन्थ प्राय : और सब आचार्यों के रीति ग्रन्थों से रीति के विषय में श्रेष्ठतर है। प्रत्येक विषय को जैसी साफ और सुगम रीति से इन्होंने समझाया है, वैसा कोई भी कवि नहीं समझा सका है। कविता से अपरिचित पाठक भी इस ग्रन्थ को पढ़ कर दशांग कविता समझ सकता है। हमारी समझ में आचार्यत्व की दृष्टि से देखने पर केवल चार सत्कवियों ने दशांग कविता का वर्णन स्पष्ट और सुन्दर किया है, अर्थात, देव, श्रीपति, सोमनाथ और दास। इन सबमें समझाने की रीति सोमनाथ की प्रशंसनीय है। केशवदास और कुल पति मिश्र भी आचार्य हैं परन्तु उन्होंने एक तो दशांग कविता नहीं की, और दूसरे इन दोनों की कविता कठिन है। रसपीयूषनिधि काव्योत्कर्ष में भी प्रशंसनीय है। आकार में यह दास के काव्य निर्णय से सवाया होगा ।”

इनकी भाषा, भाव और छन्द प्रयोग के सम्बन्ध में मिश्र बन्धुओं ने लिखा है:—“ सोमनाथ की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है। उसमें संयुक्ताक्षर बहुत कम पाये जाते हैं और समस्त ग्रन्थ बहुत ही मधुर भाषा में लिखा गया है। इनको यमक, अनुप्रास आदि का इष्ट न था और यह उचित रीति से अपनी कविता में उनका व्यवहार करते थे। शब्दों के स्वरूप में ये शुद्ध संस्कृत के स्थान पर हिन्दी की रीति अधिक पसन्द करते थे। वृन्दावन की जगह बिंदावन लिखते थे। इनकी कविता में प्रकृष्ट छन्दों की संख्या बहुत अधिक न मिलेगी, परन्तु इनकी रचना निर्दोष है और एक रस बनती चली गई है, ऐसा नहीं कि कहीं बहुत उत्तम हो और कहीं शिथिल पड़ गई हो। ये देव और मतिराम की भांति चमत्कारिक छन्द नहीं लिख सकते थे, परन्तु इनकी भाषा बहुत ही सन्तोष जनक है। आप दास जी के समकक्ष कवि हैं।”

(मिश्रबन्धु-विनोद द्वितीय भाग पृष्ठ ७०६)

इनकी कृतियों में से कुछ उदाहरण लीजिये :—

नवाबोल्लास

ईद वर्णन

कंत अवनी कौ गुनवंत गाजी आजमखां,
ईद मान इन्द्र कौ विलास परसत है ।
बाजत मृदंग बीन मधुर मधुर मंजु,
तानकी तरंगन सों रंग दरसत है ॥
कुन्दन लता सी खासी काम कंदला सी बाल,
नृत्यत अनंत अंग रूप सरसत है ।
नज़र बिलंद सौ गयंद बकसत रीझि,
करन सौ कंचन कौ मेह बरसत है ॥

बकरीद वर्णन

पण्डित परम गुन मण्डित बिबुध जिमि,
उच्चरत विमल कवित्त गुनवेश के ।
नृत्यत अनेक नृत्य कारक अनंत गति,
गावत सुघर सम किन्नर सुमेश के ॥
सोमनाथ कहत मुबारकी चहूँघा चारु,
चायन सों चतुर नरेश देश देश के ।
आजमखाँ गाजी की विलोक बकरीद आज,
फीके होत सुघर समाज असरेश के ॥

दशहरा वर्णन

(इस छन्द के प्रथम तीन चरण ही मिले हैं, चौथे की पूर्ति सोमनाथ की न होकर छन्द पूर्ति-मात्र है)

सोहें आज सरस सभा में दसहरा मा[illegible]
आज़मखां आय पुरहूत सो प्रवीनों है

दान दे कविंदन गयंदन हयंदन के,
जाने सुख सुयस गुलाम कर लीनों है ॥
सो छवि अखंड महि मंडल के जीतिबे कों,
मानहु विरंच अवतंस यह दीनों है ।
'सोमनाथ' वरनत दशहरा सुप्रसन्न ह्वै कें,
ठाट बाट देखि के अतीव मन चीनों है ॥

दिवाली वर्णन

सरस दरस की दिवारी मान आजमखां,
राजत मनोज की निकाई निदरत है ।
जगर मगर दिसा दीपन सों कर राखी,
तिनै पेखि दुजन पतंग पजरत है ॥
छूटत छबीलौ हथ-फूलन को वृंद तामें,
ताकी दुति देखि हिये आनंद भरत है ।
सो छवि अनंद मानों पावक प्रताप-तरु,
फूल्यो ताकै चहुँघा तै फूल ये झरत है ॥

शशिनाथ--विनोद

छप्पय

शरद छटा सौ अंग पीत शिर जटा-जूट धर ।
तापर वसत भुजंग तुंग गंगा-तरंग वर ॥
चन्द्र लिलार अमंद तीन दृग कोटि कष्ट हर ।
भूत पास अट्टास और श्री विधि विलास कर ॥
अरु मुण्डमाल कंकाल कर, कंठ विसाल कराल गर ।
इहि विद्धि लख्यौ 'शशिनाथ' को, जग प्रसिद्ध सब सिद्ध धर ॥

कवित्त

जरद जटान में विसाल जिमि गंगधार,
हार शेष हिरदें त्रिनैन रूप न्यारे कौ ।
गरल गरे में जोर जाहर जलूस वारी,
आधे अंग तरुनी सनेह के पत्यारे कौ ॥
'सोमनाथ' एरे उर अंतर निहारि भव,

पारावार तारन हू कौ कर्ता हुस्यारे कौ ।
भसम सिंगारे कौ लिलार पर धारें ज्योति
चन्द की कला की वा पिनाकी प्रान प्यारे कौ ॥

रामकला-धर

बड़ी चौपाई

श्री बदनसिंह ब्रजमंडल नायक जग जाकौ जस छायौ ।
ताकौ कुंवर प्रतापसिंह वर आनन्दन अधिकायौ ॥
तिहि निमित्त कवि 'सोमनाथ' ने रामचरित्र बनायौ ।
रामकला-धर नाम ग्रन्थ कौ प्रथम मयूष लसायौ ॥
कर जोड़े ठाढे हनुमन्तहिं आपु राम जी बोले ।
सुनि अब तत्व कहतु हों तो सों मेरे भक्त अमोले ॥
एक आत्मा अरु अनात्मा परमात्मा सु तीजौ ।
जीवरु प्रकृति ब्रह्म क्रम ही तें तीनों उर गुनि लीजौ ॥
तीन भेद हैं जैसे नभ के डीठि सबन के आवै ।
महाकास है पहिलौ दूजौ घटा कास छवि छावै ॥
अरु प्रतिबिंब तीसरौ भेद सुग्रन्थनि प्रगट बखान्यौ ।
इही भाँति चैतन्य तीन विधि 'सोमनाथ' ने गान्यौ ॥

सवैया

हे रघुनाथ दयाल सुनौ अब मैं निहचै तुव पाँइ पखारि हौं ।
काठ औ पाहन में कहा भेद, मनुष्य करें नहिं और विचारि हौं ॥
ए पद पंकज रावरे के, तिनकी यह बात क्यों धीरज धारि हौं ।
यों कहि के पग धोइ मलाह ने फेरि कह्यो अब पार उतारि हौं ॥

दोहा

भये अविद्या ते प्रगट, देहादिक समुदाय ।
तिनमें चेतन शक्ति सो, प्रतिबिम्बति है आय ॥
जीव लोक के मध्य ह्यां, जीव कहत सब ताहि ।
विगत अविद्या ब्रह्म ही, ज्ञानी लखत उछाहि ॥
देह बुद्धि मन प्रान कौ, जब लौं है अभिमान ।
तब लौं कर्ता भोगता, सुख दुख कौ सुनिदान ॥

परं ब्रह्म को नाँहिनें, यह संसार विचार ।
तुम में नाँहिअजान कौ, लेस जगत भरतार ।।
हम संसारी हैं सबै, सने महा अविवेक ।
तुम चैतन्य सदा अमल, आनदमय प्रभु एक ।।

रस-पीयूषनिधि

गीतिकाछन्द-लक्षणम्

सगन जगन जुग भगन पुनि रस गन लघु गुरू होय ।
वीस वरण यों गीतिका वरनै कवि सब कोय ।।

उदाहरण

परसै सु-हातन फूल चन्दन अंग अंग अचैन हैं ।
दिन रैन एक सुभाय सौं नित पंथ हेरत नैन हैं ।।
'शशिनाथ' प्रीतम साँवरे कब आय मोद बढ़ाय हैं ।
बरसाय मेह सनेह कौ मुसक्याय कंठ लगाय हैं ।।

संयोगशृंगार-लक्षणम्

दम्पति मिलि विहरत जहाँ, मन्मथ कला प्रवीन ।
ताहि संजोग सिंगार कहि, वर्णत सुकवि कुलीन ।।

उदाहरण

जगमगै जटित जवाहर कौ परजंक,
फूले से अनुमम बिछौना सरसात हैं
तहां ऐन मैंन रति काम से सुघर सजै,
मरगजै वसन औ भूषन लसात हैं ।
'सौमनाथ' कहै चित्त चाइन सौं मोद भरे,
प्रेम रस रंगन की बातें बतरात हैं ।
गलवाही दम्पति परस्पर दै प्रात आजु,
रंगमगी आँखिनि निरखि मुसिक्यात हैं ।।

अथ रूपकातिशयोक्ति-लक्षणम्

केवल जंह उपमान कौ कहिबौ है सुखदानि ।
'रूपक अतिशय उक्ति' सो रसिक लेहु पहिचानि ।।

उदाहरण

थर हरें कुन्दन कदलि अरविन्दन पै,
गुंजरत भंवर समीप सरवर हैं ।
फरकत कोक सुरसरि की तरंग संग,
भेटति कलप वेलि काम तरूवर हैं ।।
विद्रुम सुरंगनि में हीरा की जगत जोति,
'सौमनाथ' कहै सो मधुरता कौ घर हैं ।
देखौ लसै दामिनी न छत्र जल-धर माहिं,
नक्षत्रपति अंक में विचित्र दिनकर हैं ।।

विभावना लक्षणम्

बिना हेतु जहं कारज सिद्धि ।
सो विभावना जान प्रसिद्धि ।।

उदाहरण

अलवेली रूचि सौं रही उही वदन की छाँह ।
बिन ही पिय निरखै हरषि विहँसि पसारै बांह ।।

विट सखा लक्षणम्

काम केलि की बात अरु दूतपने में ठीक
लच्छन ये विट सखा के वरनत हैं कवि नीक ।।

उदाहरण

काहें को गुलाब सानि केसर लगाई अंग,
संग मलियागिरि के नेक ना सिरायगी ।
फूलन की पांखुरी बिछाये ते न ह्वै है कछु,
सुमति सखीन की बिलोके अकुलायगी ।।

'सोमनाथ' प्यारे सौं न कीजै अभिमान प्यारी,
ऐसे उपचार विथा और अधिकायगी ।
वैद ब्रजचन्द कौ सरूप रस चाखौ चलि,
अंतर के जुर की जरन घटजायगी ।।

ध्रुव विनोद

छप्पय

उज्वल मृदु अंग अंग, जगमगै कमल बदन अति ।
हरि-रस मत्त विशाल, लाल लोचन चंचल गति ।
शीश लटूरी कुटिल, जनेऊ तुलसी माला ।
तिलक भाल करवीन वसन, कटि तट मृग-छाला ।
कहि 'सोमनाथ' उद्दार अति, हौनहार को ज्ञान गुनि ।
वर बुद्धि विशारद सिद्धि-निधि, दरसे नारद देव मुनि ।।

पद्धरि छन्द

तुम चरन भजत जे प्रभु दयाल ।
तिनकों न और आशिष विशाल ।।
यातें तुम हमसे दीन जाँनि ।
यों रक्षा करियै नेह साँनि ।।
जिहि विद्ध प्रसूता-प्रथम गाय ।
निजु वच्छा कों पालति सुभाय ।।
तुम बिरह दीन वत्सल सुजान ।
हम हैं अधीन अनसावधान ।।

दोहा

यों जब ध्रुव ने जोरिकर, प्रभुसौं उचरे बैन ।
धन्नि धन्नि कहि हरि तबै, बोले हरषत चैन ।।

पादाकुलक छन्द

बह्यौ छीर छतिया तै धारनि ।
अरु अंसुवनि की धार अपारनि ।।

माइ सुनीति और ध्रुव छौना ।
भीजगये अंसुवन गहि मौना ॥

मत्त—गयन्द

सुन्दर मन्दिर अंबर औ बहुरंग तुरंग मतंग अमाने ।
कंचन के मनि मंडित साज सजें तरुनी अरु पुत्र सयाने।
बाग बड़े कल्पद्रुम के 'शशिनाथ' जुदेते मनोरथ दाने।
ते ध्रुव माने नहीं अपने सपने के समान सबै पहिचाने॥

रामचरित-रत्नाकर

कवित्त

जैसें तेजवन्तनि में उद्धत प्रभाकर औ,
पव्वयनि मध्य हिमवंत ज्यों पहार है ।
सिन्धुन के मध्य ज्यों गम्भीर छीरसागर है,
नरन में त्यों तुम, न विक्रम कौ पार है।
रामचन्द्र सुनों रावरे के सम कोऊ अब,
जग में न दूजौ यह बात निरधार है।
वरून कुवेर न असुर जक्ष नाम जम,
पावक समीर न पुरंदर उदार है ।

नाराच छंद

चली चुचाइ शैल ते अनन्त नीर-धार है ।
भसे प्लवङ्ग वीर औ मतंग वार वार हैं॥
कपे प्रचण्ड वृक्ष डार पात मूल तच्छनै ।
चढ्यौ महेन्द्र पे जवै समीरनन्द गच्छनै ॥
अनेक रंग की चली अनेक धार छुट्टिकै।
अनिन्दता गिरिन्द्र की गई शिला सुफुट्टि कै ॥
मनस्सिला शिला विशाल हरिताल सौं मिली।
समीरनन्द वीर के प्रचण्ड पग्ग सौं भिली ॥
भविष्ष नाग चप्पिकै शिलानि दुःख मण्डनै।
स धूम ज्वालसी लगै सुज्वाल मुक्ख छण्डनै ॥

भजे गंधर्व नाग वृन्द बुद्धि चित्त धारि कैं।
हुतै महा करक्क सौं सुयान कौ विसारि कै॥

छप्पय

चण्ड फुरुहरी मंडि चरन उद्दंड मचक्कै।
विकट कर्ण संकोचि पुच्छकरि उच्च उचक्कै।
चल्यौ व्योम के पंथ कपिनि कुंजर वल मंड्यौ।
हनूमन्त उद्दाम चित्त आनन्द घमंड्यौ।
दब्यौ महिन्द्र पब्बे सबै शृंगे गई दरक्कि कै।
च्वै चल्यौ नीर चहुँ ओर तैं सरिकी सिला करक्कि कैं॥

माधव-विनोद

झमकतु वदन मतङ्ग कुम्भ उत्तंग अंग वर।
वन्दन वलित भुशुण्ड कुंडलित शुण्डि सिद्धि घर।
कंचन मनिमय मुकुट जगमगै शुभ्र शीश पर।
लोचन तीन विशाल चारि भुज घ्यावत सुरनर।
'शशिनाथ' नन्द स्वच्छन्द नित, कोटि विघन छरछन्द हर।
जय बुद्धि विलन्द अमन्द द्युति, इन्दु भाल आनन्द कर॥

रास पंचाध्यायी

सवैया

रावरी हाँसी विलोकनि सौं अरु बाँसुरी की सुनि तान तरेरी।
जागि उठी मनमत्थ की अग्गि छिनों छिन बाढ़त भाँति अनेरी।
सींचौ हमें अधरामृत सौं 'शशिनाथ' कहौ जिनि बात करेरी।
नातरु या विरहानल में जरि होंयगी कान्ह भभूति की ढेरी।
मनमत्थ मनोहर मूरति श्याम न क्यों अबलों दरसावत हौ।
सरसाइ कें नेह भलीविधि सों सुख-मेह न क्यों वरसावत हौ।
'शशिनाथ' गुपाल कहौ कितहौ विरहीं विरहै परसावत हौ।
यह बात न चाहिये लाल तुम्हें जु हमैं इतनो तरसावत हौ॥

संग्राम दर्पण

दिक्शूल कथन (दोहा)

सोम, शनिश्चर वार कों, पूर्व न करौ पयान ।
दक्षिण कों गुरू के दिना, चलिये नहीं सुजान ।।
भानुवार अरु शुक्र कों, मति पश्चिम को जाउ ।
मंगल अरु बुधवार कों, उत्तर दिशा बचाउ ।।
पूरब में गिनि अग्नि दिशि, नैऋत दक्षिण जान ।
वायव पश्चिम में समझि, ईश उत्तर पहिचान ।।

अथ जय-पराजय ज्ञानार्थ स्वर प्रश्न कथन [दोहा]

वायें स्वर की चाल में, वायें प्रश्नक आय ।
पूछै तौ संग्राम कों, जीतै आपु बनाय ।।
योंही दक्षिण स्वर चलत, ओर दाहिनी आय ।
पूछै तौ अति कष्ट कर, पावै मन की भाय ।।
बंध स्वर की ओर कै, पूछै अपनौ काज ।
नास होय तत्कालही, सम्पति सुख कौ साज ।।

प्रेम पच्चीसी [दोहा]

मंगल मूरति विघनहर, सुन्दर त्रिभुवन-पाल ।
खेवट प्रेम-समुद्र के, जै जै श्रीनंदलाल ।।

रेषता

क्या की थी तकसीर तुसाढ़ां नहि मुखड़ा दिखलावै है ।
रात दिना बिन तेंडी चरचा मुझनू और न भावै है ।
बेदरदी महबूब गिरंदे क्यों गिरंदगी करदा है ।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर बिच परदा हैं ।।
वे तुझसे महबूब गुविन्दे नैन असाढ़े उरझे हैं ।
कौन सकै सुरझाइ इन्होंने पै औरोंसे सुरझें हैं ।
वेदरदी पहिचान दरद तूं भला दिया ते अरदा है ।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर बिच परदा है ।।

खान पियन दी गल्ले भूली साहस नहीं ठहरदा है।
विधि का साल बराबर गुजरै निसि दिन आठ पहरदा है॥
बिन तेरा मुख देखे जानी काम कहर अति करदा है।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर बिच परदा है॥
दरदवन्द वे मरद कन्हैया जे पन को प्रतपाले हैं।
पाक नज़र पहिचान गहगही गुरवे दरद उसाले हैं॥
प्रेम-पन्थ में डग दै जानी अब क्यों हिये अहरदा है।
'सोमनाथ' नेही से कैसा दिल अन्दर बिच परदा है॥

रस-विलास

छप्पय

उदय दिवाकर रंग-अंग आभा वर धारिनि।
त्रिनयन चन्द लिलार ईश अरधंग विहारिनि।
सिंह-वाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि।
जुग्गिनि मंडल संग चँड दानव दल खंडिनि।
बहु बुद्धि वृद्धि वरदायनी मोहनि सुर-नर मुनि मननि।
हूजै सहाय 'शशिनाथ' कौ जय जय सिंधुर मुख जननि॥

नायिका-लच्छणम्

दोहा

सुन्दर केलि कला चतुर, भूषन भूषित अंग।
इहि विधि वरनों नायिका, रस कौ पाइ प्रसंग॥

उदाहरण [कवित्त]

सोहति कसूंमी सारी सुन्दर सुगन्ध सनी,
जगमगै देह दुति कुन्दन के रंगसी।
शील सुघराई की सी सींव अरविंद मुखी,
नैनन की गति गूढ़ तरल तुरंग सी।
छूटति चहूँघा मनि-भूषन मयूष चारु,
'सोमनाथ' लागै बानी उपमा बिरंग सी।
राजै रति मंदिर अनंग अंगना सी आजु,
बाढ़ै अंग अंगनि में जोबन तरंग सी॥

सुजान-विलास

सवैया

ग्रामनि में द्रुम पुञ्ज निकुञ्ज प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है।
चारु प्रभाकर की तनया अरु चारु पदारथ की फरनी है।
नित्त जपै 'शशिनाथ' हिये जहं की रज पापन की हरनी है।
लोकन यों वरनी करनी दुख की हरनी ब्रज की धरनी है॥

कवित्त

प्रबल प्रताप दानी बलि सौ बिराजै जोर,
अरिन के पीर रोर धमक निसाने की।
ठट्ट मरहट्टन के निघट्ट डारे बानन सों,
खेस कर लेत है प्रचण्ड बिलगाने की॥
'सोमनाथ' कहै सिंह सूरज कुमार जाकौ,
क्रोध त्रिपुरारि कौ सौ लाज बरबीन की।
चढ़िकें तुरंग जङ्ग रंग कर सेलन सों,
तोरि डारी तीखी तरवार, तुरकनि की॥

२—टहकन कवि:—इनके पिता का नाम रंगीलेदास था। ये जाति के और चौपड़ा गोत्र के थे। इनका निवास स्थान जलालपुर था जो तहसील में एक प्रसिद्ध गांव है। इन्होंने अपना परिचय स्वयं इस प्रकार दिया है:—

'टहकन कवि' जलालपुर वासी।
छत्र धर्म नंदलाल उपासी॥
पिता रंगीलदास जग नामा।
जाति चौपड़ा कुल अभिरामा॥
समय पाय कवि गयौ सियाही।
हय क्रतु भाषा करी तहां ही॥

'टहकन' का कविता काल विक्रम की १७ वीं शताब्दी का आरम्भ होता है। इनका बनाया हुआ 'जयमतश्वमेध' नामक ग्रन्थ पाया गया है। २०×३०/८ साइज का ३७५ पृष्ठ का ग्रन्थ है। इसमें ७३ अध्यायों में महा के अश्वमेध पर्व की कथा दोहे, चौपाई तथा सोरठों में लिखी है। ग्रन्थ नि काल अषाढ़ वदी १३ बुधवार संवत् १७२६ है जिसे स्वयं कवि ने इस लिखा है—

कवित्त

मोर मुकुट सीस शुभ केसरिया तिलक माथे,
बेसर बनी है नांक मोती ढरकत है ।
नगन जटित लोल कुन्डल कपोलन पै,
दशन दमंकि छवि कोटिक धरत है ।
बांसुरी अधर राजै उर वनमाल साजै,
छुद्र-घंटिका बाजै छवि कही ना परत है ।
नूपुर विशाल पग 'टहकन' प्रभु नन्दलाल,
ऐसो ध्यान धरैं कोटि पातक टरत हैं ॥

दोहा

प्रश्न कियो रुक्मिनि बहुरि, कहौ कृष्ण समुझाइ ।
तीन अवस्था तुम रहे, ब्रज में वसि जदुराइ ॥

चौपाई

तीन अवस्था तुम ब्रज रहे, कीने केल जगत सब कहे ।
प्रथम किशोर पुगंड कुमारा, तुम गोकुल में कियो विहारा ।
पांच वर्ष कौ बालक होई, कहैं किशोर अवस्था सोई ।
तिह आगे पौगंड वर्ष दस, वर्ष पांच दशलों किशोर रस ।
तुम तीनहु ब्रज मांहि बिताई, इक दिन हमरे मन यह आई ।
ब्रज की विधि जानत बलमाता, तिहिं सों पूछ लेहु सब बाता ॥

छप्पय

यथा बुद्धि अनुसरी, कियो वर्नन हिय हर्षित ।
अश्वमेध गंभीर ग्रन्थ, कवहुती अच्छ मति ।
कछुक उक्त बल बुद्धि, कछुक परिकृति हरि दीनी ।
वीन वीन शुभ अच्छर, सुभग पोथी शुभ कीनी ।
श्री नन्दलाल की कृपासों, हय क्रतु की भाषा करी ।
कवि 'टहकन' बुध जन सोधही, जहाँ चूक बरनन परी ॥

३—हरि प्रसाद:—आप मिश्र वंश के चतुर्वेदी जाति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम श्री गंगेश चतुर्वेदी तथा पितामह का नाम श्री मक्खनलाल चतुर्वेदी था। भरतपुर महाराज के आप दानाध्यक्ष थे। हरिप्रसाद प्रारम्भ से ही

काव्यानन्द में मग्न रहते थे, इसका कारण वातावरण था। इनके काव्य प्रेमी रहे थे। अतः आपने भी इस सम्पत्ति को धरोहर रूप में किया और बचपन से ही काव्य सृजन करते रहे। आपकी महत्वपूर्ण 'भाषा तिलक' उपलब्ध हुई हैं, किन्तु गणेश वाहनों द्वारा खंडित हो गई है पुस्तक के अन्तर्गत 'मिश्र परिवार' का क्रम बद्ध सुन्दर परिचय मिलता है। के साथ २ इनको संस्कृत का अच्छा ज्ञान था।

आपके कविता काल के विषय में विद्वान् एक मत नहीं हैं। उसका यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं के अन्तर्गत कहीं भी इसका उल्लेख किया है। अतः आपका कविता काल अनुमानतः सम्वत् १७६० ठहराया है।

इनकी भाषा के विषय में पाठकों को 'भाषा तिलक' से पूर्ण मिलता है, जिसमें उन्होंने विशुद्ध ब्रज-भाषा, नवीन छन्द एवं अलंकारों का किया है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:—

असंभव भणित

कवित्त

कमल मृणाल तन्तु, सिव यस, वारि स्वच्छ,
कीरति समुद्र गामिनी के तट बैठि किनि।
वकुल मुकुल दाम परिमल तोलि तोलि,
सेरनसकेलि अंग लाइयतु कहि किनि।
चन्द्रकूप कातैं सुभ-सीतल समीर गुन,
साजि तजि लाज कहि पियौ सुधा पय किनि।
सपन मनोरथ, पथिक पिय भेटि भेटि,
विन गुन हार हिय ऊपर धरायौ किनि॥

गुंफ नाम शब्दालंकार

दोहा

शब्द निरर्थक हू जहां, रचना ते सुख देय।
गुंफ नाम सो जानिये, शब्द विभूषण तेय॥

सवैया

झूल रही मुख पै अलकें, सुकपोलनि झूमति झूमति छाई।
पायन पैजनि कों मन के, कटि किंकिनि घुंघरु त्यों छुननाई॥
नाच उछाह लिये लख लालु, जसोमति औ वनिता घिर आई।
थाता थेई, थाता थेई शब्द करत सब बाजत ताल सवै मन भाई॥

भारती वृत्ति

कोमल प्रौढ़ जहाँ रचन, अर्थ सुकोमल आनि ।
कविताई में तिह सरिस, वृत्ति भारती जान ॥

उदाहरण

भृकुटि निकट छिटकी अलक, रही गुलझरी छाय ।
मकरध्वज-धनु सौं लगी, मनु जीवा दरसाय ॥

४—कृष्णलाल भट्ट:—'कलानिधि' 'लाल कला निधि' और 'कृष्ण कला निधि' आदि अनेक उपनामों से कविता करते थे। भरतपुर राज के संस्थापक महाराजा बदनसिंह के पुत्र श्री प्रतापसिंह से आपका घनिष्ट सम्बन्ध था, जैसा कि इनकी रचनाओं से विदित होता है:—

'ब्रजराज कुंवर विराजि है, सु प्रतापसिंह उजागरौ ।
तेहि हेत विरचित कवि 'कलानिधि' चार ग्रन्थ गुनागरौ ॥"

कलानिधि का भरतपुर के अतिरिक्त बूंदी, जयपुर तथा मथुरा आदि में भी रहना पाया जाता है। देवकवि के आश्रयदाता राजा भोगीलाल के यहां भी इनका अच्छा आदर था। इन्होंने राजा भोगीलाल के लिये 'अलंकार कला-निधि' नामक ग्रन्थ लिखा, इनका अधिक समय प्रतापसिंह के आश्रय में ही व्यतीत हुआ। इनके लिये इन्होंने बाल्मीकि रामायण के बाल-काण्ड, युद्ध-काण्ड और उत्तर-काण्ड आदि की भाषा में रचना भी की।

केशव की भाँति बहुमुखी प्रतिभा व पाण्डित्य का आभास इनमें मिलता है। ये संस्कृत के विद्वान थे। इन्होंने उपनिषदों का 'शंकर भाष्यानुसार' गद्यानुवाद किया है जो प्राचीन हिन्दी गद्य का एक नमूना कहा जा सकता है। महाकवि केशव के समान इन्होंने आचार्यत्व में भी ऊँचा कदम उठाया है जैसा कि इनकी रचना 'शृंगार-माधुरी' एवं 'अलंकार कलानिधि' से विदित होता है इन्होंने रामचन्द्रिका की पद्धति पर विविध छन्दों में, बाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद भी किया है। भाषा भावानुकूल सानुप्रासिक एवं ओजस्वनी है। शृंगार में कोई कोई छन्द तो मतिराम के रसराज की टक्कर के हैं। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १७६९ से १७९० तक ठहरता है। इनके निम्नलिखित हस्तलिखित ग्रन्थ मिलते हैं:—

(१) शृंगार-माधुरी (बूंदी नरेश बुधसिंह के लिए सम्वत् १७६९ में लिखित)
(२) अलंकार-कलानिधि (राजा भोगीलाल के लिये लिखित)
(३) उपनिषद्सार (इनकी यह पुस्तक स्वान्तः सुखाय मालूम होती है)

(४) दुर्गा माहात्म्य (भरतपुरान्तर्गत वैर के राजा प्रतापसिंह के लिये संवत् १७९० वि० में लिखी गई)
(५) रामायण बालकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड (यह भी राजा प्रतापसिंह के लिये लिखी गई)

इनके अतिरिक्त संस्कृत में एक 'रामगीता' नामक पुस्तक भी इन्होंने लिखी है जो जयदेव कृत 'गीत-गोविंद' की परिपाटी पर है। माधुर्य की दृष्टि से कहीं कहीं यह जयदेव के समकक्ष दिखलाई पड़ते हैं।

इनकी कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

शृंगार माधुरी

दोहा

हुकम पाय नृप कौ सुकवि, सकल कलानिधि 'लाल'।
यह शृंगार रस-माधुरी, कीन्हौं ग्रन्थ रसाल ॥
सम्वत् सत्रह सौ बरस, उनहत्तर की साल।
सावन सुदि पून्यों सुदिन, रच्यौ ग्रन्थ तत्काल ॥
छत्र महल बूंदी तखत, कोटि सूर सस नूरु।
बुद्धिवली पतिसाह के, कीन्हौं ग्रन्थ हुजूर ॥

सवैया

सब भूपति वंस सिरै अवतंस सदा शिव अंस नरिंदवती।
महि मान महिम्मत हिम्मत की हद किम्मति की हद हिंदवती।
सुख सौं सरसी सरसी सरसी सरसीरूह सौरभ वृन्दवती।
गुण सों अगरी सगरी नगरी अधिराज विराजत वृन्दवती ॥

अलंकार कलानिधि

सहेतुक विप्रलम्भ [सवैया]

एक समें इन आँखिन में विधिनाहि अराधि महा वरु पायौ।
ता दिन ते अलि नन्दकुमार विलोकत ही इनकौं मन भायौ।
मान भरी अति भूल परी उन श्राप दियौ तन तापन तायौ।
लाज दई अन देखन कौं अरु देखन संग निमेष लगायौ ॥
कंचन की द्वै गेंद मनोहर कंचुकी मांझ छिपाइ धरी है।
तें अब दीजिये कीजिये केलि यों बोलि हँसे ठिंग आइ हरी है।
बाल विनोद बढ़ाइ हँसी तब ओठनि दंत उजास भरी है।
मानों नये द्रुम पल्लव ऊपर कुंदकली खिलिकें बिखरी है॥

उपनिषद्सार

दोहा

चरण कमल श्रीराम के, अकथ सूआनंद मूल ।
जिहि रज सों पाखान हू, पायौ धाम अतूल ।।
भाष्यकार भगवान जे, कहे सूत्र पर अर्थ ।
तेही अब संक्षेप सों, समुझों सुमति सुअर्थ ।।

तैत्तिरीत सूत्र

नमो ब्रह्मणे ! नमस्ते वायो ! त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मानि ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् । ऋतमवादिषम् ।
सत्यमवादिषम् । तन्मामावीत । तद्वक्ताकारमावीत् ।
आवीन्माम् आवीद्वक्तारम् ।।१२।। ॐ शांतिः शांतिः शाति ।।

अर्थ

"ब्रह्म जो वायु रूप है ताकों नमस्कार होऊ, आगे है वायु ताको नमस्कार होऊ, इहां परोक्ष प्रत्यक्ष दोऊ करि वायु ही कहियत हैं। अरु तुही वह इन्द्रिय और प्रत्यक्ष ऐसौ ब्रह्म है जाते ताते तोही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगो। उत कहै शास्त्र अनुसार कर्त्तव्य के अनुसार बुद्धि में भली-भांति निश्चित जो अर्थ सोऊ तो आधीन है। तातें तोही को कहूँगो। सोई अर्थ वाक काम और सम्पन्न कीजियत सत्य कहियै सोऊ तो आधीन है सो सम्पन्न कीजियत है।......"

दुर्गा माहात्म्य

सवैया

धर्मन संजुत कर्म सबै करिहैं अति आदर ही सों सदाई ।
धारत हैं तिनकों प्रतिपाल जु राखत बुद्धि सदा थिरयाई ।
ते पुनि स्वर्ग कू जात सदा नित पाई प्रसाद तिहारौ ही पाई ।
तातें तुही तिहूँ लोकन में इक देव सदा सबकों फल दाई ।।

रामायण

दोहा

जब श्री कुंवर प्रताप नें, ठयौ ग्रन्थ कौ मान ।
रामायण भाषा कियौ, सुकवि 'कलानिधि' जान ।।
बालकाण्ड अरु युद्ध अरु, उत्तरकाण्ड उदार ।
रचे भट्ट 'श्रीकृष्ण' ने, संजुत प्रेम प्रसार ।।

कवित्त

धनद प्रसाद में प्रताप में हुत्तास धर्म,
मन में भुजा में बुद्धि बल कौ प्रसार है ।
वाक में सरस्वती बदन में सुधाकर है,
बल में पवन काम रूप में उदार है ॥
सुरगुरु बुद्धि में दिनेस तन तेज मांहि,
कोप मांझ काल कर गहें करवार है ।
ब्रज-भुव-इन्द्र तेज कुंवर प्रतापसिंह,
विस्वरूप धारी सब देवन अधार है ॥

युद्धकाण्ड-छप्पय

कुण्डल कनक किरीट सत्य कहूँ मत्य उछट्टे ।
जहं रिस रच्चिय नैन अधर कल दन्तन कट्टे ॥
कहूँ महाभुज सहज के कहुं आयुध भूषन ।
कहूँ हत्थ कहूँ चरन कहूँ भट पड़े सदूषन ॥
कहूँ रुण्ड मुण्ड कहूँ सुण्ड कहूँ, गज भुसंड गिरि से गिरें ।
संग्राम भूमि भैरव भरिय भरकर दल चहुँ दिसि फिरे ॥

५—महाराज बदनसिंह प्राचीन देशी राज्यों में भरतपुर भी अपना एक प्र[illegible] स्थान रखता है । जहां इसके अधिपति वीरता और पराक्रम के लिये प्रसिद्ध थे, [illegible] साहित्य और कला प्रेमी होने के लिए भी । भरतपुर राज्य के संस्थापक महा[illegible] बदनसिंह अपने समय के एक प्रसिद्ध कवि हुए हैं । यद्यपि इनका समय युद्ध [illegible] अशान्ति का था, परन्तु अपने सुयोग्य पुत्र सूरजमल के राज्य भार सम्भाल[illegible] कारण इनको अधिक समय राज्य विस्तार एवम् शासन में नहीं देना पड़ता [illegible] कवि एवं साहित्यानुरागी होने के साथ २ आप अनेक कवियों के आश्रयदाता भी [illegible] आपका लिखा हुआ कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हुआ है, परन्तु कुछ फु[illegible] छन्द मिलते हैं जिनमें इनका उपनाम 'बदन' मिलता है ।

आपकी कविता बड़ी सरस एवं कलापूर्ण है । कविता कामिनी के अंग[illegible] अलंकार भार रूप न होकर स्वाभाविक शोभा वर्द्धनकारी दीख पड़ते हैं । [illegible] भाषा का माधुर्य रीति कालीन कवियों से किसी भी प्रकार कम नहीं है । "[illegible] बन्धु विनोद" में इनका कविता काल लगभग सम्वत् १८२५ वि० दिया है [illegible] कवि परिचय सँख्या ६४२ पर इन्हें महाकवि सूदन के आश्रयदाता मह[illegible] सूरजमल जी का पितामह लिखा है जो नितान्त भ्रम मूलक है । वास्त[illegible]

बदनसिंह का स्वर्गवास ज्येष्ठ शुक्ला १० सम्वत् १८१२ वि० में ही हो गया था। ये महाराजा सूरजमल (सुजानसिंह) के पितामह नहीं वरन् पिता थे। सूरजमल देवकी के पुत्र थे जिनका विवाह किसी अन्य जाट के साथ हुआ था। अत्यधिक सुन्दरी होने के कारण बदनसिंह ने देवकी को अपनी रानी बना लिया था। इस प्रकार बदनसिंह सूरजमल के धर्म पिता थे। 'सुजान-चरित्र' में कविवर 'सूदन' ने लिखा है:—"भूपाल पालक भूमिपति वदनेश-नन्द सुजान है।" इससे यह भली भांति स्पष्ट है कि सूरजमल (सुजानसिंह) भी इनके धर्म पुत्र थे। भरतपुर राज्य के राज-वंश-वृक्ष में भी महाराज सुजानसिंह को बदनसिंह का पुत्र ही बताया गया है। बदनसिंह की रचनाओं में से कुछ छन्द नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

कवित्त

पूरब हरित बनिता कौ मुख पत्र तामें,
रचना रुचिर वरु मृगमद रंग की।
कैधों नभ सरबर फूल्यौ पुण्डरीक मध्य,
मेचक प्रभा है अलि अवली अभंगकी।
और कवि सुकविन उपमा अनेक कहीं,
'वदन' बखानें एक इहि विधि अंगकी।
विरही निरखि याहि नांखत निसांस याते,
दागिल दिखात मानों आरसी अनंगकी॥

रस अनुकूल जामें धुनि झलकत होहि,
खोय जतिभंग होय रुचिर सुछन्दगति।
जाकौ पान करत 'वदनकवि' सुधा कौन,
कामिनी अधर-मधु-माधुरीहू ना रुचति।
जोपै ऐसे बचन की रचना कै जानै तो,
निसंक सुख भूप कौ कवित्त कहि पै है पति।
बोलै तौ सभा में आइ आगे सुकविन के तू,
आपने कुलिश करेजेसों निकारै मति॥

६—माधौराम—यह महाराज सूरजमल के दरबारी कवि थे। यह जाति के कायस्थ और फारसी के अच्छे विद्वान् थे। महाराज सूरजमल का समय भरतपुर में हिन्दी का गौरव-काल था। अतः आपने भी हिन्दी से प्रभावित होकर 'करुणाबत्तीसी' नामक ग्रन्थ लिखा। आपका कविता काल संवत् १८०० के

आस पास ठहराया जाता है। आपके पद्य बड़े सरल सरस और हृदय- ग्राही हैं उदाहरण के लिए कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:—'

कवित्त

एरे मेरे मूढ़ मन! काहे विकल होत,
चतुरभुज चिंतामनि तेरी चिंता हरि है।
बंशीधर अंबर विश्वंभर कहावत हैं,
मोसे दीन दुखिया को कैसे करि विसरि है।
असरन सरन ऐसौ विरद जो धरावत है,
भीर परै भजन कौ कैसी भांति करि है।
बारन की बार कछु करीना अबार सो तो,
अबकें अवार क्यों हमारी बार करि है॥

गिरि कौ उठाइ ब्रज गोप कौ बचाइ लियौ,
अनल तें उबारे कान्ह बालक मझारी कौ।
गज की गरज सुनि ग्राहतें छुडाइ दियौ,
राख्यौ ब्रत नेम धरम पंडवन की नारी कौ।
राखे गज घंटा तर बालक विहंगम के,
राख्यौ पन भारत में भीषम व्रतचारी कौ।
त्रिविध तापहारी निज संतन सुखकारी एक,
मोहि तौ भरोसौ भारी ऐसे गिरधारी कौ॥

कहा भयौ जो पै तुम द्वारिका के राजा भये,
गोकुल के वासी खट्टी छाछ के पिवैया हौ।
कच्छ मच्छ रूप वाराह नरसिंह भये,
कहूँ होय वाभन, आछे स्वांगी भरैया हौ।
धेनु के चरैया गुंज माल के रखैया कान्ह,
बंसी के बजैया अरु बन के रहैया हौ।
टेरत हों प्रात-रात पूछत न मेरी बात,
जानी हम घात भृगु–लात के सहैया हौ॥

—❋०❋—

प्रकरण २

सूदन-काल

महाकवि सूदनः—इनका जन्म मथुरा में माथुर चतुर्वेदी कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम बसंत चतुर्वेदी था। इन्होंने "सुजान-चरित्र" में अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

मथुरा नगर सुधाम, माथुर कुल उत्पत्ति वर ।
पिता बसंत सुनाम, 'सूदन' जानहु सकल कवि ।।

जिस प्रकार महाकवि भूषण ने महाराष्ट्र केशरी शिवाजी के वीर चरित्रों का वर्णन कर संसार में ख्याति प्राप्त की, उसी प्रकार इन्होंने भी भरतपुराधीश सूरजमल के वीर चरित्रों का वर्णन कर साहित्य संसार को चकित कर दिया था। यह महाराज के साथ युद्धों में उसी प्रकार रहते थे जिस प्रकार पृथ्वीराज के साथ चन्दवरदाई। सूदन की लेखनी से यह विदित होता है कि यह केवल कविता के ही नहीं वरन् तलवार के भी धनी थे। युद्ध कुशलता इनकी रचनाओं से टपकी पड़ती है। मिश्र-बन्धुओं ने इनके विषय में लिखा है कि "इन्होंने आंखों देखे युद्धों का वर्णन किया है"। हमारा मत इस विषय में यह है कि इन्होंने युद्धों में स्वयम् भाग लेकर पूर्ण अनुभव के साथ रचना की हैं। इनका कविता-काल सम्वत् १८०२ से १८१० तक माना जाता है। इनकी उपलब्ध रचना "सुजान-चरित्र" है जिसका प्रकाशन ना० प्र० स० काशी से हो चुका है।

सुजान-चरित्र के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह रचना अपूर्ण है। सम्भव है कि कवि के स्वर्गवास हो जाने से पूर्ण न हो सकी हो। इस ग्रन्थ में वीर काव्य से रीति काव्य तक की प्रवृत्ति एवं परम्पराओं का दर्शन होता हैं। इसमें वीर रस प्रधान हैं। इसमें रस के अनुकूल ही ओजस्वनी एवं कड़कती भाषा का प्रयोग किया हैं। भाषा सरस ब्रज भाषा है। इस ग्रन्थ की भाषा से ज्ञात होता है कि कवि को देश की बहुत सी भाषाओं का ज्ञान था। दिल्ली की लूट में पंजाबी, महाराष्ट्री, पूर्वी, बंगाली तथा गुजराती आदि सभी बोलियों का स्त्री पात्रों से प्रयोग कराया है। ग्रन्थ के आरम्भ में कवि ने अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों की वंदना कर अपनी बहुज्ञता का परिचय दिया है। यह ग्रन्थ काव्य के साथ २ इतिहास की भी पूर्ति करता है। कवि ने अनेक छन्दों का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है। इनकी शैली में उत्कृष्टता तथा वर्णनों में ओज की मात्रा प्रचुर परिमाण में मिलती है। वर्णित दृश्य का चित्र सा खींच देना इनकी

विशेषता है। इनकी रचनाओं में केवल यमक, अनुप्रास आदि अलङ्कारों की ही नहीं दिखलाई पड़ती वरन् अनेकों अलङ्कार स्वाभाविक रूप से आकर पद्य को रसप्लावित किये बिना नहीं रहते। 'सुजान चरित्र' में वर्णित आठ युद्धों में प्रत्येक युद्ध के पश्चात् हरिगीतिका छंद में उस अध्याय का संक्षिप्त वर्णन करना इनकी निजी शैली हैं जिसकी परम्परा भरतपुर के सभी कवियों में पाई जाती है। वीर रस के अतिरिक्त इनकी कविता में अन्य रसों के भी बड़े ही सुन्दर भाव युक्त छन्द पाये जाते हैं, जो अपनी समता नहीं रखते।

सुजान-चरित्र

कवित्त

अदिति असोक भरी सोक भरी दिति और,
दोस भरी पूतना, अदोस भरी ओपिका।
कंस हिये भौ भरी अभौभरी अंधवंस,
पंडव कै कीरति, अकीरति की लोपिका।
लाज भरी द्रौपदी सुजान भरी ब्रज-भूमि,
कुबरी इलाज भरी साज सद सोपिका।
देवकी अनंद भरी ऊगे ब्रजचंद घरी,
भाग भरी जसुदा सुहाग भरी गोपिका॥

अनी दोऊ बनी घनी लोह कोह सनी धनी,
धमँनु की मनी बान वीतत निषंग में।
हाथी हटि जात साथी संग न थिरात भोन,
भारती में न्हात गंग कीरति-तरंग में।
भानुकी सुतासी 'कवि सूदन' निकारी तेग,
वाहत सराहत कराहत न अंग में।
वीर रस रंग में यों आनंद उमंग में सो,
पगु पगु प्रण होत जोधन कौं जंग में॥

छप्पय

मिली परस्पर डीठि वीर पग्गिय रिस अग्गिय।
जग्गिय जुद्ध विरुद्ध उद्ध पलचर खग खग्गिय।
भग्गिय सद्द शृगाल काल दै ताल उमग्गिय।
लग्गिय प्रेत पिसाच पत्र जुग्गिन लै नग्गिय।
रग्गिय सुरग्ग रंभादि गण, रुद्र रहस आवाज दिय।
सन्नाह करक्कि उछाह भर, दुहु सिपाह जब भ्रम भ्रमिय॥

कवित्त

बाप विष चाखै भैया षटमुख राखै देखि,
आसन में राखै बस बास जाको अचलै ।
भूतन के छैया आस पास के रखैया,
और काली के नथैया हू के ध्यान हू ते न चलै ।
बैल बाघ वाहन बसन कों गयंद-खाल,
भांग औ धतूरे कों पसार देतु सचलै ।
घर को हवालु यहै संकर की बाम कहै,
लाज रहै कैसे पूत मोदक कूँ मचलै ॥

कवित्त

श्रोनित-अरघ ढारि लुत्थि जुत्थि पाँवडे दै,
दारू-धूम धूप दीप रंजक की ज्वालिका ।
चरबी कौ चंदन चढ़ाय पल टूकनुकें,
अच्छत अखंड गोला गोलिन की चालिका ।
नैवेद नीकौ साहि सहित दिल्ली कौ दल,
कामना बिचारी मनसूर पन-पालिका ।
कोटला के निकट बिकट अरि काटि सूजा,
भली बिधि पूजा कै प्रसन्न कीनी कालिका ॥

मालती छन्द

फिर्यौं मनसूर कियौ बल पूर कढ़यौ करि कोप धरें बहु तोप
करें सन मान बुलाइ सुजान कियौ बहु मान बजीरहि आन
लियौसु अगार सुज़ान कुंवार कियौ सुपयान दुहूँ बलवान

आभीर छन्द

पुनि उतरि पार जमुना अपार उत में पठान हुव सावधान

दोहा

एक ओर मल्लार दलु, दूजें सिंहसुजान
उतहि रुहेले असगधरि, सनमुख भए पठान ॥
चहूँ ओर धौसान के, छाए सद्द अहद्द
मनहुँ गंगके मिलन कौं, आयौ सिंधु विहद्द ॥
दोइ जाम बीतन लगे, खड़े सुभट बिनु जंग
तब सुजान के दलबलनु, आगें करी उमंग ॥

८—रंगलाल:—इनका जीवन-वृत्तान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं है, केवल मिश्र-बन्धुओं ने इनको अपने 'विनोद' में ८२५ वीं संख्या पर लिखा है और कविता-काल १८०७ वि० माना है। यद्यपि आप महाराज सूरजमल के दरबार में रहा करते थे, किन्तु उनके सम्बन्ध में आपकी कोई रचना नहीं मिलती, केवल महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा का एक छप्पय प्राप्त है जो नीचे उद्धृत किया जाता है। ऐसा अनुमान होता है कि सूरजमल के निधन के पश्चात् ये महाराज जवाहरसिंह के आश्रय में रहे हों।

छप्पय

जटित जवाहर मल्ल, रल्ल चहुं दिसि अति हल्लिय।
गहर नदिय खल भलत, फनपती थर थर सल्लिय।
तरवर घन गिर परत, होंत कुल्ला हल भारिय।
हय ही सों धर धसक मसक नर मिलत न नारिय।
चढ़ि हंक निसंक अभंग दल, प्रगट जंग दल जात तव।
सुज्जान नंद 'रंगलाल' भनि, कुल बदनेस सुभाति इव॥

९—अखैराम:—कविवर अखैराम भरतपुर-नरेश सूरजमल के दरबारी कवियों में से थे। ये जाति के ब्राह्मण थे और हिन्दी, संस्कृत, ज्योतिष शास्त्र पुराण आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे। याज्ञिक बन्धुओं ने माधुरी ५ वें वर्ष की प्रथम संख्या में इनके रचित पांच ग्रन्थ बतलाये हैं:—(१) सिंहासन बत्तीसी (२) [illegible] माहात्म्य (३) कृष्ण-चन्द्रिका (४) वेदान्त-हस्ता-मलक (५) स्वरोदय। इनके अतिरिक्त 'सुजान विलास' भी एक और पुस्तक बतलाई जाती है जिसके विषय में यह दोहा प्रचलित है:—

प्रथम सुताहि असीस दै, उपज्यौ हिये हुलास।
सूरजमल के नाम कौं, रच्यौ 'सुजान-विलास'॥

इस पुस्तक का विषय महाराजा सूरजमल का यश वर्णन ही ज्ञात होता है। इसी प्रकार की और इसी नाम की एक पुस्तक महाकवि सोमनाथ की भी है जो सिंहासन बत्तीसी की कहानी पर आधारित है। कविवर अखैराम का सुजान विलास उपलब्ध नहीं है।

कविवर अखैराम की कविताओं में ओज और अनूठी उक्ति के साथ-साथ वर्णन की सजीवता का भी अच्छा समावेश है। भाषा सरस एवं सरल है और कविता में भरतपुरी छाप भलीं-भांति झलकती है। इसमें सन्देह नहीं कि ये अपने समय के कवियों में उच्चकोटि के कवि थे। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १८१२ के आस-पास माना जाता है, जैसा कि इन्होंने सिंहासन बत्तीसी की सम[illegible]

पर लिखा है:—

ठारह सै बारह गत्तौ, संवत् सर घर सूर ।
सावन वदि की तीज कों, ग्रन्थ कियौ परिपूर ॥

अब इनके काव्य की झाँकी भी कर लीजिये:—

कवित्त

चन्द सौ बदन अरबिन्द से नयन दोऊ,
श्रवन सरोज नासा सरस सुहाई हैं ।
दाड़िम दसन सुधासिन्धु से अधर बिम्ब,
रसना रसीली कोटि छवि की निकाई है ।
गोरे गोरे गोल गोल केतुकी कलासी भुजा,
श्रीफल उरोज सब सोभा की सफाई है ।
रम्भा जुग जंघ पद-कंज 'अखैराम' कहै,
आनन्द की ढेरी लै विधाता ने बनाई है ॥

स्वरोदय

कवित्त

आन गुन गाइवे कों ध्यान उर ध्याइवे कों,
तामस बहाइवे कों निसिदिन गाइ लै ।
भक्ति निधि जोरिवे कों आठों सिद्धि मोरिवे कों,
मदन मरोरिवे कों चित्त में चिताइ लै ।
होनहार जानिबे कों जोतिष बखानिवे कों,
काल के पिछानिवे कों नीके कै सचाइ लै ।
स्वर कौ विचार चार्यों वेदन कौ सार यह,
पहन उर हार 'अखैराम' सचु पाइलै ॥

मूल श्लोक

षट् शतानि दिव रात्रो सहस्राण्येक विंशतिः ।
एतत्संख्यो भवेच्छ्रासो सोहं सोहं प्रकीर्तितः ॥

दोहा

सहस एक विंशत कह्यौ, छसै कढ़त पुनि श्वास ।
इतनी सँख्या रैन दिन, सोहं मंत्र प्रकास ॥

वेदान्त—हस्तामलक

कवित्त

जैसे बड़े छोटे आड़े टेढ़े फूटे काँच माँझ,
भासत अभास मुख पंकज निधानिये ।

कुंडल कलंगी सिर पेच औ ललाट टीका,
जैसौ मुख माँडै तैसो बामैं दरसानियै ।
ऐसो जग जानि लीजै बुद्धि कौ बिलास तैसे,
एक ते अनेक होत छानबीन जानियै ।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत माँझ,
सोई हम जानें नहिं दूजौ उर आनियै ॥
जैसे रवि सोखत मयूषन सों भूमि रंग,
सबतैं विभिन्न काल लिपत न जानियै ।
सोखि सोखि बर्षत सहस गुनौ पावस में,
कोटि कोटि बुंदन सों समझ सु मानियै ।
जैसे उपजत हैं खिपत जग जीव जन्तु,
एक तें अनेक अविनासी सो बखानियें ।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत मांझ,
सोई हम जानें नहिं दूजौ उर आनियै ॥

१०—लाल कवि:—भरतपुर नरेश बदनसिंह और उनके पुत्र सूर[illegible] के आश्रित प्रतीत होते है। खेद का विषय है कि इनका विशेष वृत्तान्त [illegible] नहीं है । इनकी रचनाओं से ही राज्याश्रय का पता लगता है। ये [illegible] और शृंगार दोनों रसों पर समान अधिकार रखते थे। इनकी प्रतिभा [illegible] प्रत्येक छन्द से प्रकट होती है। भाषा सरस, सुहावनी एवं प्रवाहयुक्त है। [illegible] महाराज बदनसिंह की मृत्यु पर जो छन्द लिखा है उससे विदित होता [illegible] महाराज के मृत्यु-सम्वत् १८१२ वि० के आस पास ही इनका रचना का[illegible] रहा होगा । इनकी कविता ऐतिहासिक तथ्यों से भरी हुई है।

कवित्त

कटतौ कलपतरु लाल जाती कामधेनु,
पारस परसि लोहे कंचन न करतौ ।
फट जाती चिन्तामनि फूटि जातौ गिरि मेरू,
ध्रुब गिरि धरनि धरा न सेस धरतौ ।
सूख जाते सिन्धु सातों रहतौ न कछु बात,
सूर सीरौ चन्द तातो तौऊ का बिगरतौ ।
सदन सदन सोच बदन बदन बाद,
हाय हाय बदत महीप पै न मरतौ ॥

उपर्युक्त छन्द से कवि की ऊँची प्रतिभा के साथ साथ कवि कर्म की कुशलता का अच्छा परिचय मिलता है। इन्होंने कविताओं में श्रेष्ठतम उपमानों का यथावत् प्रयोग कर सजीव एवं सरल चलती भाषा का अच्छा दिग्दर्शन कराया है। इनकी वीर रस सम्बन्धी रचनाओं की ओजस्विता देखते ही बनती है। उदाहरणार्थ कतिपय कविताएं निम्न लिखित हैं:—

कवित्त

दक्खिनें दल दर ओजसों उमंड तिन्हैं,
खंडे गहि खड्ग जसु मंड्यो देस कौं।
कहै 'कवि लाल' सुर सकल तमासे भूले,
फूले पल चारी हार सूदन महेस कौं।
गंगाप्रसाद स्वामी-कारज में पांव रोप,
जंग जितवार साखि साखिन हमेस कौं।
एक सत सूरमा निवार्‌यो प्रथीराज इमि,
एकीएका रनतें निकार्‌यौ नवलेसं कौं॥

❀ ❀ ❀

कौन जटवारे की बचावतौ सरम स्वामि,
धरम के काज लाज काहि एती परती।
दक्खिनी दल भुज बलन कौन ठेलतौ जु,
आमिष अहारिन की भूख कापै हरती।
संकर के हार कौ सुमेरु कौन हो तौ अब,
जापै सुरनारिन की आरती उतरती।
गंगापरसाद जो न जूझतौ समर कहौ,
कैयक हजार अपछरा कैसे वरती॥

❀ ❀ ❀

फिरत फिरंगी चहुं ओर चकवाने भये,
मुगल पठान शेख सैयद समरतौ।
गोलन के मारे तोपखाने के दवान भये,
तुरक सवार कहौ कैसे धीर धरतौ।
पिलते न सैंगर भदौरिया मिसिर और,
आसिफदौला कौ मनोरथ क्यों सरतौ।
कोप करि करतौ समर मूलचन्द जो न,
वांकुरेन जीवन कौ बीमा कौन करतौ॥

कैधों केस नागन की मनि वनि ठनि रही,
कैधों प्रात कौल पै भ्रमर अभिलाखी है।
कंचन के पट्ट पै लिखौ कै मंत्र मोहिनी कौ,
कैधों अभिलाषन को ग्रन्थ साष साखो है।
कहै 'कवि लाल' हाल जाहिर जहान बीच,
कोटिन उपाइ कै उकति इमि भाखी है।
मेरे जान रूप के खजाने पै मुहर कैधों,
प्यारी तेरी वेंदी स्याम काम रुचि राखी है॥

❀ ❀ ❀

जवते कही तैं तबही तें न हियेते कढ़ै,
मानी मैं मही में सवही ते सुखदाई है।
अति अभिराम काम बान तें सरस सोहै,
सुनि सुनि मोहै मन छिन छिन छाई है।
कहै 'कवि लाल' हाल जाहिर जहान बीच,
जानियतु प्रौढ काऊ पंडित पढ़ाई है।
जाके आगै ऊष औ पियूष सब सीठौ लगै,
ऐसी मीठी नाहीं सो कहां सों सीख आई है॥

११—हरिवंश:—इनका विशेष वृत्तान्त तो प्राप्त नही है, परन्तु 'सुजान-चरित्र' में इनके नाम का उल्लेख है। यह महाकवि महाराजा सूरजमल के सम-कालीन हैं। इन्होंने महाराजा सूरजमल व महारानी किशोरी की प्रशंसा में अनेक फुटकर छन्द लिखे हैं, तथा 'बरसाने की लीला' नामक पुस्तक भी लिखी है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

दौरे काल-किंकर, कराल कर तारी देत,
दौरी काली किलकत छुधा की तरंगते।
कहै 'हरिवंश' दांत पीस लख ईस दौरे,
दौरे अवतीस गीध गीदर उमंगते।
सिंह श्री सुजान, जंग जालिम सुकौन पर,
फरकाई भुजा औ, चढ़ाई भोंह भंगते।
भंग डार मुखते, औ भुजंग डार कंठ ते,
हरष हर दौरे, गौरी डार अरधंग ते॥

बरसाना-लीला

श्री 'हरिवंश' विनोद रच्यौ तहं, गोरे-श्याम छवि जोरी जी ।
गोरी सखियाँ मंडलपुर राजें, संग ललितादिक भोरी जी ।
कुन्जन कुन्जन केलि कुलाहल, गावत नव नव वानी जी ।
दूलह नंदकुमार रसिक वर, दुलहिन राधा रानी जी ॥

१२—शिवराम—ये जिला शिकोहाबाद के अन्तर्गत पौरौली ग्राम के रहने वाले थे । इनके पितामह का नाम पीताम्बर तथा पिता का नाम हृदयराम था। ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे । महाराज सूरजमल के दरबार में इनका अच्छा मान था । इन्होंने 'राग-रस-सार' नामक एक बडा ही सुन्दर ग्रन्थ रचा है, जिसमें अपने आश्रयदाता का वंश वर्णन करने के पश्चात् उनका यशोगान करते हुए राग-रागिनियों के परिवारों का उत्कृष्ट वर्णन किया है । ग्रन्थ में कवि ने अपने वंश वर्णन में भी वडी पहेलियां बुझाई हैं । ग्रन्थ के अन्त में महाराज सुजानसिंह के अस्त्र-शस्त्रों का सुन्दर वर्णन किया है । ग्रन्थावलोकन से इनकी विद्वत्ता का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है । आपकी शैली में विशेष चमत्कार है । इस ग्रन्थ की रचना पर महाराज सुजानसिंह ने इन्हें ३६००० (छत्तीस हजार) रुपया पुरष्कार दिया था जिसका कवि ने एक दोहे में इस प्रकार वर्णन किया है:—

जबै ग्रन्थ पूरन भयौ, तबै करी बकसीस ।
खरे रुपैया मान सौं, दिये सहस छत्तीस ॥

इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं :—

छप्पय

गवरि नन्द जुत चंद सकल आनंद कंद बर ।
एक दंत सोभित सुभाल चंदन बिसाल धर ।
बिघन हरन दुख कदन धरन गज बदन प्रचंडन ।
जग बंदन बुध सदन हर्ष सिब कुल जस मंडन ।
'शिवराम' फबित फरसा फबनि कर त्रिसूल गणपति धरहि ।
श्री नृप सुजान गृह रैन दिन पल पल पल रक्षा करहिं ॥

मेघ राग परिबार बर्णन (दोहा)

मल्लारी अरु सोरठी, सुहनी जगत बखानि ।
आसाबरी सुकोकिनी, मेघ नारि इमि जानि ॥

मेघ-राग के अष्ट पुत्र (छप्पय)

नट कारन सारंग अवर केदार राग भनि ।
गुंडराग पुनि गुंडभाल जालंधर सुख मनि ।
शंकर राग प्रवीन मेघ परिवार इतौ कहि ।
षट रागन की खानि सकल सुत सुर किन्नर कहि ।
'शिवराम' राग माला इति सुन्दर बहु रूपन फवहिं ।
मन मोहन सुर नर नारि कै देखत शशि सूरज छिपहिं ॥

सवैया

श्री बदनेस कौ वंश प्रसिद्ध भयौ कलि में कल कीरति गाई ।
पंडित के मन मंडित है अरु शत्रुन पीड़त अस्त्र सुहाई ।
भूमि के भार उतारन कौं भुज दंड महा प्रगटे बलदाई ।
सूरजमल्ल दिपै तम घोर कहै "शिव" सूरज ते अधिकाई ॥

कै बनवास प्रवास कै कंचन कै मृगछाल कै सेज चमेली ।
कै 'शिवराम' सुन्यौ करौ श्रौनन वेद के मंत्र कै प्रेम पहेली ।
जोग औ भोग संसार में सार है सोध कही बिव बात सुहेली ।
सेली भली गल मेली किधौं कि नवेली की बाँह गले अलवेली ॥

१३—पतिराम—आपका जन्म तहसील कुम्हेर के अन्तर्गत भटपुरा ग्
हुआ । आपके पिता का नाम शंकर भट्ट था जो कि स्वयं बड़े विद्वा
अतः पतिराम ने भी विद्या एवं बुद्धि पैतृक सम्पति स्वरूप पाई । सुजान
के वीर रस के कवियों में आपकी विशेष ख्याति हुई । यद्यपि आपने फुटकर
ताओं की रचना की है किन्तु उनके काव्य में ओज झलकता है । महाराज सु
के यश बर्णन करने में आपने कमाल कर दिखाया है । कहा जाता है कि
पूर्वज महाराज भरतपुर के आश्रित थे । इसके प्रमाण में अब तक आपके
को माफी चली आरही है । 'पतिराम' के बीर रस पूर्ण काव्य के एक उ
से उनकी प्रतिभा एवं कृतृत्व का परिचय मिल जायेगा :—

छप्पय

जहाँ कमठ की पीठ नींव तुम तहाँ जमाई ।
धरी सेस के सीस भीत ऊपर जो उठाई ।
रच्यौ दीघ परिकोट साह सुलतान उवारन ।
दलत दीह दल सकल धुजा ऊँची धर धारन ।
चौंर छत्र आदिक तिलक जब सुजान बैठत तखत ।
सिर छत्र सलामत साहिबी मुख देखत खुल्लत वखत ॥

१४—सोभ कवि:—आप भरतपुर नरेश महाराज जवाहरसिंह के बन्धु नवलसिंह के आश्रय में रहते थे। आपका कविता-काल सं० १८१२ वि० ठहराया गया है। आपके जन्म एवं बंशजों का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। अतः दुःख है कि इस ग्रन्थ में हम उनका परिचय देने में असमर्थ रहे हैं। आप कोमल भावनाओं के कवि थे। अतः शृंगार की ओर झुकाव होना स्वाभाविक था। आपने "रस चन्द्रोदम" नामक रीति ग्रन्थ लिखकर अपनी शृंगारिक प्रकृत्ति का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' के अतिरिक्त आपके अनेक फुटकर छन्द भी मिलते हैं। इन सभी छन्दों के अन्तर्गत नवलसिंह की वीरता, दान शीलता तथा गुण-ग्राहकता आदि गुणों का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' ग्रन्थ की रचना कवि ने नबलसिंह के लिये ही की है। ग्रन्थ के रचना-काल के विषय में कवि ने स्वयं यह दोहा लिखा है:—

वसुविधु वसुविधु वत्सरहि सावन सुदि गुरुबार।
सरब सुसिद्धा त्रयोदशि, भयो ग्रन्थ अवतार॥

यहां पर कुछ उदाहरण देकर कवि की शृंगारिक भावना का दिग्दर्शन कराया जावेगा। रसराज शृंगार की उपासना में कवि को कहां तक सफलता मिली है, इसके विषय में कवि के निम्न लिखित उदाहरणों से पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं:—

प्रगल्भा—लक्षणम् (दोहा)

पति सों केलि कलान में, अति प्रवीन चित चाह।
यहै 'प्रगल्भा नायका' नवलसिंह नर नाह॥

उदाहरण (सवैया)

ए रजनी सजनी! बिनती यह चार घटी लौं रहौ अनुकूलै।
हार हिये मुक्ताहल चार बिचार कै सीतलता बल हूलैं।
आपनौ नायक है सब लायक 'सोभ' सहायक भाव न भूलैं।
झाँपै दुकूल तिया श्रुति मूल सरोज के फूल प्रभात न फूलैं॥

सवैया

बंक भई भृकुटी भलि भाल, मनोज नृपाल की नीति सों जागी।
मंद हँसी बिलसी मुरि आनँद, आनन प्रेम के पूजन पागी।
द्वै लटकी लटैं सोहें रसाल सी, प्रेम प्रमोद भरी अनुरागी।
नीर समोखन के मिसही, बलवीर कौं, बाल बिलोकन लागी॥

कवित्त

अमित अखंड नभ-मंडल के मेघ महा,
मंडि २ आये ब्रज मण्डल की ओर पर।

गोला धार बरसत अपार धार डोर तोर,
द्रुम डार चलै पवन झक झोर पर।
सामने सुरभि बाई धाई वृषभान जाँही,
दाहिने जसोदा नंद ग्वाल बाल सोर पर।
अधरन मधुर बजत 'सोभा' बंशी धुन,
गिरिधर गिरिधर्यौ छिगुंनि के छोर पर॥

१५—दत्त:—इनका विशेष बृतान्त प्राप्त नहीं है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा में 'सूरजमल की कृपाण' नामक १४ छन्दों की एक पुस्तक लिखी है। आपकी कविता वीर-रस से ओत प्रोत है और भाषा ओजस्विनी है। उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

कृपाण छन्द

जहँ बज्जत निसान सारे गज्जत दिसान,
सूर सज्जत सदान, बीर तज्जत गुमान।
जहँ छुट्टत कमान, गोला गोली बरखान,
धुंआधार आसमान, छिप्यौ भानु कौ बिमान।
जहँ होत भाज भाज, घोर दुंदुभी गराज,
तोप तरपैं तराज, गज घंटा घहरान।
तहँ हिम्मत निधान, भूमि भारी मघबान,
सिंह विक्रम सुजान, बाह बाही किरपान॥

सवैया

कंचुकि मांहि कसे उकसे परे कामिनी ऊँचे उरोज तिहारे।
'दत्त' कहैं जनु विश्व बिजैकरि काम धरे उलटे कै नगारे।
जोबन जोर कढ़ैं हिय फोरि कें औरहुते ये कठोर निहारे।
गेंद के गुम्मज कै गिरि कें गज कुम्भ के गर्व गमाबन हारे॥

१६—केशव:—आपका जीवन बृतान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं हुआ है, केवल 'महाकवि सूदन' ने सुजान चरित्र में इनका नाम उल्लेख किया है। ये भी महाराज सूरजमल के ही आश्रित प्रतीत होते हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है:—

सवैया

जादिन ते दल साज चढ्यौ नृप आगे बढ्यो पग पीछे धर्यौ ना।
मेरु है सेर चढ्यौ किरवान लै, एक ते दूसरौ अंक बर्यौ ना।

'केशव' श्री वदनेश के नन्दन, तो सम और बरंग बर्यौ ना।
हाथी टरे घने साथी टरे, परधान टरे पै सुजान टर्यौ ना॥

१७—जुलकरन:—आप जाति के भट्ट और डीग के निवासी थे। यद्यपि इनके जीवन का विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु इनका महाराज सूरजमल और उनके पुत्र महाराज जवाहरसिंह के समय तक विद्यमान रहना प्रतीत होता है। इनका कविता-काल सम्वत् १८१५ वि० के आस पास ही ठहरता है। कहते हैं इनके दो पुत्र थे और दोनों ही कविता करते थे। ये वीर रस के प्रधान कवि हैं। इनके पद्यों में महाराज सूरजमल की वीरता का ओजस्विनी भाषा में वर्णन किया गया है। सूरजमल के स्वर्गबास पर आपने जो अनेक सुन्दर पद्य लिखे, उनमें से कुछ नीचे दिये जाते है :—

कवित्त

एक कहै मोहि देखि कदली कलस थाप्यौ,
दूजी कहै मोहि देखि पूर्यौ चौक अंगना।
तीजी पटा डार्यौ चौथी हरद लगाइ गई,
पांचई मरबट बंधायौ कर कंगना।
कहै 'जुलकरन' छठी माथे पै मौर धार्यौ,
सातई ढुरायौ चौंर कीनौ ब्रत भंगना।
आगे पाकसासन के आसन के ढिग जाय,
दूलह सुजान ताकों भगरें बरंगना॥

रंग राच्यौ रण-भूमि झूमि झूमि लड्यौ सूजा,
संग कौ सगोती लोग पीछे कों हटि गयौ।
कहै 'जुलकरन' अनल सौ तातो भयौ,
रातौ भयौ रूप छबि छोभ में पटि गयौ।
टारे ते टर्यौ न ऐसौ धरती समान रुप्यौ,
तन टूक टूक तरबारन कटि गयौ।
बेध रबि मंडल कों छेदि गयौ दूर लोक,
सूरलोक बारेन को फाटक फटि गयौ॥

फुटकर

ऐरे मन मेरे तेरे औसर घनेरे नेरे,
लोभ ही के चेरे संग लोभ ही के जरि है।
मित्र औ कलत्र सब चित्र से दरसत हैं,
कहै 'जुलकरन' तेरौ साँचौ एक हरि है।

कोहै तू न जानत न मानत मरोर भर्‌यौ,
ठानत हैं काची और कौन की उबरि है।
ह्वै है सोर सिद्दत करैगौ जब बिद्दत सु,
मुद्दत के आये कोऊ मद्दत न करि है॥

१८—भूधर:—इनका बिशेष वृत्तान्त तो ज्ञात नहीं होसका, केवल इ
पता चलता है कि ये जाति के ब्राह्मण थे और भरतपुर के महाराज जवाहि
(सं० १८२०–२५ वि०) के आश्रित थे याज्ञिक बन्धुओं ने लिखा है कि "सम्भ
यह भूधर वही है जिन्होंने भगवंतराय खीची के लिये छन्द रचना की है", कि
इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इनकी रचित दो कृतियाँ 'ध्यान बत्तीसी,'
'दान लीला' मिलती हैं, जिनकी भाषा इन्हें भरतपुर का होना सूचित करती
कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते है:—

सवैया

मोर किरीट लसै सिर चारु ललाट दिपै छबि चंद कला की।
बाँके कटाक्ष बिसाल महाद्दग कुण्डल लोल कपोल थला की।
दंतन की दुति कंठ सिरी मुकता कर कंकन छाप छला की।
नूपुर की कटि किंकिनि की उरते न टरै छबि नन्द लला की॥
(ध्यान बत्तीसी)

पूरन परम दयालु निरंजन घट घट वासी।
बसुदेव गृह औतार लियौ अबनी अबिनासी।
ब्रज चौरासी कोस लों लीला करन रसाल।
असुर हनन के कारनें भये नंद के लाल।
सुनो ब्रज नागरी॥
बरसाने की ग्वालि सबै दधि बेचन आवैं।
उज्ज्वल मिश्री गंध मोल मन मानों पावैं।
सबै बिचित्र सहचरी लियौ राधिका संग।
आपस में बतरात सब चली आपने रंग।
सुनौ ब्रज नागरी॥
मिले कृष्ण अरु राधिका दान रस अमृत लीनों।
निरख लडैती लाल प्रभू तैं सरबस दीनों।
यह सुख स्यामा स्याम कौ कवि बरन्यौ जाय।
निसिदिन 'भूधर' दरस कै हिरदे रह्यौ समाय।
लखै ब्रज नागरी॥
(दान लीला)

१९—बीरभद्रः—इन कविवर के सम्बन्ध में इतना ही ज्ञात हो सका है कि ये जाति के ब्राह्मण थे तथा भरतपुर राज्याश्रित कवि थे। कविता काल महाराज सूरजमल के राज्य काल सम्वत् १८२० वि० तक ठहरता है। इन्होंने भगवान श्री कृष्ण की लीलाएं (ब्रज-बिलास) काव्य ग्रन्थ में दोहे, चौपाइयों में लिखी हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, ललित एवं प्रवाह युक्त शुद्ध ब्रजभाषा है। एक अवतरण प्रस्तुत है:—

दोहा

गुरु चरनन चित लाय कें, करों कृष्ण कौ ध्यान ।
सुमिरों राधारमण कों, हरि लीला रस खान ॥

चौपाई

तब हरि मन में मतौ उपायौ । वाके पति कौ स्वाँग बनायौ ॥

दोहा

इतबित सरकन देत नहिं, सासु, जिठानी, नन्द ।
तउ नैनन की सैन में, न्यौत्यौ गोकुल चन्द ॥

चौपाई

वही सरूप भेद कछु नाहीं । सांझ समै आयौ गृह माँही ॥
बुढ़िया बिकल गोपकी मैया । ठगी बचन दै कुँवर कन्हैया ॥
सुनरी माता मेरी बाता । ब्रज में नन्द पूत बिख्याता ॥
मैं तो सुनि है बाकी बात । मेरौ रूप धर्‌यौ बिख्यात ॥
छैल चिकनियाँ ढीठ गुमानी । लंपट लोभी गोरस दानी ॥
जाकी बात भली सुन पावै । ताकौ छलबल कर अपनावै ॥
कवहूँ आवै वार कुबार । दौर्‌यौ छूट्यौ मेरे द्वार ॥
करि है कछुक अटपटी चोरी । अब आवत कहियत है होरी ॥
तू मत धसन देइरी ताही । वाकी बात न जियत पत्याई ॥
ठोक किवार दीजियो गाढ़ी । अपनी खाट लीजियो आढ़ी ॥
सावधान है रहियो भारी । मैं तौ सोवत जाय अटारी ॥
समौ पाइ घर धनी पधार्‌यौ । गाढ़ौ देखि क़िवार पुकार्‌यौ ॥
भीतर ते कह उठी महतारी । वह तौ चकित है रह्यौ भारी ॥
कहा भयौ री जननी तोकूँ । क्यों पहिचानत नाही मोकूँ ॥
खीझ कहीं तुम जाउ नन्द के । तो गुन जानत छंद बंद के ॥
इतनौ मान तू कौन करावै । धस्यौ बिराने घर में आवै ॥
कहा भई री माता वौरी । लाग्यौ भूत कै परी ठगौरी ॥
वौरी होय जसोमति तेरी । लागैं भूत रहैं घर घेरी ॥

२०—सुधाकर:—इनका जीवन-वृत तो प्राप्त नहीं हो सका है, पर महाराज सूरजमल सम्बन्धी कविताएँ इन्हें उस काल का कवि होना सिद्ध करती हैं। इनका कविता काल १८२० विक्रम संम्वत् के आस पास माना जाता है। इनके जो फुटकर छन्द महाराज सूरजमल की प्रशंसा में लिखे हैं, उनमें से कुछ उद्धृत किये जाते हैं।

कवित्त

तेरौ तौ ताप मारतंड सौ प्रचंड तपै,
वैरिन के तन जर ववैला भये जात हैं।
अरिन की वाहिनी तोरई सी सूखि जात,
धारे अपजस जासौं कारे भये गात हैं।
सुकवि "सुधाकर" ने वरन्यौ ब्रजेन्द तेज,
सेजन ते भाजि बैरी बधू अकुलात हैं।
जेई तव ताते-ताते उदक सों न्हात हुतीं,
तेई अश्रु पातन की धार सों अन्हात हैं॥

जालिम कों जलाय दूनी में दानी दरसत,
दौलत कौ मेह नेह बरसत जुवानी है।
उदित उदार परिबाह में अपार तेरौ,
उज्जवल अमल तेरी कीरति बखानी है।
कोकिला सी बानी जानी चन्द्र सौ मुखारबिंद,
सोभा रूप देख रति अति ही लजानी है।
तो सी तुही मानी और उपमा न जानी परै,
'सुधाकर' वखानी सो ब्रजेन्द्र महारानी है॥

२१—रामकवि:—यद्यपि इनका विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका किन्तु इनकी कविताओं से यह भली भांति सिद्ध होता है कि आप प्रसिद्ध कवि 'सूदन' के समकालीन थे और भरतपुर दरवार के आश्रित थे। इनका कविता काल संवत् १८२० के आस पास ठहराया जाता है। आपकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं:—

बदनसिंह परसिद्ध जो, ब्रजमंडल को भूप।
ताके सूरज भल्लसुत, सूरज ही कौ रूप॥

कवित्त

दौरे मल्ल सूरज के, भदावर हहरे औ,
मारवाड़ी थहरे राठौर मदमत्ता की।

उड़ि जात ओरछौ, सटकि जात सरीला कौ,
सकल जमात जैसे माखी मधुछत्ता की।
झरना औ परना के हरना से भाजि जात,
कंपत बसति कुल्लि चंपत के छत्ता की।
दिल्ली के मरद सब बिल्ली से दुबकि जात,
चौंकि चौंकि परैं चमू चक्कवै चकत्ता की॥

२२—रंगलाल:—आप भरतपुर के निवासी तथा भरतपुर नरेश जवाहर सिंह के आश्रित कवि थे। आपका कविता काल १८२० से १८२५ तक निश्चित किया गया है। आपने महाराज जवाहरसिंह के यश का वर्णन सुन्दर ढंग से किया है। उनकी "साखा" नामक पुस्तक महाराज जवाहरसिंह के यश एवं वंशावलि प्रशस्ति की है। इस पुस्तक में आपने पद्य के साथ २ गद्य का भी प्रयोग किया है। भाषा सरस एवं सरल है। उदाहरण देखिए—

दोहा

सरहद नापी समद लौं, सूरसेन के नाम।
छप्पन कोटि जादौ भये, मथुरा मंडल गाम॥

हाथी घोडा हैं घने, बहुत खजाने दाम।
काँसा में दे खोहरी, दीनी बहुत इनाम॥

लीनी चौथ मल्हार सूं, घासैड़ा सूं रार।
तोड़ी कड़क पठान की, रुहिला दिये पछार॥

२३—मुरलीधर:—ये भरतपुर निवासी तथा महाराज सूरजमल के पुत्र नवलसिंह के आश्रित कवि थे। इनका कविता-काल सं० १८२०-२५ वि० माना जाता है। इन्होंने श्रीमद् भागवत के पंचम स्कन्ध का हिन्दी पद्यानुवाद किया है। अपने समकालीन कवियों की भांति ग्रन्थ में अध्याय की समाप्ति पर अध्याय में वर्णित विषय का संक्षिप्त विवरण हरिगीतिका छन्द में दिया है। उनकी शैली सूदन से मिलती जुलती सी है। कविता के उदाहरण निम्नलिखित हैं:—

हरगीतिका

भुव चक्रवर्ति सुजान को सुत नवलसिंह सुजान है।
सनमान दान कृपान पूरो वीर बुध बलवान है।
तिन हेत 'मुरलीधर' लिख्यो श्री भागवत भक्तिहि लियौ।
पंचम स्कन्ध अध्याय त्रोदश प्रकट यह पूरण भयौ॥

सुनि प्रगट सकल संसार रीति।
दुख सुख की नहिं ताकों सुभीत॥
ते प्रवल बिष्णु माया विचारि।
भुव कठिन पंच में दिये डारि॥

२४—भोलानाथ:—यह भरतपुर के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे और महाराज जवाहरसिंह के पुत्र नाहरसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८२०-२५ वि० माना जाता है। इनके दो ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, उनमें से प्रथम 'लीला-पच्चीसी' तथा द्वितीय 'सुमन प्रकाश' हैं। सुमन प्रकाश अभी तक प्राप्त नहीं है। 'लीला पच्चीसी' में प्राचीन परिपाटी के अनुसार राधाकृष्ण की रासलीलाओं का सरस एवम् भाव पूर्ण वर्णन है। इनकी कविताओं के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

सरस बजावत वेनु, सुनावत राग अपारे।
कौन बहुत सुधि करै, बसे हिय नंद दुलारे॥
जतन जु किये अनेक, मिलें बिन दरसन कै हूँ।
तासौं चिन्ता करत हियो, समुझत नहिं जैहूँ॥

वेद रिचा जे कहीं, कहीं रिषि अमर कहीं जे।
ते गोपी बड भाग सांवरे नेह पगीते॥
मुकुट बाँधि लै लकुट, ग्वाल गौअन संग डोलति।
बैन बजाय रिझाय गाय सुर मधुरे बोलति॥

२५—मोतीराम:—आपने सारस्वत ब्राह्मण कुल में जन्म ग्रहण किया था। आप भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह के आश्रित कवि थे और फुटकर छन्दों में रचना किया करते थे। आपके जन्म स्थान के विषय में अभी तक पता नहीं चल सका है किन्तु इतना अवश्य है कि आप जीविका उपार्जन के हेतु भरतपुर पधारे और महाराज जवाहरसिंह ने १) एक रुपया दैनिक वेतन पर आपको अपने आश्रय में रखा। इसके प्रमाण में स्वयं 'मोतीराम' ने एक कवित्त लिखा है।

इनका कविता-काल सं० १८२० से १८२५ वि० तक माना जाता है। आपके फुटकर छन्दों में भिन्न २ विषयों को लेकर रचना की, किन्तु जवाहरसिंह के यश को ही अधिक गाया है। भरतपुर आने के लिये शिवजी ने उनको स्वप्न दिया, उसी को उदाहरण स्वरूप नीचे दिया जाता है:—

कवित्त

मोसों आज सपने में शिव महाराज ऐसें,
कह गये सोई हम बरनी प्रमान है।
मेरौ जप व्रत नेम, पूजन अनेक विधि,
कीन्हों है सर्व उर बाके मेरो ध्यान है।
'मोतीराम' ब्रह्म कुल-पालक कलपतरु,
सबै बात लायक सो दया को निधान है।
तेरे जो मनोरथ हैं पूरन करैगो तिन्हें,
मेरो भक्त नाहर जवाहर जवान है॥

एक वियोगिनी का मर्मस्पर्शी चित्रण :—

कवित्त

पीव पीव करत मिलें जो मोहि आन पीव,
सौने चोंच चातक मढ़ाऊँ कर आदरन।
कुटिल कलापिन के कंठन कटाय डारौं,
देत दु:ख दादुर चिराय डारौं गादरन।
'मोतीराम' झिल्लीगन मंदिर मुदाई डारौं,
बधिक बुलाइ बाधौं वग के विरादरन।
विरह की ज्वालन सों जलद जराइ डारौं,
स्वासन उडाऊं बैरी बेदरद बादरन॥

२६—ब्रजचन्द :—आपका विशेष परिचय उपलब्ध नहीं है। इनका कविता-काल वि० १८२०-२५ के अन्तर्गत ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा के अनेकों फुटकर छन्द लिखे हैं। इनमें से उदाहरण स्वरूप एक पद्य दिया जाता है:—

कवित्त

शंकर के आगे जैसे त्रिपुर के जुत्थ भजे,
भासकर आगे जैसे तिमिर भगात है।
वारि आगे अगिनि बयार आगे बादर ज्यों,
धार आगें कायर ज्यों धीर नां ब्रात है।
केहरि के आगे जैसे कुंजर समूह भजें,
सुरसरि के आगे पाप देखत विलात है।
वैसे ही सुजान नन्द 'कवि ब्रजचन्द' कहै,
सिंहनवलेस आगें अरि भगि जात हैं॥

२७—शोभनाथ:—इन कविवर का विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हुआ परन्तु इनकी रचना से इतना पता अवश्य लगता है कि ये महाराज सूरजमल के समय से लेकर महाराज जवाहरसिंह तक रहे हैं। इन्होंने "माधव जयति" नाम का एक ग्रन्थ लिखा है, जिसका रचना काल सं० १८२४ वि० हैं। कविता के उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

दोहा

'माधव जयति' सुनाम यह, ग्रन्थ करन आनंद।
'शोभनाथ' कवि लख कियो, चतुरन हेतु सुछंद॥

छप्पय

सूरजमल सों जंग करत, नैंकहु नहिं कम्पौं।
कर उठान पठान रुहेलन, मद कों चम्पौ॥
लार मलार लगाय, राख लीनों कर चाकर।
और कितेक अमीर, दिलीपुर के गुणआकर॥
अति बली जवाहर जगत में, जाहिर जिहि गुन गन सही।
वीराधिवीर विक्रम अमित, ब्रज-महीप राजै मही॥

२८—महाकवि देव:—आप इटावा के अन्तर्गत ब्राह्मण जाति में उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म 'भावविलास' के रचना काल के आधार पर सं० १७३० माना जाता हैं। मिश्रबन्धुओं ने अपने 'विनोद' में इनका स्वर्गवास सं० १८०२ वि० को सन्देह के साथ प्रकट किया है। निश्चयात्मक रूप से यह किसी ने नहीं लिखा कि महाकवि 'देव' का देहावसान ठीक किस सम्वत् में हुआ। भरतपुर राज्य पुस्तकालय में इनकी कुछ फुटकर कविताओं का संग्रह सुरक्षित है। इससे प्रतीत होता है कि ये भ्रमण करते हुए वृद्धावस्था में भरतपुर राज्य में आये। पर आप भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह से मिले और उनको दो कवित्त सुनाए जिनको सुनकर जवाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुए और आपको ५०००) पाँच हजार रुपये पारितोषिक स्वरूप प्रदान किये। इस घटना से 'देव' ८५ वर्ष की अवस्था में १८२५ वि० में भरतपुर आये।

महाकवि 'देव' के काव्य के विषय में जितना लिखा जाय उतना ही थोड़ा है। इतना लिख देना पर्याप्त है कि आप रीति-काल के प्रमुख कवि हैं। भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह (१८२०-२५) का आपने यशोगान किया एवं कुछ समय के लिये आपने भरतपुर निवास किया, इसी नाते उदाहरण स्वरूप उनके द्वारा भरतपुर के विषय में लिखे हुए कवित्तों में से एक कवित्त दे देना पर्याप्त

दक्खिन के दक्खिनी पछांह के पछाँही भूप,
उत्तर उत सेनाहू पूरब को रल की।
सुभट समाजन की गाजन गरज भूमि,
तरजत छाती 'देव' दानवके दलकी।
यदुवंशी नृपति सुजान के सपूत वीर,
कहाँलौ बखान करूं तेरे भुज-बलकी।
मोहि भई जाहर जवाहर तिहारे हाथ,
आय लगी सायत विलायत कतलकी॥

२९—गोधाराम:—आशुकवि 'गोधाराम' का कविता-काल १८३० से १८६० वि० सम्बत् तक माना जाता है। इन्होंने महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा में अनेक छन्द लिखे। चन्द बरदाई की भाँति इनका भी महाराज रणजीतसिंह के साथ युद्ध में साथ २ रहना पाया जाता है। महाराज इन्हें मात्रा हीन (गधा) कहा करते थे। जब लार्ड लेक ने भरतपुर पर घेरा डाला और दोनों ओर की सेनाएं अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने में लगीं हुई थी, तब महाराज ने इनसे कहा, "अरे मात्रा हीन इस समय कुछ कह सकते हो?" गोधा ने कहा- "महाराज की जैसी आज्ञा हो।" महाराज ने तत्काल एक समस्या "वेगिही गुपाल फौज मारेंगों फिरंगी की" देदी, जिसकी गोधा ने उसी समय निम्न पूर्ति कर सुनाई:—

भारत में भीषम पिता कौ प्रन राख्यौ नाथ,
द्वारिका में टेर सुनी पाण्डव-अर्द्धंगी की।
मघवा कही ही ब्रज दऊंगो डुबाय गिरि,
गोवर्धन धारि रक्षा करी ब्रज-संगी की।
तुरत ही सुदामा कौ दारिद विनाश्यौ नाथ,
हरनाकुस मार्यौ सो शोभा है त्रिभंगी की।
अबकैं हमारी बेर कान मूंद बैठे कहाँ,
वेगिही गुपाल फौज मारौगे फिरंगी की॥

प्राची में लगी ही सो वजीर काची राखि गयौ,
पट्टम में टीपू भर एक बार बरती के।
दक्षिण दहल पेशवान के महल लागी,
डरे दिगपाल भूप कंपे सब धरती के।
सोई आग आय अब दिल्ली-पति देस घर,
सूबा उमराव सब स्वांगीर भखी के।

तेही तेग धारन सों गोला वौछारन सों,
बरती बुझाई रे सुजान चक्रवर्ती के॥

३०—मोहनलाल:—आप कुम्हेर निवासी पं० केशवदेव के सुपुत्र थे, और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके रचित चार ग्रन्थ पाये गये हैं, उनमें रचना-काल मिलता है उससे यह अनुमान होता है कि आपका जन्म सम्वत् १८ विक्रमी के आस पास हुआ था और मृत्यु १८५० के पश्चात्। आपके रचित ग्र (१) रंग-मंजरी (२) फूल-मंजरी (३) पत्तल (४) पिंगल-सार हैं, जिनमें कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

रंग-मंजरी (दोहा)

मुकट जटित हाटक मनो, दधि-सुत गुरु उर माल।
सजें जुमरदी तन बसन, आवत मोहन लाल॥
ठारैसै तेतीस अरु, गढ़ कुम्हेर शुभ ग्राम।
केशब-सुत मोहन रची, 'रंग-मंजरी' नाम॥
शीश क्रीट सारँग धरै, मृग मद केसर भाल।
खेलत ख्याल बसंत कौ, मनमोहन ब्रज बाल॥
झूलत रंग हिंडोलना, मानौ चढ्यौ अनंग।
सारी सोहै सोसनी, बनी बाल शुभ रंग॥
ओढ़ कुसूमल चूंदरी, खेलन चालो तीज।
संग सखी नव-यौवना, शिर शोभित ऋतु भीज॥
कृष्ण कासनी कर सुखद, पावत लै लै नाम।
केलि रची सबही सहित, वृन्दाबन निज धाम॥

फूल-मंजरी रचना-काल (दोहा)

पंडु वेद वसु इन्दु ये, संवत् कुम्हेर सुगाम।
केशव सुत मोहन रची, 'फूल-मंजरी' नाम॥

अवतरण

कमल नयन कान्हर लला, सुन्दर साँवल गात।
बनते आवत सुरभि संग, मंद मंद मुसकात॥
पीत पगा भीनौ झंगा, कर कुसुमन की माल।
नगन जटित कर मुरलिका, बाजत शब्द रसाल॥
कैसें कदम तरें अली, पहिरें बसन दुकूल।
पिय परदेस बनाव यह, जनु गुड़हर कौ फूल॥

गुलचीनी की भाँति कौ, भली भाँति रंग राय।
लहगा चारु सुहावनो, रही भली छवि छाय॥
मैंने कहुँ देखी लला, गुलमंगल की माल।
लखि हाँसी आवत हमन, कियौ कहा जंजाल॥

३१—चतुराराय:—यह जाति के ब्रह्म भट्ट थे और महाराज भरतपुर के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८३३ के आस पास ठहरता है। इनकी रचना में अलीसहादतखाँ के साथ पथैने में होने वाले युद्ध का वर्णन है जो 'पथैना-रासो' के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध वि० सम्बत् १८३३ में हुआ था। कवि ने बड़ी ओज पूर्ण भाषा में इस युद्ध का वर्णन किया है और साथ ही भरतपुर राज्य के महाराजाओं की वंशावली का बखान करते हुए ऐतिहासिकता का परिचय भी दिया है। 'पथैना-रासो' से कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

सुमरन सारद माय कौ, गनपति कौं सिर नाय।
छंद पथैने कौ कियौ, 'चतुराराय' बनाय॥

छप्पय

खानचंद कै भयौ कुँवर ब्रजराज महीपति।
ताके सुत द्वै भये पुन्य जाग्यौ प्रताप अति॥
भावसिंह अतिराम और चूरामन ठाकर।
बुद्धसिंह गजसिंह कुशलसिंह भयौ दिवाकर॥
जाहिर जहान हिन्दुवान में, कह 'चतुरा' आनंद छयौ।
यह वंस अंस वसुदेव सुत, भावसिंह भूपति भयौ॥

भावसिंह के द्वै भए, रूपसिंह बदनेस।
ब्रज मण्डल मंडन मही, सुरपुर मध्य सुरेश॥
सारदूल अतिराम के, भयो वरज्जा जुल्ल।
ढिग राख्यौ बदनेस ने, प्रानन की समतुल्ल॥
सारदूल अतिराम को, कीयौ भुविपै नाम।
दियौ भूप बदनेस ने, ताहि पथैनो गाम॥
ताके सुत चौदह भये, चौदह बुद्धि निधान।
जाहर जंबूदीप में, दान और किरपान॥
अली सहादतखान ने, दीनों बढ़ा तुरंग।
सूरवीर तिसपै चढ़े, धर धर जीन उमंग॥
ठारह सै तेतीस के, माह मास सुदि ग्यास।
अली सहादतखान ने, तज्यौ आगरो बास॥

३२—उदैराम:—यह कवि जाति के गौतम ब्राह्मण और ग्राम टौंटपुर तहसील भरतपुर के रहने वाले थे। याज्ञिक बंधुओं ने 'माधुरी वर्ष ५ संख्या १' में भरतपुर राज्य के हिन्दी कवियों पर एक खोज-पूर्ण लेख लिखा है, उसमें इनको महाराज रणजीतसिंह के समय में राज्याश्रित कवि लिखा है और इनका कविता-काल सं० १८३४ से १८६२ माना है। इन्होंने राधाकृष्ण की लीला विषयक अनेक छोटे ग्रन्थ रचे हैं। उनमें से इनका 'सुजान सम्वत्' नामक, ग्रन्थ प्राप्त हुआ है, किन्तु वह अपूर्ण है। यह ग्रन्थ राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है। इसमें महाराज सूरजमल के चरित्र का वर्णन है। खोज से एक पुस्तक 'गिरवर विलास' और प्राप्त हुई है। इनकी रचनाओं में अनुप्रास उपमादि अलंकारों का बड़ा ही सुन्दर समावेश है। इसकी भाषा श्रुति मधुर चमत्कारिक एवं प्रभावोत्पादनीय है। वर्णनों में सजीवता है। 'सुजान-विलास', 'गिरबर-विलास' के अतिरिक्त उदैराम द्वारा रचित श्री कृष्ण की ७ लीलाओं व 'पक्ष पच्चीसी' 'बारह मासी' व फुटकर कवित्त और पाये जाते है। कविताओं के कतिपय उदाहरण निम्न लिखित हैं:—

दोहा

दसम सुनी देखी कछुक, हम तुम एकहि संग।
सोई अब वर्णन करौं, श्रवण सुखद परसंग॥
ब्रजमण्डल जदुवंस में, अंस कला अवतार।
उदित भयो भूपति भुवन, सूरज हरन अंध्यार॥
(गिरवर विलास से)

मेरे उर आयकें, विहाय विधि-मन्दिर को,
सुन्दर सरोवर मति मंजुल में न्हाइये।
करकें सिंगार हार, अंग साज अलंकार,
तन सुकमारि सार गंध्र सो लगाइये॥
भारती भमानी, जगरानी, वाक् बानी बैठ,
कवियन के कंठनि हंसासन विहाइये।
लै के करबीन, परबीन मन मोद मान,
आइये सयानी सो सुजान गुन गाइये॥
(सुजान सागर से)

एक दिना ब्रज नारि, निरष जमुना में न्हाती।
ताक लगाय गुपाल, करी तिनसों छल घाती॥
चीर चुराये आय तब, सबकी नजर छिपाय।
काहू ने जानी नहीं, चढ़े कदम पर जाय॥
(कृष्ण लीला से)

जमुना के तीर तीर बृच्छन की भीर जहां,
बन्दर चकोर मोर कीर लैं पढावै है।
छूट रही अलकें, अलवेलौ अकेलौ बन,
बाँसुरी में दै दै हेला गाय जो बुलावै है।
इतने में एक आय बोली 'ऊदै' औचक ही,
एरे अहीरके तू ऐसों इतराबै है।
आज तो अकेलो पायो, करन मन भायो दही,
लूट लूट खायो, बल कौनको दिखावै है॥

जानत ही हम साख बड़ी, बैसाख में साख सवै ही विसारी।
ऐसे को वीर भरोसो कहा, कहि और में और कछु कर डारी॥
गाय बजाय रिझाय हमें, ठग अंत गयो अब दै करतारी।
हाय 'ऊदै' अब कैसी बनी, पर हाथ बिकाय गयोरी बिहारी॥

३३—राजेश:—इनका विशेष वृत्तान्त तो प्राप्त नहीं है, परन्तु भरतपुर राज्याश्रित कवि अवश्य प्रतीत होते हैं। इन्होंने महाराज रणजीतसिंह की प्रशंसा में कुछ छन्द लिखे हैं, जिससे इनका कविता-काल सं० १८३४ के आस पास ठहरता है। कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है:—

परम रजेश तू द्विजेश वंश अंश हंस,
कीरति तिहारी छीर सिन्धु लों भरी रहै।
अतुल अगाध बोध बिमल बिधाता जैसौ,
सर्वगुण ज्ञाता ज्ञान आनंद करी रहै।
चण्ड मार्तण्ड सौ प्रचण्ड तेज लोचन में,
ताही की ज्वाल अरि उर में अरी रहै।
ब्रज बलबीर रणजीतसिंह तेरी धाक,
भूपन के भौन भौन भाजर परी रहै॥

३४—बंशीधर:—आप महाराज रणजीतसिंह के राज्यकाल में काव्य रचना करते थे। ये भरतपुर निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। आप द्वारा रचित कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं, केवल फुटकर कवित्त ही मिलते हैं। इनकी काव्य रचना को देखकर यह प्रतीत होता है कि आप एक कुशल काव्य-मर्मज्ञ थे। आपकी भाषा भावानुकूल है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों में अच्छा समन्वय है। आप अनुप्रास एवं यमक लिखने में सिद्ध हस्त प्रतीत होते हैं। भक्ति परक एवं शृंगार रस पूर्ण कविताएं लिखने में आप अत्यन्त कुशल हैं। इनके फुटकर छन्दों में से कुछ छन्द उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं:—

पापी तीन तापी जापी नापी औ उपापी सम,
सोहत सुधापी जीव, आपी थल थैया कौ।
बारुकन बारिकन बारतन बारक है,
बारि अघ ओघन उवार बर दैया कौ।
नातौ कीनौं हातौ नातो पूर्यो सुरपुर ही कौ,
पातौ कीनौं 'बंशीधर' भुकत भरैया कौ।
कामना की गैया काम-तरु की कनैया अहै,
तरनि-तनैया ते उजासौ सेस-भैया कौ।

दूसासन दुमन दुकूल गह्यौ दीन बंधु,
दीन ह्वै कै द्रुपद-दुलारी यौं पुकारी है।
छांड़े पुर पारथ को ठाड़े पिय पारथ से,
भीम महा भीम ग्रीव नीचे कर डारी है।
अंबर ज्यौ अंबर अमर कर्यौ 'बंशीधर',
भीषम करण द्रोण सोभा यौं निहारी है।
सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है,
कि नारी ही की सारी हैं कि सारी ही की नारी है॥

संदल गुलाव रंग रैनी अंग चन्द्र उदै,
अहा कहा महा रूप पांतिकी निकाई है।
बेसर विलास लोल लोचन मधुर हास
हिये के हुलास की गुराई मुख छाई है।
त्यौरी की तरंग भ्रुअ-भंग में अनंग कोटि,
कौतुक करत मुसिकान छैलताई है।
चाहन चुचात ललचात लपटात मन,
'बंसीधर' माधुरी अनूप छवि पाई है॥

३५-गुलाम मुहम्मद:-यह पीरमुहम्मदखां के पुत्र थे और रणजीत[illegible] में हुए थे। इन्होंने भरतपुर नगर का, यहाँ के राज्य का तथा दुर्ग आदि का [illegible] बर्णन किया है। जिस प्रकार हिन्दी के अन्य मुसलमान कवियों ने प्रेम [illegible] कथाएँ लिखी है उसी प्रकार आपने भी 'प्रेम रसाल' नाम की एक प्रेम[illegible] सवैया, कवित्त, दोहा तथा कुंडलिया आदि विविध छन्दों में लिखी है। [illegible] उपमा आदि के प्रयोग में आप बड़े कुशल थे। आपकी पुस्तक बहुत ही मनोह[illegible] है, जिसमें कहीं २ उर्दू तथा फारसी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। एक [illegible] पर गजलें भी दी गई हैं। उदाहरणार्थ कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:-

सवैया

हे पृथपाल कृपाल धनी सुधि लेहु सहाय करौ किन मेरी ।
लुंज भयौ दुख संकट में अति व्यापत मो तन व्याधि घनेरी ।
तो विन कौन पुकार सुनें मग में ठग हेरत रैनि अँधेरी ।
औरनि पास निरास भयौ अब केवल आस रही हरि तेरी ॥

तेरा ही भरोसा है तू कृष्ण मुरारी है ।
मैं दीन विचारा हूँ तू कुंज-बिहारी है ॥
मैं दास कहाँ जाऊँ को बाँह गहै मेरी ।
सुधि लेहु विशंभरजी अब आस तिहारी है ॥
चाणूर संहारयौ तें गहि केस हन्यौ कंसाई ।
अब ढील यहाँ एती, किहि भाँति विचारी है ॥
कंगाल सुदामा सौ तैं राव किया छिन में ।
दासी जुहुती कुब्जा सो राज दुलारी है ॥
पर काज घने सारे गजराज उवारे तैं ।
पृथपाल विदुर कीने तू ख्याल खिलारी है ॥
प्रह्लाद बचायौ तें पाताल बली दीनों ।
अवतार लियौ मथुरा ब्रज भूमि सुधारी है ॥
संसार कहांजानें, अख्तार घने तेरे ।
अब लाज रखौ माधव यह अर्ज हमारी है ॥

३६—बालकृष्ण:—यह कविवर उदेराम के समकालीन थे और रणजीत-काल में हुए थे। आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। इनकी 'राधा प्रतीत परीक्षा' नामक रचना हमारे देखने में आई है। यद्यपि यह एक छोटी पुस्तक है जिसमें केवल १२८ पद हैं, किन्तु इनकी रचना अत्यन्त भाव पूर्ण और प्रभावोत्पादक है। उदाहरण देखिए:—

अवतरण

एक समै लाडले कीनी मन इच्छा । लैंन राधिका पर चले परतीत परीच्छा ॥
कैसी धौं राधिका करै परतीत हमारी । तातैं जहाँ जैये जहाँ बृषभान दुलारी ॥
त्रिया भये भूषण सजे तन झूमर सारी । माँग पार बैनी गुही मनों पन्नग-नारी ॥
नख सिख सकल सिंगार कै सौरभ सरसायें । लखिकें सिवारु सार दामन माँहि लजाये ॥
चली गई जहाँ राधिका बृषभान किसोरी । गज मराल मन हरन को जिनकी छवि थोरी ॥
राधा आवत देखि के अति आदर कीनो । आसन दै कर पान दै कर बिजना लीनौ ॥
अंग अंग अवलोकिकें मन माहि बिचारी । यह तौ कोऊ है बड़ी महाराज कुमारी ॥

जौ पै चाहति हौ सुनौं तो बात वखानौ। हित जानकें कहत हूँ जो बुरौ न मानै। अहो तियन में राधिका गुन रूप निधानो। कुँमरि तुम्हारे कंथ की इक अकथ कहानी मैं आवत ही मग चली जब लखी अकेली। उन उठाय कें काँकरी मो तन कों मेली। जब हूँ सखी हूँ रहो जब कछु न बोल्यौ। अपने सँग के सखन में मन मांहि कलोली मेरे मन में रिस भई कछु न बाते। हौं पुनि चलि आई सखि तेरे हित नाते।

३७—हुलासीः—यह कवि भरतपुर के रहने वाले और जाति के ब्राह्मण थे। आप वीर रस की कविता करते थे। इनका कविता-काल सम्बत् १८३४ वि० के आस पास ठहरता है।

उदाहरण (कवित्त)

अलबर, उदैपुर, बीकानेर, जोधपुर,
कोटा, औ करौली पीठ जयपुर के दै गये।
राजा रजपूत धुर दक्षिण, औ पछांह के,
बिभव बिहाय कें सु आपै बस ह्वै गये।
कहत "हुलासी" राव राजा सब पूरव के,
हारकें नबाब, अंग्रेज टोपी नैं गये।
जंबू दीप खंडन कौं मंडन भरतपुर,
बाके गढ़ टूटेते अनेक सर है गये॥

३८—मूलरायः—यह कवि जाति के ब्रह्मभट्ट (राय) थे। ये तहसील नदबई जिला भरतपुर के अन्तर्गत नूरपुर ग्राम के निवासी काशीराम के पौत्र तथा अट्टू राय के पुत्र थे, जैसा कि स्वयं कवि ने अपने परिचय में निम्न दोहा लिखा है:—

नगर नूर कौ देश है, ब्रजराजा कौ धाम।
तामें ग्रन्थ बनाइये, मूलराय कवि राम॥

इन्होंने पद्मपुराण में बर्णित गीता के महात्म का 'गीतामहात्म' नाम से विविध छन्दों में भाषानुवाद किया है। अनुष्टुप छन्द के परिमाणानुसार इसमें २००० छन्द हैं। इनके ग्रन्थ का रचना काल सं० १८३६ वि० है, जैसा स्वयं कवि ने लिखा हैः—

ठारैसै छत्तीसवों, विक्रम संवत जान।
कार मास बदि पंचमी, भौमवार शुभ भान॥

३९—देवेश्वरः—ये जाति के माथुर चतुर्वेदी थे। इनका कविता-काल १८३६ वि० ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल के भाई वैर के राजा प्रताप

के पौत्र पुष्पसिंह के लिये "पुष्पप्रकाश" नामक एक छोटासा ग्रन्थ सं० १८३६ वि० में लिखा है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है:—

ब्रज नरेन्द्र कौ, कुंवर प्रताप।
ताकौ सिंह बहादुर आप॥
पुहुपसिंह ताकौ परिगास।
ताहित किय, यह 'पुहुप-प्रकाश'॥

दोहा

गो गोपी गोपाल गन, गुल गुलाव गहि पानि।
गोकुल गोकुलचंद को, गुन्जा गुन्ज गुंजानि॥
बिल बिलात वाला विकल, बाधा विरह विशाल।
चल चुप देखी चपल चख, चकित चित्त नंदलाल॥

४०— पदमाकर:—ये जाति के तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। पद्माकर का जन्म बांदा में सम्वत् १८१० वि० में माना जाता है। भारतीय काव्य-गगन में यदि सूर सूर्य और तुलसी शशि हैं तो पद्माकर शुक्र के समान देदीप्यमान है। इन्होंने अनेक राजा महाराजाओं से अतुल सम्मान एवं प्रचुर द्रव्य प्राप्त किया था। यह भरतपुर नरेश रणजीतसिंह के समय में उनके पास भरतपुर पधारे थे। यहाँ से भी इनको बहुत सम्मान एवं धन दिया गया। महाराजा रणजीतसिंह व उनके पुत्र बलदेवसिंह के विषय में इनके फुटकर वीर रस के बहुत कवित्त यहां उपलब्ध हुए हैं, उनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

डंकन के घोर शोर माचौ चहुँ ओर जाके,
ओझ की झकोर कोऊ पावत रनें नहीं।
कहै पदमाकर उदंड भुज दंडनि की,
चंडता विलोकें भीम आवत मनें नही॥
हंका पर हंका कै सुबंका बलदेवसिंह,
जंग जुरै लाखन कै खाक हू गनै नहीं।
ह्वै कर प्रचंड जहाँ काटे अरि झुन्ड तहां,
मुन्ड मुन्ड माली पै बटोरत बनैं नहीं॥

कहर कौ कोस किलकाली कौ कोलाहल सौ,
हालाहल सलिल, धरातल बडब कौ।
कहै 'पद्माकर' महीप रणजीतसिंह,
तेरौ कोप देख यों दुनी में को न दवकौ॥
चिल्लिन कौ चुंगल बिजुल्लिन कौ तीखौ तेज,
बाँकुरौ बबा है बडबानल अजब कौ,
गब्बिन कौ गंजन गुसैल गुरु गोलन कौ,
गाजन कौ गंज गोल गुंमज गजब कौ॥

उच्छलत सुजस बलच्छ नव लच्छ दिच्छ,
दिच्छिन हू छीरधि लौं स्वच्छ छाइयत है।
कहै पदमाकर महीप रणजीतसिंह,
अच्छिन में ओज पर तिच्छ पाइयत है।
पच्छ बिन लच्छि लच्छि विकल विपच्छी होत,
गब्बिन के मुच्छ कर तुच्छ नाइयत है।
प्रकटत पुच्छ कुच्छ कुच्छ पर शेष जब,
रुच्छ परि मुच्छ पर हाथ लाइयत है॥

पेले को प्रलै को, मीच मेलै को मुठी में झुकि,
झेले को उच्छल्लत मुसल्ल बलवीर को।
कहै 'पदमाकर' उमंडै को उमादल पै,
दंडै कौ दुनी में वेग बाढ़त समीर को।
बंजै को बलाय मद मंजै को महीसुरन,
गंजै को गरज बज्र वार्यौ सुना सीर को।
मोडै को दई को अब लोडैं को अगनि पुंज,
औडै को अंतक वीर बंका रणधीर को॥

दाहन तें दूनी तेज तिगुनी त्रिसूल हू ते,
चिल्लिन ते चौगुनी चलाक चक्रचाली तें।
कहै 'पद्माकर' विलंद बलदेवसिंह,
ऐसी समसेर सेर सत्रुन पै घाली तें॥
पाँच गुनी पवि ते पचीस गुनी पावक तें,
प्रगट पचास गुनी प्रलय पनाली तें।
सर्पन सौं सौगुनी सहस्त्र गुनी सूरज तें,
लाख गुनी लूक तै करोर गुनी काली तें॥

४१—मुरलीधरः—यह ज्ञाति के भट्ट ब्राह्मण थे। इन्होंने अपनी कविता में 'प्रेम' उपनाम का प्रयोग किया है, और कहीं कहीं पूरा नाम 'मुरलीधर' भी लिखा है। इनका कविता-काल सं० १८५० से १८६० वि० तक माना जाता है। इन्होंने महाराज रणजीतसिंह के समय में होने वाले 'अंग्रेजी युद्ध' को अपनी आँखों देखा था। यह बड़े प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनकी रचना सरस ब्रजभाषा में है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

चढ़े हैं फिरंगी भयौ भारत भरतपुर में,
तोपन तराप के हलान पै हलान की।
सूरज सुजान कौ बहादुर लस्यौ है तहाँ,
छीन लई खेतन में खग्ग जे खलान की।
'प्रेम' यों प्रचण्ड महि मंडल को मण्ड रह्यौ,
पूरन प्रताप थल थलन थलान की।
काली करी तृपतं फिरंगी सब कुरंगी भये,
एकहू न कला चली पथर कलान की।

केसन की नवनि, नवनि बरुनीन की है,
भूरि भाग भौंहन बकाई बीज बै रही।
नासिका नबेली की, अनूप रूप 'प्रेम' राखि,
दन्तन की दमक दुख दामिन कों दै रही।
चम्पक चमेलिन की चरचा चलावे कौन,
अंग की सुवास छित छोरन लों छ्वै रही।
पाई असि तावी औ सितावी नैंन रंग की है,
आबी अंग अंग की गुलाबी रंग ह्वै रही॥

कंटक गुलाव क्यो गरूर करै अपने मन,
हमें कंज केतकी सुबासन के ढेरे हैं।
आदर ते एक दिन करीलहू पै बास करें,
आदर बिन जायँ कल्प तरु के न नेरे हैं।
'मुरली' मलिन्दन के कुल की मरजाद यही,
गंध हीन फूलन पै करत नहिं फेरे हैं।
ऐसी तुच्छ बारी की न कुच्छ परवाह हमें,
भुव बीच भौंरन कों बाग बहुतेरे हैं॥

४२—धौंकल मिश्रः—ये महाराज सूरजमल के भाई प्रतापसिंह के वंशज तेजसिंह के आश्रय में वैर में रहा करते थे। ये जाति के ब्राह्मण थे। इनकी रचनाओं से कविता-काल सं० १८५० के आस पास ठहरता है। इन्होंने अपने आश्रयदाता तेजसिंह के लिये 'शकुन्तला नाटक' तथा 'प्रबोध चन्द्रोदय' नाटक का सरस ब्रजभाषा में पद्यानुवाद किया है। 'शकुन्तला नाटक' का रचना-काल सं० १८५६ वि० है। कविता काव्योचित गुणों से सम्पन्न, सरस, प्रसादमयी एवं सुमधुर है। प्रबंध योजना अच्छे प्रकार की है।

शकुन्तला (अवतरण)

तन चंद कला सी, सिंधु सुधा सी, मनु चपलासी रुचिकारी।
फूली जनु बेली, पीत चमेली, गति अलबेली सी धारी॥
सारी दुतिकारी, पीत किनारी, उज्वल तारी धारि लई।
अलकें रंग कारे, पन्नग प्यारे, गंध सुधारे सोभ छई॥
वैनी रुचि देनी, काम नसैनी, पन्नग सैनी सी राजै।
पारी सुभ बन की, घटा सुघन की, सुचि सिज मन की छवि छाजै॥
मुक्ता फल मंडित, सुरभि उछंडित, बसकरि पंडित सी गाजै।
झमकत कदम्बनी, मनों चन्दनी, जलधि नन्दनी लखि लाजै॥

प्रबोध—चन्द्रोदय

पीन सघन कुचवारी, प्यारी कमलिनी इमि गाबौ।
समय कुरंग नैनी, पिकबैनी हमकों हिये लगाबौ॥
दिगम्बरी सिद्धन के सत की, मत नाहीं मन में लाबौ।
अहो कपालिक दरसन ही यह, मोक्ष रूप ही गाबौ॥

४३—सूरतरामः—इनके पिता का नाम महापात्र केवलराम था। ये जाति के ब्रह्मभट्ट थे। इनका निवास-स्थान ग्राम जहानपुर तहसील वैर था। इनको महाराज ग्वालियर की ओर से दो ग्राम जहानपुर व मुखैना जागीर में मिले थे जिनको उनके बंशधर अब तक भोग रहे हैं। इनका कविता-काल सं० १८५० वि० के आस पास ठहरता है। खेद का विषय है कि इनका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होसका है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं:—

सवैया

एक ही पांव सों, सेंधिया साहब, सागर लों सब दाबी धरा है।
पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन, लोक पती मन माँहि डरा है।
दूसरे पांव कों है बसुधा, कित दूरन टेकन डाँड़ पड़ा है।
'सूरत' सातहु दीपन में, तुही लँगड़ा सो तुही लँगड़ा है॥

कवित्त

दुरत बिदारनी, सकल जग तारनीय,
प्रन प्रति पारनी, सुप्यारी हरि नाह की ।
वृन्दावन रस केलि कारनी, हो तुम ही,
सँहारनी हो सबके तन मन दाह की ।
'सूरति सुकवि' रविनन्दनी जी कृपा कीजै,
दीजै लाल-लाडली की भक्ति उत्साह की ।
ग्रौर जेती कामना सबै परवाह देहु,
रहै परवाह एक तेरे परवाह की ॥

४४—भागमल्ल:—ये जाट जाति के थे ग्रौर महाराज रणजीतसिंह की सैना के एक वीर सैनिक थे । सैनिक होने के नाते वीर रस में इनकी ग्रभिरुचि होना स्वाभाविक था । इन्होंने तत्कालीन युद्धों का बड़ा सजीव ग्रौर ग्रोजस्वी वर्णन किया है । संयुक्ताक्षरों से युक्त ग्रनुप्रासों के प्राचुर्य ने कविताग्रों को ग्रत्यन्त वीर रसानुकूल बनाने में सहायता पहुँचाई है । इनके वीर रस के ग्रनेकों फुटकर कवित्त मिलते हैं । उदाहरण स्वरूप कुछ पद्य प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

दक्षिण से धायो सूर बीरन सजाय लायौ,
ग्राये सूरबीर मगरूरे महमत्ता के ।
ब्रज हू में ग्राये ब्रज बारे ने सहाय कीनी,
गौ मोर पारे सुख दीये ग्रनरत्ता के ।
कहै 'भागमल्ल' हल्ला कीयौं जसवन्तराव,
खलन खदेर मंद तोरे सद सत्ता के ।
तेरे तेज तत्ता ते चकत्ता में न रही सत्ता,
लत्ता से उड़ाये सब गोरे कलकत्ता के ॥

गोरेन की बीबी डकराय कें पुकार करें,
भाजो हो कंत जसबन्त चढ़ मारैगा ।
ग्रान परे ब्रज-भूमि भोरे काहू ग्रौर ही के,
ये ब्रजवारा तेरी भुजान को उखारैगा ।
ग्रड़े सूरबीर तेरे गोलन को गिनें नाहि,
लैकें समसेर जोधा जोधा कूं पछारैगा ।
तुरक तिलंगा चपरासी सब हार गये,
जसमत्ता जाय कलकत्ता रौर पारैगा ॥

४५—बृजेश:—ब्रजेश जाति के ब्राह्मण और महाराज रणजीतसिंह के समकालीन थे। आपकी रचनाएं बहुत उच्च कोटि की हैं। यद्यपि आपका कोई ग्रन्थ तो हमें उपलब्ध नहीं हुआ है, तथापि कुछ फुटकर कविताएं पर्याप्त मात्रा में मिलती हैं। इन कविताओं के देखने से यह भलीभाँति सिद्ध हो जाता है कि आप बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

कवित्त

पूरन पुरुष ताकौ पारहू न पाबें बेद,
गावत पुरान ताहि मंगल विनोद में।
पालने झुलावे हलरावें पय प्याबें मसि,
बिन्दुक लगावें माल धारें मन मोद में।
अज अविनासी दैत्य दानव बिनासी प्रभु,
सची कमलासी तहाँ रहत प्रबोध में।
कहत 'ब्रजेश' सुक सारद महेस सेस,
जग जाकी गोद में सो जसुधा की गोद में॥

घनन की घोर नभ मंडल दसौं दिसान,
साजे अवसान के निसान ब्रज बोर पर।
तड़ित तड़ाकी बहु बद्दल बल्लाकी स्याम,
धाम धर खंड़न घुमंडि बरजोर पर।
पौन के फनाँट झर झरना 'ब्रजेश' जल,
देखत दयाल गोप गोपी जन सोर पर।
मूलते उखारि कर-पल्लव सम्हारि गिरि,
फिरकी लौं फिराय त्यों बसायौ नख कोर पर॥

मंडि नभ मंडल, अखंडल उमंडि घन,
मंडि मंडि सायुध घमंड अति जोर पर।
खंडि जल घोर जोरा जोरे ही अपारे जीव,
जंतुन प्रहारे हा हा सब्द सुर सोर पर।
पौन तरु तोरे गोपी ग्वारनि करोरे त्योंही,
कंप तन गोरे राधा लाइ मन मोर पर।
करुना कलित भुज दंडन बलित कर,
महिते खलित गिरि धार्यौ नख कोर पर॥

घटा घिरि आई कोप बासव पठाई जुथ्थ,
जुथ्थन सुहाई लूम लूम ब्रज ओर पर।
धक पक धाई गोप गोपी मन भाई गाय,
बच्छ अकुलाई करें करुणा किसोर पर।
जसुमति मैया ढिग नंद बलि भैया ताकि,
ता छिन कन्हैया गिरि गह्यौ बर जोर पर।
हर बर धाय भुज' दण्डन घुमाय हाल,
करन पै छाया त्यों बसायौ नख कोर पर॥

अमित अपारें नभ-मंडल गुहारें घन,
सायुध सँहारें धाय धाय ब्रज बोर पर।
चपला की चौंधे घर धार जल औंधे पौन,
गौन तन कौंधे त्यों समूल तरु तोर पर।
करुना के कंद ब्रजचन्द दुख कंदन कौं,
घूमन घुमाय बंसी घोर बर जोर पर।
मघवा खिसाय कर कंगन फिराय गिरि,
छत्र सम छाय कैं तुलायौ नख कोर पर॥

नैन बर्णन (कवित्त)

खंजन तैं खरे मनरंजन गुमान गुर,
गंजन गहीले गुन गाहक करोरी के।
मृग के मलीन मन बेधत परीन पुंज,
मीन हू अधीन करैं भंजन चकोरी के।
मैन कैसे बान खरसान के सुधारे तीखे,
उज्ज्वल अनियारे कारे भौंर की मरोरी के।
सौतिन के साल नंदलाल श्री "ब्रजेस" पाल,
राजत बिसाल नैन कीरति-किसोरी के॥

केसू के कुसमन की कफनी करी है कंठ,
तसवी कलीन मन मोद उपजायौ है।
अंबनि कौ मौर सिर टोपी औ झवा है सेली,
अलफी अनार भौंर गुंज छवि छायौ है।
झार्‌यो मकरन्द द्रुम डारहि करि दंड धारी,
खप्पर समीर यौं "ब्रजेस" गुन गायौ है।

बड़ौ बेपीर भीख प्राण की वियोगिन सों,
माँगन फकीर ह्वै बसंत चलि आयौ है॥

मुरली बर्णन (कबित्त)

माथे मोर मुकुट रसाल सिरमौर लसै,
फूले हैं सरसों फूल कुंडल श्रवन है।
अलकें भ्रमर जुग लोचन कमल मुख,
चंद देख अति अहलाद के भुवन है।
मुरली मधुर गान पंचबानादि तान,
कोयल कुहुकि मान माननी दवन है।
श्रीमत ब्रजेन्द्र महाराज बलवंत जू के,
राजत बसंत रूप राधिका रमन है॥

४६—गणेश:—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनका कविता-काल सं० १८६० से सं० १८६० वि० तक ठहरता है। ये भरतपुर के महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनके पुत्र लक्ष्मीनारायण व पौत्र युगल किशोर भी कवि थे। ये दोनों भी महाराज बलवन्तसिंह के दरबार में रहते थे। इससे यह पता चलता है कि उक्त कवि बहुत बृद्ध थे। इनकी रचनाओं में से एक पुस्तक "बिवाह बिनोद" प्राप्त हुई है जिसमें उक्त महाराज के विवाह का सुन्दर ढँग से वर्णन किया गया है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है:—

छूटत फुहारे जल जंत्रन ते जल धारे,
देखे लगें प्यारे, न्यारे न्यारे बुन्द वारे हैं।
तोप तरवार ह्वै कें मुक्ता समूह स्वच्छ,
लाखन परतते वे सुकवि निहारे हैं।
नृप-सिरताज महाराज श्री ब्रजेन्द्र बली,
बलवंत दूल्है पैं सरूपबंत बारे हैं।
मेरे जानि ब्याह के तमासे कौं उछाह जानि,
मानों हेत मानि आछें बरुण पधारे हैं॥

४७—जसराम:—इनके विषय में इतना ही वृत्त उपलब्ध हो सका है कि ये जाट जाति के थे और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका कविता-काल सं० १८[illegible] वि० ठहरता है क्योंकि ये भरतपुर नरेश रणजीतसिंह के यहां दरबार में रहते थे

इनके वीर रस के स्फुट छन्द पाये जाते हैं। ये खरी खरी कहने में नहीं चूकते थे। राज दरवार में गुणियों का अनादर कराने वाले दीपचन्द व पलाग्राम के पटेल (गूजर) और किशना पर अप्रसन्न होकर आपने "सात-भूत खेलें" वाली ग्राम्य लोकोक्ति का प्रयोग बड़े सुन्दर ढ़ंग से किया है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

देख दरवार दीपचंद सों प्रकासित है,
ताही छाय मीरजी अमीर बुद्धि साज की।
पला कौ पटैल जो पलाय देत ताही छिन,
सही रहै येही कहैं आयुस व्रजराज की।
जिद्द "जसराम" जोर जाहिर जहूर जूद,
किशना विष-बैन कहै, खोय लाज ताज की।
आवै दीन दुखित सहाय दरवार जान,
सात भूत खेलें, कहो कुसल का राज की॥

मच्यो घमसान कोस तीन लगि लोथ परीं,
मर गये सूर सांचे मौहरा अगाह ते।
वांई यों भुजा ते मार कीन्हीं जसबन्त राव,
परे रहैं रुण्ड मुण्ड, लागे वे सलाह ते।
कहत "जसराम" अंगरेज जंग हारि गये,
जीत जदुवंसी सूर लड़त उछाहते।
दोऊ दीन जान्यों महाराज रनजीतसिंह,
हारि कें फिरंगी फन पटक्यौ कराह तें॥

४८—गंगाधर:—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका कविता-काल विक्रम सं० १८६१ माना जाता है। इनकी रचनाओं में वीर रस की प्रधानता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आप महाराज रणजीतसिंह के दरवारी कवि थे। एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है:—

कवित्त

पारथ मचांयौ महाभारत भरतपुर,
घिरे भूप भट भीमसेन से सजत हैं।
"गंगाधर" कहै समसेरन की जड़ा झड़ी,
धड़ा धड़ी तोपन के गोला यों गजत हैं।

जहाँ कर रारि गिरें गोरटा गरद्द भये,
दोऊ लट्ट पट्ट रण-खम्भन तजत हैं।
फिरका फिर गिन के फार के फतूह करें,
जीत के नगारे रणजीत के बजत हैं॥

४६—प्रसिद्ध:—ये कवि जाति के ब्रह्म भट्ट थे। ये महाराज रणजीतसिंह के पलटन में सैनिक कार्य के द्वारा जीविका अर्जन करते थे। इनका कविता-काल सं० १८६१ के आस पास पाया जाता है। इनके वीर रस के अनेकों फुटकर कवित्त मिलते है। उदाहरणार्थ कतिपय पद्य प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

सुरपुर भवन, भरतपुर देखन कों,
काहे काज आये हो फिरंगी सूर छत्ता मैं।
धर कें नसैनी चढ़्यौ कुरली खड़ग लिये,
किये मन भोरे. गोरे सूरत. चकत्ता में।
कहत "प्रसिद्ध" महाराज. रणजीतसिंह,
धाय धाय धामें पग आगे ही धरत्ता में।
भेजी फोर पटक पछार खात खंभन सों,
लेडी अँगरेजन की रोवें कलकत्ता में॥

छप्पय

कछवाये खरभरे लरे नहिं एक लराई।
रजवारे भजि गये गिरत्ता गैल न पाई।
दक्षिण लक्षण भरे, रंग कवियन मुख भाखी।
दीघ, देहली भई मैंढ़ सूरज सुत राखी।
दिगपाल हालि भुवपाल भग जब नृप वल चढ़ते जहाँ।
रणजीतसिंह नहि जनमते तो हिन्दुन हद रहती कहाँ॥

देखे दुरबीन, कड़ाबीन वान संग लिये,
सत्तरह पहर हल्ला कीये मदमत्ता के।
पीरे पट झंडा फते बुर्ज पै निसान दिये,
वाने फहराने मोरपच्छ के धरत्ता के।
जोगनी जमात पांति बैठ के अघात खात,
भाँति भांति मासन सवाद नव खत्ता के।

कहै 'परसिद्ध' महाराज रणजीतसिंह,
सत्रह हजार दल काटे कलकत्ता के ॥

५०—रमेश:—इनका कवित्ता-काल सम्बत् १८६२ से १८८०वि० तक माना गया है। इनका पूरा इतिवृत्त ज्ञात नहीं होसका है। इनकी कविताओं में रसानुकूल ओज एवं प्रसाद गुण का प्राचुर्य है। स्वाभाविक अनुप्रासों के सम्पर्क से इनकी रचनाओं में अद्‌भुत चमत्कार उत्पन्न हो गया है। इनका लिखा हुआ एक नायिका-भेद ग्रन्थ तथा महाराज रणधीरसिंह की प्रशंसा के कुछ फुटकर छन्द मिलते हैं। वीर रस की रचनाओं में से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

महाराज रणधीरसिंह का आंतक वर्णन:—

कवित्त

तेरी धाक धरक धराधिप धर धरात,
घर छोड़ धावत धरा की लाज धारें ना।
कोटिन के कोटि सुनि उद्धत निसान धुनि,
सूने करें पल में पलायन में हारें ना।
झुकि झुकि झारन में छिपत पहारन में,
प्रान हानि जानि हार जीत कौं बिचारें ना।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र महाराज तेज तत्ता देखि,
पत्ता से उड़त बैरी सत्ता कों सम्हारेंना॥

महाराज रणधीरसिंह के अश्वों का वर्णन

उच्छलत सुच्छलत बल के बलच्छ दच्छ,
रुच्छ गहि गच्छति सु तुच्छ करें पौन कों।
अच्छन निहारि के सुपच्छनि के पच्छ हरें,
पच्छिपति के से बच्छ बच्छि तन कौन कों।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र के हयेन्द्र बरने 'रमेश',
लच्छित सु लच्छिन के लच्छ बर हौन कों।
दच्छिन अदच्छ के सु कच्छनि के कच्छ खोलि,
रच्छक बिलच्छन समच्छ करें भौन कों॥

हाथियों का वर्णन

औपे आप ओपे इन्दु नीलमनि पंनग से,
दब्बे पर भूमि को 'रमेश' कहै आनि के।
उद्धित अमंद ते कलिंद ते बिलंद बेस,
गुंजत मलिंद पुंज मद की घटानि के।

ऐसे गल गाज गजराज ब्रजराज द्वार,
दिग्गज हू भाजें लाजें सोर पहिचानि के ।
सुंडादंड उद्धत उदंड नभ–मण्डल में,
चूमें सुधा मंडल मुखारविंद जानि कें ॥

५१–मिश्र सुखदेव गंगाकिशोरः–ये माथुर चतुर्वेदी महाकवि सोम... के वंशज थे । इस वंश को भरतपुर राज्य की ओर से राज–दानाध्य... का पद परंपरा से चला आता है । इनके वंशज अब भी भरतपुर में विद्यमान... और इस उपाधि का उपभोग कर रहे हैं । इनके पिता का नाम बैजनाथ ... था । इनका रचा हुआ 'संग्राम-रत्नाकर' नाम से महाभारत के भीषम् पर्व ... मूसल पर्व के अनुवाद हमारे संग्राहालय में हैं । ग्रन्थ के देखने से हम इस निष्क... पर पहुंचे हैं कि आप न केवल हिन्दी के ही बरन् संस्कृत के भी ज्ञाता थे । ... ग्रन्थ में आपने अगणित प्रचलित तथा अप्रचलित छन्दों का प्रयोग किया है ... सिद्ध होता है कि आपको पिङ्गल शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था । यद्यपि आपने ... तत्र अलंकारों का भी प्रयोग किया है, किन्तु उनका विशेष चमत्कार कहीं ... दिखाई पड़ता । इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह कह सकते हैं कि आप... भाषा में सरलता तथा स्वाभाविकता की मात्रा यथेष्ट पाई जाती है और ... साधारणतः अच्छी है । इनकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं:–

छप्पय

श्री नारायण शंख चक्र कों धारण करि कें ।
अरु नर उत्तम रूप आप अर्जुन कौ धरि कें ।
सब दैत्यन की दमनि देव सरसुति मन भरि कें ।
श्री पारासर सूनु व्यास आनन्द बिहरि कें ।
हूजै प्रसन्न मोपै अबै कृपा दृष्टि अधिकारि कें ।
मैं करत प्रणति तुमकों सदा अपने हियमें धारि कें ॥

कवित्त

पर्वत कैलास मध्य पून्यौ की जुन्हैया बीच,
आपने समान बिम्ब आपनौ निहारि कें ।
धावत अनेक बार छाया सों विचारि रारि,
अति ही प्रचण्ड सुण्ड दण्ड कों भ्रमाय कें ।
दौरै मत पुत्र ! तेरे पदनि के घातनि तें,
कम्पति है धरती ताकी दया कों विचारि कें ।

ऐसे गिरिजा के सपूत पूत गनपति कौ,
सदा उर ध्यान धरौ कपट बिसारि कें॥

५२—रसनायकः—जैसा कि आपके नाम से प्रतीत होता है 'रसनायक' रस-राज श्रृंगार के सफल उपासक थे। आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत कामवन नगरी में भट्ट जाति में हुआ था। आपके जीवन परिचय एवं कविता-काल के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, किन्तु विद्वानों ने आपका कविता-काल सम्वत् १८७२ बि० के लगभग माना है। आपका केवल 'विरह-बिलास' नामक काव्य-ग्रन्थ उपलब्ध हुआ है। इस ग्रन्थ में भ्रमरगीत के ढ़ंग पर पद्य में उद्धव तथा गोपियों का सम्वाद वहुत ही आकर्षक ढ़ंग से लिखा गया है। गोपियों के द्वारा प्रयुक्त उक्तियाँ तो बहुत ही मर्मभेदी हैं, और भाषा भी भावानुकूल सरल और रोचक है। यद्यपि आपका एक ही ग्रन्थ देखने में आया है फिर भी इसके देखने से यह विश्वास नहीं होता कि ऐसे उच्च कोटि के कवि ने केवल एक ही ग्रन्थ लिखा हो। केवल इसी एक ग्रन्थ के अवलोकन से यह कहा जा सकता है कि आप काव्य-कला के अच्छे मर्मज्ञ एवं प्रकाण्ड विद्वान् थे। 'विरह-बिलास' ग्रन्थ से आपकी सरसता, सरलता, मर्मज्ञता एवं विद्वत्ता की पर्याप्त झलक मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः जगन्नाथदास "रत्नाकर" को 'उद्धव-शतक' की प्रेरणा रसनायक के 'विरह-बिलास' से ही मिली हो। इस ग्रन्थ के निर्माण काल के विषय में कवि ने स्वयं लिखा है:—

अष्टादस जु वहत्तरा, सम्बत् सावन मास।
सोंमवार तिथि तीज सुभ, प्रगटो विरह-बिलास॥

आपके 'विरह-बिलास' काव्य के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जारहे हैं:—

उद्धव (दोहा)

अलख निरंजन ध्यान धरि, निगुन ज्ञान उर धारि।
जोग जुगति सिखवहुँ अबै, सीखौ सब ब्रज-नारि॥

गोपी (दोहा)

अलि ! बौरे कांहे बकत, कह दुवारिका कान्ह !
बसत निरंजन सुचित ब्रज, श्री घनश्याम सुजान॥

कवित्त

व्यापक जगत ब्रह्म अलख कहाँ है काहि,
आदि निरंजन नाम रँगे सब पेखि लै।
कैसो अविनासी को है ? बेद जो बखानैं जाहि,
बिधिहू न जानैं हमैं एकै रंग रेख लै।

ब्रज ही बसत 'रसनायक' न आन ठौर,
काहे झकझोर करैं सुचित विसेख लै।
बौरे लौं बकत ऊधौ द्वारका बताबै कान्ह,
कान्ह हैं हमारे प्रान प्रानन में देख लै॥

अन्य सखि (दोहा)

प्रेम-सुधा जिन जनम सों, अलि चाख्यौं अनुकूल।
जोग जहर तिनकों कहा रुचि मानैं मति भूल॥

कवित्त

जोगलै सिधारे तुम कुबिजै दै भोग आये,
निरगुन हमैं लाये लम्पट लखातु हौ।
रोकत सरल पन्थ बेद औ पुरानन के,
थापत अपथ पथ निलजै सिहातु हौ।
यामें धौं कहा है 'रसनायक' वृथा है वाद,
चाह जो हमारें सो न चरचा चलात हौ।
अपनी कहत पर-पीर ना लहत ऊधौ,
माधब मिले की बिधि काहि ना बतातु हौ॥

सवैया

कान्ह दै जोग पठाये तुम्हैं हम जानी अहों जू बड़ौ जस लीनों।
कैसी अन्हौती कथा कथिकैं, भरि श्रौननि हाय हलाहल दीनों।
काहू की नैंक दया न लई 'रसनायक' बैर बिसाह्यौ नवीनों।
क्यों हमसी अबला बपुरीन पै ऊधव आय कैं ऊधम कीनों॥

राधिका जी का पत्र श्री कृष्ण को (दोहा)

एक वेर ब्रज आइयै, सुन्दर स्याम सुजान।
सुरति समैं न रुसाइ हौं, मोहि तिहारी आन॥

कवित्त

एक बेर आय ब्रज-बिरही जिबाय लीजै,
पाछैं मन मानें सोय कीजै सचुपाय हों।
मान ना करौंगी 'रसनायक' धरौंगी धीर,
गुन ही गनौगी पै न औगुन गुनाय हों।
पीबत अधर दंत देहों ना कठिन जुग,
कुच ही अरौ न अंग हरुवें छुबाय हों।

सौंहैं हैं हजार मोहि नंद के कुँवर अब,
सु-रति समै न हा हा रावरे रुसाय हों॥

दोहा

जारत अनल अगाध हरि, विरह ब्याधि बढ़ जाय।
मो जीवत जदुपति अबै, ब्रजहि बसाबैं आय॥

कवित्त

आपनौ बतन छांडैं कीरति कछू न यामें,
चरचै करत लोग नाहक हँसाइयै।
प्यारे परदेस 'रसनायक'' रहै हो अबै,
घरकी बिचारी कहा सो हू तो सुनाइयै।
अति ही अनन्य दई विगरी प्रचंड मोहि;
जीबत बचाय तन तापहि नसाइयै।
सूनौ है सकल व्रज विरही बिकल यातें,
गोकुल के नाथ आय गोकुल बसाइयै॥

घट की न जल भरैं, मग की न पग धरैं,
घर की न सुधि करैं, लैति हैं उसाँस री।
एक सुनि लोट गई एक बिन जोट भई,
एकन के अधरन छूट आए आँसुरी।
एहो 'रसनायक' याते कछू तो उपाय कीजै,
एसो तो करौ जासौं होय न उपहाँस री।
दीजिये जराय वन-बाँसन कटाय फेरि;
उपजैं न बाँस बन बाजैगी न बाँसुरी॥

५३—मोतीराम:—ये महाराज रणधीरसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल संबत् १८८० बि० के आस पास ठहरता है, परन्तु इनकी रचनाओं में महाराज रणधीरसिंह से लेकर महाराज बलवंतसिंह तक का वर्णन मिलता है। इनके पिता का नाम रघुवरदास था जो प्रसिद्ध महाकवि रामलाल के पितामह थे। ये नगर के निवासी तथा मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके रचे हुए दो ग्रन्थों का पता लग चुका है, जिनका विवरण इस प्रकार है:—

१—ब्रजेन्द्र-वंशावली:— इस ग्रन्थ में भरतपुर राज्य वंश का वर्णन बड़े ही विस्तार पूर्वक रसीली भाषा में किया गया है।

२—ब्रजेन्द्र-विनोदः—यह रीति ग्रन्थ है, जिसमें नायिका भेद को लक्षण और उदाहरण देकर भली प्रकार स्पष्ट किया है।

आपकी भाषा बड़ी ही लचीली तथा श्रवण सुखदं है। भाव व्यंजना सरस तथा हृदय स्पर्शनी है। शैली में पूर्ण चमत्कार है और अनुप्रासों की छटा देखते ही बनती है। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

ब्रजेन्द्र-वंशावली— (दोहा)

महाराज रणजीत सुत, श्री रणधीर ब्रजंद।
जगमगात जग में प्रगट, जाकौ सुजस अमंद ॥

कवित्त

प्रबल प्रचंड मंजु मालती निरुंड मंडि,
मलय उदंडन गरूर गहि गारिये।
गहि गहि गौहरन जौहर ज्वलित जाल,
पानिप बिसाल मद चित्त तें उतारिये।
'मोतीराम' रुचिर अनेक उपचार भार,
घने घनसार हू असार कर डारिये।
हिन्द सरताज तेरे जस पै ब्रजेन्द्र बीर,
कोटिक अमंद चंद चाँदनीन बारिये ॥

पद्धरि छन्द

अति बिमल नीर सरबर अपार,
जह करत आन खग कुल बिहार।
कल हंस हंसनी लिये संग,
तिहि तीर आय बिहरै सुढंग।
कहुं चक्रवाक चातक चकोर,
मन मोद भरे बिंहरंत मोर।
कोकिल कपोत कूजत रसाल,
मंजुल अनूप बहु बगन जाल ॥

भुजंग प्रयात छंद

लगी चारिहूँ ओर झालर झमंकें,
सु तौ चन्द्र की चन्द्रिका सी चमंकें।
बने पोतबारे चंदोवा बिराजे,
चहूँ ओर जर तार की कोर साजें।

घटा सर्द की सी अटा औ अटारी,
छटा सी चमंकें जहां गेह नारी।
रची है सची चित्तसों चित्र सारी,
खची स्वर्ण सों रूप की रासि भारी॥

कवित्त

जलद बंदूक चहुं औरन अचूक राजें,
साजें घोर गरज गरज गुन बारे हैं।
छटनि छतारि स्वच्छ रंजक अपार छबि,
धूम धार धुरवान रार निरधारे हैं।
'मोतीराम' मोहन सरस सुर सार धार,
बारि धर गोलिन गुमान गार डारे हैं।
पावस न होय वीर खेलत सिकार,
महाराज रणधीर के करौल बल भारे हैं॥

बुरजन बुरजन गरजैं गंभीर धुनि,
लरजैं पहार बन सघन समाज सों।
चमकंत रंजक चपल चपलासी घोर,
प्रलय घटासी गेरे गरभ गराज सों।
ऐसी तोप तीखीं गढ़ भामते भरतपुर की,
दगतीं ब्रजेन्द्र बीर हिम्मत दराज सों।
पूछत कुरावे करे छुब्बत तुराबे भरें,
गजब अराबे अरैं अरि में अवाज सों॥

जाकी जोति जगती में जगत ज्वलित जाल,
जगर मगर रहै दसहू दिसान में।
ब्रजजन कोकनद अधिक प्रमोद भरे,
सोक तजि कोक कुल कलति कलान में।
'मोतीराम' सुकवि मलिन्दन के बृन्द धाये,
दान मकरन्द गंध पिवत झलान में।
सेस नहि ताब ब्रजकंत बलवन्तसिंह,
उदित प्रताप आफताब हिन्दबान में॥

कलपलता के कल कोमल अमल दल,
करुना निलय गति ललित इलाज के।
सुखद सरोजन तें ओज दरसत दूनों,
कलिमल दल दलमल दराज के।

'मोतीराम' सुकवि सहायक सदैव जय,
दायक बिलंद बलवत्त ब्रजराज के।
औढर ढरन नव अंबुज बरन ऐसे,
बिनऊ चरन बेंकटेस महाराज के॥

५४—महाराजा बलदेवसिंह:—आपने सम्बत् १८८० से १८८१ वि० तक भरतपुर के राज-सिंहासन को सुशोभित किया। आप महाराज रणधीर के भाई और उच्च कोटि के विद्याव्यसनी तथा विद्वानों का आदर करने वाले थे। आपका दरबार विभिन्न प्रान्तों के कलाकारों एवम् सत्कवियों से सुशोभित रहता था। विभिन्न प्रान्तीय गुणियों के सत्संग का प्रभाव महाराज की कृतियों से स्पष्ट झलकता है। जिस प्रकार आपकी महारानी 'चतुर सखी' ने अपनी काव्य-प्रतिभा प्रकाशन का माध्यम गीत काव्य को चुना है, उसी प्रकार आपने भी गीत काव्य ही अपनाया है। आपके पदों से भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि आप काव्य के साथ साथ संगीत कला के भी विशेषज्ञ थे। संत बाणियों के सदृश्य आपकी रचनाओं में सरसता एवं माधुर्य प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आपकी रचनाओं में ब्रज-भाषा के अतिरिक्त पंजाबी एवम् मारवाड़ी भाषा का पुट भी विद्यमान है।

आपने अपनी रचनाओं में 'चतुर छैल', 'चतुर प्रभु' तथा 'चतुर पिय' उपनाम की छाप अङ्कित की है। आपकी कृतियों (पदों) के कतिपय उदाहरण नीचे उद्धृत किये जाते हैं:—

ठुमरी

पचरँग पाग जरद वाकौ पटका साँवरे बदन पर मेरा मन अटक्या।
तोषे तोषे नैन भौंह रतनारी मृदु मुसक्यान चमक चित लटक्या॥
'चतुर छैल' मुकटि मनि राधे मदन फंद मेरा मन लपट्या।

ठुमरी राग काफी

मन मोहन मेरे जाल हो जी मही बाला एजी सेली बाला मेरे जाल।
छुपि छुपि के क्यों नाम धरत हौ बाही से लग्या मेरा ख्याल॥
'चतुर पीव' मैं हाल वे हाली अब हो ज्या परमाल।

राग झिंझोटी—इक ताला

हरि बिन कोई नहीं मन साथी।
सुत दारा अरु कुटुम कबीलौ झूठे सुजन संगाथी॥
बरज रही बरज्यौ नहिं मानें घूमत है जस हाथी।
'चतुर' कहाय चेत जा प्यारे फिर न मिलें रस साथी॥

५५—महारानी अमृतकौरः—महाराज बलदेवसिंह स्वयं जैसे सरस कवि थे वैसी ही उनकी रानी अमृतकौर भी थीं। ये भी सरस पद रचना किया करती थीं और अपने पदों में 'चतुर सखी' तथा 'चतुर प्रिया' के उपनाम का प्रयोग करती थीं। इन रचनाओं से यह अनुमान होता है कि 'चतुर सखी' काव्य-कला के साथ संगीत-कला कोविदा भी थीं क्योंकि इनकी समस्त उपलब्ध रचनाएँ गीत काव्य के रूप में ही हैं। इनके पदों के पढ़ने से संत वाणी का सा आनन्द प्राप्त होता है। इनका अधिकांश काव्य भक्ति रस से ओत प्रोत है। कतिपय रचनाओं के उदाहरण निम्नाङ्कित हैं:—

राग गौड मलार ताल जलद

प्यारी निकसी हैं खेलन तीज राधे निकसी हैं खेलन तीज।
पंचरंगी दामिन लावन सों ओढ़े दक्खिनी चीर।
कैसें कहूं अंगिया की सोभा आभूषन की भीर॥
बेंदी में हीरा की झलकनि वेसरि लटकन धीर।
पायल तौ घायल करि ड़ारें पिय सामल बलबीर।
'चतुर सखी' या बिधि सौं खेलौ वा जमुना पै तीज॥

जल भरन कूं जाय स्याम खड़ौ पनघट पै।
राधे तेरौ रूप अनूठौ लाल देखि सुधि सब भूल्यौ।
महरि कौ लरिका महा अति खोटौ गलियन में रोकै टोकै।
'चतुर सखी' नें यह छवि निरखी कहा कहैं अब की ररियां॥

राग ईमन

प्रीत जुरी मोरी तुम सूँ गिरिधर। प्रीत जुरी मोरी तुम सूँ।
बहुत जतन क्यों हूँ कर जोरी अब तोरी हरि छल सूँ॥
महाधूत वह नन्द लाड़िलौ घात चलावै बल सूँ।
'चतुर सखी' मेरे विरह बहुत है बिन दरसन अब तरसूँ॥

राग रोरठ—ताल चंपक

मोहन मुकुट की झलकानि।
कोटि चन्द्र बिसेस सरि भरि तुलै न ता अनुमानि॥
नन्दजी कौ कुँवर सुन्दर राधिका प्रान।
चार जुग मैं बरन सकै नहिं प्रेम रस की खानि॥
ब्रजबासी सब लोग जुग सों करत अमृत रस पान।
'चतुर सखी' के प्रान प्यारें दरस देहु मोहि आन॥

५६—जयदेव:—ये काव्य के साथ साथ ज्योतिष के भी प्रकाण्ड पंडित थे औ महाराज बलदेवसिंह के दरबार में रहते थे। इनका कविता-काल १८७१ ई० है इन्होंने 'जातक भूषण जोग' नामक ग्रन्थ संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर हिन्दी लिखा है। ग्रन्थ में काव्य-सौन्दर्य तो नहीं है परन्तु जातक सिद्धान्त पर भाषा पद्यों में अच्छी पुस्तक प्रतीत होती है। उदाहरण के लिये इनके दो दोहे प्रस्तुत किये जाते हैं :—

> महाराज बलदेब जू, कह्यौ सहज ही भाय।
> 'जातक भूषण जोग' की, भाषा देहु बनाय॥
> सम्बत् ठारह सौ बरस, इकहत्तर कौ मान।
> कार्तिक बदि पाँचैं गुरू, पुनर्वसू सों जान॥

५७—धरानन्द— इनका पूरा नाम घासीराम था। इन्होंने कहीं 'कवि' कहीं 'धरानन्द' और कहीं 'घासीराम' नाम से कविता की है। ये भरतपुर निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे। इनके वंशज अब भी भरतपुर में है, जि पंडित रामचन्द 'महाराजजी' 'कर्मकाण्ड केसरी' 'ज्योतिषाचार्य' राज-पंडित प्रसि व्यक्ति हैं। घासीराम संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके रचे हुए संस्कृत वेदान्त, न्याय, ज्योतिष आदि पर कितने ही ग्रन्थ हैं। आपका बहुत सा साहि आपके उक्त वंश धर पं० रामचन्द्र ने श्री हिन्दी साहित्य समिति को भेंट दिया है। कवि धरानन्द महाराजा बलदेवसिंह के दरबारी कवि थे हिन्दी साहित्य में आपने एक रीति बृहद् ग्रन्थ 'साहित्य सार चिन्तामणि' नाम लिखा है। यह ग्रन्थ गद्य-पद्य अर्थात् चम्पू के ढंग का है। इस विशेषता यह है कि इसमें तुलनात्मक शैली पर अन्य कवियों की कविता के कवि ने अपनी कविता लिखी है। इस ग्रन्थ का निर्माण-काल सम्बत् १८७ है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

छप्पय

> मद जल मंडित गंड, चंड लगि चंचरीक गन।
> हलत सुन्ड मनु दण्ड, बिबिध जिहिं पूजत सुरगन।
> सेत दंत मद मत्त, बेत सोभित अनेक गति।
> सेवत सेस सुरेस, अनेक नरेस महामति।
> सिंदूर पूर सोभित बदन, सदन बुद्धि भव भय हरन।
> जय सुर नर मुनि बंदित चरन, लम्बोदर कविजन सरन॥

कवित्त

गुन्जरत कुंज कुंज सरस मलिन्द कुल,
उड़त पराग पुंज रंग सरसायौ है ।
प्रफुलित मालती, कदंब बन भूमि रहो,
पवन झकोरनि सुगन्ध बरसायौ है ।
सुमनन की सम्पत सरसत, केलि बाग बीच,
बरनें 'कबीश' पंचवान बल छायौ है ।
माननी के मान गढ़ तोरिवे के काज आज,
काम नृप सेवल बसंत बन आयौ है ॥

कहो कहाँ पाई झूंठ मोती में सचाई अब,
दुरे न दुराई गति पावस गयंद की ।
बड़ेन की बड़ाई लघुताई औ लघुन की यों,
परै पहिचानी परछाई सूक चन्द की ।
मैं तो बरजत हीं अहीर के कों बार बार,
आँखन अंदाई ही मिठाई विस कंद की ।
'घासीराम' कहैं कंठ कूबरी लगाई अब,
आई री उघर सुघराई नंद नंद की ॥

प्रकरण ३

राम-काल (पूर्वार्द्ध)

महाकवि रामलाल:—महाराज वलदेवसिंह के देहावसान के अनन्तर भरतपुर राज्य धंश बिश्रृंखलित होने लगा। अंग्रेजों ने ऐसा सुअवसर देख भरतपुर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया और दुर्जन साल को पदच्युत कर राज्य को अपने आधीन किया। बलवन्तसिंह को सिंहासन प्राप्त हुआ और राज्य शासन अंग्रेजों की देख रेख में होने लगा। राज्य की स्थिति एक दम बदल गई। युद्ध और वैमनस्य के स्थान पर शाँति तथा मैत्री स्थापित हुई। फल-स्वरूप हिंदी कविता को पुष्पित एवं पल्लवित होने का एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। शाँति स्थापन के साथ २ कवियों के विचारों और भावों में परिवर्तन आने लगा। महाकवि सूदन ने वीर रस की जिस काव्य सरिता को प्रवाहित किया था वह आगे चलकर मंद गति से बहने लगी, यद्यपि इसका प्रवाह सर्वथा सूखा तो नहीं। वीर रसात्मक छंद अब भी लिखे जाते थे, किन्तु जो कुछ भी लिखे जाते थे, वे अधिकतर बंदी-जनों की विरदावली के रूप में ही होते थे क्योंकि जाटों की वीरता एवं गौरव के वे दिन समाप्त हो गये जब "दक्खिनी पछैला करि खेला तैं अजब खेल, हेला मारे गंग में रुहेला मारे जंग में" अथवा "तेरे तेग तत्ता से चकत्ता की न रही सत्ता, पत्ता से उड़ाये अंग्रेज कलकत्ता के' की सी वीर रस पूर्ण कविताएं रची एवं कही जाती थीं।

अब श्रृङ्गार रस का समय आया और रीति कालीन कवियों की भाँति इस काल के भरतपुर के कवि भी अपने काव्य को श्रृङ्गारिक रचनाओं से अलंकृत करने लगे। परिणामत: राजा और प्रजा दोनों को कविता से विशेष प्रेम होने लगा। भरतपुर नरेश बलवन्तसिंह स्वयं उच्च कोटि के कवि थे और कवियों का बड़ा सम्मान करते थे। इनके आश्रय में रहकर अनेक कवियों ने इनकी उदारता का वर्णन किया है, और सुन्दर २ ग्रन्थ लिखे हैं। इन कवियों में महाकवि राम-लाल एवं रसानंद दो कवि पुंगवों ने वीर रस के साथ साथ श्रृङ्गारिक रचनाओं को अधिक महत्व दिया है।

महाकवि रामलाल यजुर्वेदी शाखा के मुग्दल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके

वंश के आदि पुरुष संतोष मिश्र विराटपुर (बयाना) के समीप सूरौठ ग्राम के रहने वाले थे। इनके पुत्र खेमचन्द तथा पौत्र रघुवरदास हुए। ये वहां पर अपने शत्रुओं के द्वारा अधिक सताये जाने से तंग आकर नगर (भरतपुर राज्य के अन्तर्गत) में रहने लगे। इनके छः पुत्र रामरतन, सीताराम, मोतीराम, रेखराज, सेवाराम तथा सदाराम हुए। सेवाराम के चार पुत्र हुए, जिनके नाम राम, कृष्ण, धनुर्धर तथा हनुमान थे। ये ही राम हमारे महाकवि राम (रामलाल) हैं। छन्द सार ग्रन्थ में इन्होंने अपना वंश परिचय विस्तार पूर्वक दिया है।

कविवर राम ने मथुरा में विद्याध्ययन किया। इनके गुरू का नाम घासीराम था जो संस्कृत साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। विद्या लाभ कर जब राम कवि अपने घर नगर लौटे तो दीवान दिलसुखराम की प्रेरणा से यह हिन्दी में काव्य रचना करने लगे। उच्च कोटि के कवि होने के कारण महाराज बलवन्तसिंह ने इन्हें अपने दरबारी कवियों में स्थान देकर सम्मानित किया।

अब तक हमारे देखने में इनके सात ग्रन्थ आ चुके हैं, जो काव्य की दृष्टि से एक से एक बढ़े चढ़े हैं। इनके ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है:—

१—अलंकार मंजरी:—इस ग्रन्थ में प्रत्येक अलंकार के लक्षण स्पष्ट करके कवि ने सरस कविताओं के उदाहरण दिये हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ केवल २८ पृष्ठों का है तथापि गागर में सागर का समावेश है।

२—छन्द सार:—यह ग्रन्थ पिंगल शास्त्र की शिक्षा के लिये बनाया गया है। विषय प्रतिपादन कितनी सुन्दरता से किया है यह तो देखते ही बनता है। इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि पुस्तक के आरम्भ में कवि ने देव स्तुति और बंदना आदि के पश्चात् अपने आश्रय दाता महाराजा बलवन्तसिंह का वंश वर्णन कर भरतपुर नगर, कोट, महल, हाथी-घोड़े, तलवार आदि वस्तुओं का वर्णन बड़ी ही सुन्दर और उत्कृष्ट भाषा में किया है, जो समय के ऐश्वर्य एवं वैभव का पूर्ण द्योतक है। सिंह और सिंहनी के संबाद रूप में महाराज की वीरता और यश आदि गुणों का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अनन्तर ग्रन्थ का मूल विषय वर्णित है।

३—हितामृत-लतिका:—यह ग्रन्थ हितोपदेश तथा पंच तंत्र आदि के ढंग पर लिखा गया है। उपदेश ओजपूर्ण भाषा में बड़े सुन्दर ढंग से लिखे गये हैं। इन्होंने भी 'सूदन' तथा 'सोमनाथ' के समान ग्रन्थ के प्रत्येक अंग के अंत में 'शंकर-छन्द' की आवृति की है जो इस प्रकार है:—

जदुवंस कौ अबतंस नृप बलवन्तसिंह प्रबीन।
तिहि हेत द्विजवर राम कवि अमृत-लता यह कीन।
यह मैं विचार समाप्त कीनौ सुभग पहिलौ अंग।
बर विमल मित्रन कूं करै सुख मित्र लाभ प्रसंग ।।

(४) शिखनख:—इस ग्रन्थ में शिख से नख पर्यन्त वाला रूप वर्णन किया गया है। प्रत्येक विषय-वर्णन अपने ढंग का निराला तथा एक दूसरे से बढ़ कर है। अलंकारों का प्रयोग इतना सुन्दर और हृदयस्पर्शी हुआ है कि मुंह से वाह वाह २ निकल पड़ती है।

(५) विजय-सुधानिधि:—यह ग्रन्थ महाराज बलवन्तसिंह की आज्ञानुसार रचा गया था। इसमें महाभारत के कर्ण बध से लेकर दुर्योधन के ताल प्रवेश तक की कथा बड़े अच्छे ढंग से २९ तरंगों में लिखी है। इस ग्रन्थ के प्रत्येक तरंग के अन्त में इन्होंने एक दुबई (हरिपद) छप्द की आवृति की है जो इस प्रकार है:-

श्री बलवन्त भूप ब्रज रक्षक हुकम हर्ष कें दीनों।
तिहि हित यह कवि 'रामलाल' ने बिजय 'सुधानिधि' कीनों॥
बरण बिलास ललित पद यामें रुचिर बीर रस मान्यौ।
संजयपुर प्रवेश नृप कौ हित, प्रथम तरंग बखान्यौ॥

(६) गंगा पच्चीसी:—यह पुस्तक काव्य-चमत्कार से पूर्ण अलंकृत है। इसमें केवल २५ छन्दों में गंगा के भिन्न २ अंगों का वर्णन सुन्दर भाषा में प्रभावशाली ढंग से किया है।

(७) विरह-पच्चीसी:—यह पुस्तक इन्होंने कविवर रस-रासि के कहने से महाराजा बलवन्तसिंह के लिए लिखी है। इसमें गोपियों तथा उद्धव के संवाद और गोपियों का विरह वर्णन ऐसी उत्तम रीति से किया है कि विरह का मूर्तिमान स्वरूप खड़ा हो जाता है। अनुप्रासों का स्वाभाविक चयन इतने सुन्दर ढंग से हुआ है कि 'रतनाकर' का उद्धव शतक छायानुवाद सा प्रतीत होता है।

उपर्युक्त ग्रन्थों के अवलोकन से महाकवि रामलाल अपने समय के सर्वोत्कृष्ट कवि ही नहीं वरन् लब्धप्रतिष्ठित आचार्य भी सिद्ध होते हैं। अन्य आचार्यों की अपेक्षा इनमें यह विशेषता पाई जाती है कि इनके ग्रन्थों में शिथिलता तथा नीरसता किंचित् मात्र भी दिखाई नहीं देती। लक्षणों तथा उदाहरणों में भी दुरूहता नहीं आने पाई है। अलंकार, रस, नायिका, एवं पिंगल आदि काव्यागों का सुबोध एवं सरल भाषा में वर्णन किया है। इनकी भाषा में प्रौढ़ता, सांजीवता एवं मार्मिकता का समावेश है। शैली हृदय ग्राही तथा विद्वतापूर्ण होने के साथ २ सर्व साधारण के लिये भी बोध गम्य है। इनके प्रत्येक छंद का रस परिपाक एवं भावों की मधुर व्यंजना पाठक को रस में निमग्न किये बिना नहीं रहती। उदाहरण देखिये:—

(अलंकार मंजरी से)

वस्तु उत्प्रेक्षा उदाहरण (दोहा)

लाल बाल के भाल पर, मृग मद करत बिलास।
सुधा लैन आयौ सनी, मनौं सुधानिधि पास॥

हेतूत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

जहाँ भावना और की, और बिसै युत हेत ।
'हेतुत्प्रेच्छा' तहाँ कवि, रसिकन कूँ सुख देत ।।

उदाहरण (सवैया)

कै लागी ग्रीसम की इन्हैं घाम ही, कै अलि काम की ज्वाल दहे हैं ।
कै रँगरेज मजीठ रँगे पग, कै मधु के मद छाकि रहे हैं ।।
'राम' कहै कि गुलाल भरे किन, कै छिन काहू पै छोह छए हैं ।
ए नँदलाल के संग जगे ते, बिभौ सजनी दृग लाल भए हैं ।।

फल उत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

फल लैबे के भाव सूं, तर्क करै जिहि ठौर ।
तहाँ 'फलसु उत्प्रेच्छा', बरनैं रसिक बहौर ।।

उदाहरण (दोहा)

तब नैनन की सहस दृग, होत हेतु मृग माल ।
बिधि पेखत देखत मही; निस दिन फिरैं बिहाल ।।

प्रथम तुल्य योगिता लक्षणम् (दोहा)

हित अनहित यह एक में, जहाँ लखाई होय ।
'तुल्य योग' में प्रथम कौ, भेद जानिये सोय ।।

उदहरण (दोहा)

ब्रजपति नृप बलवंत कौ, चहुँ दिसि जस यह हाल ।
अरि गुनियन कूं उमगि कैं, देत सदा ब्रह साल ।।

भरतपुर वर्णन (कवित्त)

पुर चहुँ ओर घोर सोर कर नाचें मोर,
कोइल कुहू कुहू कैं लागत सुहाई है ।
कदली कदंब निंब, अंबु जंबु तरु बर,
तिनपै लबंग लता 'राम' छबि छाई है ।
हाट–हाट द्वार घर–बार बाट बीथिन में,
गुंजत सुकुंज अलि पुंज समुदाई है ।
नृपति ब्रजेस के निकेत बसिबे के हेत,
संग झख-केतु के बसंत बन आई है ।।

असि वर्णन (कवित्त)

झूम झूम झमकि दमकि कैं चमकि जात,
झरि झरि परत झपट झर ज्वाल की ।
संभु की लटासी फेरि बिज्जुल छटा सी बनी
अरिन कटासी कूं घटा सी यहै ब्याल की ।

नृप कर बासी वह दासी है महेस हू की,
दुति चपला सी है छलासी बिस छाल की।
असि ब्रजराज की कहत द्विज 'राम लाल',
पावक छलासी है कला सी किधौं काल सी.॥

गण जाति—भुजंग प्रयात

मगन्नं यगन्नं रगन्नं पिछानौं।
कहै 'राम' तीन्यौ मही देव जानौं।
जगन्नं नृपं बैस्य जानौं भगन्नं,
सु सून्द्र तमन्नं सगन्नं तगन्नं॥

चम्पक माला लक्षणम्

यौं कवि चारों पाद मिलावै
भामस तीनों जोरि बनावै।
सो फिरि, अन्ता में गुरु दीजै,
चम्पक माला छन्द हि कीजै॥

उदाहरण

श्री हर देवा जो गिरिधारौ,
है अब पूरौ है रख बारौ।
श्री बलवन्ता की अब बारी,
बेगहि रक्षा राखि मुरारी॥

गजेन्द्र गति छन्द

दै भगणाँ मुनि याद सबै कवि या बिधि चर्ण सुधार धरौरे।
यों दस तेरह ठानि बिराम फिरों गुरु दो लख अंत करौरे॥
या बिधिसों बृत में तुक चारि बिचारि संभारि निहार भरौरे।
'राम' कहैं यह छन्द सुनाय 'गजेन्द्र गती' फनभत्त बरौरे॥

उदहरण

मोरन के सुनि सोर अली अब होत दरार हिये बिच मेरे।
एक जरों बिरहागिन सों फिर चातक पीव पुकारि कैं टेरे।
लै दल साथ अरी बदरा यह मो अंगना नित आय के घेरे।
श्री ब्रजराज मिलाय दै आज परौसिन पाँय परौं अब तेरे॥

मधुभार छन्द

कल अष्ट राखि जा अंत भासि।
इम पद ठानि, मधुभार जानि॥

उदाहरण

यह दीनबन्धु लावण्य सिन्धु ।
केसो खरारि, राधा मुरारि ।।

हितामृत लतिका (छप्पय)

राजत इक रद बदन मदन आभा सौ धर सत ।
बदन चंद मद कदन करत जन हित बन बरसत ।
पदन चलत हर सदन अदन हित मचलत रोई ।
जदन गदन कुल रुदन होत यह बात न गोई ।
वह सोइ गवरी नंद जग बेद 'राम' उर घर करहु ।
हुइ चंदन सीतल फंद भव त्रिविध ताप कहुं परिहरहु ।।

दोहा

गंगा फेन सुलेख इव, राजत ससि जिहँ सीस ।
सो कृपालु अनुकूल हौं, मो पै सिव जगदीस ।।
पाटिलपुर हरि-सस्त्र नृप तिह कृत हित उपदेस ।
बाचा परम बिचित्र जहं नीति अनेक नरेस ।।
तिहि के मत अनुसार मैं, नृप ब्रजेस के हेतु ।
'हित अमृत लतिका' करूं, सुमरि उमा वृसकेतु ।।

छप्पय

देवपगा के तीर वसै पाटिल पुर सुन्दर ।
तासु सुदर्शन नृपति रूप बल विद्या मंदिर ।
पालत नित प्रति प्रजा तनय सम भाव न आना ।
हित वर्षा वर करत भरत जग इन्द्र समाना ।
सो नृप इक दिन फिरत महि, अनायास श्रुत पंथ हुय ।
अति विमल अमल मुनि वाक तें, सुनत भयौ अश्लोक दुय ।।

त्रोटक छन्द

रिषि ने इमि सुन्दर बैन भने । चित दै नृप बारहिं बार सुने ।।
सुनि कै हठि भूप गयौ घर में । सुत मंद बिलोकि दह्यौ उर में ।।
मुनियों महिपाल सलाहकरी । सुत पंडित तासु न धर्म धुरी ।।
जिहि कौ जग जीवन जानि वृथा । जिमि लोचन अंधन भार वृथा ।।

स्रग्विनी

मैं जहां जाय कें हाल देख्यौ वही ।
है के हर्म में बाल बैठी सही ।।
किन्नरी नागिनी ताहि सेवे खड़ी ।
चित्रिणी है मनौं चित्र ही में गड़ी ।।

देखि कें दूर तें मोहि बोली भली ।
दूतका तें कही याहि लाओ अली ॥
तासु के पास मो लैय दूती गई ।
देखि कें मोहि ताज़ीम तानें दई ॥

छन्द शंका

सुक सारिका अरु देस सहज सुभाव की ।
मत राजनीति विचारि पर इनकौ न उचित नरेस ॥
अति मृदुल तैं निज हाथ की विधिहू न राखी जाय ।
तातैं कहौ कब कवन विधि करि देस कौं सरसाय ॥
अति अधर्मी अति धर्म रति अति आलसी कुल हीन ।
अति काम वस मति थिर न जाकी सो नृपाल मलीन ॥
तू तुच्छ मैंढ़क कूप कौ इक हंस ही कौं जान ।
इह हेतु हम ते कहत उह के विविध चरित बखानि ॥
बड़ वृक्ष कौं जग सेइयै फल विमल छाया हेतु ।
फल-हीन होय तउ सुछाया सकल श्रम हरि लेतु ॥
बड़ होयं बड़ के आसरे लहि हीन संग होइ हीन ।
जिमि मुकुर में गजराज उन्नत लगत लघु अति हीन ॥
डरि जात सब भय एक सँग ही जानि समरथ राव ।
जिमि भये निर्भय-प्रवल भय तें ससक चंद प्रभाव ॥

दोहा

तब मैं तिनतें यह कही, कैसे यह इतिहास ।
कहन लगे मोते तबै, ह्वै प्रसन्न सुखरास ॥

(नख शिख)

ब्रजपति नृप बलवंत कूं, परम रसिक पहिचान ।
रस शृंगार वर्णन करौं, गनपति गुरु उर आनि ।
सो शृंगार तरुनी विषै, बरनत बढ़त उमंग ।
ताते अब कहि हों सकल, शिख तें नख लों अंग ॥

कपोल कौतिल (सवैया)

कै अलि पदम में आय पर्यौ ढुरि, कैधों भर्यौं विष हेम कौ बासन ।
कै घनश्याम कौ 'राम' कहै प्रतिबिंब दिखावत सौतनि गासन ।
कै चतुरानन चारु चितेरे की, लेखनी कौ लिखना लग्यौ भ्यासन ।
गोल कपोल पै नाहिं तिया तिल, राहु ठयौ ससि कौ करि आसन ।

विजय सुधानिधि

छप्पय

मुख प्रसांस ससि मोर पक्ष्य अवतंस परम प्रिय ।
चारु चरण कौस्तुभ उदार उरवर सोभित श्रिय ।
गोपिन के दृग कमल काम समुचित अर्चित तनु ।
गोप गउन के मध्य बसत जनु लसत कुसुम धनु ।
गावत बजात सुख वेणु सुर-सप्त सरस संगीत लय ।
अबतार उदार अपार छवि जयति जयति श्री कृष्ण जय ॥

दोहा

नारायन नर वर वहुर वाणी व्यास मनाय ।
रच्चौ ग्रन्थ भाषा अवै ब्रजपति आयसु पाय ॥

छंद प्रमाणिका

सुभीम फेरि खेत में। भयौ जुझार खेत में॥
गदा मुदा कुछावरे। कही तुसल्य आबरे॥
तबै संभार सूरमा। सुसस्त्र धारि ऊरमा॥
बजाय बाजने भले। जु पंडु सैन में मिले॥
किते अरी गिरे रुधे। किते जु सस्त्र से बिधें॥
तुमार पुत्र आद दै। लरैं उदार नाद दै॥
चढ़े तुमार घोर सों। उतैहु पंडु जोर सौं॥
सुधार सस्त्र जे लए। जुझार सामही भये॥
तुमार पुत्र नैं मषे। जु पंडु आवते लषे॥
सुफाँस हाथ में लई। जु फेंक तान कैं दई॥
विदीर्ण बर्म है वही। सुरथ्थ तें पर्‌यौ मही॥

छंद त्रोटक

यह आवत अर्जुन है इतमें। मम त्रास कछू न गहै चित में॥
हमरौ दल रूंधत आत सबै। तहं लै चल रथ्थ जुझार अबै॥
मत उल्लंघन कै पथ्थ तथा। निज बारिधि ज्यों मरजाद जथा॥
रज ब्योम चढ़ी सुन सैन घनी। लखि केहरि नाद संवाद सुनी॥
तब कोप कर नृप साल्य ने बरसे अपरिमित वान ।
चहुं ओर तें दल रुक्यौ दमकत भानु किरन समान॥
सर देख वहु भागे महीपति पंडु दल के भीरु ।
लखि कर्म ताकौ मत्स औ पंचाल भये अधीरु॥

तट वासी वर्णन

छाँड़ि कैं सुराज साज साजि अब धूतन कौ,
पूतन कौ नेह गेह त्रास जग सोक की।
'राम' इह भाँति नर नाथन की पाँति बहु,
जहँ तहँ भाँति तीरग हैं सुधा घोक की।
पीबत अघाय न्हाय धाय देव-सरिता में,
दुरिता नसाबें ते दिखाबें गति तोक की।
कूदत फिरैं धरैं बिघनन के माथे पांब,
गंगा तट बासी करें हांसी सुरलोक की॥

सवैया

मातु ! तज्यौ पन पापन घात कौ बात यहै जग लोग धरैंगो।
इन्द्र बिरंचहु के पुर में हरि के घर में अति सोर परैंगो।
तो मुख नेंक उदास भये जन 'राम' निरास ह्वै रोय मरैंगो।
मा निरधार उधारि हौ जो न तो या कलि कौन प्रतीत करैंगो॥

या छिन सोक बिडारन कों सुरलोक सौं संभु जटान में आवत।
'राम' कहै जग दीनन के हित मीन चढ़ी सिब सीस सों धावत।
नारद सारद सेसहु ते जस जानत नाहि सक्यौं करि गावत।
अंब ! स्वरूप तुम्हारौ यहै निरलोभन के उर लोभ बढ़ाबत॥

बायु सखा सुत बंधु कौ बाहन ता अरि जीबन की सुख दैनी।
ना सिर राजत तासु भयंकर जासु प्रिया जग आनँद सैनी।
जा पितु के सुत के सुत कौ सुत तासिर मंडन ताक नसैनी।
श्री बलबंत के सीस सदा बसै 'राम' कहै सोइ मातु त्रिवैनी॥

विरह-पचीसी

उद्धव गोपी संवाद (दोहा)

मैं अनेक कविता रची, पचि पचि मति अनुसार।
उत्तम मध्यम बा अधम, नृपन कही इक बार॥
तब मो मन चिंता बढ़ी, पढ़ी कविन के पास।
पढ़ तिनने मो सन कहीं, तब बानी रस रास॥
तू पै कछु जाने नहीं, नृप के उर की बात।
रीझत है बलबंत श्री, सुनत बिरह की घात॥

या ते तू अब बिरह रच, प्रिय हमार मत मान।
हरि हैं तोर दरिद्र सुनि, ब्रजपति भूप निदान॥
सुनि कविराजन के बचन, मो कहँ भयौ अनंद।
बिरह पचीसी यह रची, अंकित सुगुन गुबिंद॥

कवित्त

स्याम के सखा कूं आयौ जानि द्विज 'राम' कहै,
धाम धाम पास इमि बचन सुनाय कैं।
जब ते गये हैं ब्रज छाँडि ब्रजराज पुरी,
तब ते दई है आज खबर पठाय कैं।
मात ते छिपाय ताय लाय जमुना के तीर,
मंगल गाय बीर सुबुध बुलाय कैं।
कितियाँ न जाओ लाल बतियाँ लिखी हैं कहा,
छतियाँ जुडाओ यह पतियाँ बचाय कैं॥

इन्द्र हू के धाम कौं सुकाम, अभिराम 'राम',
पाँव हू धरै ना मग ज्ञान तजि भाजैंगी।
तन तजि दै हैं तऊ न जैहैं ब्रज छाँडि कहूं,
ह्वै कै रज रूप अंग स्याम के बिराजैंगी।
हमरी तुचा की ऊधौ दुंदुभी मढ़ाये हू पै,
भू पै जान सूधौ पाथ, प्रेम ही कौ छाजैंगी।
लाजैंगी न मान सुर साजैंगी न आन कछू,
गाजैंगी निदान कान्ह कान्ह कहि बाजैंगी॥

सवैया

जाय कैं दै सिखि औसधि ऊधौ जु बा कुबजाय जबै निधि पाओ।
स्याम सबै ब्रज के अभिराम हैं काम कहाय हा जोग जताओ॥
जानें जू जान रहौ चुप के कब के तुम ज्ञान निधान कहाओ।
क्रूर हमैं अकरूर जराय गयो तुम तापर अब नौंन लगाओ॥

कवित्त

जान परी राबरी अनौखी रीति 'राम द्विज',
ऐसे घन स्याम गरबाये पाय राजकूं।
भौ मन तुम्हारौ यह हौ मन हमारे गात,
बिरह हुतासन सुबासन समाज कूं।

याही ते बिहारी नव मंगल कारी भये,
भारी भारी विपति बिड़ारी दिन आज कूँ।
अहो ब्रजराज ! तुम मारन चहौ जो हमें,
धारन कियौ हौ गिरिराज किहि काज कूँ॥

सवैया

भोग लिखे कुबजा तनकूं ब्रजबासी वियोगहि कूं सिरज़ाये।
'राम' कहैं ते बिथा टरि है मरि हैं जो वृथा करि हैं पछिताये।
या जग में हुए नेही घने धरि देही लहे बपु पूरब दाये।
लाल कूं दोस कहा अब ऊधव भाल के अंक मिटें न मिटाये॥

अब कूबरी दूबरी के तजि पाय कू गोपिका नाथ कहाइये जू।
सुख पाइये तौलों निवास करो फिर जाइये 'राम' दुहाइये जू।
मन भाई जो प्यारे करी सगरी कछु नेह कौ नातौ निभाइयें जू।
जिन लाइये बेर तिया डरते ब्रजराज पिया ब्रज आइये जू॥

कोकनद लौकसी अलीक उपमान करैं,
दिपत महल महा कंचन के खंभा हैं।
जात गड़ पायन बिछौना मखमल के जु,
सूलन गिबत बन फिरंत अचंभा हैं।
कहै 'कवि राम' बलबंत भूप तेरी धाक,
धीर ना धरत अरि-दारा दुति दंभा हैं।
रति जानी काम काम मोहिनी मुनिंद जानी,
इंदु जानी रोहिनी सुरिंद जानी रंभा हैं॥

५९—रसरासि:-ये महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कवि-काल सम्वत् १८८० से १६०० वि. तक माना जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है, किन्तु फुटकर कवित अवश्य मिलते हैं। रसरासि अपने समय के एक प्रतिष्ठित कवि थे। महाकवि रामलाल आपका गुरुवत् आदर करते थे। इन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप कविवर रामलाल नें महाराज बलवन्तसिंह के लिये 'वि... पचीसी' नामक ग्रन्थ लिखा था। इनकी कविता अत्यन्त सरस, सरल प्रभावोत्पादक एवं मर्मस्पर्शनी है। ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवि सूरदास की सी विरह वेदना आपकी कविता में परिलक्षित होती है। इनकी कविता के उदाहरण देखियेः—

कवित्त

अब कहां पाइये उपाइ न उपाइये हू,
वह 'रसरासि' केलि बैंन कौ बजायबौ।
चातुरी चलाइबौ न बोले हू बुलाइबौ जू,
सालत हिये में बाकौ मनहु मथायबौ।
रूप दरसानि चौंप चाप रस सरन अति,
मन की हरन चटकीली चाल आयबौ।
काहू सों जताइबो न वेदन बतायबौरी,
रहस्यो तन तायबौ कि मन पछतायबौ॥

दस ही दिना कौ भयौ नयौ जसधारी जिन,
मारि डारी नारी, ऐसौ निठुर निहार्‌यौ है।
वच्छ मार्‌यौ बकी मार्‌यौ अजगर हू मार डार्‌यौ,
हय हू कौं मारि खरहू कौं मारि डार्‌यौ है।
मन माहिं भूल्लौ फूल्यौ फल्यौ 'रसरासि' यहाँ,
ऐतो कृत कीनौं सो तो सबन बिसार्‌यो है।
मामा मारवे को पाप मुकुट उतारवे कों,
कूबरी त्रिवेनी तामें तन कों पखार्‌यो है॥

सवैया

जिनके रट देखन ही की सदाँ, अस चेरी भई उन पाइन की।
निरमोही तिन्हें तरसावत क्यों, जिनके चलैं नाहिं चवाइन की।
'रस रासि' हमें पहिचानों कहा, तुम जानत हौ गति गाइन की।
इसमें रस रीत रसाइन की, सु करी तुम नीत कसाइन की॥

६०—नथुआसिंह:—ये कुम्हेर के निवासी और जाति के अग्रवाल वैश्य थे। आप महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए थे। इनके फुटकर छन्द पाये जाते हैं। इनका कविता-काल संवत् १८८० वि० से सम्वंत् १९०० वि० तक पाया जाता है। आपकी कतिपय रचनायें उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाती हैं:—

दोहा

भादों बदी रोहिनी, आठें औ बुधवार।
अर्द्ध रैन बरसा समैं, लियौ कृष्ण औतार॥

कवित्त

आदर जनायौ पितु मातु कूं सुहायौ दिव्य,
देह दरसायौ दौर आनंद अपार हैं।

भादों की अंध्यारी तिथि अष्टमी बिचारी,
सुख सुन्दरता भारी बुध रोहनी उदार हैं।
ताही समैं सारे रखवारे हरकारे भारे,
सोये सुख पाय खुले तारे औ किवार हैं।
जै जै विरजेश धार दुंदुभी धकारें देव,
धन्य धन्य आज कृष्ण लीनौं अवतार है॥

तीन लोक ध्यावैं ताहिं पालने झुलावै रानी,
माखन खवावै पय प्यावै महा मोद में।
चुकर चुकर घूंट लेत घुटुअन चलै,
पल पल निहार अति आनंद बिनोद में।
देखवे कूं आई सब महलन लुगाई धाईं,
गावत बधाये हिय पागे महा मोद में।
बालक बतामें नाम परमेसुर दिखामें,
जग जाकी गोद में सो जसुधा की गोद में॥

६१—भोलानाथ:—ये जाति के कायस्थ और महाराजा बलवन्तसिंह समय में प्रसिद्ध दीवान थे। कविता में ये अपना उपनाम 'शंकर शरण' रखते। इन्होंने शिवपुराण का भाषानुवाद किया है। इनका कविता-काल सम्वत् सम्वत् १६०० वि है। इनकी कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है:—

हिंड़ोला गौरी झूलत पिय के संग।
सब सखियां मिलि झोटा देतीं, उड़ रही तान तरंग॥
लिपट रहे झूला में दोनों मानो एकहि अंग।
'शंकर शरण' पिया छवि निरखत, बरस रह्यौ है रंग॥

६२—ललिता प्रसाद:—ये महाराज बलवन्तसिंह के समय में दीवान और कविता में अपना उपनाम 'रामशरण' लिखते थे। इनका लिखा हुआ ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हो सका है, केवल फुटकर पद मिलते हैं। इनका कविता-काल सम्वत् १८८० से १८६० वि० ठहरता है। उदाहरण देखिये:—

देखो आज नंदलाल।
पहिरें फूलन की माल।
संग लिए गोपी ग्वाल।
यमुना तट बिहारी॥ १॥

सीस मुकट अतिहिं छाजै ।
अधरन पर मुरली राजै ।
मंद मंद मधुर बाजै ।
कुण्डल छवि न्यारी ॥ २ ॥
लोल गोल मृदु कपोल ।
अलक कुटिल रही डोल ।
भानु थाल कर किलोल ।
अखियां रतनारीं ॥ ३ ॥
निरख निरख लाजै काम ।
बसत मन में आठों याम ।
'रामशरण' त्यारौ श्याम ।
ब्रजपति गिरधारी ॥ ४ ॥

६३—बिहारीः—इनका पूरा नाम श्री महन्त बिहारीदास था। ये संत कवि भरतपुर दुर्ग स्थित बिहारीजी के मंदिर में महन्त थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८८० से सम्वत् १६०० वि० ठहरता है। इन्होंने भक्ति में विह्वल होकर अनेक राग-रागनियों में भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर एवं सरस पदों में वर्णन किया है। आपकी भाषा अत्यन्त सरल और चलती हुई है। इनकी रचनाओं में भरतपुरी भाषा की छाप स्पष्ट रूप से परलक्षित है। उदाहरण देखिये:—

राग काफी

आज नाचै री नन्द कौ मटकि मटकि ।
मेरौ जियरा हर्यौ यानें लटकि लटकि ॥
लंट पट पाग मूरति जाकी चटपट ।
गारी गावै मुख चटकि चटकि ॥
चटपटी बाल कहै मुख झट पट ।
रोकीं नारि यानें लटकि लटकि ॥
आज नाचै री०

अब मोइ नीकौ लागै बाल मुकन्दा ।
घुटुअन चाल बाल घुंघरारे चितवनि आनन्द कंदा ॥
खेलत ख्याल हँसत किलकत जसुमति गोद गुबिंदा ।
कठुला किंकिन कंकन नूपुर पग पैजनि गति छन्दा ॥
झगुली पीत स्याम तन सुन्दर छवि मंदिर ब्रज चन्दा ।
लोलिक करन बुलाक नाक में दंतुली दुति मन फन्दा ॥

सुमिरत सेस महेस सबै मति धरत ध्यान मुनि बृन्दा ।
'ब्रज दूलह' चिन्तामनि स्वामी कृपा करौ नंद नन्दा ॥

६४—बलदेवः—ये जाति के खण्डेलबाल वैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनके गुरु का नाम उद्दाम मिश्र था। इनका कविता-काल सं० १८७० वि० से १९०३ बि० तक है। पता चला है कि ये सरकारी नमक के महकंमे में पेशकार थे। इनके दो ग्रन्थ देखने में आये हैं:—(१) विचित्र रामायण और (२) गंगा लहरी।

विचित्र रामायण हनुमान नाटक का एक सुन्दर अनुवाद है। इनकी कविता हृदय स्पर्शी, सरस एवम् प्रसाद गुण युक्त है। थोड़े से उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

पूरन मयंक के समान स्वेत अंग ज्योति,
उज्ज्वल सुधा से स्वेत अमर उदाम हैं।
पंकज कतार स्वेत आसन उदार जाके,
बाहन मराल पै बिराजें सुख धाम हैं।
पुस्तक धारें कर बेदन उचारें मुख,
सारें काज जन के सकल गुण ग्राम हैं।
बीना बजावै सब सुख संरसावै बहु,
ताही सारदा के पद-कमल प्रनाम हैं॥

भरतपुर दुर्ग बर्णन (छप्पय)

दुर्घट दुर्गन माँहि दुर्ग इक दिपत अबनि पर।
बिदित भरतपुर नाम तासु महिमा उदार बर।
उन्नत बुरज अपार चारु बिधु मंडल परसत।
चहुँ दिसि नहरं गंभीर नीर निरमल जहँ दरसत।
बहु कुसुमित बन उपबन सघन, बिबिध पबन संचरत जहँ।
उनमत्त अमल आमोद बस मधुप बृन्द गुंजरत जहँ॥

गंगा लहरी (कवित्त)

ह्वै कै निसंक लंक हूंक ते जराई जानें,
जंघन के जोर हीते जल निधि नाख्यौ है।
मारि मारि राक्षस बिदार बन राबन कौ,
अच्छहि सँहार फल अमीरस चाख्यौ है।
आनी है बिसल्या जानें राखे प्रान लक्खन् के,
लंकपुर जाके संक भ्रम अभिलाख्यौ है।

ऐसे हनुमन्त जू को काटें ताहि दंतन सों,
राक्षसिन ऐसौ एक चित्र लिख राख्यौ है ।।

तेरे आसरे के बल पाय कै विसाल गंग,
बढ़्यौ गर्ब जाके सो मैं तोसों कहत सब ।
याही ते बृन्दारक बृन्दन की अवज्ञा करी,
काहू की न अवलगि मानी कछु दाह दव ।
जो पै कहूँ या समैं उदारता गहौगी नाहि,
तो मैं निराधार नहि दूसरों अधार अब ।
मुख विल खाय दुति दीनता दिखाय कहों,
कौन के अगारी जाय रुदन करुँगो अब ।।

६५—नवीन—इनका पूरा नाम गोपालसिंह था किन्तु 'नवीन' उपनाम से अधिक विख्यात् थे। ये महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८८० से १९४० बि० तक माना गया है। इनके जो ग्रन्थ देखने में आये हैं उनसे पता चलता है ये उच्च कोटि के अनुभवी कवि थे।

'नवीन' जयपुर निवासी 'ईस' कवि के पट्ट शिष्य थे। उन्हीं के द्वारा इन्हें 'नवीन' उपनाम मिला था जिसके सम्बन्ध में उन्होंने इस प्रकार लिखा है:—

जानत हौ नहिं जोरन अंक, हुती चित की बृति मूढ़ता भीनी ।
सो निज देख कें दास दयाल, बनावत जोग हरें हरें कीनी ।
ताहू पै नाम धराये के सोचन, नाम धर्‍यो तब यों सुधि लीनी ।
श्री गुरु ईस प्रबीन कृपा करि, दीन कों छाप 'नवीन' की दीनी ।।

उपरोक्त पद्य से स्पष्ट हो जाता है कि आपका 'नवीन' उपनाम कल्पित न होकर गुरु प्रदत्त है। ये भरतपुर के निबासी थे। अब कत आपके निम्नलिखित चार ग्रन्थों का पता लगा है। (१) प्रबोध रस सुधा सागर (२) नेह निदान (३) रंग तरंग (४) सरस रस

प्राप्त ग्रन्थों में 'प्रवोध रस सुधा सागर' कवि की उत्कृष्ट रचना है। इसे कवि ने छः तरंगों में बिभाजित किया है। काव्य के बिभिन्न अंगों की सरस एवम् विशद व्याख्या करना इनकी बिशेषता है। इस ग्रन्थ में एक महान् विशेपता यह है कि कवि ने एक विषय को लेकर पहले अन्य कवियों की कविताएँ दी हैं और फिर उसी विषय पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की हैं। इससे एक तो अन्य कवियों की विषय पर कविताएं एक स्थल पर मिल जाती हैं और दूसरे भिन्न भिन्न प्रकार से एक ही विषय पर वर्णन और विचारधारा का तुलनात्मक

अध्ययन हो जाता है। आपकी सुमधुर कविताओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

प्रबोध रस सुधा-सागर

दोहा

जुगल चरन बन्दन करौं, सब देवन समुदाय।
ज्यों हाथी के खोज में, सब के खोज समाय॥
प्रेम मगन विहरें विपिन, राधा नन्दकिसोर।
दोउन के मुख चन्द के, दोउन नैन चकोर॥

नैन वर्णन (कवित्त)

तीखनता ताकिबे की तीर तैं तरल तोरि,
जाती मिल होती जो न नासिका अराबी में।
अजब अजाब अरविन्दन की आभा पर,
झूमन गजब सो न एतिक सराबी में।
मोती की जोती तिल तूल ना प्रबीन तुलै,
तोलत 'नवीन' चख पल को दराबी में।
मीनन के मीन करि भौंरन कौं भौंर देत,
खिज खिज खंजरीट खिचत खराबी में।

झूमत चलत मद घूमत खुमारी नैन,
जातक कलित सोभा ललित सुभाल की।
श्रम के कसाले देखें दरद बढ़त दूनों,
फरद दुसालें में पलट लाये साल की।
राजत 'नवीन' रेख अंजन अधर लर-,
मोतिन की माल की बराबर न माल की।
आनी औ दई सो जात जानी मो निसानीहू की,
दै आये निसानी कै अंगूठी नग लाल की॥

बिरहपुरा के बिरहीन पै सवाल दै दै,
करै इकतरफी भई को जानें ढील है।
कोकिला गवाही भरें प्रेम के मुकदमा में,
दाबा कौ सबूत कर बोलत अपील हैं।
डिगरी संजोगिन की जारी भये फूलें फूल,

गुंज की 'नवीन' कुंज कुंजनि दलील है।
रति-कंत साहब अदालत लसंत ताके,
रोबकार राजत वसंत कौ सो वकील है॥

आंख मिचौनी (कवित्त)

और खेल खेलैं सो तौ खेलि है बबा की सौंह,
कहां लौं सखीन उपहासन कों पेलौंगी।
कौतुक 'नवींन' बीन लावै तू सुजान नित,
मसकै भुजान कंध सो न अब झेलौंगी।
छतियाँ छुवावें पीठ ठोड़ी दै गुदी में नीठ,
छोड़न कहै ढीठ कैसें बर हेलौंगी।
जांघन में दैकें कटि भीचनों बरौ दैय्या,
तो संग कन्हैया आंख मिचौंनी न खेलौंगी॥

सवैया

नन्द बबा कै बबा के सुकृत्य सौं आछौ सपूत भयौ जसुधा कैं।
रार की गार की हार की प्यार की नेंकहु लाज नहीं सखि याकैं।
ठौर कुठौर ठठोलिन बोलिन बोलि 'नबीन' छली छबि छाकैं।
या खन लौं न मिलै बस कौ यह माखन से अंग चीर कैं ताकैं॥

६६—बटुकनाथ:—ये कवि जाति के गौड ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम रिषीराम था। आप संस्कृत और हिन्दी दोनों के अच्छे विद्वान् थे। आपका लिखा हुआ केवल एक ग्रन्थ "रास-पंचाध्यायी' देखने में आया है, जो इन्होंने संवत् १८९६ वि० में लिखा है। शैली सरस एवं सुन्दर है। इनकी कविता से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं:—

छप्पय

गनपति गुरु गोबिन्द, गिरा गिरजा गंगाधर।
गिर गंगा गोपाल, गोप पति गोपति गिरधर।
ब्यास बिबुध बिबुधेश, और बुध विद्या भाजन।
सती सून सनकादिक, सुखद सुक.सेस सनातन।
रसिक और इन आदि मग, परम भागवत जे धरन।
तिनकी पद रज बन्द हों, बिमल अंक भाषा करन॥

दोहा

अमरपुरी अमरी भरी, कबरी भ्रमरी भीर।
मुखरी कृत पद-कंज महि, बंदौं सुबन अहीर॥

जहाँ परम उज्ज्वल सीप सज्जल जनित मुक्ता माल हैं।
चहुं तीर सारस सारिका, सुक केकि कूंक मराल है॥
वर चक्रवाक चकोर चातक, कोकिला कल कूल है।
रसपुंज खंजन मंजु कुसमित भृंग गुंज समूल है॥
अस बसनि दिसि ता तीर की वन ईस वृन्दा बिपिन है।
अति सघन जोंजन पंच, अर्चित जुगल संजुति धरनि है॥
तहां ललित लूम लबंग लतिका. परस सरसत बात है।
अति चारु चंदन तरुन जातर. नीर चरचित गात है॥

६७—पद्म :—इनका निवास स्थान भरतपुर में वुद्ध की हाट था। पद्म कवि महाराज बलबन्तसिंह के दरबारी कवियों में से थे। इनके कुछ फुटकर छन्द पाये जाते हैं, किन्तु साधारण श्रेणी के हैं। इनका कविता-काल सं० १८८० से सम्बत् १९०० वि० तक ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत हैः—

कवित्त

कैसौ खूब आनँद भयौ है रामचन्द्र कैसौ,
कृष्ण कैसे उत्सव कौ महा सुख लह्यौ है।
करन की सी कीरति और बलि की सी यज्ञ करी,
इन्द्र कौ सौ नृत्य सो तुम्हारें नित्य रह्यौ है।
राजा बादशाह अंग्रेजहू सराहें सब,
'पद्म कवि' आपकौ ही जोर अस कह्यौ है।
भूप व्रज इन्द्र महाराज बलबन्तसिंह,
सुजस बधाई कौ समुद्र पार भयौ है॥

सारंग धनुष धारि सुदर्शन चक्र धारि,
कौमोदक गदा धार दुखै दरिबौ करें।
नंदक खड़गधार पाँचजन्य संख धारि,
'पद्म' धरि संपत समृद्धि भरिबौ करें।
और हू अनेक आयुधन की सु-अज्ञाकर,
भूतल तै सत्रु के समूह हरिबौ करें।
माजी श्री अमृतकौर भूप बलबंत जू की,
सदा राम रामानुज रक्षा करिबौ करें॥

६८—गोपालसिंह:—यह महाराज बलवन्तसिंह की रानी राजकुंवरि के

वांन थे। इन्हीं महारानी के लिए इन्होंने पद्मपुराणान्तर्गत 'कार्तिक महात्म्य' के कुछ अध्यायों का अनुवाद किया था। शेष अध्यायों का अनुवाद चौबे जीवाराम के पुत्र नरसिंह (नरहरि) ने किया है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

दोहा

गिरिजा तब मन क्रोध कर, देत भईं यों साप ।
ता कारण सब देव गण, वृक्ष भये किल आप ॥

तव ताहि ते अस्वत्थ वट हरि सँभु वृक्ष भये सही ।
तुम सुनो सकल मुनीस हाँ तब सूत रिषि ने यों कही ॥
पुनि अर्क दिन के माँहि पीपर को सु-पर्सन कीजिये ।
भद्रा सनीचर बार कूं कवहूँ न ताकौ छीजिये ॥

सवैया

कृष्णहि ते उत्पत्ति भयौ, बड़ मंगल कारक पाप को हारी ।
भक्ति समेत कहैं रु सुनैं, मन बाँछित पावत ते नर नारी ॥
पापनि ते छुटिकें युत पित्रन, अर्क विमान है बैठि सुखारी ।
जात चले हरि लोकहिं को, तिनकी कवि कीरति गावत भारी ॥

श्री ब्रजपति बलवन्त बहादुर, तिनको सुजस सुहायौ ।
राजकुंवरि तिनकी पटरानी, तिन चरनन चित लायौ ॥
तिनकौ ड्योढ़ीबान दास, निज नाम 'गुपाल' कहायौ ।
ताने अपने अग्रज के हित, 'माधव चरित' बनायौ ॥

६६—रामकृष्ण:—ये भरतपुर के रहने वाले तथा महाराजा बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल संवत् १८८० वि० से संवत् १९०० वि० तक पाया जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हुआ है परन्तु कुछ फुटकर कवित्त अवश्य प्राप्त हुए हैं। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

विनती को मान सुन सोर सुन सुर साधुन कौ,
नीकौ अवतार ब्रज माँहि आनि लीन्हों है ।
देबकी समेत बसुदेव पर हेतु बहु,
भक्तन के हेतु ही कृपा कटाक्ष कीन्हौं है ।

गोपी ग्वाल गोप गाय बच्छ प्रति पाले भले,
भूमि कौ उतारौ भार दुष्ट मद छीन्हों है।
सोई 'रामकृष्ण' महाराज बलदेवजू को,
सकल मनोरथ कौ सिद्ध फल दीन्हौं है॥

सदा आय सर्बोपरि सुख के समूहन कों,
श्री जी की कृपा ते बिधिवत बिलस्यौ करौ।
सफल समृद्धि अष्ट सिद्धि नव निद्धि बृद्धि,
सम्पत समेत ते खजाने में लस्यौ करौ।
बिभव सु तेज औ प्रताप त्यों सुजस स्वच्छ,
आगे और आनँद समूह सरस्यौ करौ।
आनँद के कंद 'रामकृष्ण' चंद-कुल-चंद,
श्री ब्रजेन्द्र बलवन्त हिय में बस्यौ करौ॥

७०—धनेश:—ये कवि जाती के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम चन्दराम था। इनके दो बड़े भाई हीरालाल और मुकंद बड़े बिद्वान् एवं कवि बतलाये जाते हैं। धनेश हिन्दी और संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। ये महाराज बलवन्तसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कवि थे। इनका कविता काल सं० १८८० वि० से १९०० वि० तक पाया जाता है। इनकी केवल फुटकर रचनाएं मिलती हैं। उदाहरण देखिए:—

गोबरधन, गिरधरण, धीर धर दु:ख बिमोचन।
नन्दराज युबराज, रुचिर राजीब बिलोचन।
सकट बकी बक कंस केसि अभिमान बिमरदन।
खल भुजंग फल रंग, भूमि निरतन बिध बर्धन।
कंदर्प दर्प दल दलन बर, रास रसिक रस रूप जय।
गोकलेस गोपाल जै, गोपीनाथ जगनाथ जय॥

७१—ब्रजचंद:— ये भरतपुर के निवासी तथा महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इन्होंने कवि-कुल-चूड़ामणि-कालीदास के 'शृंगार-तिलक' का अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद सं० १८९५ वि० में महाराज बलवन्तसिंह के लिये किया था। कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

पंडित कबीन मन देख कवि कालीदास,
ढूंढ़ लाय देख्यौ सब ग्रथन कौ सार है।

तरुनी प्रवीनन के भेद बहु भाँति जान,
फिर प्रगटायौ यहँ सूछम अपार है।
श्रीमंत ब्रजेन्द्र महाराज बलवंतसिंह,
तिनकी कृपा सों लहं रस बिसतार है।
पंकज बरन सम राधिका चरण ध्यायं,
कीन्हौ 'ब्रजचन्द' ग्रन्थ 'तिलकशृंगार' है॥

बाँहें हैं मृणाल दोऊ मुख अरबिन्द बन्यौ,
सुन्दर स्वरूप ही कौ लीला जल लीनौं है।
पुलिन नितम्ब वृन्द नैन हैं नबीन मीन,
खुलें बाल जाल सों सिंबाल परबीनौं है।
भनि 'ब्रजचन्द' त्रिबलीन कीं तरंग उठैं,
उरज उतंगन कों चक्रबाक कीनौं है।
काम बन दीधे तिन तैरन कों तीय तन,
प्रजा के करैया नें तलैया रच दीनौं है॥

७२–सुन्दरलाल:–ये जाति के ब्राह्मण और भूड़ा दरवाजा डीग के निवासी थे। इनके वंशधर अभी भी विद्यमान हैं। इनका कविता-काल सं० १८८० से १९०० वि० माना जाता है। इन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा है, केवल फुटकर कविता ही देखने में आती हैं। उदाहरण के लिये इनका एक पद प्रस्तुत किया जाता है:—

प्यारी लैयो छाक हमारी। टेक
जित मग धेनु धरत पग भूपर सोई बाट हमारी।
माखन मिसरी अरु दधि ब्यंजन संग बृषभान कुमारी।
सुन्दर स्याम चढ़ कदमन ऊपर टेरौ नाम पुकारी॥

७३–नरहरिदास:–इनके पिता का नाम जीवाराम चतुर्वेदी था और ये भरतपुर के निवासी थे। महाराजा बलवन्तसिंह की पटरानी श्री राजकुँवरि के लिये इन्होंने 'कार्तिक-महात्म्य' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इनकी भाषा बहुत ही साधारण है, और शैली में किसी प्रकार का चमत्कार एवम् विशेषता नहीं पाई जाती है। पूर्ववर्ती कवियों की भाँति इन्होंने भी प्रत्येक अध्याय के अन्त में एक छन्द दुहराया है जिसके तीन चरण वही रहते हैं तथा चतुर्थ चरण विषयानुकूल बदलता रहा है। वह छन्द इस प्रकार है:—

श्री ब्रजपति बलवन्त बहादुर, तिनकौ सुजस सुहायौ ।
राजकौर तिनकी पटरानी, तिन चरणन चित नायौ ।
चौबे जीबाराम तनय सुभ, 'नरहरि' नाम कहायौ ।
ताने श्री ब्रजराजकुंवरि हित 'माधवचरित' बनायौ ॥

इनकी कविता के कुछ छन्द उदाहरणार्थ उद्धृत किये जाते हैं:—

छन्द भुजंग प्रयात

रहै देव शर्मा निपुत्री सदाँ कौ,
हुतौ चन्दशर्मा नाम सिष्य ताकौ ।
तवै ताहि तू ब्याह दीनी जु प्यारी,
भयौ ता समै तोहि कों मोद भारी ॥

सोरठा

ताहि पुत्र सम मानि, चन्दर शर्मा शिष्य कों ।
वोहु पिता सम मान, तिन्हैं तहाँ सेवित भयौ ॥

सवैया

यौं तब कृष्ण कहैं सुभ नैम सु पूरव जन्म सुन्यौ हरसानी ।
देखी बिभौ परमेसुर की परनाम करी मन में मुसिकानी ।
तीनहुं लोक अधार प्रभू तिन सौं सतभामा कहैं पटरानी ।
और कथा कहियै हम सों प्रिय यों उचरी मुख सों बर बानी ॥

७४—लाल:—ये जाति के जाट और भरतपुर के निवासी तथा महाराजा बलवन्तसिंह के दरवारी कवि थे। 'लाल' इनका उपनाम है। इनके यथार्थ नाम का अभी तक पता नहीं लग सका है। सम्भवत: इनकी अनेक कृतियाँ हैं किन्तु हमें अभी तक 'लाल ख्याल' नामक रचना ही उपलब्ध हो सकी है। इनकी रचनाओं में विनोदयुक्त हास्य का पुट पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इनकी रचनाओं में सर्वाधिक विशेषता यह पाई जाती है कि लाल अथवा मुनिया शब्द से इनकी कोई भी रचना अछूती नहीं बची है। लाल और मुनिया को माध्यम मान कर कवि भौतिक और आध्यात्मिक तत्वों पर मनोरंजक ढंग से प्रकाश डालता हुआ अपनी प्रतिभा का परिचय देता है।

इनकी भाषा टकसाली है। भाव व्यञ्जना इतनी अनूठी है कि कवि की सराहना करते करते तृप्ति नहीं होती। इनकी सुमधुर रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

एक बनो गधहा एक बैठ गयौ पालकी में,
घोरा बन एक एक जोग अंग लीनौ है ।
एक हाथ पोथी लै बार बार थोथी कहै,
एक देत ताल सुर साजत प्रवीनौ है ।
एक जाति-रीतन की सगरी प्रकासें नीत,
फार डारें कपरा इक और भेस कीनौ है ।
लेतेंई नाम सुख काम के अराम बारे,
देखौ ब्रजराज के भंड़ान ख्याल कीनौ है ॥

वृद्ध बल पाय एक पींजरा बनाय लायौ,
अति ही महीन तुरी नीलम ते ढाली की ।
जोवन के जोर जग जगमगात जेबर सौ,
तामें जोत होत आय लाल ही की लाली की ।
लाली वृषभान की जहान में प्रमान बारी,
कीरति के आंगन में साँचे सम ढाली की ।
सुन्दर सलौनी लौनी ओढ़ तन सारी नील,
अंगन की ओप उरै लालिमा प्रबाली की ॥

पींजरा सुघर तन पाय कें सुहाय रह्यौ,
उछट उछट्टन की छोड़ै नहिं हटरे ।
काम बस पाय अंग मुनिया लुभायौ रूप,
दूजौ नैन संग देख तामसी हों झटरे ।
ग्यान कर ध्यान गहि पाबत परम पद,
तातें भव-ज्वाल माल लागै नहिं लटरे ।
मान कह्यौ मेरौ मैं तौ तोकों समझावत हों,
जाही कौ बनायो जग ताही कौं सु रटरे ॥

७५–श्रीधरः—ये श्री हरदेवजी के मंदिर के महंत थे। इनका पूरा वृत्त ज्ञात नहीं हो सका है। इनके पिता का नाम श्रीराम गोस्वामी था। इनके बंशज अब भी भरतपुर में विद्यमान हैं। इनके लिखे हुए कई ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, किन्तु कहा जाता है कि वे मयाशंकर याज्ञिक के अधिकार में हैं। इनकी रचनाओं में से एक छन्द यहाँ उद्धृत किया जाता है:—

सवैया

भूलि हू नेह कौ नाम न लेहु जू, कोऊ कहूँ हरिदेवहि हेरे ।
सांस निसूकत ही रहिये, निसि वासर प्रेम प्रवीन अनेरे ।
नेंकहु 'श्रीधर' प्रेम बिचित्र, हियौ उरझै निबरैं न निबेरे ।
जे दुख कानन सों सुनते अब, सोई निसान घुरे सिर मेरे ॥

७६—वैद्यनाथ:—ये महाकवि सोमनाथ के बंशज माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। गणेश कवि ने विवाह विनोद में इन्हें महाराजा बलवन्तसिंह का सभा पंडित लिखा है। इन्होंने सम्वत् १८८४ वि० में 'विक्रम पंच दंड कथा' नामक पुस्तक लिखी है। खेद है कि इनका विस्तृत जीवन वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हो सका है। प्राप्त सामिग्री में से कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं:—

भये इकठ्ठे नृप अनेक महमानी कीनी ।
बिबिध भांति बिंजन सुधार रुचि आनन्द भीनी ॥
तिही समय विक्रमादित्य बोले बर बानी ।
रत्नसेन नृप सुनों बात इक अचरज सानी ॥
मोइ ठग्यौ नहिं काहु कहूँ परदेस देस महिं ।
इहाँ तिहारे सहर मांहि मैं ठग्यौ मोह लहिं ॥
बँदोवस्त ऐसौ न चाहिये नृप थानन में ।
वेस्या की सब बात कही सुनि नृप कानन में ॥
रत्नसेन तिहिं वेस्या कों सुहुजूर बुलायौ ।
रत्न डवा अरु दंड साँडिया सहित मँगायौ ॥
और बस्तु भूसन सुबस्त्र सब ही मँगबाये ।
सरंजाम अपने समस्त लैकें अपनाये ॥
पीछे वेस्या को रिसाय करि सजा दिवाई ।
सहर बाहिरै काढ़ि देस में ते निकराई ॥
नृप जैकर्नहिं फेरि सीख दीनी निज घर को ।
करी बहुत सिष्टाई दियौ आनंद तिहि बर को ॥
आय विक्रमादित्य रत्नसेनहि सँग लैकें ।
अरु समस्त निज फौज लिए आनंदित ह्वै कें ॥
सहित कुमरि जयमाल अबन्तीपुरी सिधारे ।
घने बजे बादित्र दुंदुभी परह नगारे ॥

७७—महाराज बलवन्तसिंह:—भरतपुर नरेश महाराज बलवंतसिंह (सम्वत् १८८२ से १९०९ वि०) का शासन-काल हिन्दी प्रेमियों के लिये विशेष रूप से स्मरणीय है। आपके पिता महाराज बलदेवसिंह और माता अमृतकौर दोनों के काव्य-प्रेमी एवं साहित्यानुरागी होने के फल-स्वरूप इनका उच्च कोटि का कवि होना स्वाभाविक ही था। शासन एवं सभी ललित कलाओं के विकास की दृष्टि से बलवंतसिंह का समय भरतपुर का स्वर्णयुग माना जाता है। राज्याश्रय एवं प्रोत्साहन पाकर इनके समय में काव्य कला ने विशेष रूप से प्रगति की। इसी काल में महाकवि रामलाल और कविवर रसानंद आदि जैसे प्रतिभाशाली कवि हुए, जिन्होंने अपने काव्य सौरभ से भरतपुर ही नहीं समस्त हिन्दी संसार को सुरभित कर दिया। यह अत्युक्ति न होगी कि जितने सत्कवि अकेले महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए और जितने सुन्दर २ काव्य इनके आश्रय में लिखे गये, उतने सत्कवि भरतपुर के समस्त नरेशों (महाराज बदनसिंह से लेकर महाराज ब्रजेन्द्रसिंह तक) के समय में नहीं हुए और न इतनी सुन्दर कृतियां ही लिखी गईं। यह गौरव भरतपुर नरेशों में केवल बलवंतसिंह को ही प्राप्त हो सका। भरतपुर निवासी ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल 'मंजुल' ने आपके विषय में ठीक ही कहा है:—

सूरज सूरज उदित बहुरि बलवंत प्रभाकर।
कियौ कला-सर-सलिल जोतिमय परम प्रभाकर।
सोमनाथ, सूदन, ब्रजेश, बिरही रस नायक।
राम, रसानंद, कलित-कमल बिकसे सुखदायक।
सिंगार, बीर, बैराग्य-रज, अरुन पीत सित संचरत।
मधु-पान हेत 'मंजुल' रसिक, अजहु मधुप मृदु गुंजरत॥

बलवंतसिंह स्वयं बड़े सरस कवि थे और भाव पूर्ण कविता करते थे। इन्होंने अपनीं कविताओं में 'हरिनाम' उपनाम का प्रयोग किया है। इनका केवल एक पद्य ही पर्याप्त होगा:—

कटित कटीले कोट बिकट मवासे तेरे,
कुंजर तुरंगन कौ पुंज हू बिलायगौ।
जोर धर्‌यौ जो घर करोरन कौ धन सों तौ,
धरनी में धसक पाताल ठहरायगौ।
ऐसौ समौ न पावै कवि 'हरनाम' कहि,
कृपन कपूत क्रूर पाछे पछितायगौ।
खाय लै खरच लै खेम कुसल सो ही तू तौ,
एक दिना अकेलौ पसारें हाथ जायगौ॥

प्रकरण ४

राम-काल (उत्तरार्द्ध)

महाकवि रसानंद:—ये महाराज बलवंतसिंह के दरवार में उच्च कोटि के कवि थे, जैसा कि कवि ने स्वयं हित कल्पद्रुम में संकेत किया है:—

> ऐसें चित्त बिचारि बुद्धि अनुमान सों।
> रस आनंदहि बुलाय कहिय सनमान सों।
> जिमि ब्रजेन्द्र बलवंतसिंह अज्ञा दई।
> तिमि तुमनें ह्वै कृपा पात्र रचना ठई॥

इन कविवर के लिखे हुए अभी तक निम्न ग्रन्थों का पता लग सका है:—

१—ब्रजेन्द्र-बिलास:—यह ग्रन्थ ८ उल्लासों में समाप्त हुआ है। इसमें कवि ने भरतपुर राज्य के वैभव का विशद वर्णन सरस एवम् सरल भाषा में किया है। अलंकार और पिंगल पर बड़े ही चमत्कार पूर्ण ढ़ंग से प्रकाश डाला है।

२—नख-शिख:—यह ग्रन्थ कवि की अप्रतिम सरस प्रकृति का द्योतक है। इसमें रीति कालीन पद्धति पर कामनियों के समस्त अंगों (नख से शिखा तक) का मधुर एवं अलंकृत भाषा में वर्णन किया गया है। यह हिन्दी साहित्य में अपने ढ़ंग का एक अनूठा ग्रन्थ-रत्न है।

३—गंगाभूतलागमन:—इस ग्रन्थ में बाल्मीकि रामायण के आधार पर गंगा जी का पृथ्वी पर आगमन मनोहारिणी भाषा में वर्णित है।

४—समर-रत्नाकर:—इस ग्रन्थ का नाम कहीं २ पर 'संग्राम-रत्नाकर' भी लिखा है। यह जैमिनी अश्वं मेध का भावानुवाद है।

५—संग्राम-कलाधर:—यह महाभारत के विराट पर्व का अनुवाद है।

६—मौज-प्रकाश:—इसमें श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर ढ़ंग से वर्णन किया गया है।

७—हित-कल्पद्रुम:—यह 'अनवार-सुहेली' (फारसी ग्रन्थ) का हिन्दी भाषा में बड़ा ही सुन्दर अनुवाद है। इस ग्रन्थ की रचना धाऊ गुलाबसिंह की आज्ञानुसार महाराज कुमार जसवंतसिंह के लिये की गई थी, जैसा कि नीचे के पद्य में कवि ने स्वयं लिखा है:—

प्रथम 'समर रतना' कर ग्रन्थ जु विस्तर्यौ ।
जामैं जैमिनि अश्वमेध भाषा कर्यौ ।
रच्यौ द्वितीय 'संग्राम-कलाधर' कों तथा ।
है जामें बैराट पर्व की सब कथा ॥
तीजौ 'मौज-प्रकाश' की जु रचना करी ।
तामें अद्‌भुत रास जु क्रीड़ा बिस्तरी ।
अब ब्रजेन्द्र जसवंतसिंह हित प्रीत सों ।
रचो ग्रन्थ इक न्याय नीति की रीति सों ॥

दोहा

श्री जसवंत ब्रजेन्द्र हित, सोधिनीति की पंथ ।
'रस आनंद' बरनन करत, 'हित-कल्पद्रुम' ग्रन्थ ॥
बाण ब्रह्म निधि ससि हि गुनि, संवत बिक्रम राय ।
अक्षय त्रितिया मास पुनि, माधव गुरु दिन पाय ॥

उक्त ग्रन्थों के अवलोकन से यह भली भांति ज्ञात होता है कि रसानंद केवल कवि ही नहीं वरन् आचार्य भी थे। इनके वर्णनों में कलापक्ष और भावपक्ष का सुन्दर समन्वय पाया जाता है। इनकी भाषा कोमल-कान्त पदावली-युक्त सरल एवं सरस ब्रज भाषा है। भाषा रसानुकूल परिवर्तित होती गई है। युद्धों के वर्णन में ओज का प्राचुर्य वीर गाथा काल का सजीव चित्र उपस्थित कर देता है। आपने भक्ति, शौर्य और शृंगार की परम पावन त्रिवेनी प्रवाहित कर तत्कालीन कवियों में विशिष्ट पद प्राप्त किया था। आपकी रचना के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

हित कल्पद्रुम (छप्पय)

जयति सच्चिदानंद नंद नंदन जग बंदन ।
दुष्ट निकंदन पुष्ट सुजस गावत श्रुति छंदन ।
मुरली अधरन धरें मधुर सुर पूरत हरषत ।
बरसत 'रस आनंद' जुबति जन नित चित आकरषत ।
मुसिकात मंद बतरात में उझलति सुसमा सोहनी ।
ब्रज मंडल मंडन कों प्रगट चेटक है कैं मोहनी ॥

दोहा

काव्य सास्त्र आनंद में, रसिकन के दिन जात ।
मूरिष के दिन नींद में, कलह केलि उतपात ॥

छप्पय

कही काग सुनि हितू कहनि पै चित्त दीजियै ।
अनजाने परदेसी सों नहिं प्रीत कीजियै ।
जाकौ सील सुभाव प्रगट आश्रम नहि जानैं ।
तासों छिप्रहि बुद्धिबान मित्रता न ठानैं ।
घर हू में बास न दीजियै नीति मतें तौ यों कही ।
जो बास देइ तौ मित्र सुनि पावै इमि बिपदा सही ।।

काव्य छन्द लक्षण

प्रथम रसकला बसुकला, पुनि दिसकला प्रमानि ।
इन चौबीस कलान को, काव्य छन्द सुख दानि ।।

उदाहरण

चढ़त प्रबल बलवन्त भूप, जव सहज सिकारहिं ।
खल भल दस दिस परत, डरत अरि धीर न धारहिं ।
धूर पाटि नभ अन्ध-धुन्ध, रवि मण्डल झम्पति ।
भार सहंत नहि सेस, कमठ दिग्गज कम्पति ।।

लक्षणामूलक व्यङ्ग लक्षण

द्विविध लक्षणा मूल है, प्रथम गूढ़ि पहिचान ।
दूजी ब्यंग अगूढ यों, उभय भेद उर आन ।।

उदाहरण (कवित्त)

एरी नित नये दिन कठिन बितैये कैसे,
जैसे ये अनैसे आय स्वांग अरबौ करहिं ।
पापिन कलापिन कुजापिन कुपेंड़ौ हित,
चरचा चलाय ललचीली करबौ करहिं ।
कवि 'रसआनद' बिलोक कमलन-मुख,
पोरबी नैन नीर की नदी सी ढरबौ करहिं ।
ललित लतन थंभ अतन सदंभ कीने,
दंभ भीने भौंर पररंभ भरिबौ करहिं ।।

बाढ़ी छीरनिधि की तरंग सी उमंग भारी,
सरद बिहंग सी पियूस पाराबार सी ।
सतगुन के सार सी सुमुक्त नब हार सी,
बिकसी बहारदार कुमुद कतार सी ।

भन 'रस आनंद' बिमल गंगाधार सी है,
हिम के पहार सी सुखद घनसार सी।
सिंह बलवन्तजू के जस बिस्तार सी यों,
छिटकी है चन्द छटा फटिक पसार सी॥

सवैया

रोस की बात सुनें अति आतुर चातुर आये चले इहि ओर हैं।
त्यों 'रस आनंद' सीस नवाय लगाय रहे पग नन्द-किसोर हैं।
तो हू रही मुख मौने मढ़ी न कढ़ी जु बढ़ी भृकुटी की मरोर हैं।
ऐसे कठोर हिये में बसेते भये तिय तेरे उरोज कठोर हैं॥

बैंदी वर्णन (दोहा)

जगमग भूसण भाल कौं, है सुहाग निधि रूप।
पूरनता श्रृंगार की, बैंदी बरन अनूप॥
जटित जड़ाव सु जगमगत, बैंदी ललित लिलार।
जनु पूरन ससि अंक में, दिनकर करत बिहार।

नैन वर्णन (दोहा)

खंजरीट पंकज कुरँग, चपल तुरँग सर मीन।
लाज सील पानिप भरे, बरनत नैंन प्रवीन॥

तव मुख की सुखमा निरखि, उपमा फिरत खराब।
कंचन अंचन तन हुतत, है गुलाब बे आब॥
मुख सुखमा उपमा दिये, भयौ कलंकी चंद।
कंटक अटकी केतकी, ग्रस्यौ भँवर मकरंद॥

बिष्णु अंग सीतल सलिल, सज उज्जलता बारि।
उठत जु गंग तरंग है, सिब सिब सब्द उचारि॥

छप्पय

सोभित मुकट सिखंड, गंड मंडित अलकावलि।
करत चंद दुतिमन्द, कुन्द निंदक दसनावलि।
कटि सुदेस पट पीत, करन कुण्डल छवि छाजै।
'रस आनंद' दुति पेख, कोटि मनमथ मन लाजै।
अतुलित प्रताप बिक्रम बिदित, सकत न श्रुति स्मृति बरनि।
ब्रज मंडन पूरन अंस जै, अबतारी अबतार मनि॥

७६—देवीदासः—ये जाति के खवास थे और महाकवि रसानंद की सेवा में रहते थे। यद्यपि ये विशेष पढ़े लिखे नहीं थे, किन्तु प्रकाण्ड विद्वान् के संपर्क में आने से इनके हृदय में भी काव्यांकुर उत्पन्न हो गया था। फलस्वरूप इन्होंने 'श्री मद्भगवद्गीता' तथा 'हितोपदेश' का सुन्दर अनुवाद किया तथा राजनीति के अनेक फुटकर छन्द लिखे। हितोपदेश का रचना काल स्वयं ग्रन्थकर्ता ने इस प्रकार लिखा है:—

मेष सुक्ल तिथि सप्तमी, गुरुवासर परिमान।
रुद्र खंड ससि ग्रंक कर, संवत् प्रभव बखान॥

इनकी भाषा में विशेष चमत्कार नहीं पाया जाता और व्याकरण सम्बन्धी भूलें भी यत्र तत्र देखने में आती हैं। इतना होने पर भी वर्णन शैली सरल, रोचक तथा हृदयग्राही है। उदाहरणार्थ इनके कतिपय पद्य नीचे दिये जाते हैं:—

भगवद्गीता (छप्पय)

गवरि तनय बुधि सदन वदन बारन सुर नायक।
प्रणवहु सहित सनेह कंज-पद सब सुख दायक।
भाल इन्दु इक रदन तिमिर कहुं कोटि दिवाकर।
भजत सुरासुर नित्य काय बच लहहि गिरा वर।
लखि प्रसन्न अब देव यहि, अक्षर युक्तिहि दिज्जियै।
इह कठिन अर्थ गीता अगम, छप्पय बंध सुकिज्जियै॥

बारि भरे लखि नैन धनंजय के तब माधव।
कहत भये यों वचन सब्य सांचे तब यादव।
नीच पुरुष कों होय मोह तू पंडित ज्ञानी।
नसै स्वर्ग कौ सुक्ख बढ़ै बहु अजस बखानी।
तोकूं न चाहिये या समै, दुर्बलता छोड़ौ सबै।
उठि समर मंडि ठाड़े जु अरि, बढ़ै लोक कीरति अबै॥

हितोपदेश चौपाई

हिरण्य गर्भ व्हां हंस बिराजा, खगन ताहि कीन्हों निज राजा।
सो वह राज करन व्हाँ लाग्यौ, राज साज के रस में पाग्यौ।
ऐसे भासत बुध जन ताकों, नृप विहीन सुख कहाँ प्रजा कों।
जिमि सागर में मति के भटके, चलत न नाव बिना खेवट के॥
तिमि जग में हूं नृप बिन धर्मा, निवहत नहीं सुगम सुभ कर्मा।
नित नित नृपति प्रजा अधिकाई, चाहै निज पुत्रन की नाँई॥

होय भूप जासूस बिहीनौ, सो करता नैं आधौ कीनौ ।
जा नृप के जासूस सरूपी, हैं न नैंन सों अंध अरूपी ॥

दोहा

सुधर होइ जासूस अति, जा नृप के नित पास ।
सो घर बैठे जगत की, लखैं बिभौ अनयास ॥

सोरठा

इन्हें सास्त्र ते जान, तीरथ आश्रम सुर सदन ।
परत नृपहि पहिचान, गूढ़ बात जासूस तै ॥

फुटकर कवित्त

आरम्भत जाहि वहु लोगन सौं बैर होय,
दूसरे करत जाहि धर्म ठहरै नहीं ।
करत करत जाहि ऊपजै कलेस भारी,
फल ऐसौ लागै जासों पेट हू भरै नहीं ।
अति छोटौ काम ऐसौ कुल में न कीयौ होय,
अति ही दुरंग काज पूरौ हू परै नहीं ।
'देवीदास' जामें लाभ खरच वरावर ही,
वुद्धिवंत ह्वै कें ऐसौ कारज करै नहीं ॥

प्यारी परबीन देख ढ़रे ढंग भौरे स्याम,
मान करि बैठी चुप साधि पिक बैनी तें ।
परत जोक अंग ते अनूप रूप,
टूटि टूटि मोती गन परें टूट बैंनी तें ।
'देविया' अनत मान सुनत सहेली धाईं,
आईं ढिग प्यारी के सु पूछें मृग-नैनी तें ।
ऐरी सुनि गोरी ब्रषभान की किसोरी भोरी,
का पर करी है आज भृकुटी तनैंनी तें ॥

८०-रूपराम:—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर नगर निवासी थे। ये इतने विख्यात् थे कि इनके नाम पर अभी तक कुंडारूपराम नामक मोहल्ला वसा हुआ है। इनका कविता-काल संवत् १८५६ वि० से १९२४ वि तक माना जाता है। शेष जी के अनन्य भक्त होने के कारण इनके घराने के लोग 'शेषजी' वाले कहलाते हैं। कवि होने के साथ २ ये ज्योतिष-शास्त्र के भी अच्छे विद्वान् थे। इन्होंने मृत्यु से पूर्व अपने निधन काल का इस प्रकार उल्लेख किया था:—

दास दोष देखे नहीं, पाप कर दीये छीन ।
चौबीस्सौ की साल में, होऊ सेस में लीन ॥
हिम रितु अगहन मास पुनि नौमी भौम सु पाइ ।
'रूपराम' तन त्याग कें, मिले सेस में जाइ ॥

जो वानी या मुखते निकसी सेस करेंगे सांची ।
झूठी बात कोई मत जानों आप सरसुती नांची ॥
पढ़यौ गुन्यौ नहि भाषा ग्रन्थन नाहि गयौ कछु साखी ।
'रूप राम' के प्रभु सेस नें अपने मुख तें भाखी ॥

कहते हैं आपकी यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई । इनके रचित दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं:-(१) गंगा लहरी और (२)शतपंचाशिका। शतपंचाशिका में इन्होंने अपने उपास्य देव शेषजी के बिवाह आदि उत्सवों का विविध राग रागनियों व सुन्दर छन्दों में वर्णन किया है। यह वर्णन बहुत ही स्वाभाविक सरल, सरस और हृदयग्राही बन पड़ा है। इस ग्रन्थ का रचना-काल कवि ने इस प्रकार दिया है:—

एक सहस्त्र पर आठसौ, नौ के ऊपर एक ।
भई कृपा श्री सेस की, गाए चरित अनेक ॥
सामन सुक्ला पँचमी, रच्यौ चरित बिचार ।
जो याकू सीखैं सुनै, बाढै धर्म आचार ॥

आपकी भाषा साधारणतः अच्छी है। इनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं-

राग बिलाबल

सेसजी अबतो निवहि बनैंगी ।
नाव जरजरी खेबट नाहीं किहि बिधि पार लगैंगी ॥
अति गंभीर भमर में भरमें पवन प्रचंड धुनैंगी ।
आगे ठाड़ी दुरजन सैना मारहि मार मनैंगी ।
धक्का प धक्का लागत हैं बुधि नहीं धीर धरैंगी ॥
इहां कोऊ रख वारौ नाहीं और कछु न हनैगी ।
'रामरूप' कों चरन सरन देउ सारद सुजस भनैंगी ॥

राग ललित-ताल धीर

सेसजी एनानें थौगाजी चरन कमल बिश्राम ।
जो चाहंणा सोई लेस्यां कांई करौ उपराम ॥
चौरास्या का स्वांग धरयौ मैं सर्‌यौ न कोई काम ।
रीझि खीझि में थे नही समझौं काँई करा मन स्याम ॥

थे जानौ हमैं झूंजा ना यह रीझ पचै बिन काम।
'रामरूप' तो और न माँगै दीजै अपनौ धाम॥

राग मलार

रमत दोऊ सुन्दर नवल हिंडोरे।
चंद बदन श्री सेस रसिक मनि कुंवरि तरुन तन गोरे।
नीलांबर अरु अरुन बसन की छबि घन दामिन भोरे।
'रामरूप' दोऊ दंपति बिहरें मधुर हंसत थोरे थोरे॥

कहूँ जी सेस कूं आप झुलावें।
रत्न जटित कौ बन्यौ पालनौ रेसम डोरि डरावें॥
मान भामिन चंपकलता सब मिलि मंगल गावें।
और कोई इहां आब न पावें मुख मसि बिंद लगावें॥
राई नौन कूँ बारि फेरि कै कौने में आप बगावें।
'रामरूप' सखि निरखि लाल कूँ तनमन धनहिं लुटावें॥

गंगालहरी

छन्द पद्मावती

संबत् रस सर बसु चन्द्र अमित सुभ माघ सुक्ल तेरस सबिलास।
बुद्धबार कर गंगा लहरी 'रूपराम' हिय करौ निबास॥

श्री गौरीनन्दन सुर नर बन्दन जग अभिबंदन बिघन हरौ।
श्री 'रूपराम' जन करत बीनती गंगा तनमय चित्त करौ॥
श्री मातु भबानी निगम बखानी बृह्म कमंडल करि संगा।
भागीरथ आनी मुनिगन मानी कुलन उधारन जै गंगा॥
तब निर्मल धारा अगम अपारा बारि देख जन सुद्धि लहै।
तन मन बच धाबै तव बर पाबै अधम उधारन संत कहै॥
सिब सीस निबासी परम प्रकासी कलुस संघ नासत जन के।
जल पान करत भब-रोग कटत इमि भेसज अक्षत जिमि तनके॥

८१—जीवाराम:—ये कवि महाराज बलवन्तसिंह के आश्रित थे। इनका जन्म तालफरा ग्राम (तहसील कुम्हेर) में चतुर्वेदी वंश में हुआ था। इनके केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं:—

१—अकलनामा:—यह गद्य में लिखा हुआ है। इसमें अकबर बादशाह तथा बीरबल के सम्बाद बड़े ही रोचक ढंग से दिये गये हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के

अनुसार सभाचातुर्य के लिये ज्ञातव्य विषयों का भली प्रकार से दिग्दर्शन कराया है।

२—ब्रजेन्द्र-सभा-विलासः—यह बड़ा ही सुन्दर पद्य ग्रन्थ है। यद्यपि इस ग्रन्थ में किसी विशेष विषय का प्रतिपादन नहीं किया गया है फिर भी वर्णन शैली बड़ी ही रोचक है।

आरम्भ में वंदना आदि करने के पश्चात् अपने आश्रयदाता के वैभव, हाथी, घोड़े शिकारादि का वर्णन कर महाराज बलवंतसिंह की श्री-वृद्धि के लिये विविध देवी देवताओं से प्रार्थना की है। इस ग्रन्थ का निर्माण काल कवि ने स्वयं इस प्रकार दिया है:—

ठारह सौ अरु छानवाँ, सुद्ध महीना माह।
तब कविता परगट करी, मानों भयौ उछाह॥

इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जारहे हैं:—

सैल—सुता गौरी के तनय श्री गनेस नाम,
तिनकी कृपा ते मिटे सकल कसाला हैं।
जिनकी कृपा ते सब देब अनुकूल होत,
तिनकी कृपा ते होत सिबहू दयाला हैं।
जिनही के सुमिरेते दुख कौ विनास होत,
गज को बदन गरे फूलन की माला हैं।
बाप मृग छाला औढ़ैं ओढ़त दुसाला आप,
सिद्धि के दयाला ऐसे संकर के लाला हैं॥

हाथी बर्णन (कवित्त)

दिग्गज से सोहत दुरद्द दरबाजन पै,
देखि देखि घन के घनेरे घनबारे हैं।
सोहत संबारी मीन केतन सबारी सज,
हौदा बने हद्द मानों साँचन में ढारे हैं।
झूम झूम चलत झुकावें झुकि सुंडन कों,
झुंडन के बीच में चलत बल भारे हैं।
श्रीमत ब्रजेन्द्र महाराज बलबंत तेरे,
गज मतबारे कैधों सज मत बारे हैं॥

कवित्त

मलय समीर बीर तीर सौ लगत मोहि,
धीर नहीं धर्यौ जात तरफत ही रहैं।

बिसर बिसासी मेरे गाँसी मारि फाँसी डारी,
दासी सों लगायो हेत कैसे करती रहैं।
ऊधौ यह सूधैं समझाय दीजो सांवरे सों,
तावरे से आबैं गोपी तन में तयार हैं।
आखिर अहीर हैरी जानत न पीर है री,
सुध ना सरीर है री कैसे करजी रहैं॥

८२—लक्ष्मी नारायन:—ये कवि भरतपुर निवासी गणेश के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता काल संवत् १८९० से १९०० वि० तक माना जाता है। प्रतिभावान होने के कारण इनको भी पिता के सदृश राज्य सम्मान प्राप्त था। अपने आश्रयदाता के आदेश पर जगन्नाथ त्रिशूली की 'गंगा लहरी' का भावानुवाद तथा "अनन्त कथा" पद्य में लिखी थी। उदाहरण निम्नलिखित हैं:—

कवित्त

वसुधा के सकल सुहाग की समृद्धि निधि,
'नारायण' ब्रह्म द्रब मोद भरिबौ करै।
कहा अचरज जो महेस को सहज ही में,
महा ऐस्वर्यसाली कर रखिबौ करै।
सर्बश्रुति सास्त्र को सुमानस समूहन के,
सुकृति की मूरि सों दुखन हरिबौ करै।
सुधा कौ सहोदर है सलिल तिहारो गंग,
मेरे अमंगल कौ बिनास करिवौ करै॥

प्रात समें न्हात पटरानी जे नृपालन की,
मृग मद तिनके पयोधर तटीन में।
'नारायन' कहै सुन ऐरी गंगा मात बह,
तौलों मिलै तेरी जल रासि लहरीन में।
तौलों बे ही मृग निज बन्धु जाति पाँति जुत,
सहसन समूहन सों मिलै सुखासीन में।
बिहरें ह्वै सुद्ध नित्य धरिकें बिमल बपु,
नन्दादिक बनन के बृच्छ बल्लरीन में॥

८३—रामानंद:—इन्होंने संवत् १८९१ वि० में रानी किशोरी की आज्ञा से "लील रतन चूणामणि" नामक ग्रन्थ रचा है, जिसमें ६२ प्रसंगों में गोवर्धन लीला

तथा मानसी गंगा की महिमा का विस्तृत वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से मधुर भाषा में किया है।

अवतरण

राधा माधब झूलत फूलत, हुलसि हुलसि मुसकानी।
जनु दरपन प्रतिबिम्ब निहारत, मन भाबन मन भानी॥
कबहुँक मुरली मधुर बजाबत, गाबत रागिनि राग छए।
मानों बन घन ब्रज नर नारी, काम मंत्र पढ़ बीज बए॥
गिरिधर नागर रसिक उजागर, हंसि हंसि झुकि झुकि अंक भरे।
जनु मनमथ रति करत लराई, नैंकहु इत उत नांहि टरे॥
इक कर चिबुक परसि पुनि माधब, बीरि बदन पर देत हंसी।
मिस कर उमंग पयोधर परसत, मृगलोचनि तब मोह कसी॥
नील पीत पट अंचल चंचल, घन दामिनि की कौन छवी।
कंकन किंकिन नूपर ठुमकनि, कथन करैं सो कौन कबो॥
गोप कुमारी पचरंग सारी, कनक किनारी भल्ल- मली।
अंग अभूषन बाजत रुन झुन, जन उरु कंचन कमल कली॥
झुकि झुकि दरसत हरसत मोहन, सुमन पराग बर वार बही।
बाजत जंत्र अनेक एक गति, राग असाबरि गाबतही॥
श्री बनबारी अति सुखकारी, मुरली सम्हारी गायबौ।
मानहु मोहनि मंत्र उचारत, सबकौ सुधि बिसरायबौ॥
नबलकिसोर भोरी गोरी, बय गति थोरी रूप लसी।
मृदु मुसिकाय रिझा प्रीतम कों, स्याम सुजान मनहि बसी॥
सारि संभारी द्वै चटकारी, सरस सुधारी राग लई।
भौंह नचाय बचाय मान गति, तान मोहन पर राख दई॥
मोहित भौ गिरिधर बर नागर, करतैं मुरली लटक गई।
श्रबन सुनत मृदु स्बर सुर बनिता, चल न सकत गति थकित भई॥

८४—रामबख्श:—ये जाति के ठाकुर तथा भरतपुर के निवासी थे। आपका जन्म संवत् १८६७ वि० के ओर पास तथा देहावसान १८९७ वि० में हुआ। महाराज बलवन्तसिंह के समकालीन कवि हैं। इनके पुत्र मुरलीधर तथा भगवत प्रसाद दोनों ही कवि हैं। आपकी कविता बहुत खोजने पर भी विशेष मिल सकी है। केवल दो छन्द उद्धृत किये जाते हैं:—

कवित्त

जो पै पिय प्यारे तुम निपट बिसारीं हम,
तौ पै काहे कों जु तुम करी प्रीति ठेठ में ।
हमहूँ न जानी कान्ह रीति पहचानी अब,
सब सुभ बानी जो कहानी ढंग सेठ में ।
हौ तुम निठुर 'रामबख्श' पहिचान लये,
नाहीं कछु आबत है ऐसी या अनेठ में ।
कुबजा संग लाओ हमें रूप जो दिखाओ कान;
आओ वर दिना में प्रभू नीके जू जेठ में ॥

चन्द बिन रजनी सरोज बिन सरवर,
बेग बिन तुरंग मतंग बिना मदकौ ।
बिन सुत सदन नितम्बनी सुपति बिन,
बिन धन धरम नृपति बिना पद कौ ।
बिन हर भजन जगत सोहै जन कौन,
नौंन बिन भोजन बिटप बिना छद कौ ।
'रामबख्श' सरस सभा न सोहै कवि बिन,
बिद्या बिन बात न नगर बिना नद कौ ॥

८५—सेवाराम:—ये वैर के निवासी थे। इन्होंने किन्हीं रामपाल यदुवंशी के लिये 'नल-दमयंती चरित' की रचना की है। इनकी भाषा सरल, सरस एवम् प्रवाह युक्त है। इनका कविता-काल सं० १८९३ वि० के आस पास है। इनकी कविता के कुछ अंश प्रस्तुत हैं:—

चौपाई

अब नृप सुनौ मनोहर बानी । दमयंती की अकथ कहानी ॥
जगी नींद भरकें जब बाला । लख्यौ न प्रिय कौ रूप रसाला ॥
दीसौ नहिं नरबर कौ राजा । तिय कौ बन में भयौ अकाजा ॥
पीय पीय कहि चतुर सयानी । गद् गद् गिरा कहत भई बानी ॥
अहो कंथ बन तजी अकेली । सूखत है कंचन की बेली ॥
अमृत मय दरसन दरसाऔ । हमको बन में क्यों तरसाऔ ॥
ऊंचे स्वर सों सब्द उचारे । तोर तोर कुसुमावलि डारे ॥
अहो दई तुम कीनों कहा । अति अत्यंत भयौ दुख महा ॥
नरबरीस कित गये सुजाना । सूनी तजकें मोहि निदाना ॥
कासौं कहौं सुकाहि पुकारौं । पुनि काकौ मन में बृत धारौं ॥

दोहा

बन बन में भटकत फिरै, रानी ब्याकुल रूप ।
पंछिन सों पूछन लगी, तुम देखे नल भूप ॥

८६—चतुर्भुज मिश्रः—ये भरतपुर निवासी तुलसीराम के आत्मज खुस्यालीराम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे । इन्होंने 'अलंकार आभा' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें अप्पै दीक्षित के आधार पर अलंकारों के बड़े ही रोचक उदाहरण दिये हैं। ग्रन्थ रचना-काल के विषय में कवि ने लिखा है:—

सम्बत् रस निधि बसु ससी, सिसिर मकर गत भान ।
पाख असित तिथि पंचमी, सुरगुरु समय प्रमान ॥

इस प्रकार इनका कविता काल १८९६ बि० ठहरता है । इनके ग्रन्थ की भाषा बड़ी ही रोचक तथा शैली प्रभावोत्पादनी है । उदाहरण के लिये कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:—

विशेषोक्ति लक्षणम् (दोहा)

पूरन कारन होत हू, कारज उपजै नाहिं ।
ताहि 'बिशेषोकति' बरण, बुध जन सकल सिहाहिं ॥

उदाहरण (सवैया)

हुँ न करूँ सुधि भूलि अवै तउ जात उतै चित मान बसेरौ ।
भूख लगै तउ खात बनें न सुनूँ न कछू श्रुति राखहुँ नेरौ ॥
सोऊँ तऊ नहिं आबत नींद सह्यौ किन जातरी सो दुख रेरौ ।
काम मसाल जरै उर में तऊ नेह न रंच घटै बलि मेरौ ॥

असंगति अलंकार लक्षणम् (दोहा)

जहाँ हेतु अरु काम कौ, भिन्न देस सबरुद्ध ।
तहाँ 'असँगति' कौ प्रथम, बरनें भेद बिसुद्ध ॥

उदाहरण (सवैया)

सुन्दर नील सरोरुह से सुचि, साबल रंग रंगे रुचि लावहिं ।
हाय लियौ अपनाय सबै, नभ भूमि बिभाग भले दरसावहिं ।
पै सखि ये घन हैं बिपरीत री, और की औरहि ब्याधि लगावहिं ।
आप करें बिस पान बिदेसिन, की तिय मूर्छित ह्वै मुरझावहिं ॥

तद्गुण अलंकार लक्षणम् (दोहा)

निज गुन कों तजि लेत जहं, सँगति कौ गुन बस्तु ।
'तद्गुण' सो आभरन है, बरनें सुकवि समस्त ॥

उदाहरण (सवैया)

श्री बलवंत बली तुमरे अरि की तिय ताप तची घबरानी ।
नग्न सरीर फिरें बन में कछु ओढ़न को उर प्रीत प्रमानी ।
पल्लव तोरि धस्यौ तन चाहत हाथ पसारि तबै उमहानी ।
चारु नखाबलि रंगन ते भये पाण्डु तिन्हें तज देख खिसानी ॥

८७—युगल किशोर:—ये ब्राह्मण जाति के रावत अल्ल बाले लक्ष्मीनारायण के पुत्र और भरतपुर के निवासी थे। इनके वंशजों को महाराज वलवंतसिंह से 'कवीश्वर' की उपाधि मिली हुई है। महाराज के आदेशानुसार इन्होंने 'रस-कल्लोल' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। अब तक इनके ३ ग्रन्थ देखने में आये हैं:—(१) रस कल्लोल (रस ग्रन्थ) (२) ब्रज बिलास (ब्रज का वर्णन) और (३) श्रीराम जानकी मंगल। साधारणतया इनकी कविता सुन्दर है और यत्र तत्र वर्णनों में स्वाभाविक सजीवता भी पाई जाती है, परन्तु इनकी भाषा में व्याकरण सम्बंधी भूलें अधिक हैं। इनका सवैया तथा षटपदी छन्दों पर अच्छा अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

रस कल्लोल

शोक लक्षणम् (दोहा)

बाँछित बस्तु बियोग औ, रति कौ परसत नाहिं ।
मन बिकार उतपन भयौ, परिमित 'शोक' कहाहिं ॥
बाँछित बस्तु बियोग लघु, 'शोक' कहौ तज बेद ।
बिप्रलंभ करुना बिसै, कैसे होतौ भेद ॥

बिप्रलंभ रति कों गहैं, करुना परसत नाँहि ।
इतौ भेद है दुहुन में, समझ सुकवि मन माँहि ॥
प्रीतहि रीतहि जो कहौ, ता बिन शोक न होय ।
है असमंजस यह मनौं, समझें कहैं न कोय ॥

'भय लक्षणम् (दोहा)

अपराधरु बहु रोग ते, रव भय दरसन पेखि ।
मन बिकार इनतें भयौ, परिमित सो 'भय' लेखि ॥

उदाहरण

गरुड़ पक्ष की पबन करि, सेबन किय यदुनंद ।
लखि काली भय भीत इब, चलन चह्यौ मंद मंद ॥

सवैया

जुग कान में पंकज फूलि रहे दृग आनंद नीर ही भिन्न निहारे ।
भय भूषन भूषित हेम कहै जम ओपरुगाबलि ने किये न्यारे ।
लखि भेद चुनी पद की उपमा मधि नूपुर के रब ने निरधारे ।
अब याते परें बिधि की चतुराई कहा बरनैं कवि कोउ बिचारे ॥

बाबर घेवर मोद जलेबिन, दूध सनी फैनी अति सोहै ।
गोरस सानि सिता संग ओदन, पायस देखत ही मन मोहै ।
चार प्रकार बरा तरकारिन, और उचार गनै कहि कोहै ।
ठौर पुरी लुचई बर मोहन भोग, सुबास लिये उर भोहै ॥

पान कपोलन में झलकें कल संपुट नील मनी मधि चूनी ।
कुन्तल केलि करें मकरंद सुगन्ध भरे अलि सों दुति दूनी ।
कुंडल लोल किधौं नट नितंत मंडल मानिक पै छवि ऊनी ।
मंजुल बोलति मोल लियो मन को वरनें कविता मति-सूनी ॥

रोला

कृष्ण-कुन्ड के तीर सुभग मनि मंडल मण्डित ।
निरतत स्यामा स्याम सखी संग गुन गन पंडित ॥
सरद चंद प्रतिविम्बित भूसन मधि छबि सोहैं ।
लटकि चलति पट पीट चटकि नैननि मनु मोहैं ॥

दोहा

चपल चरनि गति मन्द ध्वनि, नूपुर सुर चित चोर ।
बजत बीन मिरदंग मिलि, निरतत जुगल किसोर ॥

सांगीत की छप्पय

श्रवन सुनें किमि बैन थकित पबन सरित जल ।
दल दल बिंबित जुगल रूप धुनि बजत सकल कल ।
तान गान गति मान नृत्य अंगनि की मोरनि ।
दुरनि मुरनि चख चलनि चोंप माची चहुं ओरनि ।
रीझि रीझि अंकनि भरत अमित भाब रति काम बन ।
बिबिध केलि कौतुक करत कुंज भवन राधारमन ॥

यशवन्तसिंह का जन्मोत्सव,—कुश्रा पूजन

करत सिंगार गज गामिनी सुदामिनी सी,
पालने झुलावें मातु देखत सिहाती हैं।
जाही समै चली महारानी कूप पूजन कों,
देवअली कुसुम समूह बरसाती हैं।
आनंद कौ सिंधु श्री ब्रजेन्द्र के महल माँझ,
तामें लेत थाह सी झमकि झमकाती हैं।
आती हैं अनेकन, अनेकन ही जाती हैं सु,
ढोल ढमकाती हैं वधाये गीत गाती हैं।

नक्कारखाना वर्णन

बाजत बधाई बेस श्रीमन ब्रजेन्द्र द्वार,
कुंवर जनम सुभ उत्सब दराज पै।
फटिक धवल धाम पातुर नचत तामें,
नौबति परन सहनाई के अवाज पै।
विधु के उदोत होत दीपन की जोति मानौं,
कोटि कोटि दामिनी की सुषमा समाज पै।
'जुगल किशोर' निसि भोर नहीं जान्यौं परै,
आनंद की ओप बलवंत महाराज पै॥

बिदा

पूजे देव देबी कुल रीति कीनी नीकी भाँति,
प्रोहित बिदा करकें और बिदा कीने हैं।
अति सनमान सों ब्रजेन्द्र बलवंतजू ने,
आश्रित अनेकन कों मौज बक्स दीने हैं।
सौने के जड़ाऊ कड़े सौकरान को प्रसाद,
जरदोजी काम बने दिल्ली के सु चीने हैं।
हीर चीर मानिक सु रोकड़ गयंद बाजि,
ग्राम लै लै जाचक अजांची रंग भीने हैं॥

कवित्त

जौलों चन्द्र-मण्डल प्रकास नभ मण्डल में,
जौलौं है अडिगता की टेक ध्रुव तारे की।
जौलौं पौन पानी रमारानी औ भवानी रहैं,
जौलौं रविरूप की प्रकृति तम फारे की।

जौलौं श्री महेश औ सुरेश नारदादि मुनि,
जौलौं गंग जमुन फनिंद भूमि धारे की।
जौलौं राम नाम तौलों अहो ब्रजराज प्रभू,
उमर दराज रहौ कुंवर तिहारे की॥

८८—मणिदेवः—ये भरतपुर राज्यान्तर्गत जहानपुर ग्राम के निवासी और जाति के भट्ट थे। अपनी विमाता के व्यवहार से असंतुष्ट होकर काशी चले गये और वहां गोकुलनाथ के यहाँ रहने लगे। काशी नरेश की आज्ञा से इन्होंने महाभारत के कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, एषिक, विशोक, स्त्री तथा महाप्रस्थान पर्वों का पूर्ण तथा शान्ति पर्व के २२५ अध्यायों का अनुवाद किया है। अपनी अन्तिम अवस्था में ये विक्षिप्त से हो गये थे। इनका समाज में बड़ा आदर था। अनेकों स्थानों से इन्हें ग्राम, हाथी, घोड़े आदि भेंट में मिले थे। इनका कविताकाल १९०० से १९२० वि० तक है। इनके कुछ छन्द उद्धृत किये जाते हैं।

रूप माला

बचन यह सुनि कहत भो चक्रांग हंस उदार।
उड़ौगे मम संग किमि रूपमाला सो कहहु तुम उपचार॥
खाय जूंठो पुष्ट गर्बित काग सुनि ए बैन।
कह्यौ जानत उड़न की शत रीति हम बल ऐन॥
उड्डीन अरु अवडीन अरु प्रड्डीन अरु नीडीन।
संडीन तिर्यगडीन अरु बीडीन अरु परिडीन॥
पराडीन सुडीन अरु अति डीन अरु श्वाडीन।
डीन अरु संडीन डीनक महाडीन अडीन॥

इन्हें आदि प्रकार शत हैं उड़न के ते सर्व।
भली बिधि हम सिखे ताते गहत इतनो गर्व॥
जौन गति की किए होहु अभ्यास तुम गति तौन।
ग्रहण करिकै उड़ौ मों संग सकौ जो करि गौन॥
काग के ऐ बचन सुनिकै कह्यौ हंस सुजान।
एक गति सब बिहंग की तुम काक शत गति वान॥
एक गति सों उड़व हम-तुम यथा रुचित सुवंस।
बांधि यहि बिधि बहस लागे उड़न बायस हंस॥

भए तह्व अति करत बिक्रम उभय योधा धीर।
सहि परसपर गदा गरुई गनत नेकु न पीर॥

गर्जि गर्जि अखंड गति गहि उभय वीर उदंड।
करत चालन दोरदंडनि चपल अतिशय चंड॥
सब्य कोउ अपसब्य फिरि जो सब्य सो अपसब्य।
फिरत बाहत गदा गरुई सुभट भा भरि भव्य॥
शब्द सों भरि दियो अब्दहिं स्तब्ध भेनहिं नेक।
टूटि टूटि अचूक बाहत गहे जय की टेक॥

कहां निद्रा आंतुरहिं अरु भरो अमराव ताहि।
कहां निद्रा ताहि घेरे महा चिंता जाहि॥
सकल ए मम हिए निवसत कहां निद्रा मोहिं।
पिता के बधे ते अधिक दुख कौन बूझत तोहिं॥
बिप्र हम निज धर्म तजिके गह्यो क्षत्री धर्म।
कर्म क्षत्रिन के करव अब उचित तजि कै मर्म॥
झूठ कहि तजि धर्म्म उत मम पितहि डार्‌यो मारि।
तथा अब हम बधव उन कहं नीति धर्म बिसारि॥

८९—हनुमंत:—ये जाति के ब्राह्मण और नगर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८८१ और निधन सम्वत् १९६० वि० में हुआ। इनके पिता का नाम पं० सेवाराम था जो ज्योतिष के अच्छे विद्वान् थे। हनुमंत भरतपुर महाराजा जसवंतसिंह के आश्रय में रहते थे। इनके रचित आठ ग्रन्थ मिले हैं:—(१) राधा मङ्गल (२) जानकी मङ्गल (३) कवितावली रामायण (४) सूर्य पुराण (५) तोता पच्चीसी (६) सांगीत शिरोमणि (७) नायिका भेद (८) भाषा चाणक्य, इनके अतिरिक्त और भी ग्रन्थ बतलाये जाते हैं। हनुमंत: अपने समय के उच्च कोटि के कवियों में से थे। अपने वंश परिचय में इन्होंने अपने को नगर के प्रसिद्ध कवि रामलाल उपनाम राम-कवि का भाई प्रकट किया है। इनका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

सुन रिषि कहत अरे नृप बालक, बोलत बचन संभार न तू।
मैं रिषि जैसौ तोहि सुनाऊँ, प्रगट समझ लै कारन तू।
छत्री कुल घमंड खण्डन लखि, ये कुठार खल हारण तू।
तुरत पठाऊँ यम लोकन में, नतरु सीख कर धारण तू॥
पुनि कहत बैन अनन्त, कोई मिल्यौ क्षत्री नाय है।
द्विज जान कें कुल कान कीनी, नतरु रिस उपजाय है।

तृन तूल रिषि रिस अगिन भारी, जरत आहुति पाय है।
निज भ्रात के रघुनाथ बचन, बिचार बोलेहु जाय है॥
(जानकी मंगल)

पद्मिनी लक्षण-कवित्त

बिज्जुल छटासी हास्य लगत पटासी चोट,
चितबन बाँकी ज्यों चलाको चाल बान की।
हंसत कहत बात झरत प्रसून मानों,
हाटक बरन दुति झपत कृसान की।
रंभा मैनका कीं अपछरा की उर्वसी की कहूँ,
कहत समान बुद्धि मूरख अजान की।
कवि 'हनुमंत' छवि धाम काम-बाम कोटि,
रूँम रूँम वारों ऐसी बेटी बृषभान की॥

९०—छत्रमल:— ये जाति के ब्राह्मण और दीग के निवासी थे। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। इनका कविता-काल सं० १९०१ वि० के आस पास ठहरता है। इनकी फुटकर रचनाएं कवित्त तथा विविध छंदों में मिलती हैं। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

रूपे सी जटान में लिपट रहीं झपट दिये,
गंग की तरंग; भाल बीच ससि धारे पै।
झुकि रही अंग में उमंग भंग रंग भरी,
लिपटे भुजंग चढ़े रोस के सरारे पै।
दुष्टन कों काल, रच्छपाल निज भक्तन कों,
नृत्य करै ताण्डव ताल के तरारे पै।
देखे दुख भाग जात, दारिद बिलाय जाय,
श्री रूपेश्वर नाथ रूप सागर किनारे पै॥

षटपदी

जयति केसरी तनय, ज्ञान निधि मुनिमन रंजन।
कवि कुल कमल दिनेस, मोहतम पटल प्रभंजन।
हाटकपुर नृप सुवन, सत्रु सुग्रीब सहायक।
तारा पति बध हेतु, सेत कृत कपि कुल नायक।
जय जातुधान बन अनल सम, सुर नर वर बंदित चरन।
जुग जोर पानि 'द्विज छत्र' कहै, जयति २ असरन सरन॥

६१—रामबख्श:—आपका जन्म सम्बत् १८८० वि० के आस पास माना जाता है और मृत्यु सम्बत् १९३० वि० है। ये डीग के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे। तत्कालीन कवि समुदाय से इनको काव्य प्रेरणा मिली और फलस्वरूप ये अच्छे कवि हो गये। साहित्य के साथ २ आपको ज्योतिष का भी उच्च कोटि का ज्ञान था। सुनने में आता है कि आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी, किन्तु एन्फ्लूएंजा की बीमारी में आपके प्रपौत्र का सपत्नीक देहावसान होजाने पर इनका साहित्य नष्ट हो गया। बहुत खोज करने पर भी आपके साहित्य की उपलब्धि नहीं होसकी, केवल जनश्रुति के आधार पर कुछ छन्द मिल सके हैं। आपका उपनाम 'राम' है। यद्यपि इन्होंने टकसाली ब्रज भाषा का प्रयोग किया है किन्तु शब्द चयन सुन्दर एवम् सरस है और अनुप्रासों की स्वाभाविक छटा तो बड़ी ही हृदयग्राही है। आपकी सरस रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:-

बलरामजी की वन्दना (छप्पय)

जय अनन्त बल धाम, राम बलराम स्याम युत।
गोप बेस गोपेस सेस अवतार मार दुत।
धरा धार अतिधीर बीर, यदुबंसिन में बर।
असुर सैन संहरत हेम-हल, मुसल पानि धर।
भुज जुत्थ सब्द तेहिं 'राम कहि', दीह दुष्ट मुष्टक दबन।
जय अच्युताग्रज भग्न-दुख, प्रलम्बघ्न रेबति रवन॥

शरद वर्णन (कवित्त)

कैधों महताब काम देब सी खिली है आय,
कैधों छीरसिन्धु कैधों बैलकौ बिहाईरी।
कैधों घनसार की तरंगनि तरंगन तैं,
जाहर जहान माँहि बाढ़ी सुखदाईरी।
मृदु मखतूल कैंधों बिधिने बिछाये सेत,
रास औ बिलासन कों करन कन्हाईरी।
या बिधि सुहाई मन भाई "द्विज राम" कहै,
छाई महि मंडल में सरद जुन्हाईरी॥

फाग के अवसर पर श्री राधा की गर्वोक्ति (कवित्त)

मुरली मुहचंग, बेग छीन "द्विज राम" ताके,
संग के सखान मार मार कें भगाऊँगी।
घूंघर अबीर की में धमक धुसि धमकी दै,
औचक गुपाल ही कौ हाथ गह लाऊँगी।

केसर की कीच में करूंगी बरजोरी घेर,
ऊपर गुलाल लाल झोरी भर नाऊँगी ।
गोकुल गली में भली भांति सों अलीरी आज,
नन्द के लला कों लली करिकें नचाऊँगी ।।

नेत्र वर्णन

तरुन तुरंगम ते चौगुनी चलाकी चाहि,
चीतिबे कों चूकै मति चकित चितेरे री ।
मीन गन हारे मृग बारे 'द्विजराम' हूने,
काम हू बिसारे बन जान कर चेरे री ।
सारे सुख चिन्तन के गारे है गुमान पगे,
प्यारे मन-भौंर के सुधारे कंज हेरे री ।
अंजन ते कारे ये निहारे चतुरारे वीर,
लाज भरे भारे कजरारे नैन तेरे री ।।

नृसिंह वीर

प्रगट्यौ प्रचंड रन भिरबे कों भीषम सौ,
बान वर अर्जुन सौ भीम रन धीर सौ ।
पूरी पैज पारबे कों राम द्विजराज जैसौ,
भारौ गिरि मेरु सौ सागर गंभीर सौ ।
तेज पुंज बासव कौ पूत पुरहूत जैसौ,
कीरत कौ चंद सौ, अमन्द राजे नीरसौ ।
बिप्र-कुल भूषण सुजान श्री नृसिंह बीर,
कंचन बरसिबे कों हरन पर पीर सौ ।।

छलकौ छरैया पूरी पैज कौ परैया,
दान खग्गन झरैया औ तरैया रतिराज कौ ।
धीर कौ धरैया पर कारज करैया,
लाख लाखन लरैया औ दरैया सत्रु साज कौ ।
दीनन ढरैया पूरे गर्ब कौ अरैया,
ऐंड़ मेंड़न परैया औ भरैया भारी लाजकौ ।
सिंह सौ बहादुर रन भूमि ना टरैया,
अरि उदर फरैया औ सरैया सब काज कौ ।।

९२–धाऊ गुलाबसिंह:–ये जाति के गुर्जर क्षत्रिय तथा महाराज यशवन्तसिंह के धाऊ थे। आपकी राज्य सरदारों में उच्चकोटि की प्रतिष्ठा थी। आप बड़े काव्य प्रेमी तथा कविजनों के आदर कर्त्ता थे। आपने 'प्रेम सतसई' नामकी पुस्तक लिखी है, जिसमें १२५ दोहे अन्योक्ति के, १२५ दोहे नीति के, १२५ दोहे शृंगार के तथा ३७५ दोहे शान्त रस के हैं। इस प्रकार यह ७५० दोहों की सतसई बड़ी ही सुन्दर और उच्च कोटि की पुस्तक है। कवि ने ग्रन्थ की समाप्ति का समय इस प्रकार लिखा है:—

षट जुग नंद सुचंद, सम ज्येष्ट सुक्ल सुभ पच्छ।
द्वितिया सनि पूरन भई, 'प्रेम सतसई' स्वच्छ॥

सतसई से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

अन्योक्ति (दोहा)

भरी लता फूली फली, बसि कर उनमें भोग।
अली कली क्यों दल मलै, यह नीकौ नहिं योग॥
जाँचत नहिं धन मान पै, सुनत न खोटी बात।
का मृग तैंने तप कियौ, सुख सोवै तृन खात॥
जो सूरज जारै कमल, गारैं चन्द चकोर।
हनें नार जो मीन कों, जाँय कहौ किहि ठौर॥
सुबरन चोंच मढ़ाय कें, मानिक जुत पग दोय।
पख पंख मोती लगें, काग हंस नहिं होय॥

नीति (दोहा)

कहुँ कहूँ छोटे जो करत, सो न वड़े ते होय।
तृषा कूप मोरत सकल, जैसे सिन्धु न जोय॥
नीति सहित जो सूरता, सोई जय कौ हेत।
सुध्यौ संखिया देत सुख, बिन सोध्यौ जिय लेत॥
फल फूलन जुत एक तरु, बन कौ करत सुपास।
ज्यों सपूत सुत एक ही, कुल कौ करत प्रकास॥

शृंगार (दोहा)

प्यारे तेरे दरस बिन, चित न लहत कहुँ चैन।
चन्दन चन्दरु चाँदनी, सबै लगै दुख दैन॥
अरे यार तू निठुर है, नहिं जानत पर पीर।
तरफत हों तेरें बिनाँ, जिमि मछरी बिन नीर॥

तेरे बदन मयंक कौ, मो मन भयौ चकोर।
रैन दिना इक टक सदाँ, लग्यौ रहै तुब ओर॥
बह चितबन बह चाल गत, बह मीठी बतरानि।
छिनहुँ न चित ते टरत है, कसकत निसि दिन आनि॥

शान्त रस (दोहा)

बारन की तू बार कों, नैंक न लायौ वार।
मेरी ही अब बार कों, कीन्हों कहा बिचार॥
हरी करी की बेर कों, नैंक न कीनी बेर।
कब को आरतबंत हूँ, क्यों न सुनत हौ टेर॥
सुर सरिता के तीरबस, कर हरि तन अनुराग।
बहु सोयौ खोयौ वहुत, अबहू तो तू जाग॥
जग हरि में हरि जगत में, हरि बिन कोई नाँहि।
ज्यों नभ सब में बसत है, सब नभ ही के माँहि॥

९३—काशीराम:—ये महाराज यशवंतसिंह के दरबार के प्रसिद्ध सद और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म गोवर्धन में हुआ था। इन्होंने सम १९२२ वि० में 'मनोहर शतक' नामक पुस्तक की रचना की, जिसके शीर्षकों नीति शतक, श्रृंगार शतक, शान्ति शतक, बारह खरी, शान्त रस पद, कवित्त और होली आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी कविता हृदय स्पर्शनी भाषा सरल सरस तथा लचीली है। इनकी कविता को पढ़कर यह नि होता है कि ये उच्च कोटि के कवि थे। कविताओं के उदाहरण प्र किये जाते हैं:—

नीति शतक से (दोहा)

नृपति पास लघु नरन कौ, छिनक न चहिये वास।
ग्रसत राहु जब चंद कों, होत तेज कौ नास॥
नृपति जो मंत्री हीन है, छीन राज ह्वै जाय।
बिना नीम ऊँचौ सदन, जिमि छिन माँहि गिराय॥
पालन खोटे नरन कौ, लाख करौ दिन रैन।
बखत परे पै फेरले, तोता के से नैन॥

श्रृंगार शतक से (दोहा)

रति ही थाई भाब है, जाकों कह्यौ कबीन।
रस श्रृंगार सो जानिये, कोबिद निपुन नबीन॥

ताकी उतपति होत है, मिलि बिभाव अनुभाव।
सात्विक संचारी तहाँ, प्रकटत होत दुराव॥

प्रेम कुल्हा उपज्यौ सिंच्यौ, सलिल प्रीति सों आय।
ताप सोच संताप की, किहु बिधि सही न जाय॥

बिछुआ वर्णन (दोहा)

छिनक छिनक छुन छुन करैं, बिछुआ पग दरबार।
मनों जगावत मैंन कों, रैन पुकार पुकार॥

नितम्ब वर्णन (दोहा)

गोल नितम्ब बिराजई गोरे गजन गुजार।
मनों लरकई भजि गई, उलटि दुंदुभी डार॥

लंक वर्णन (दोहा)

लंक लग लगी पातरी, तनक छिबाये हात।
छुई मुई सम लचक कें, कमची सी लफ जात॥

संयोग वर्णन (दोहा)

दरस परस बतरान सों, दंपति जो सुख होत।
रस संभोग तासों कहत, सकल कबिन के गोत॥

उदाहरण (दोहा)

सिसकी भरि कसकी तिया, मसकी जब भरि अंक।
फिर फिर फिरकी सी फिरै, थिर की ना परजंक॥

उद्वेग वर्णन (दोहा)

पिय वियोग, घबरात चित, लगत न काहू ठौर।
ताही कों 'उद्वेग' कहि, लिख्यौ कविन सिरमौर॥

उदाहरण (दोहा)

इन्दु लखत किंदुक गरल, तारे कनक अंगार।
लगत बिना बलबीर के, सब सिंगार जंजार॥

शान्त शतक (दोहा)

अरे मूढ़ बहु पुन्य सों, दई दई नर देह।
त्याग सकल मद मोह कों, हरि पद सों कर नेह॥
जैसे पुतली काठ की, नचत तार के साथ।
ऐसे हीं नर नचत है, काल करम के हाथ॥
ये नारी ना नाहरी, लखत प्रान हर लेत।
बाघिन सों बच जात नर, नारी बचन न देत॥

बारह खरी (दोहा)

कक्का कमला पति कुमर, करुना निधि घनश्याम।
निसि दिन मन रटिबौ करो, छाँड़ि सकल मद काम॥
खखा खर-दूषण हन्यौं, खगपति पै असबार।
आनंद कन्द मुकन्द कौ, भज मन बारम्बार॥
गगा गिरिबर धारियौ, गोपी ग्वाल बुलाय।
गर्व गारि पुरहूत कौ, लीनौं ब्रजहिं बचाय॥

फुटकर

पापर कहत तो सौं पूरी कर आस मेरी,
मोमन कचोरी धरै धीर न धराये ते।
तूहै पकौरी तो सों बड़ी सी खताई भई,
पायौ है कछू कसार प्रीतम पराये ते।
कैसै रंबड़ी है खोआ मुकरन मनोहर मोहि,
नाहीं गौंदी सी कहा होत घबराये ते।
कहत हैं समोसे खजला के सब बराबरी के,
गुप चुप रहौ जी कहा बातन बनाये ते॥

कैधौं रूप सरिता में मीन मीन केतु के से,
कैधौं आन कंजन में कंजन बिराजे ये।
कैधों लाल रेशम के जाल मध्य खंजन युग,
कैधों विधि कारीगर तीखे सर साजे ये।
कैधों हेम अर्धन में हीरा मनोहर है,
कैधों रूप बाटिका में नरगस छवि छाजे ये।
कैधों नौंकदार सीप मुक्ता उगल रही,
लोचन तिहारे प्यारे सुखके समाजे ये॥

मानों कलसाहैं कलधौत के सुधा सों भरे,
मानौं ये खिलौना द्वै मनमथ के ख्याल के।
मानों फूल कंज उर उलटे धरे हैं विधि,
मानों युग चकवा हैं सुखमा सुताल के।
मानों बिंब दाड़िग दिये हैं बाल बारी बैस,
मानों फल शोभित है तरुनी तमाल के।
मानों हेम दुंदुभी धरी हैं बिधि औंधे कर,
श्रीफल मनोहर हैं जोबन रसाल के॥

६४—शोभाराम:—ये भरतपुर में अहीर जाति में उत्पन्न हुए थे और पलटन में नोकरी करते थे। इनका कविता काल सं० १९२० वि० से संवत् १९६७ वि० तक रहा। आपने अपने समय में भरतपुर में कविता की धूम मचादी थी। ये एक बड़े कवि मंडल के मण्डलेश्वर थे। कवित्त लावनी और ख्यालों का अखाड़ा इनके स्थान अटलवंद दरबाजे सोधी वाली बगीची पर हर समय जुड़ा रहता था। इनके पास दूर २ से कविता प्रेमी एवं कवि-गण आते रहते थे। इन्होंने हजारों कवित्तों की रचना की है। आज भी भरतपुर में कितने ही प्रौढ़ और वृद्ध पुरुषों को इनके अनेक छन्द कंठाग्र हैं। इनकी रचनाओं के संग्रह का प्रयास किया जारहा है। इनकी रचनाओं में दो पुस्तक बतलाई जाती हैं:— (१) गौंरी-मंगल और (२) हनुमानाष्टक। विविध विषयों पर लिखे हुए इनके अनेक छन्द बहुत ही भाव पूर्ण हैं। इनकी भाषा में खड़ी वोली की झलक दिखाई देती है, जो हिन्दी उर्दू मिश्रित मुहावरेदार तथा रसीली है। उदाहरण स्वरूप इनके कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

आगरौ अठारह ब्रज बारह कोस मधुपुरी,
गोबरधन ग्यारह कृष्ण डूबत ते उबारौ है।
साठ कोस जयपुर आठ कोस नदबई,
दिन भर कौ रस्ता बैर ब्यानौ ही सुखारौ है।
चलै तौ चौकस चौबीस कोस गोपालगढ़,
पास है पहाड़ी आगे अलबर तिजारौ है।
गुरुन कौ सहारौ कहै 'शोभा' मतवारौ इह,
भयौ है उजारौ रहवौ भरतपुर हमारौ है॥

करके फरियाद बरबाद हुआ बरसों से,
खाना ना सुहाता भूख भागी परेसानी तें।
सुनता नहीं अरजी क्या मरजी है यार तेरी,
किया नहीं प्यार कभी हंस कर महरबानी तें।
'शोभा' समझावै इश्क तेरा सतावै रहम,
तुझको नहीं आवै मुझे खोया जिन्दगानी तें।
हाल तुझसे नहीं छानी सही बड़ी परेसानी,
एरे दिल जानी ! मेरे दिल की न जानी तें॥

एरे दिल जानी ! मेरे दिल की न जानी,
लगन तुझसे लगानी सही हमने परेसानी है।

तू है लासानी बात तेरी पहिचानी,
करै अपनी मनमानी भोंह मो पै हाय तानी है।
'शोभा' कह समानी इश्क आतिश झल्लानी,
बहै चश्मों से पानी पर तो भी ना बुझानी है।
हुआ हूँ बेरानीं कहूँ कहाँ तक कहानी'
हाय मैंने नहीं जानी नेह मौत की निसानी है॥

ललित किसोरी गोरी भोरी सखियान संग,
अंग अंग आम्र कें अनंग ने कला करी।
थोरी बैस बारी और ओढ़े सुरंग सारी,
सजके सिंगार नारि आई है अदा भरी।
संग के सखान आन 'शोभा' सुजान कान्ह,
घेरि बनितान लूट दधि की सदा करी।
दिखाय कमर लाँचरी चढ़ा भौंह बाँकरी,
सु सांकरी गली में प्यारी हाँ करी न नाकरी।

लूटा खूब दक्खिन को दबाया दौर जैपुर को,
छोड़ी डेढ़ चद्दर जलाया नग्र जाही का।
तोड़ा दरवाजा फील हूल के हठीले भूप,
आया साफ जीत के न लाया खौफ काही का।
"शोभा" बैर बाप का निकाला था जवाहर ने,
लूटा खुद जाय के घराना बादशाही का।
दिल्ली नगरे डग मगरे पुकारें लोग,
लोहा लंगड़े का यारो गजब खुदाई का॥

(हनुमानाष्टक से)

हमें दुख देहि ताहि श्रृष्टि हू सों भृष्ट करौ,
भृष्ट बुद्धि नीच नाहिं जानत पर पीर की।
मेरे हौ इष्ट तौ मुगदरन सों मार डारौ,
नखन बिदार करौ किरचें सरीर की।
'शोभा' कों सताबै ताके दाबौ क्यों न कंठ आय,
स्वांस को घुटाय शपथ अंजनी के छीर की।
ठोकरन मारि कें उड़ाय जो न देहु ताहि,
केसरी-कुमार तोहि दुहाई रघुवीर की॥

६५–रावराजा अजीतसिंह:–महाकवि रसानंद के अस्त होने के अनन्तर भरतपुर राज्यान्तर्गत ब्रज भाषा काव्यसृजन का झण्डा रावराजा अजीतसिंह ने उठाया। ये भरतपुर राज्यबंश में उत्पन्न हुए थे और उच्चकोटि के भक्त कवि थे। ये 'कृष्णदासि' तथा 'अजीत' उपनामों से रचनाएं किया करते थे। इन्होंने 'वृन्दावनानंद रसोद्दीपन महत्पद' नामक ग्रन्थ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है:—

बदनेस सुपुत्र जु सूर्जमल, सुत तासु भयो रनजीति है।
भौ सिंह लक्ष्मण तासु कैं, भई जासु हरिपद प्रीति है।।
तिनकें भए उमरावसिंह, अजीत सुत हर ताई कै।
'कृष्णदासि' स्व-छापधरि, किय महत्पद रस दाइ कै।।

कुण्डलिया

प्यारी पिय सुरसरि, जमुन सरस्वती अनुराग।
बृन्दावन रसिकन हिये, नित ही रहत प्रयाग॥
नित ही रहत प्रयाग बही नब गुनन त्रिबैनी।
मुनि मन मंजन करन हारि अति ही सुख दैनी॥
कृष्ण पक्ष बर मकर मास तिथि ऋषि शुभकारी।
हरि शिव द्रग निधि चन्द्र वर्ष भल हिम ऋतु प्यारी॥

(दोहा)

जमुना तट बृन्दाबिपिन, कुंबरि किशोरी कुंज।
'कृष्णदासि' कौ बास तहाँ, लषति जुगल छबि पुंज॥

उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि अजीतसिंह उमरावसिंह के पुत्र थे, जिनको भरतपुर राज्यबंश में रावराजा की उपाधि प्राप्त थी। ये बृन्दावन रहा करते थे, इसी कारण इनके बंशज अब तक बृन्दाबन बाले रावजी कहे जाते हैं। इन्होंने सरल, सरस एवं सुमधुर ब्रज भाषा में पद रचना की है। इनकी काव्य शैली दो भागों में विभक्त हो सकती है:—प्रथम श्रेणी में वह रचनाएं आती हैं जिनमें शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार की रचनाओं को समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी अपनी कृतियों में यत्र तत्र उद्धृत किया है। ऐसे अनेक पदों में से एक यह है:—

गाओ सखी कुञ्ज केलि रस रीत।
× × जीते रहत अजीत॥

दूसरी शैली वह है जिसको इन्होंने बृन्दावन निवासी ललित किशोरी का अनुसरण करते हुए अपनाया है, क्योंकि ये ललित किशोरी को गुरुवत् मानते थे। देखिये ललित किशोरी के इस पद्य का:—

अरे मल्लाह के ज़ालिम, हमें मझधार क्यों बोरै।
लगादे पार किश्ती को, वृथा क्यो बादबा जोरै॥
ज़रा बल्ली लगा ज़ालिम, यहां जल बहुत हिल्लोरै।
ललित किशोरी गुन माने, निठुर क्यों हँस के मुख मोरै॥

कितनी सुन्दरता से अनुसरण किया है:—

अरे मल्लाह ला किश्ती, हमें उस पार जाना है।
बताना राह उस जाँकी, जहाँ बेदर्द कान्हा है॥

अब तक रावराजा अजीतसिंह के ३ ग्रन्थ प्राप्त हो सके हैं, सम्भवतः और भी रचनाएँ हों। इनकी रचनाओं से उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

(१) बृन्दावन रसोद्दीपन महत्पद:—(इस पुस्तक में केवल कड़का छन्द का प्रयोग हुआ है)

जयति जै जयति जै जयति जै राधिका स्वामिनी सकल ब्रज यूथ नागें
जयति वृंदा बिपन रुचिर जमुना पुलिन सुखद चित्त हरन नित बहत बागें
देब सुकदेब श्री सारदा शेष शिब कहत बृन्दा बिपन सोभ लागें
काम मद कोह दुख द्रोह लोभादि सब देषि बनसी बदुर दूर भागें
बसौं वृन्दा बिपुन लषो नित जुगल छबि सदाँ पहन बल सुख बढौ रागें
दीन अति हीन अब यही बिनती करत राधिका श्याम घन 'कृष्ण दासें

(२) विनय शतक:—इसमें राधा कृष्ण सम्वन्धी उपासना अनेक राग रागिनियों में वर्णन की है:—

राग विभाग

मेरी लाज नाथ अब आपहि।
तात मात सुर बंधु न कोऊ तुमहि हरहु भव तापहि॥
मोहि समान तिहुँ लोक पतित अरु कोऊ सुन्यों न हेर्यौ।
तुमहि पतित पाबन निगमागम अधम उधारन टेर्यौ॥
मोहि अधमाधम पतित तुच्छ अति समझ सरण प्रभु दीजें।
सुरनर मुनि स्वारथी सकल कोउ परमारिथ न पतीजें॥
तुम सिबाय और न हरि कोऊ जो भव दुक्ख मिटाबै।
'कृष्ण दासि' मोसे पतितहि प्रभु तुम बिन कौन तिराबै॥

राग मालकोस

काहे कों भटकत मन बौरे तकन तौ धीरज राख।
कृपा सिंध बृज राज स्याम कौ करि भरौस तजि माख॥
दै हैं तोहि तिराइ दयानिधि तेरी केतिक बात।
त्यार दिये बहु अधम कृपा करि तू फिरि क्यों घबरात॥

'कृष्ण दासि' की बात हाथ तुव सकल भांति गोपाल ।
आये सरण सबहि राखे जिम राखहु मोहि दयाल ।।

राग सिंधु भैरवी

जुगल कृपा भयौ सतक यह पूरण ।
नाना सँश्रत व्याध नसावन वन्यौ चटपटौ नवल सु-चूरण ।
सुनत पढ़त रति होहि निरंतर राधा कृष्ण चन्द्र पद पंकज ।
जिनकौं नवनि करत भव नारद सनकादिक मुनि शेष देव अज ।।
सँवत तत्व वेद निधि चन्दा मास विभूत श्याम पख नीक ।
तिथि सु प्राण भृगु वासर सुन्दर प्रात समय सुख दायक ठीक ।।
'कृष्ण दासि' यह दीन विनय मैं मति सम कीनी जुगल निहोर ।
बुध जन सोध कृपा करि लीजौ अज्ञ जानि मोहि छिम सव खोर ।।
जुगल किसोर विनय यह मोरी येही सब बिध जी की आस ।
भव दुख मेटि चरण रति दीजे शरण राखियै श्री बनवास ।।

(३) द्वादशाक्षरी:—इस ग्रन्थ में बारह खरी के क्रम से राम चरित्र का वर्णन किया है। अन्य कवियों ने भी वारह खरी लिखी हैं, किन्तु उन्होंने प्रत्येक अक्षर को १२ मात्राओं सहित लेकर नहीं लिखा है।

सिया राम पद बंदि पुनि श्री गुरु पद सिरनाय ।
राम चरित बारह खरी बरनौ मति सम गाय ।।

करी प्रार्थना बिधि कर जोरी ।
हरि महि भार चेरि यह तोरी ।।
कारज करि हों भई नभ बानी ।
धीरज धरि बिध महि सन मानी ।।
किरपन जिम धन ले सुख लहहीं ।
ऐसें प्रथ्वी उर सुख अह हीं ।।
कीर्ति मान दशरथ है राजा ।
अवध पुरी के माँहि बिराजा ।।

ठिठरे मनहुँ सीत के मारे ।
इतनहिं मुनि बशिष्ठ पगधारे ।।
ठीक बचन कहि कहि मुनि ज्ञानी ।
बहु बिधि समुझाईं सब रानी ।।

ठुर्सर ठुसर रोवहिं सबरे जन ।
मुनिबर चार बुलाये सुच मन ॥
ठूंठा कहि कहि चरन बुझाई ।
लावहु जाय भरत दोऊ भाई ॥

ज्ञ : गुण अमित महा सुखिरासी ।
भाषे बुधि सम 'कृष्ण सुदासी' ॥

क सों ज्ञ लो बारह खरी क्रमसों कहीं विचित्र ।
मात्रान युत अंक सब बरन्यों राम चरित्र ॥
राम कथा बिस्तार बड़ जस मत तस कहि गाय ।
काव्य चूक जहं होय जो लीजो गुनी बनाय ॥

सँबत ग्रह गुण निद्धि प्रभु शुभ दायक सुख खान ।
दुतिया श्राबरण मास तिथि असित सु पांडब जान ॥

९६—रामधुन:—ये क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे और भरतपुर निवासी जयकिसन के पुत्र थे। काव्य प्रेमी होने के साथ २ आपको ज्योतिष तथा वैद्यक से भी प्रेम था। ये व्यापार द्वारा जीवन निर्वाह करते थे। इनका कविता-काल सं० १९२५ वि० माना जाता है। उदाहरणार्थ छन्द प्रस्तुत है:—

कवित्त

मेख दन्त सेत भाल बृष इन्दु बन माल,
मिथुन त्रिसूल गुन कर्क बेद छाये हैं।
सिंह तन बिछौना गिरि कन्या कौ छौना तुल,
बृच्छिक बिशेष धन 'राम' चित लाये हैं।
मकर मन मनोरथ पुजावै ऋषि ध्यावें,
बर्णन करत लाल गंगाधर भाये हैं।
कुंभ गज आनन पै मीन मन कंज धरे,
रासि मिलि बारहु गनेस गुन गाये हैं॥

९७—रामद्विज:—ये जाति के ब्राह्मण थे और घनश्याम तथा शोभा [illegible] आदि कवियों के अखाड़ों में कविता पाठ किया करते थे। इनका कविता-[illegible] १९२५ वि० है। उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

छूम छूम छुमक छबीलौ छबि छप छप,
धप धप धारत धरा पैं पग दौगने।
लट पट लटक सु उरगौ मटक अंग,
झपटत चालै नटनागर तैं नौगुने।
भूसन के भार सों सिंगार कै सजे हैं गात,
बात ते बिसेख जाके बल बढ़ै सौगुने।
'राम द्विज' भनत तिहारौ रघुराज बाज,
चंचला ते चपल चलाकी चाल चौगुने॥

दोहा

कर गहि ना मरदन करौ, कछु न निकरै सार।
यह सिसकारी पीउ की, पाय न दूजी बार॥
चूरौ भंजन मतकरै, हे गंवार मनहार।
कै सिसकी पिउ सैज पै, कै सिसकी यह बार॥

पान के पिटारे खोल ऊंची सी दुकान बैठी,
आँखिन में पैठी करै बातन अड़ाके की।
पानन सों पान मेल आसिकन कों पान देत,
सिसकिन समेत फाल फोरत कड़ाके की।
कहै 'द्विज राम' करि सुरमा सों पैनी दीठ,
सूरमा लों मारै मार सैल के सड़ाके की।
बोलन अमोलिन मोल न बिसात मोहि,
रूप तक तोल में तमोलन तड़ाके की॥

९८—पीरु:—ये भरतपुर निवासी नन्नूराम ब्रह्मभट्ट के सुपुत्र थे और काव्य रचना द्वारा जीविका उपार्जन करते थे। इनके विविध विषयों के छंद पाये जाते हैं। इनकी भाषा टकसाली, उर्दू हिन्दी मिश्रित, मुहाबरेदार तथा लचीली है। इनका कविता काल सम्वत् १९३० वि० ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

मानों महताब सा खिला है क्या जमो पै देख,
जिस पर जुलूस एक दन्दा बुलन्द है।
शिकबि अम्बार सा चुनाचे हार गौहर का,
गुंचे गुमाँ का दस्त लड्डुआ पसन्द है।

'पीरु' बर्ग साले यों चढ़ावें खूब पूजा कर,
लेते ही नाम टलै आफत का फन्द है।
हुआ है न होगा जहाँ में, अक्लमन्द ऐसा,
जैसा महारानी कोहजा का फरज़न्द है॥

सोई संग सेज पैं नवेली बहू गौनायल,
नीबीं खोल नाह नें लगाई मौज गोता की।
मेल मेल जंघन भुजा में भुजा लाय लाय,
कीन्ही केलि कुंज में अनौखी बात सोता की।
'पीरु' भली भाँति सों जगी है अलसाय भोर,
कुच पै नखन रेख शोभा कहै को ता की।
मानौ रूप बाग बीच जोबन बहार समैं,
गद्दर अनार में लगी है चोंच तोता की॥

सवैया

आदि अंगूर मुदे अरबिन्द कोई दिन बाद लुकौट भये हैं।
'पीरु' पके गुलकाँक बिलोकत गेंदा गुलाब मिसाल छये हैं।
जोबन जोम नरंगिन के रंग- सेब सिरीफल आन ठये हैं।
कामिनि के कुच कंचन माँट से जोलो नये नहिं तौलों नये हैं॥

९९—हरिनारायन:—ये वैर के निवासी और जाति के जाट थे; किन्तु 'ठाकुर' कहलाते थे। आप आशु कवि थे और प्राय: ख्याल, लावनी तथा मरहटी (मरैठी) आदि तुरन्त बनाकर सुनाया करते थे। इन्होंने कविता में अपना नाम 'हरिनन्द' भी प्रयोग किया है। फुटकर छन्दों के अतिरिक्त इनके तीन ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं:—(१) रुक्मिणी-मंगल (२) भरतपुर-युद्ध और (३) रसिक मनोत्सव। रुक्मिणी-मंगल बड़ा ही रोचक ग्रन्थ है। इसकी भाषा सरस, सानुप्रास और प्रांजल है। इसमें करुण रस का बड़ा ही सुन्दर प्रवाह मिलता है। इसका रचना काल माघ शुक्ला ६ सं० १९३८ वि० है। इस ग्रन्थ की कथा द्वारा दूर २ के पंडित आज तक जीविका उपार्जन करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ठाकुर हरिनारायन अपने समय के सरस एवं प्रतिभावान कवि थे। आपका कविता-काल संवत् १९३० वि० के आस पास माना जाता है। इनकी कतिपय रचनाएं प्रस्तुत की जाती हैं:—

रुक्मिणी मंगल

सूत सौनकादिकन सों, कहिय सुकथा प्रसंग।
'हरिनरान' हरि जनन प्रति बरनी भक्ति उमंग॥

दशम कथा मति जया करि. भाषा करि 'हरिनन्द' ।
'कथा रुक्मिणी हरण' की, लीला गुण गोविंद ॥

राग झंझोटी

घर बैठे नारद मुनि आये आज कछू बड भाग हमारे ।
दरसन दिव्य दीये हमकूं सुख मोहन मुख मृदु वचन उचारे ॥
गति सरवज्ञ सरस जस निर्मल गावत रसिक राम के प्यारे ।
'हरनारायन' पै करि कृपा किह कारण आ। यहाँ पग धारे ॥

राग आसावरी

कान्हा यैहो तव तुम विध रानी कहत रसीले राग ।
भीषम नृपति सुता तन शोभा लक्षण भाग सुहाग ॥
सत्यवती बृतसील सयानी कृष्ण तुम्हारी माग ।
श्री 'हरनंद' कुमर सूं कहि मुनि प्रेम रंगीलो राग ॥

छन्द

कह रुक्म जनक मलीन बुद्धी, वृद्ध अति दुरमति बकै ।
दधि चोरि घर घर नचत ताकूं निज सुता कूं बर तकै ।
जो पूतना घाती निपाती मात भ्राता छलरता ।
पर तियन के हरि चीर प्रभुता इति गोकुल मनमता ॥

रन जरा सिंधु सरोस आगें भज गयो द्वारामती ।
कुबिजा परम प्रिय जासु रुक्मनि वर कहैं पितु लघुमती ।
सनबन्द प्रेम बिरुद्ध सम सों कीजिये यह नीति ।
परि रहै जिन नरन कों नित नित महा बिपरीति ॥

राग मरहठी

दृग दुखी दरस बिन देखें नागर नट के ।
सुन टेर श्रवन रथ फेरि लषन घट घट के ।टेक।
मैं नारद के मुख सुनी तब वृन्द घनेरे ।
जब ते हरि सुन्दर स्याम बसे मन मेरे ॥
कुंदनपुर में भये दुष्ट बिकट दुहूँ भेरे ।
मम सोक तिमिरि भंजन करि जगत उजेरे ॥
निस कपट सहाई मम घूंघट की पटके ।दृग दुखी०।

राग मरहठी

बनी एक जोगिन अलबेली, डालि गल फटकि माल सेली ।टेक।
पहर लीये कुण्डल कानन में, सीस तिरपुंड अलख मनमें।
जुगल जादू जुग नैननि में, लगी है भस्म सकल तन में॥
पूंगी नाद बजाइ कै, भिक्ष्या करलै जाइ।
मंत्र मोहिनी डारिकै, सज्जन लिये बुलाइ ।।
नाथ गुरु पूरे की चेली ।। बनी० ।।१।।
ओढ़ि मृग चर्म चन्द्र बदनी मदन अल मस्ती रति रमनी।
करन कमनेती चोट घनी, भंगोये भेष बसन कफनी ॥
द्वारई द्वार सुनाबती, पूंगी स्वाल सुजान।
दरसन देखन रसिक जन, बहुत फिरे हैरान ।।
किते जोगिन ते बाद खेली ।। बनी० ।।२।।
कूबरी करन धरन प्यारी, नागिनी लटका लट कारी।
कीलनी नागिन पर डारी, किये निज बस में नर नारी ॥
देश कामरू पढ़ी, बिद्या बीर बैताल।
मूर्छित भोगी बस किये, जोगीन केरे जाल ॥
भुरकनी बसीकरण पेली ।। बनी० ।।
घर ही घर खप्पर भरबाती, जरी जतर करि २ जाती।
चपल चपला सी चहचाती, प्रघट सन्यस्तिन गुण गाती ।।
तप की मूरति जोगिनी, ठगिनी सकल जहान।
दरसन देखन भटकते, 'हरिनरान' के प्रान ॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ।। बनी० ।।

दोहा

ये शुभ कथा बिबाह करि, श्रबण परीक्षत भूप।
पहुंचि द्वारिका करत हरि, नित नव चरित अनूप ॥

छंद

पहुंचे निकट हरि द्वारिका तिय नरन मारग भरि रहे।
धारत नगर में बग बगर घर घर जगर मग करि रहे॥
द्वारन कलश सोभित पताका देहरिन मणि खचित हैं।
माणिक झिलिल मिल चौक आँगन अमित रूप गुण रचित हैं॥

दोहा

जबते आई रुकमिनी महलन जगमग जोति।
रिद्धि सिद्धि बसुदेब गृह नित्त निरंतर होति ॥

कबित्त

जोवन अनंग अंग अंगन तरंग उठे,
सीसता सुहाग भाग सुन्दर रतीसी है।
सुधाके समुद्र में सरोज कली कोमल सी,
खिली सित रंग अति लंक पतलीसी है।
'हरिनंद' नदन प्रबीण मन मोल रतन,
मधुर मुख बोली करें अमृत झरीसी है।
रूप ऊजरीसी शील सांचे ढरीसी हरि,
कंचन छरीसी न परसी न परसी नरीसी है॥

॥..........................भरतपुर युद्ध

डीग भरपुर बैर बिकट बांकी ब्रज भूमि राजधानी।
हो फिरंट अंग्रेजों से अडबंगी नृपति जंग ठानी॥
कलकत्ते की अठकोंसल में नित होती बतकही सही।
हिन्दुतान में किला भरतपुर उस सरका कोई और नहीं।
छीन छीन कर जोर जुल्म कई राजों की ले लई मही।
लूटी भरी बादशाही अब दिल्ली में क्या खाक रही॥
कई करोड़ मंसूर अली से रुपे लिये जग ने जानी।
हो फिरंट अंग्रेजों..............................॥
फिर बोला अंग्रेज कंपनी का इकबाल सदां का है।
लहमे में सर कर लेंगे अडबीला जांट कहां का है।
दै मूछों पै ताब कहै स्यौसिंह हिन्द का नाका है।
मान हमारा कहा लेक मत लडै भरतपुर बांका है॥
जब बोला अंग्रेज तुम्हारे मौत सीस पर मंडरानी।
हो फिरंट अंग्रेजों..............................॥
दोऊ ओर से जुरे मोरिचे जंगी तोप जंजीर चले।
धुंआ घन घुमंड बद्दल में प्रलय काल के से बदले।
गुब्बारे गोले बज्जर बे तीर तमन्चे चले भले।
शक्ति शूल तलबार हजारों बार सूर सम्मुख झेले॥
गढ़ से बाहर निकल लड़ै जहांकी सेना मरदानी।
हो फिरंट अंग्रेजों से अडबंगी नृपति जंग ठानी॥
लेक फिरंगी आगें नृप ने खत लिख भेजा न्यारा है।
तें हल्ला बहु किये यार अब कें इक बार हमारा है।

घर से निकले जट्ट बाहर से हुलकर धर ललकारा है।
जिच्च फिरंगी किया जाय दस कोस पड़ा सोई हारा है।।
श्री महाराज रनजीत सिंह मूंछन रंग रही रजपूतानी।
हो फिरंट अंग्रेजों..।।

अठारह सै साठ की साल में साका हुआ बड़ा भारा।
हार गया अंग्रेज नृपत जीता रनजीत सिंह प्यारा।
जमना पार उतारे गोरे डोबे किते तेग धारा।
रसाल गिरि यो कहैं श्री ब्रजपति नरेश जस बिसतारा।।
हरनारायन मर्दों के साखे गावें सुनें ज्ञानी ध्यानी।
हो फिरंट अंग्रेजों..।।

१००–रामदयाल:–ये सोमवंशीय क्षत्री मोतीराम के सुपुत्र और भरतपुर निवासी थे। इनका जन्म संवत् १९०१ वि० तथा निधन १९५७ वि० में हुआ। इनका केवल एक छन्द इनके सुपुत्र बल्लभराम से प्राप्त हुआ है, शेष साहित्य नष्ट भ्रष्ट हो गया बताया जाता है। इनका कविता-काल सं० १९३० वि० ठहरता है।

कवित्त

सेसा से महेसा से नारद हू मगन रहै,
सनक सनंदन सु नाम सों लगे रहैं।
बालमीक ब्यास सुक ब्रंह्मा हू धरें ध्यान,
मारकण्डे भुसुंड हू सदा उर में धरे रहैं।
लोमस मुनि गौतम बसिष्ठ बिस्वामित्र,
सूत बालखिल्य हनु सिब हू जगे रहैं।
नाम देव दादू कवीर सूर राम चरन,
राम सरन रामदयाल भी खड़े रहैं।।

१०१–साधूराम:–ये कुम्हेर निवासी गंगाराम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता-काल संवत् १९३० से १९५० वि० तक ठहरता है। इनके रचित फुटकर छन्द पाये जाते हैं, जिनमें से कतिपय प्रस्तुत हैं:—

कवित्त

लूम झूम आय आय बरसें फुहारन ते,
सीतल पवन मनु मन्द चले न्यारी है।

गरजें घन घोर घोर, मोरा मचावें सोर,
छाई बन बागन बहु भाँतिन बहारी है।
चहक चिरैयाँ नदी नारन पै बोल रही,
तालन पै कोकिल की कूक लगै प्यारी है।
सरन पै सिन्धुन पै छाई छबि 'साधू राम',
पावस की सोभा स्याम रंग अतिधारी है॥

हाथ नहीं, पांव नहीं पर नहीं पूंछ नहीं,
मानस कौ माँस खावै किन कही जावैना।
मन में मगन रहै जानैं वह कहां रहै,
देखी ना किसी ने फूले अंगहू समावैना।
बादर मत जानौ दीजौ ज्वाब हुसियारी सूँ,
'साधू' सो बिचार सांचे छन्द क्यों बनावैना।
दंगल में आवै ख्याल मेरे पर लावै बाना,
छोड़ घर जावै एती बात क्यों बतावैना॥

१०२—दिगंबर:—ये शोभाराम के अखाड़े के कवियों में से हैं। विशेष खोज करने पर भी इनका वृत नहीं ज्ञात हो सका है। इनका कविता-काल सं० १९३० से १९५७ वि० तक है। उदाहरण स्वरूप इनकी एक रचना प्रस्तुत की जाती है:—

कवित्त

निकस गये हाकम हुकम के करन हार,
हाली औ मबाली बे हू अलग खड़े रहे।
आछे आछे महलन में परदा जड़े बाफता के,
खासे खासे पलंगन पै तकिया धरे रहे।
गज तुरंग सूरबीर चढ़त जाके भाल,
और तोषकखाने ते अलग डरे रहे।
तजौ देह-अंबर 'दिगंबर' पयान कियौ,
आसन बिभूत के से बासन पड़े रहे॥

१०३—गंगाबख्श:—ये भरतपुर निवासी सीताराम के सुपुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता-काल सं० १९३० से १९५७ वि० तक ठहरता है। इनके

केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हो सके हैं:— (१) अद्भुत रामायण और (२) महिम्न का भाषानुवाद; इनके अतिरिक्त राधा कृष्ण विषयक छोटी २ लीलाएं भी पाई जाती हैं। इनकी रचनाओं से यह स्पष्ट है कि ये साधारण श्रेणी के कवि थे, क्यों कि इनके छन्दों की गति में प्रवाह का अभाव पाया जाता है। उदाहरण देखिये:—

छन्द तोमर

नख दीर्घ ग्रीबा सोय, दीर्घ माथ चर्ण जोय।
बहु मुक्ख पीरे नेत्र, कोई सित्त कंटक हेत्र।
हुए बही कर्ण बखान, महाबल पराक्रमी जान।
सो हैं असँखन बीर, आनै प्रलै की समीर।
ऐसे जो गंगा गाय, घंट जाल नाद बजाय।
कोटिन बिक्रित आकार, सब युद्ध में हैं भार।
है ग्रीव स्वतल बीर, पिंगाक्ष जो है सरीर।
कोटिन सु बीरहि जान, कैसी जो बानी मान।

महिम्न भाषा कुंडलिया

बिजय नाम सम्बत प्रगट, गुन्नी सै अड़तीस।
मास भाद्रपद बर्ष ऋतु, सुक्लपक्ष बेदीस।
सुक्लपक्ष बेदीस, बेद पति तिथि को ईसा।
सो तिथि दसमी जान, बार सनि घटि चालीसा।
मूल नाम नक्षत्र, आयुष्मान दीसा।
बैधृत कर्ष सुजान, जबै यह रच्यौ कबीसा॥

१०४—ठाकुरलाल:—इनका जन्म सम्वत् १९०२ वि० में नन्दग्राम निवासी पं० प्राणसुख के यहाँ हुआ था। आप अपने नाना पं० रूपराम कटारे के पौत्र राव हरनाथसिंह के पास कामां में आकर रहने लगे। शिक्षा पूर्ण होने पर ये शिक्षा विभाग में कामां के प्रधान अध्यापक पद पर नियुक्त होकर अध्यापन का कार्य करने लगे। इनकी शेष आयु कामां में ही व्यतीत हुई। जहाँ इनके बंशज अभी तक विद्यमान हैं। शिक्षा विभाग के तत्कालीन उच्चाधिकारी पं० मयाशंकर से बिगाड़ होने पर इन्होंने उनसे सम्बन्धित एक छन्द बनाकर सुनाया, जिस पर अप्रसन्न होकर कारई में उनका स्थानान्तरण कर दिया गया। तत्कालीन शिक्षानिरीक्षक रामसहाय को उन्होंने निम्नलिखित दोहा लिख कर भेजा:—

"कित कामा कित कारई, परयौ बिपति में आय।
ठाकुर दास गरीब की, करियो राम-सहाय॥

इस दोहा के पहुँचते ही बाबू रामसहाय ने उन्हें पुनः कामा भेज दिया। कुछ दिन नोकरी करने के पश्चात् उन्होंने पेंशन ले ली और कामा के गोस्वामी बल्लभाचार्यजी के आश्रय में रहने लगे। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं:—

पावस वर्णन

कवित्त

पीउ पीउ रटत पपीहा निसि बासर हूँ,
घन घिरि आयौ नभ मंडल में छायौ है।
नाचत है केकी कीर कोकिला अलापें तान,
थर हरात हियरा सोर वनन मचायौ है।
लूम रही बेली बन सघन लतान माँहि,
हाँक सुनि दादुर की जियरा डरायौ है।
यह तो बरसात रहत बर साथ जाकौ,
जीबन जग ताकौ सु जानें पिय पायौ है।

बरस रहे धारा-धर धरा पै धाय धाय,
चमचमात चपला चित चाब को बढ़ाबनी।
देख घनघोर मोर करें चहुँ ओर सोर,
बगुलन की पाँति बहु भाँति ललचाबनी।
प्रबल प्रबाह नदी नीर हू गंभीर बहै,
साबन की रैन है मनोज सरसाबनी।
दरसत घटान की छटा-छबि मोद भरी,
जीबन सुफल कियौ पाबस सुहाबनी।

उपदेश कवित्त

हिल मिल रहिये प्रबीनन सों आठों जाम,
कीजिये जो काम जामें जीब को आराम है।
दीजिये दिखाई जाहि देखते की चाह होय,
लीजिये न नीच संग नाम बदनाम है।
कहै 'द्विज ठाकुर' समझ औ बिचार देख,
गर्व औ गुमान कौ रखैया एक राम है।

रूपसौं रतन पाय जोवन सौ धन पाय,
नाहक गमायबौ गमारन कौ काम है ॥

१०५—रामनारायण:—इनके पिता का नाम भीकाराम था। ये जाति के ब्राह्मण तथा तहसील डीग के अन्तर्गत खोह नामक ग्राम के निवासी थे। ये बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका रचा हुआ एक सुन्दर ग्रन्थ 'राधा मंगल' नाम का मिलता है। इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण का श्री राधा के साथ विवाह होना वर्णन किया है। इसका रचना-काल सँ० १६३३ वि० है। भाषा, सरस सुबोध एवम् पाण्डित्य पूर्ण है। प्रत्येक वर्णन में इतनी कुशलता है कि चित्र सा खिच जाता है। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

छप्पय

नीत सरोरुह स्याम काम सत कोटि लजाबत।
अरुन तरुन बारिज समान दृग अति छवि पावत।
पीत बरन कटि बसन दसन दामिनी बिनिंदित।
आनन अरुन उदोत ज्योति राको ससि निंदित।
मन चोरत मुनि मुसक्यान मृदु नेति नेति श्रुति कहत नित।
जन जान 'गुसाँई राम' उर करहु बास नित हित सहित ॥

त्रिभंगी

इक दिबस सयानी जसुधा रानी दधि मथबे कूँ आप लगी।
सुत कूं पय प्यामें गुन गन गामें दूध उफन तौ देख भगी॥
नहिं कृष्ण अधांये अति रिस छाये दधि मटकी के टूक किये।
माखन सो खायौ सेस लुटाऔ जब भय पायौ भाग दिये॥
गोपी सो आई देखि रिसाई खोज खोज लख जात भई।
पकरन को धामें हाथ न आमें तब मन में घबरात भई॥
माता पचिहारी कृष्ण बिचारी जन हित कारी ठहर गये।
पकर्यौ कर जाकें भौत रिसाकें बाँधन काजे दाम लिये॥
ओछी भई डोरी बहुतक जोरी तब मति भोरी होत भई।
तब प्रभु मुसकाए आप बँधाए माया के बस भूल गई॥
निज काज सिधारी इत बनबारी मन में सोच बिचार भले।
यों कहत गुसांई "रामनरायण" नल कूबर के पास चले॥

१०६—बालमुकंद:—यह जाति के तैलङ्ग ब्राह्मण तथा कामा के निवासी थे। इनके पिता का नाम मुरलीधर था। यह कामा के श्री गोकुलचन्द्रमाजी के

गोस्वामी बल्लभलाल के आश्रय में रहते थे। इनका जन्म सम्वत् १९०५ वि० है। इन्होंने 'कामबन-महात्म' तथा 'सनातन धर्म-विजय' दो नाटक लिखे हैं। इनका कविता काल १९३५ वि० ठहरता है। रचनाओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

गोपीजन मोहीं सब रूप देख मोहन कौ,
मृगी गन मोही सब मधुर सुर गान पै।
वक्ष-स्थल देखिकें रमाचित चंचल भयौ,
गाय सब मोहीं गोपाल लाल बान पै।
भक्त सब मोहे प्रभू भक्त-बत्सलता देख,
देब सब मोहे चार भुजा अभै दान पै।
देख के 'मुकन्द' चरनारबिन्द मोहे सन्त,
तीन लोक मोहे तेरी बाँसुरी की तान पै॥

सात दरबाजे और मन्दिर चौरासी जहाँ,
ऊंचौ एक महल सो प्रकट दिखात है।
अस्सी चार खम्भन की संख्या नहीं पूरी होत,
एक घट जात चाहे एक बढ़ जात है।
बिष्णु के सिंहासन चौरासी बने ठौर ठौर,
चरन पहाड़ी थारी भोजन सुहात है।
तीरथ चौरासीन को राजा बिमलेश जहाँ,
कामबन जात ताकौ काम बन जात है॥

१०७—प्यारेलाल:—ये अग्रवाल बैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका मुख्य व्यवसाय दुकानदारी था। इनका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ वि० के आस पास हुआ। इनका कविता काल १९३५ से १९६४ वि० तक माना जाता है। ये घनश्याम के शिष्यों में से थे। इनकी कविता का एक छन्द प्रस्तुत किया जाता है:—

कवित्त

घन घन गरज छाय मेघ नीर झरी लाय,
सीतल समीर बहै तीछ्त बामिनी।
कोकिला किलोल करें मोर बोलें चहुँ ओर,
कोप काम आयौ जी अकेली जान कामिनी।
'प्यारे जी' सरीर सुख सब कोऊ चाहत है,
कठिन कठोर है पराई प्रीत पामिनी।

मारैं डारैं मदन मरोरैं डारैं बादरबा,
दाये लेत दादुर दबाये लेत दामिनी ॥

१०८—देवीराम:—ये कामवन के निवासी और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म सं० १८९८ वि० में हुआ था। इनका कविता-काल संवत् १९३३ वि० बतलाया जाता है। इनके लिखे कुछ फुटकर कवित्तों से उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

तोमर त्रिसूल खङ्ग खप्पर बिराजै हाथ,
पास फाँसी चक्र गदा आयुध करालिका।
सिंह की सबारी कारी घटा छटा मान मारी,
टीकौ मृग मद सुचि दीपै लाल भालिका।
कलुआ मसानी भूत प्रेतन के दल संग,
भैरों अगबानी गल मुण्डन की मालिका।
बिन अपराध मोय दुष्ट दुख दियौ मात,
'देवी' दुख देबा कौ कलेबा कर कालिका ॥

खांय नाँय पेट में गबाबें नाम धूर धन,
देखौ बुद्धि रात दिन तौऊ तंग तौर हैं।
गाँठ नांय दाम पै बिनारें नाम काम काहू,
माँगन न जायं कहूँ धनिन की पौर हैं।
पर उपकार हेत तन मन बार देत,
आपनी बिरानी माहि कूद परें दौर हैं।
देस लाग आनि जिन सरबस दियौ 'देबी'
नरन समाज माहिं बेही सिरमौर हैं ॥

१०९—नत्थीलाल:—ये डीग के निवासी, जाति के ब्राह्मण तथा बलदेवराम के पुत्र थे। इनका जन्म सं० १९३८ वि० में हुआ था। ये 'द्विजनाथ' तथा 'नत्थन' उपनामों से कविताएं करते थे। इनकी तीन रचनाएं:—(१) विपरीत बोध (२) शुभागमन श्रीकृष्णसिंह यूरुप से और (३) शुभागमन श्रीब्रजेन्द्रसिंह मुद्रित हो चुकी हैं; सांगीत इन्द्रानन्द, वाँसुरीलीला और नागलीला अभी अमुद्रित हैं। इनकी फुटकर रचनाएं बहुत हैं; क्योंकि ये ब्रज भाषा के पुराने अण्डलीय कवि हैं। इनकी कविताओं के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

कवित्त

अनिल रची है दै दै ताव बिसकर्मा नें,
आसय पचाबन कौ शत्रुन अहारी है।
दलै बलंत बीर हर हर हंसत रहै,
दामिनी लपकै सीघ्र म्यान ते निकारी है।
भनें 'द्विजनाथ' महाराज श्री ब्रजेन्द्रसिंह,
तेरी भुजाली भव उदित मतबारी है।
झार देय झोरी सी होरी रन मचाबै अब,
भबन में भबानी भाखत बलिहारी है॥

मोहन मुकंद गिरधर, बृन्दा बिपिन बिहारी।
तुम चरणन की सरण हूँ, मैं प्रेम का भिखारी॥
स्वामी हौ सर्वदा हौ कर्त्ता हौ जग जनन के भेदी हो भगबान सब मनन के।
ज्ञाता हौ बिधाता हौ, दाता हौ निर्धनन के निरमूल धूल में से हो फूल जीबनन के।
जग आपका बना है, बिश्वेस बिश्वधारी, तुम चरन की सरण हूँ मैं प्रेम का भिखारी॥

११०—जानी बिहारीलाल:—ये जाति के औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मन्नूलाल तथा पितामह का सदाराम था। आप भरतपुर में प्रधान अध्यापक का काम करते थे। इनका कविता काल सं० १९५० वि० के आस पास है। इनकी रचनाएँ उस समय की पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती थीं। इस समय इन की ३ रचनाएं उपलब्ध हैं—(१) दम्पति द्युतिभूषण (नायिका भेद की उत्तम पुस्तक है। इस में कविता वहुत ऊंची शृंगार रस की देव और विहारी के भावों पर है। भाषा सरस प्रवाह युक्त है) (२) अष्टा अष्टक और (३) महिम्न। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

दोहा

अंजन दृग मंजन किये, खंजन भंजन मान।
गंजन कंजन दुख दिये, जन रंजन पिय जान॥
मनि मुक्ता हीरा जड़े, पन्ना लटकत कान।
मनों समर घर द्वार पै, झूमत सुभट जबान॥
जटित सींक नक स्याम मनि, छबि सुन्दर इमि देत।
अली बेध चम्पक कली, जनु पराग रस लेत॥

चित चकोर चितवत रह्यो, बदन चन्द दुति ओर ।
रवि ऊंचौ नभ चढ़ गयौ, तऊ न जान्यों भोर ।।
नीलाम्बर सों मुख ढक्यौ, यों दीखौ नदनन्द ।
कालिन्दी कल नीर बिच, झिलमिलात जिम चन्द ।।

विप्रलब्धा प्रौढ़ा (कवित्त)

उमग उमाहन सों सकल सिंगार साज,
पागी प्रेम पिय के सुआई सखि संग हैं ।
प्रीतम "बिहारी" केलि मन्दिर न पायौ तहां,
देख सूनी सेज उठी बिरह तरंग हैं ।
व्याकुल बिकल भई बेखबर बाल परी,
लिपटी लटकि लटी दोऊ मुख संग हैं ।
मानों आज भूमि पै सुधाधर ही पर्यो आय,
ताप तकि प्यासे अमी पीवत भुवँग हैं ।।

उत्कंठिता प्रौढ़ा (कवित्त)

आली नभ लाली सों दिखान लागी जागो निसि,
भागी भयौ सोर भोर होन ही चहत है ।
चहुँ ओर बोल रहे पंछी चौंचहाट करि,
चटक चट फूली कली फूल्यौ चहत है ।
अनत रति पाली न आये बनमाली मैंन,
रैन गई खाली जिय धीर न गहत है ।
तोहि कह्यौ प्यारी भोर आवत ही 'बिहारी' सों,
मान ठानि बैठो भोंन यो मन कहत है ।।

बेद न्याय साँख्य शास्त्र पाशुपति बैष्णव ये,
पांचों मत जुदे 'जुदे मारग बतावें हैं ।
मनकी इच्छानुकूल होय कें सुधर्मारूढ़,
गूढ़ इन पंथन में तर्क तज धावें हैं ।
तेही परिणाम मांहि अद्भुत अजन्मा एक,
अनंत अब्यक्त रूप आप ही कौ पावें हैं ।
सूधे असूधे मग बही भये सरिता सवै,
जैसे जाय अन्त एक सिन्धु में समावें हैं ।।

१११—जानी श्यामलाल:—आप भरतपुर के निवासी तथा जानी बिहारीलाल हैड मास्टर के छोटे भाई थे। इनकी कुछ रचनाएं प्राप्त हुई हैं जो इनके विद्यार्थी जीवन की सी प्रतीत होती है। आपका कविता काल सम्वत् १६५० वि० के आस पास रहा है। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

स्थावर जंगम जीव अपार। भोगत भोग, शरीरहि धार॥
'श्याम' सुजान कियौ निरधार। भाल लिखी लिपि को सक टार॥

चकोर छन्द

गोरस लै घरते चलती बन, श्याम अचानक गैल मझार।
रोकत टोकत लै लुकुटी कर, मांगत दान मचाबत रार॥
रूप सुधारस प्याय तबै वह, जाय बसे अब कोस हजार।
हाय कहाबत साँची भई सखि, भाल लिखी लिपि को सक टार॥

११२—मुकुन्द:—ये महाराजा जशवन्तसिंह के शासन काल में हुए थे और बयाना (भरतपुर राज्यान्तर्गत) के फौजदार गंगाप्रसाद के आश्रय में रहते थे। इन्होंने अपने आश्रयदाता के नाम पर 'गंगा पुराण' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें गंगा महिमा तथा राजनीति आदि का वर्णन है। इनकी कविता बहुत साधारण कोटि की है। इनका कविता-काल सम्वत् १६४० के आस पास है। कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं:—

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज सिर पर धारन कीन।
कवि 'मुकुंद' बर गुन कहे सरस्बती बर दीन॥

चौपाई

तीन नयन उपबीत भुजंगा। सदा बसत गिरिजा के संगा॥
ससि ललाट माथे पै राजै। भागीरथी जटा में गाजै॥
आदि कमंडल बिधि उपजाई। दुतिय सीस शंकर के आई॥
तहाँ अखण्ड एक गिरि भारी। जासों गो मुख निर्मल बारी॥

दोहा

भागीरथि सरनें गही, संत दरस हित लागि।
पातक जन के दूर कर, करे न्हान मन जागि॥

११३—जुगल किशोर:—ये जाति के ब्राह्मण तथा भरतपुर के निवासी

थे। ये बहुधा भरतपुर के कवियों के अखाडों में सम्मिलित हुआ करते थे और तत्काल रचना करके सुनाते थे। इनके फुटकर छन्द पाये जाते हैं। इनका कविता काल १९४० वि० के लगभग है। उदाहरण प्रस्तुत हैः—

कवित्त

बार बार हमसे इकरार किया आने का,
कह दो आप आओगे कौन से महीना में।
एती निठुराई मित्र भाई है तिहारे मन,
कपट की न बात करो दाग होत सीना में।
'जुगल किशोर' जुग फूटै नर्द मारी जाय,
जीती बाजी न हारो यह बात न करीना में।
आप सब प्रबीना कछु बुद्धि की कमी ना,
हाय ऐसा जुल्म कीना सो साफ त्याग दीना में।

११४—मंगलसिंहः—ये जाति के श्रीमाल जैन थे। आपके पिता नथमल श्रीमालों में भरतपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आपका रचना-काल १९४० वि० के लगभग है। इनके रचित चार ग्रन्थ—(१) 'होरी के रसिक जनों को निवेदन,' (२) 'तीर्थंकरार्चन' (३) जंबू नाटक, (४) मंगल भजनावली प्रकाशित हो चुके हैं; इनके अतिरिक्त २ अप्रकाशित ग्रन्थ और हैं जिनके नाम क्रमशः "श्रीमालौं का इतिहास" तथा पंच-पुष्प हैं। इनकी कविताओ के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैंः—

दोहा

कठिन प्रीत की रीति है, कठिन कर्म कौ नास।
भव सागर सों तैरबौ कठिन धर्म बिस्वास॥
बचन निबाहन कठिन है कठिन होत उपकार।
सम्पति में समता कठिन, अरु संयम कौ सार॥

पद

प्यारे पइयाँ परौ शिर नाय नाय, मौपै रंग जिन डारौ धाय धाय ।टेक।
लै गुलाल मुख पै लिपटानी, कर पकर्‌यौ मेरौ आय आय॥
पिचकारिन सों बिंदिया सरक गई,बिखर्‌यौ कजरा हाय हाय॥
देख श्याम तें कहा गत कीन्हीं, कहा कहौं घर जाय जाय॥
सखी कान ने बेगि मनाई, 'मंगल' हा हा खाय खाय॥

ज्ञान ध्यान धारणी अनेक दुःख टारनी,
त्रिताप को निबारनी संबारनी कबित्त तू।
जगत्त जोति जागनी सुहाय रंग रागनी,
सु प्रेम पूज्य भावनी सुभोगनी सरूप तू।
काम को बढ़ाबनी बढ़ाबनी अगूढ़ युद्ध,
मनको समझाबनी रिझाबनी रसिक्क तू।
शंभुनाथ भावनी, अगाध बुद्धि लावनी,
सुरंग रंग रंगनी तुरंग रंग भंग तू॥

११५—घनश्याम:—ये जाति के अग्रवाल वैश्य, और भरतपुर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८८४ के लगभग माना जा सकता है क्योंकि इनका स्वर्गवास ७० वर्ष की आयु में सम्वत् १९६४ में हुआ था। यह शोभाराम के समकालीन थे और अपने अखाड़े के प्रधान थे। इन्होंने अटल बन्द दरबाजे बाहर वड़ के नीचे गणेश मूर्ति की स्थापना की जहां कबियों का प्रतिमास अखाड़ा जमा करता था। अब भी गनगौरों की तीज के दिन वहाँ पर कवित्त आदि होते हैं। इनके बहुत से शिष्य थे। इनकी रचित 'यमुना लहरी' तथा 'नख सिख' दो पुस्तकें है, जिनसे कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते है। यमुना लहरी अप्राप्त है किन्तु उनके कुछ छन्द उन्हीं के शिष्य लाला कैलाबख्श बजाज से हमें प्राप्त हुए हैं:—

यमुना महिमा

मैं तो कलि काल की कलौंछ मेटवे के लिये,
आयौ तक तोय ताक वेद सुन लीयौ मैं।
भनै 'घनश्याम' नेक रबिजा तिहारे तीर,
नीर भरि हाथ में सु आचमन पीयौ मैं।
जबते सरूप नट-नटबर भयौ है भेस,
लेस न परत कौन पाप फस कीयौ मैं।
देबन कौ देवपति पतित बनाय मोय,
कान के समान कान कारौ कर दीयौ मैं॥

नख शिख

कैंधों मखमली सेज साजी पिय केलि काज,
कैधों रूप रमनीक मंगल कौ थल है:

कैधौं मृदु पानिप की धार की धरनता है,
कैधौं मुखचन्द हास कंचन कौ पल है।
कहै 'घनश्याम' किधौं क्यारी रोम केसर की,
सोभित है नाभि कुंड मैनका कौ जल है।
कुंवर किसोरी गोरी माखन ते मृदुल महा,
उदर अमोल गोल पंकज कौ दल है॥

कैधों नाग नागनी के छुटे भये नाग सुत,
कैधौं श्याम माबस के सोभित कुमार हैं।
कहैं 'घन सुन्दर' किधौं सुत मरकत के,
मसले मसाले डरे तम के से तार हैं।
काम के तुरंग फटकारबे को चौंर चारु,
कैधौं अनुराग मुख चन्द के सिंगार हैं।
कारे सटकारे भारे अतर फुलेल डारे,
मृदुल सुधारे न्यारे नबला के बार हैं॥

जमुना लहरी

प्रथम शशि स्थल में गौ लोक राखत हौ,
दूजै रबि मण्डल की किरन सुहाई हौ।
तीजै 'घनश्याम' भनैं जामन के बृक्ष पर,
चौंथें डार डारन मैं फल फूल छाई हौ।
पंच में प्रबेस हिमगिरि में घुसी हौ धाय,
षष्ठ में बिराट शृंग धूम छबि छाई हौ।
सप्त में चली हौ गौ लोक सों अपार धार,
राधिका कुमारि के कुमारि ढिग आई हौ॥

बिष्णु स्वास जल है सुजल पै एक कच्छप है
कच्छय पै शेष नाग फन बिस्तार है।
कहै 'धनश्याम' शेष नाग पै धरी है धरा
धरा पै धर्‌यौ एक भूधर अपार है।
भूधर अपार पै जामुन कौ बृक्ष एक
जामुन के वृक्ष पर फल दल बहार है।
फल दल बहार पर मारतण्ड मण्डल है
मारतण्ड मंडल में जमुना की धार है॥

११६—मुरलीधर:—ये शोभाराम के शिष्य थे। इनका जन्म सम्वत् १९१६ वि० तथा निधन सम्वत् १९९३ वि० है। मुरलीधर जाति के ठाकर राजपूत थे और महाराज कृष्णसिंह के इजलास खास में जमादार थे। इन्हीं महाराज ने आपको 'कविराज' की उपाधि से बिभूषित किया था। समय २ पर कितने ही स्थानों से समस्या पूर्तियों पर आपने पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किया था। यद्यपि ये विशेष पढ़े लिखे न थे तथापि नायिका भेद एवं अलंकारों का विशेष ज्ञान था। प्राचीन कवियों की कृतियों का आपने अच्छा अध्ययन किया था। कविवर ग्वाल पर इनकी विशेष श्रद्धा थी और उनके लिखे हुए छन्द आपको बहुत याद थे। आपकी तीन पुस्तकें मिली हैं:—(१) गज प्रकाश (२) वारुणि विलास और (३) दीग वर्णन; इनके अतिरिक्त आपके फुटकर छन्द भी बहुत मिलते है। आपकी भाषा सरल, सरस एवं प्रसाद गुण युक्त है। उदाहरणार्थ कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

वारैठे के महल बसंत दरबार होत,
सुखमा बिसाल कौं सुरेस लखि लाज है।
पीरे रंग अंग सजें भूसन वसन चारु,
सोभित है जैसे वीर रस कौ समाज है।
न्यौछावर नजर करें हैं सरदार सब,
उड़त गुलाल नाँच बाजन कौ साज है।
तामैं श्री ब्रजेन्द्र महाराज कृष्णसिंहजी ने,
'मुरली मनोहर' बनायौ कविराज है॥

प्रबल प्रतापी श्री ब्रजेन्द्र जसबंत सिंह,
जा दिन सिधारे स्वर्ग चढ़ कै बिमान में।
कामदार रैयत सिपाह आँख आँसू ढरें,
हाय हाय तो सौ ना नरेस भौ जहान में।
'मुरली मनोहर' महीपन कें सोच महा,
सात हू बिलायत सोक दसहू दिसान में।
भूपर मनुज रोबें, पेड़न पखेरू पुंज,
तारे ससि सूरज हू रौवें आसमान में॥

फील मुखड़े पै एक दन्दा की कमाल जेब,
माहताब सर पर झलकता नूर बन्द है।

तसबी तबल गुल लड्डू चार दस्त बीच,
पहने गले गौहर का हार हरचंद है।
'मुरली मनोहर' जुबां सों टुक नाम लेत,
बबलों को टाल करै जर बकसंद है।
हुआ है न होयगा जहाँ में अक्लमन्द ऐसा,
जैसा श्री गणेश कोहज़ा का फरजन्द है॥

उमड़ उमड़ ऐंड़ ऐंड़ कैं अगारी बढ़ैं,
ह्वै ह्वै कैं मगन मन युद्ध कौ उमक्करैं।
देख देख दूर तें झपट्टैं सरपट्टैं भरैं,
साँकर तुराय साफ तीर से लपक्करैं।
'मुरली मनोहर' सो मैंढ़ मुड़े सींगन के,
बज्र के समान भिरैं नैंक ना हिचक्करैं।
हक करें न धक करें न सक करें हिये में नैक,
छूटत ही बाजत धड़ाधड़ की टक्करैं॥

जाके रूप आगैं रूप रूप कौ न जान्यौ परै,
ऐसी तौ अनूप रूप होयगी न है गई।
रंभा सी रमा सी उर्बसी सी तिलोत्तमासी,
सची मैनका हू महा उपमा लजैं गई।
'मुरली मनोहर' निहारी वह एक बेर,
फेर ना खबर कहाँ कित में बिलैं गई।
छल ही छलाबा ही कि छला की छलन हारी,
आई आग लैन कौं सु दूनी आग दै गई॥

भीष्म प्रतिज्ञा (सवैया)

आज सुरासुर देखत ही रन बानन की बरसा बरसाऊँ।
मार रथीन महारथि हूँ भुबि सोनित की सरिता उमगाऊँ।
भीसम भौंह चढ़ाय कहौं 'मुरली' हरि हाथन शस्त्र गहाऊँ।
स्वर्ण-ध्वजा कपि की करिके तब तौ नृप शान्तनु पूत कहाऊं॥

कुंडलिया

दीने राधे कों सखी, गुथ बेला के हार।
जाने परें गुलाब के, जब कर लिये कुमार।
जब कर लिये कुमार, भये चम्पा गर धारत।
गुल सौसन के भये, नैन पुतरीन निहारत।

ज्यों के त्यों ही तुरत, बिहंस कें बेला कीने ।
ऐसे चरित दिखाय, कृष्ण चक्रत कर दीने ॥

राधे हंस चुगायवे, कर मुक्ता धरलीन ।
मुरली कर दुति अरुनसों, अरुन सु मुक्ताकीन ।
अरुन सु मुक्ता कीन, पर्‌यौ हंसन भ्रम भारी ।
दौरे चुगन चकोर, समुझ पावक चिनगारी ।
तबै कुंवरि मुख हंसी, भये सित लोहित आधे ।
तौ लागे दुहुँ लरन, करत यह कौतुक राधे ॥

दोहा

शाही फौज भजाय कें, दिल्ली कर उजरंत ।
कियो जवाहरसिंह नृप, यह दरवार बसंत ॥

कवित्त

प्यारी प्रिय संग रंग भौन में सुरति करें,
अंगन सों उमंग अनंग उछर्‌यौ परै ।
भूसित करत भई भूसन कहूँ के कहूँ,
जरी के दुकूलन तें बादला झर्‌यौ परै ।
'मुरली मनोहर' चहूँधा बगरन बार,
बदन अनूप श्रम स्वेद निचर्‌यौ परै ।
मानौं सुरभान ते हिये में भय मान चारु,
सुधा कौ प्रबाह सुधानिधि तें ढर्‌यौ परै ॥

११७—नवल किशोर:—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता युगलकिशोर तथा पितामह लक्ष्मीनारायण एवं प्रपितामह गणेश सभी कवि थे। कविता इनकी पैत्रिक सम्पत्ति थी। इनके बंशधर अब भी कवीश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका कविता काल सम्वत् १९४२ से १९७० वि० तक पाया जाता है। इनकी रचनाएं (१) जुगल विलास (नायिका भेद) (२) पथैना युद्ध (३) दुर्गाष्टक और (४) विवाहोत्सव (श्री कृष्णसिंह) हैं। इन्होंने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जो अलंकारों की छटा से सुसज्जित है। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

सवैया

चैन नहीं दिन रैन पर्‌यौ, जबते तुम नैनन नैंक निहारे।
काज बिसार दिये घर के, ब्रजराज पै लाज समाज बिसारे ॥

सो बिनती सुन मोहन मानियों,मोसों कभू मत हूजियों न्यारे।
मोहि सदाँ चित सों नित चाहियों,नीके के नेह निवहियो प्यारे॥

भुजंगी

झरें श्रोणधारा, गिरें भूमि माहीं।
गिरे बीर योद्धा, रही सुद्ध नाहीं॥
झरी मेघ की सी, लगी ताथरी हैं।
बधू इन्द्र की सी सु बूंदी परी हैं॥

पथैना युद्ध (रोला)

तोप शब्द घन घोर, रोर मोरन जब पारी।
मनौ पथैने माँझ, भई पाबस ऋतु भारी।
धूम उठै चहुं ओर, मनों बादर दलछाये।
उड़त पतंगा लखे, मनौं खद्योत जुधाये॥
बरसत गोला नाहिं, मनौं ओला सम झरकें।
गोलिन की पौछारि, परत ऊपर गढ़ ग्ररिकें॥
झमझमात समशीर, तेग चपला अति चमकें।
बक कतार ज्यों उड़त, तेई भाले ज्यों तमकें॥

दोहा

इत पावस ऋतु शिशिर में, दरसी है मधिकाय।
रे रे शब्द अपार है, कानन सुनी न जाय॥

कवित्त

शोभा कौ सदन, सब भाँति ते भरतपुर,
आनद अपार नित नये सरसत हैं।
तहाँ श्री ब्रजेन्द्र कृष्णसिंह महाराज राजें,
अमित उछाह रूप बंत दरसत हैं।
दीपन में दिपत दिलीप ज्यों महीपन में,
देखि देखि सुख ब्रजवासी हरसत हैं।
द्यौस द्यौस उत्सब ते उत्सव अनंत गुनों,
अंग अंग दूना दून रंग बरसत हैं॥

११८—कृष्णदास:—ये बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी तथा जाति के सूर्य-द्विज ब्राह्मण थे। इनके गुरू का नाम गोस्वामी गोपेश्वर महाराज था। इनका कविता-काल १९४५ वि० के आस पास है। ये नगर के तहसीलदार और उन्न

कोटि के कवि थे। यद्यपि इनके लिखे कितने ही ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, किन्तु हमें केवल तीन ग्रन्थ ही देखने को मिले हैं:-(१) रस विनोद–इस ग्रन्थ में रस, नायक-नायिका भेद और संचारी भाव आदि का सुन्दर ढ़ंग से वर्णन किया गया है। (२) भक्त तरंगिणी–इसमें भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कृष्ण के प्रेम पर पूर्ण रूपेण प्रकाश डाला गया है। इसकी कविता में नन्ददास के काव्य का सा आनंद आता है। (३) भगवत संलाप पीयूष–यह ग्रन्थ पं० फतहसिंह तथा मथुरा निवासी ब्रजजीवनदास के परामर्श से लिखा गया था। इस ग्रन्थ की रचना सर्व प्रथम संस्कृत में हुई, फिर हिन्दी गद्य में अनुवाद किया गया। इसके अवलोकन से उत्तर हरिश्चन्द्र काल की ब्रज भाषा के गद्य का आभास मिलता है। यह भक्ति रस प्रधान ग्रन्थ है। इनकी कविता के उदाहरण देखिए:—

खंडिता लक्षण

और तरुनि के चिन्ह सहित पिय जिहि घर आवें।
बुद्धिवंत अति चतुर 'खंडिता' ताहि बतावें॥

उदाहरण (दोहा)

कहाँ बसे निसि डर लसे दरस दिखायौ भोर।
कहें देत हिय धों लगी कठिन कुचन की कोर॥

कलहान्तरिता लक्षणम्

नहि माने जो मान मनायौ तरुनि रिसाई।
'कलहांतरिता' बनिता पुनि पाछे पछिताई॥

उदाहरण (दोहा)

गढ़ि गई कोर कटाक्ष की हियते बिसरत नाहिं।
रीसहि निदरत सुधि करत श्याम छबीलौ बाहिं॥

११९–ऊपरराय:–ये कामाँ तहसील के नौगांवा नामक ग्राम के रहने वाले थे और जाति के राय थे। इनका विशेष वृत उपलब्ध नहीं हो सका है। आपका कविता-काल सं० १९५० वि० के आस पास प्रतीत होता है। इनकी कविता का उदाहरण प्रस्तुत है:—

सुधा रस त्यागौ तौ न याकौ कछु अभिमान,
बिष अनुराग्यौ तौ न मोद उर आनि हैं।
जोग लिख भेजो तो हमारे तन भोग सम,
निहचै अधिक यह लीनी हम जानि हैं।
उद्धव जू ऐसे ही विचार कहियो सँभारि,
भूलत कहाँ है यह भूल बिष खानि हैं।

हमतो हैं बेही बेही और तें भये हैं और,
और तें भये हैं तेई और बात जानि हैं ॥

१२०—कृष्णलाल:—ये भरतपुर निवासी गुलाबसिंह के सुपुत्र और जैन मत के अनुयायी थे। इनका कविता-काल सं० १९५० वि० के आस पास है। इन्होंने "वियोग मालती" नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें इनका वंश परिचय मिलता है। इनकी कविता का उदाहरण देखिए:—

दोहा

चंचल चपला दामिनी, अधरन की जनु होल।
कोकिल कंठी बदन ते, निकसत नाँहीं बोल॥

मयन कुसुम भ्रकुटी रची, बनी अनंग कमान।
आप अहेरी जोवना, तकि तकि मारै बान॥

ये नैना बैरी अरी, करन चहैं कछु और।
रोके बनैं न रोकते, लगे रहैं छबि ठौर॥

१२१—कर्नल बहादुरसिंह:—आपका जन्म भरतपुर में एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्वत् १९१३ में हुआ था। आपके पिता भगवानसिंह यशवन्त काल में नमक विभाग के अध्यक्ष थे। स्वयं बहादुरसिंह सेना में कर्नल तथा तोसकखाना विभाग के मुन्तजिम थे। आप हनुमानजी के अनन्य भक्त और उच्च कोटि के कवि थे। ये 'बिहार' उपनाम से कविता करते थे। इन्होंने लगभग २१ ग्रन्थों की रचना की है। आपकी भाषा बड़ी ही सरल सरस, मुहावरेदार तथा आकर्षक है; उस पर प्रान्तीयता की छाप स्पष्ट दिखलाई देती है। जहाँ पर ख्याल, लावनी तथा शिषरणी आदि आते हैं, वहाँ कुछ २ खड़ी बोली का भी आभास मिलने लगता है। उदाहरण देखिये:—

सीता मंगल (कवित्त)

सागर सुधा के में सरूप कौं बनावै कच्छ,
तापर जमावै गिरि सुन्दर शृङ्गार कौ।
नरम नवीन सुचि रेसम की नेती कर,
मंथन मनोज यों सरोज कर धार कौ।
ऐते उपचारन ते प्रगट रमा जो होय,
तोऊ सकुचात मन कोबिद कुनार कौ।

सीता सम सीता जग और न पुनीता कोई,
गावैं बेद गीता जस सीता के विहार कौ ॥

केसर चमेली तेल हरद मिलाय सान,
उबट न्हवाय कें अंगोछे रंग भीने हैं।
मोतिन के काम की सुभायमान त्राण-पग,
कोमलता चोज के सरोज छबि छीने हैं।
तरुआ अरुन ध्वज अंकुसादि चिन्ह सोहैं,
मोहैं लेत रसिक 'बिहार' मन लीने हैं।
हीने भये हीरा मनि रीनें से दिखाई देत,
मीने हू अधीने नख भीने ससि कीने हैं ॥

राधा कृष्ण बिहार (सवैया)

बालक आइ बनें घर बीच बड़ौ अति बाहर होत खरारी।
क्यों नहिं रोकत मात जसोद लखै नहिं तू सुत के गुन भारी।
माखन भौन धरें दुबकाइ 'बिहार' कहैं पुनि लेत निहारी।
चोरत धाम सदा नवनीत बड़ौ अब ढीट भयो बनवारी ॥

कवित्त

बाग बन फूले सोई बस्त्र बहु रंगन के,
ध्वज फहरात जिमि अंचल उड़ावै है।
बाजत हैं दुंदुभी अनूप पग नूपुर सी,
कोटि कर किंकिनी सकल छबि छावै है।
चित्रित निकेत मनौं भूंसान जड़ाव जड़े,
कलस उरोज पै 'बिहार' ललचावै है।
मोतिन की झालर झमंक द्वार ऐसे रही,
जैसे तिय कंथ कों बिलोक सुख पावै है ॥

सुन्दर नवेली पिकबैनी मृग नैनी बाल,
आई है सिंगार साज छोड़ काम धाम कौ।
गावती मलारें औ निहारें मेघ-मालन कों,
आनंद बिचारें हिये ध्यान घनश्याम कौ।
सीतल सुगंध मंद चलत समीर तहाँ,
करत 'बिहार' चित चोर लेत बाम कौ।
जमुना के कूलै आज झूलै ब्रज दूल्है तीज,
प्यारी मन फूलै लख भूलै मन काम कौ ॥

सवैया

मोद बिहार कियौ पति संग पलंग पै केलि कला भल ठानी ।
भोर जगी मुख धोबन हेत लियौ कर में भरि नीर सयानी ॥
ही गज मूरति बिंद ललाट परी वह छूटि सुहाथ समानी ।
देख हंसी मुसिक्याय तिया इम डूबत हाथी हथेरी के पानी ॥

१२२—बाबू कन्हैयालाल:—ये भरतपुर निबासी मंगलसिंह के पुत्र और जाति के श्रीमाल जैन थे । इनका जन्म सम्वन् १९२८ के आस पास हुआ था। आप हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी तीनों भाषाओं के अच्छे ज्ञाता और उच्च कोटि के कवि थे । इन्होंने सात ग्रन्थों का निर्माण किया, जिनमें से पाँच प्रकाशित हो चुके हैं:—(१) भक्तामर स्तोत्र, (२) घनश्याम संदेसावा, (३) अंजना सुन्दरी नाटक, (४) रत्न सरोज नाटक और (५) शील सावित्री नाटक; प्रेममयी नाटक और रसिक सुन्दरी नाटक अभी तक अप्रकाशित हैं । आपका एक फुटकर संग्रह भी मिला है, जिसमें लगभग २००० छन्द विविध विषयों पर लिखे गये हैं । इनमें कुछ उर्दू की गजलें, कसीदे और अंग्रेजी की पोइम्स भी हैं । तारीख ३ फरवरी सन् १९३३ को लिखा हुआ अन्तिम छन्द देखिए:—

कवित्त

पाती के ऊपर ही पीतम के अक्षर पेख,
छाती सों लगाय मृदु होठ चूम लीनो है।
लीनी है निकार फार कागज समोद बाल,
बाँचत ही बांचत कछु मन्द मुस्कीनी है।
मन की उमंग झलमलत चन्द्रानन पै,
पत्रिका ने मंत्र फूंक कीनी रस भीनी है।
आमते सजन की का हम रोक लैहें गैंल,
कंचुकि दुराय सरमाय चल दीनी है॥

आपकी चमत्कार पूर्ण नवीन उक्तियों के सरस छन्द उदाहरणार्थं प्रस्तुत किये जाते हैं:—

गुण अवगुण जामें पर्‌यौ, वाहि नहीं बिसराय ।
चन्दन हू की आग लगि, देवैं देह जराय ॥
जोरौ या मन जोरिये, हम सों चार निगाह ।
पट घूंघट का कर सकै, हिय में पैठी चाह ॥
कहैं ब्राह्मण दीजिये, मिष्ट भोज निज हेत ।
स्वर्ग बैंक में कर जमा, लीजै ब्याज समेत ॥

सुन्दरि तेरी देह में, विदुत प्रबाह महान।
ताहि खोलबे कों लगे, कुच द्वै बटन समान॥

१२३—गुलाबजो मिश्र:—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्वत् १९२८ में हुआ था। ये संस्कृत और ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थे और हिन्दी में 'कंज' तथा 'भूमि कंज' उपनामों से रचनाएं करते थे। 'श्रीरामचरितमानस' के अद्वितीय विद्वान् होने के कारण आपकी ख्याति दूर २ तक फैली हुई थी। श्री हिन्दी साहित्य समिति से आपको विशेष प्रेम था, जहाँ मृत्यु पर्यन्त इन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। आपकी रचनाओं से कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं:—

कवित्त

आयौ है फागुन मची है धूम ब्रज भर में,
भोर ही ते कुंवर कान्ह रंग में रंगे रहैं।
संग में सुदामा श्रीदामा मधुमंगलादि,
लैं लै पिचकारी महा मोद में पगे रहैं।
गाबत कबीर सो उड़ाबत अबीर 'कंज',
मलत गुलाल गोरे गालन खगे रहैं।
चोवा और चन्दन की मची है कीच बीथिन मैं,
होरी खिलबारन के झुंड से लगे रहैं॥

आई फेर राधिका दई है टेर गोपिन कों
ललिता बिशाखा तुंगभद्रा सखी रहैं।
हारी मन भामा नेंक पकरि लेहु प्यारे कूं
करेंगी निहाल याहिं योंहि डरी रहैं।
एती सुन धाय जाय पकर लियौ कान्ह कूं
छीनी सब आल माल मोतिन लरी रहैं।
मलकै गुलाल गाल गुलचादै बेंदी भाल,
चूंदरि उढ़ाय ख्वार खूब करती रहैं॥

धर्म की मूरति है कि न्याय की सूरति है,
दया कौ दरयाब है कि दानी दानवीर सौ।
धीर कौ धरैया पर पीर कौ हरैया किधौं
दीनन कौ भैया औ खवैया खाँड़ खीर सौं।

गोधन कौ भक्त अनुरक्त बिप्र पाद पद्म,
सीतल और स्वच्छ शुद्ध गंगा के नीर सौ।
'भूमि कंज' कृष्णसिंह भूपति तिहारौ जस,
वरनौं कहाँ लों बाढ्यौ द्रोपदि के चीर सौ॥

लाज कौ जहाज है कि साज है मुसाहिवी कौ,
दृग अभिराम है कि मन्मथ कौ रूप है।
अरि उर साल है कि संतन प्रतिपाल किधौं,
राम जू कौ लाल है सुकीरति कौ स्तूप है।
राज काज दक्ष है प्रत्यक्ष है प्रभाव 'कंज,'
सैना संचालन में अद्भुत अनूप है।
राजन के राज महाराज श्री कृष्णसिंह,
जंबू द्वीप खंडन में तौलों तुही भूप है॥

जा दिन तैं प्राणनाथ साथ गये ऊधव के,
ता दिन तें गोपी ह्वै मौन धरी रहती हैं।
करके उपबास त्रास देकें निज देही कों,
प्यारे के वियोग जन्म सारे दुख सहती हैं।
'भूमि कंज' वार वार याद कर मोहन की,
आँसुन की नदी धार बीच चली बहती हैं।
गोपीनाथ गोकुलेश दर्श देवौ बेगि आय,
फेरि पछितैहौ हाय गोपी यों कहती हैं॥

जब लों जग माँहि सँयोगी सनेही सँयोग भरे सुख पायौ करें।
जब लों अरबिन्दन की कलियाँ अलि बृन्दन के मन भायौ करें॥
जब लों भुबि गंग की धार बहै नभ मंडल सूर्य सुहायौ करें।
तब लों ब्रजरानी हमारी सदाँ मन भाई सु तीज मनायौ करें॥

१२४—लक्ष्मीनारायन "काजी":—ये भरतपुर के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। ये संस्कृत और हिन्दी दोनों के प्रकाण्ड विद्वान् थे और दोनों में ही कविता करते थे। आप बड़ी सरल प्रकृति के थे और शिक्षा विभाग में अध्यापक का कार्य करते थे। इनकी मृत्यु के अनन्तर इनका काव्य संग्रह अस्त व्यस्त हो गया। इनका कविता काल सन् १९१५ के आस पास माना जाता है। इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिये:—

पतङ्ग

दर्शन देता नहीं पतङ्ग।
पूर्व दिशा में चमक रहे हैं, खद्योतों केसंघ ।
पेड़ पेड़ पर चमक चमक दिखलाते अपना रंग ।।
क्या इनके प्रकाश से बिकसित होंगे पंकज वृन्द ।
जिनके सौरभ से प्रमुदित हो, होते मत्त मिलिन्द ।।
क्या जग का तम पुंज नष्ट हो सकता घोर अमन्द ।
चक्रवाक दम्पति के भी क्या मिट सकते दुख द्वन्द ।।
इन्हें देख हो अपने मन में श्रद्धायुत सानंद ।
अभिबादन के साथ अर्घ्य क्या देंगे भूसुर वृन्द ।।
होंगे नहीं नित्य, नैमित्तिक, काम्य कर्म, रस रंग ।
जब तक नभ मंडल में दर्शन देगा नहीं पतङ्ग ।।

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग ।
रूप रंग के सिवा नहीं कुछ वल है तेरे तन में ।
इनके उपर फूल गया तू ज़ाकर उच्च गगन में ।।
यदि कोई मिल गया तुझे, तू लड़ने लगा उसी से ।
किन्तु प्रेम व्यवहार न तैंने किया पतंग किसी से ।।
'नदी नाव संयोग' कथन क्या तूने नहीं सुना है ।
बढ़ी हवा में गर्वित हो जो इतना आज तना है ।।
गुण भी है अति निर्बल तेरा जिससे उन्नति पाई ।
यह जब होगा नष्ट न जानें कहाँ गिरेगा भाई ।।
या तौ कण्टक मय पथ में पड़ छिन्न भिन्न होवैगा ।
अथवा किसी जलाशय में गिर रूप रंग खोवैगा ।।
संचालक को धन्यबाद दे रक्षा वही करेगा ।
नहीं एक झटके में तेरा काम तमाम करेगा ।।

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग ।
जिस प्रदीप पर बार बार गिरता है सहित उमंग ।
देख देख उसकी निष्ठुरता सभी हो रहे दंग ।।
इसके रूप रंग के कामुक कितने कीट बिहंग ।
प्राणहीन हो चुके बहुत से करके इसका संग ।।

तू समझा था, मेरे कारण जला रहा यह अंग।
तेरी भारी भूल हुई थी यह तो कीट बिहंग॥
स्नेह भरी इससे लिपटी है बत्ती जो मृदु अंग।
धीरे धीरे जला रहा है उसका भी यह अंग॥

१२५—सुन्दरलाल:—यह जाति के ब्राह्मण और डीग के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १९३२ वि० में हुआ था। इन्होंने केवल 'परसराम सांगीत' नामक ग्रन्थ की रचना की है। ये चौबोले बाज़ ज्ञात होते हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

लक्ष्मीबचन चौबोला

ससि मुख सुन्दर आपकौ, क्यों है नाथ उदास।
चिन्ता राहू बन ग्रसन, आई तुमरे पास॥
आई तुमरे पास, नाथ यह कारण कहा भयौ है।
कान्ति हीन छबि छीन देख मम उर में सोच छयौ है।
मोयहीन जलहीन मीन लख, मेरौ दुःख नयौ है।
कोटिन बृह्म सेस थके तब, भेद न काहू लह्यौ है॥
जान चरणन की दासी, कौन कारण सुख रासी।
मोय यह संसय भारी।
हे भगबंत आपकी माया प्रबल नचाबन हारी॥

१२६—माजी श्री गिरिराज कुंवरि:—ये महाराजा रामसिंह की धर्म पत्नी तथा महाराज कृष्णसिंह की माता थी। आपने कृष्णसिंह के शैशव काल में राज्य हित तथा प्रजा हित के लिये जो कार्य किये वह भरतपुर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित रहेंगे। स्त्री समज के कुरुचि पूर्ण गीतों को सुनकर आपके हृदय को बड़ी ठेस पहुँचती थी। अतः सद्भावना से प्रेरित होकर आपने सन् १९०५ ई० में स्त्रियों के गाने योग्य सुन्दर गीतों का एक संग्रह 'ब्रजराज बिलास' नाम से प्रकाशित कराया। इसके अतिरिक्त महिलाओं के दैनिक उपयोग में आने योग्य 'ब्रजराज पाकशास्त्र' नाम से एक और ग्रन्थ भी लिखा है। इनके गीतों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

ऐरी तोहि कहत लाज नहिं आवै, मोहि झूठौ दोष लगावै।
श्रबनन सुन्यौ नयन नहिं देख्यौ, को नन्दलाल कहावै।
क्यों बिन काज परी हो पीछे क्यों नित मोहि खिजावै।
श्वेत श्याम रातौ के पीरौ कैसौ बरण सुहावै।

इन बातन कछु हाथ न आवै नित उठि मोहि उड़ावै।
कित में रहत कौन कौ ढोटा कहा तू मोहि सुनावै।
को जानें झूँठी साँची तेरी हाँसी मोहि न भावै।
जौ तू मन-मोहन सँग मेरी प्रीत पुनीत बतावै।
तौ ब्रजपति सों लगी लगनियाँ लागी ये कौन छुड़ावै॥

कीरति ने ब्रज नार बुलाई
ताहि पठाई गोकुल नगरी, बुलबाये ब्रजराज कन्हाई।
चलत चलत इक सखी सयानी, नन्द महर के घर में आई।
कहत जशोदा सों ब्रज सुन्दर, कीरति ने बोले यदुराई।
महर हर्ष युत विलम न कीनौ, दिये तुरत गोविन्द पठाई।
ब्रजपति श्री बृषभानु के आये, गारी गावत नारि सुहाई।

बस नाँय मेरी बीर बंगला छवाय देती ॥टेक॥
महर यशोदा ये पकर बुलाय लेती, श्री बृष भानु ते गांठ जुड़ाय देती॥
बहन सुभद्रा ये पकर बुलाय लेती, श्रीदामा संग जोट मिलाय देती॥
कुन्ती फूफी ये पकर बुलाय लेती, लाड़ली के फूफा सँग ब्याहकराय देती॥

१२७—शंकरलाल— आप नगर निवासी प्रसिद्ध कवि रामलाल के भतीजे तथा हनुमंत के सुपुत्र थे। आपका जन्म असाढ़ सुदी ७ बुधवार संवत् १९३३ वि० को तथा निधन ज्येष्ठ सुदी ७ बुधवार सं० १९८३ वि० को हुआ। इनके रचित तीन ग्रन्थ हमें मिले हैं:—(१) हनुमन्त यश (२) राम कथा और (३) गान संग्रह। आप अपने समय के प्रतिष्ठित कवियों में गिने जाते थे। उदाहरण देखिए :—

हनुमान यश (कवित्त)

अति बल धाम तेज पुंज उपमा के जिन,
काम मद भंज इन्द्र हू के मान मारे हैं।
कहि "हनुमंत सुत" राम जू के प्यारे अति,
काज सिय सारे घने निश्चर बिदारे हैं।
संकट निबारे निज दासन के त्रास हरे,
अधम उधारन अनेक दुष्ट मारे हैं।
गारे हैं गुमान मेघनाद पुनि राबन के,
ऐसे हनुमान सदा रक्षक हमारे हैं॥

२४ अवतार वर्णन (छप्पय)

मच्छ कच्छ नरसिंह कोल दुजराज राम बल ।
बावन कृष्ण सुबुद्ध कल्कि नाशक मलेच्छ दल ।
ब्यास प्रभू हरि हंस जग्य हयग्रीव बखानो ।
मन्वंतर ध्रुव रिषभदेव धनवंतर मानो ।
कपिल देव सनकादिक बद्रिनाथ क्रीड़ा करन ।
हनुमंत सुबन 'शंकर सुकवि' चतुर बीस लीजै शरण ।।

१२८—सत्यनारायन कविरत्न:—इनका जन्म २४ फरबरी १८८० ई० तद्नुसार माघ शुक्ला १३ सोमवार संबत् १९३६ वि० को सराय नामक ग्राम (आगरा) में हुआ था। कहते हैं जिस समय कविरत्न का जन्म हुआ, उस समय इनकी माता की दशा बड़ी करुणा जनक थी, और वह दीन हीन निस्सहाय अवस्था में इधर उधर अबोध बच्चे को लेकर भटकती फिरती थीं। इनकी माता पढ़ी लिखी होने से अध्यापन कार्य करती थीं। संयोगवश इसी गाँव के मंदिर के महन्त रघुवरदास का इनको आश्रय प्राप्त हो गया। रघुवरदास को पढ़ने लिखने का व्यसन था और इनके यहां हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह भी था। ऐसे साहित्यिक वातावरण में पालन पोषण होने के कारण सत्यनारायण की काव्य से अभिरुचि होना स्वाभाविक था। अत: ये बाल्यावस्था से ही काव्य रचना करने लग गये। बचपन का ये काव्यांकुर आगे चल कर पल्लवित एवं पुष्पित होने लगा, यहाँ तक कि इनकी कविताएं इतनी उच्च कोटि की होने लगी कि तत्कालीन विद्वत् समाज मंत्र मुग्ध होकर मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा करने लगा।

कविरत्न अध्ययन काल से ही भरतपुर आते जाते थे क्यों कि विरक्त मंदिर के महन्त जगन्नाथदास अधिकारी एवं मयाशंकर याज्ञिक से आपका अधिक सम्पर्क था। ये दोनों हिन्दी के माने हुए विद्वान् और काव्य प्रेमी थे। भरतपुर से प्रेम होने का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि इनको रसिया सुनने का बड़ा चाव था और भरतपुर में रसियों का बहुत प्रचार था। श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने इनकी जीवनी में लिखा है कि 'कविरत्न के आग्रह करने पर उनको एक वार हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, में अनेक रसिये सुनाए गए, जिनमें से उनको यह टेक बहुत पसंद आई- 'बछेरी डोलै पीहर में'। सत्यनारायन को केवल रसिया सुनने में ही आनंद नहीं आता था अपितु रचने में भी। तत्कालीन महाराज किशनसिंह के अधिकार प्राप्ति के अवसर पर आपने निम्न रसिया स्वयं रचकर सुनाया था:—

बनि दुलहिन सी रही आज, भर्तपुर नागरिया ।
द्वार द्वार में लिखना काढ़े, जुर्‌यौ उछाह समाज ।
भर्तपुर नागरिया ॥

सत्यनारायन भरतपुर निवासी मयाशंकर याज्ञिक तथा अधिकारीजी का बड़ा सम्मान करते थे। मयाशंकर याज्ञिक के आग्रह से ही अपनी चिकित्सा के लिए सन् १९१३ ई० में आप भरतपुर पधारे, जहाँ वैद्य बिहारीलाल तथा डाक्टर ओंकारसिंह परमार से स्वाँस रोग की चिकित्सा कराई। यें याज्ञिकजी का कितना आदर करते थे, इस सम्बन्ध में भवानीशंकर याज्ञिक लिखते हैं:—"पूज्य" काकाजी (मयाशंकर) उनके विवाह से संतुष्ट न थे, काकाजी ने कविरत्न के अन्य मित्रों को भी इस सम्वन्ध को तोड़ने के लिये बाध्य किया, परन्तु सब व्यर्थ हुआ। विवाह हो जाने के बाद वे श्री गिर्राज की परिक्रमा को हर पूर्णिमा को जाया करते थे। ये उनकी बीमारी की मनौती के लिये करना पडा था। काकाजी से मुंह छिपाते थे, परन्तु एक बार गोवर्धन से सत्यनारायन दीग पहुंचे। काकाजी उन दिनों वही नाज़िम थे। मिलना पड़ा। उन्हें देखते ही लज्जा, पश्चाताप आदि के कारण कविरत्न एक दम रो पड़े"।

साहित्य मर्मज्ञ होने के कारण अधिकारी जगन्नाथदास के पास इनका विशेष आना जाना रहता था। इन्हीं अधिकारीजी से परामर्श के लिये इन्होंने अपनी 'हृदय तरंग' नामक पुस्तक भेजी थी, जिसे किसी ने इनके पास से उड़ा दिया।

अधिकारीजी के साथ प्राय: ये गोवरधन परिक्रमा के लिये जाया करते थे। एक बार आषाढ़ की पूर्णिमा को अधिकारीजी ने इनके साथ चलने का कार्यक्रम बना कर जाने से मना कर दिया। इस पर इन्होंने निम्नलिखित पद लिखा:—

तुम्हें शतश: धिकार ।
तिरस्कार के योग्य आप हो अब से सकल प्रकार ॥
इक्के को छुडवाया हमसे देकर धोखा भारी ।
प्रण पूरा न किया पुनि तुमने इसी योग्य अधिकारी ॥
देकर हमको धोखा ऐसा क्या फायदा उठाया ।
बहाँ ठहर क्या अंडा सेया कैसा चित भरमाया ॥
पुण्यतीर्थ को छोड़ वृथा ही कोरा क्लेश कमाया ।
चमचीचड चमगद्दड तुमने इसको वृथा सताया ॥
कारण लिखिये ठीक अगर हो क्षमा-प्राप्ति की आशा ।
नहिं तो रसिया गाते फिरिये लिये हाथ में ताशा ॥

उन्हीं दिनों भरतपुर में प्राचीन हिन्दी पुस्तको की खोज हो रही थी, जिसमें आपने पूर्ण योग दिया। इन प्राचीन पुस्तकों के अध्ययन से कविरत्न की कविता शक्ति बहुत अधिक बढ़ गई, जिसको उन्होंने कई वार स्वोकार भी किया है। इसी खोज में महाकवि सोमनाथ कृत "माधव विनोद' पद्यात्मक नाटक के बीच के पृष्ट प्राप्त हुए जिन्हें देखकर इनको "मालती-माधव" लिखने की प्रेरणा मिली। यह ग्रन्थ भरतपुर में ही लिखा गया। कठिन स्थलों के आने पर ये राज-पंडित गिरधारीलाल से अर्थस्पष्ट कराया करते थे।

जिस प्रकार कविरत्न को भरतपुर और यहाँ के साहित्यिकों से प्रेम था, उसी प्रकार हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति से भी। यह संस्था सन् १९१२ ई० में बनी थी और तब हीं से इसके बार्षिक अधिवेशनों और कवि सम्मेलनों में कविरत्न निरंतर आते रहते थे और अपनी सुन्दर२ कृतियों द्वारा जनता को प्रफुल्लित किया करते थे। कुछ छन्द प्रस्तुत हैं:—

भारती बन्दना

जै जै मंगलमयी भारती, अखिल भुवन की वानी।
अनुपम अद्भुत अमल प्रभा, जिह सकल जगत छहरानी॥
ब्रह्म-विचार-सार में नित रत, आदि-शक्ति महारानी।
विश्वव्यापिनी श्रुति- अलापिनी, सुखद, शुद्ध कल्यानी॥

ब्रह्मचारिनी, बीनधारिनी, दयामयी, शुभ-दैनी।
नवल कमलदल आसन राजत, नवल कमल दल नैनी॥
जगमगात मंजुल मुखमंडल, जगत पुनीत प्रकासा।
जासों विविध अविद्या तम को होत तुरन्त विनासा॥

ऐसी वरदे शक्ति मुक्ति दे, अहो शारदे माई।
करत विनय तुमसों हम सब यह स्वीकृत करु हरसाई॥
तुम ही हो मा! सकल भांति सों, या भारत की आशा।
प्रगटें हृदयभाव कहु कैसे बिन बानी बिन भाषा॥

जासों भारति! भारत-जन की रसना सदा विराजो।
ऐसे दिये बिसारि देवि! क्यों? मुदित दया निज साजो॥
जग के और और देसनि हित जैसी तुम सुखदाता।
जानि स्वजन भारत हूँ को तिमि द्रवहु भारती माता॥

जबलों भारत देश विश्व में जीवित नित मन भावै ।
तबलों नाम भारती अविचल अजर अमर छवि पावै ॥
आवहु २ शीघ्र शारदे ! वृथा विलम्ब न कीजै ।
या भारत की दीन दशा लखि क्यों नहिं हीय पसीजै ॥

बिगर्‌यो कछु न यहां सुनि अजहूँ, हरहु हियो अँधियारो ।
स्वागत २ जननि तिहारो पुन निज भवन संवारो ॥
सहृदय सुभग सरसता सब के हृदय माँहि सरसावो ।
सुमति-प्रभाकर की पुनीत प्रिय सुखद प्रभा परसावो ॥

हृदय २ मधि होइ प्रफुल्लित नवल कली अभिलाखें ।
मन मलिन्द नित गुञ्ज २ कर निज अभिमत रस चाखें ॥
नित जातीय समुन्नति हित में सकल सुजन अनुरागें ।
भेद भाव तजि निरखें शोभा निज २ निद्रा त्यागें ॥

कार्य्य कुशल ह्वों सकल भांति हम निज कर्त्तव्य विचारें ।
वर्तैं प्रेम परस्पर सब सों प्रेमभाव संचारें ॥
परम सौख्यप्रद होइ देश यह ऐसी सुदया कीजै ।
तुव चरनन में निरत रहे मन सत्य रुचिर वर दीजै ॥

उपालम्भ

माधव आप सदा के कोरे ।
दीन दुखी जो तुमकों यांचत सो दानितु के भोरे ॥
किन्तु बात यह, तुव स्वभाव वे नैकहु जानत नाहीं ।
सुनि २ सुयस रावरौ तुव ढिग आवनकों ललचाहीं ॥
नाम धरै तुमकों जग मोहन ! मोह न तुमकों आवै ।
करुणानिधि तुव हृदय न एकहु करुणा बुन्द समावै ॥
लेत एक को देत दूसरेहि दानी बनि जग माहीं ।
ऐसो हेर फेर नित नूतन लाग्यो रहत सदाहीं ॥
भांति २ के गोपिन के जो तुम प्रभु चीर चुराये ।
अति उदारता सों ले वेही द्रोपति कों पकराये ॥
रतनाकर कों मथत सुधा को कलस आप जो पायो ।
मन्द २ मुसकात मनोहर सो देवन कों प्यायौ ॥

मत्त गयन्द कुवलिया के जो खेल प्राण हर लीने।
बड़ी दया दरसाइ दयानिधि सो गजेन्द्र कों दीने॥

करि के निधन बालि रावण कों राजपाट जो आयो।
तहं सुग्रीव बिभीषण कों करि अति अहसान बिठायो॥

पौंडरीक को सर्वनास करि माल मता जो लीयो।
ताकों विप्र सुदामा के सिर कर सनेह 'मढ़ि दीयो'॥

ऐसी 'तूमा पलटी' के गुन 'नेति नेति' श्रुति गावैं।
शेस महेस सुरेस गनेसहु साहसा पार न पावैं॥

इत माया अगाध सागर तुम डोवहु भारत नैया।
रचि महाभारत कहूँ लरावत अपु में भैया भैया॥

या कारन जग में प्रसिद्ध अति 'निबटी रकम' कहाओ।
'बड़े २ तुम मठा धुवारें' क्यों साँची खुलवाओ॥

बेसाख

माधव तुमहुँ भये बेसाख।
बुही ढाक के तीन पात हैं, करौ क्यों न कोउ लाख॥

भक्त अभक्त एकसे निरखत, कहा होत गुन गायें।
जैसो खीर खवायें तुम को वैसोहि सींग दिखायें॥

सबै धान बाईस पसेरी, नित तोलन सों काम।
बलिहारी, नहिं विदित तुम्हें कछ ऊंच नीच कौ नाम॥

बे पैंदी के लोटा के सम, तव मति गति दरसावै।
यह कछु को कछु काज करत में, तुमहिं लाज नहिं आवै॥

जगत-पिता कहवाय, भये अब ऐसे तुम बेपीर।
दिन दिन दुगुन बढ़ावत जो नित द्रोह-द्रोपदी-चीर॥

जुगकर जोरि प्रार्थना ये ही निज माया धरि राखौ।
सत्य दीन दुखियनु के हित कों सदय हृदय अभिलाखौ॥

१२६—गंगाप्रसाद:— ये जाति के ब्राह्मण तथा डीग के निवासी थे। इनके पिता का नाम गनेशीलाल था। आपका जन्म सम्वत् १९३४ वि० में हुआ। इनकी रचनाओं में 'विनयपच्चीसी' तथा कुछ फुटकर कवित्त देखने में आये हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

दोहा

बूढ़त ते गजराज कों, छिन में लियौ उबार।
मो अनाथ की बेर कों, क्यों कर रखी अबार॥

सवैया

ग्राह ग्रस्यौ गजकों जल में, बल वा गज कौ कछु काम न आयौ।
बूढ़त बेर भयौ अति कष्ट, तबै मन तो पद-पद्म में लायौ।
टेर सुनी गज की यदुनन्दन, आतुर ह्वै अति जाय बचायौ।
'गंग' की बेर न काहे सुनों, हरि ऐतो बिलम्ब है काहे लगायो॥

कवित्त

लाज रखि हिन्दी की, हिन्द-पति दीनानाथ,
तेरौ प्रण सदां ते रह्यौ दीन हितकारी है।
जितनी हू भाषा हों प्रचलित जगत माँहि,
हिन्दी ही भासा सब भाषन सरदारी है।
इहिके अधार पर भाषा देस देसन की,
पहेलैं ही ब्रह्मा निज मुखन उचारी है।
'गंग द्विज' भाखें चारों वेद भरें साखें,
हमतो हैं हिन्द के अरु हिन्दी हमारी है॥

१३०—बैद्य दैवीप्रकाश अवस्थी:—इनका जन्म सम्वत् १९४०वि० के आस पास डीग में हुआ था। ये आयुर्वेद के विद्वान् और राजकीय औषधालय, भरतपुर, में प्रधान वैद्य थे। अनुसन्धान-कार्य में अभिरुचि होने के कारण, भरतपुर के प्राचीन कवियों के जीवन-वृत्त खोजने में आपने बड़ा योग दिया। अवस्थीजी को काव्य से विशेष रुचि थी और 'मथरेश' उपनाम से कविता करते थे। इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिये:—

कवित्त

भारत में बृद्ध कुरु बृद्ध क्रुद्ध जुद्ध जुरयौ,
लयकें सरासन बाढ़ बानन की झारी है।
अर्जुन के रोकें रुक्यौ तेज बल न बाबा कौ,
खिसियानौ रथी जानि रिसियानौ मुरारी है।
चक्र गहे हाथ पट-पीत फहरात पाछे,
भीषण ह्वै भीषम पै सु धायौ गिरधारी है।

शान्तनु कुमार देखि हर्षि कर जोड़ भाख्यौ,
भक्त प्रण राख्यौ भक्त बत्सल बलिहारी है।

असद खान ग्राह नें कोल कौ गयन्द घेरयौ,
टेरयौ श्री सुजान तानैं आरत उचारी है।
दीन की गुहार सुनि करुणा निधान कोप्यौ,
रोप्यौ रण चंड जाय चंड्यौसी मंझारी है।
असद की अनी कनी घनी बनी ठनी तहाँ,
गनीन सो कनी कनी करिकें बिदारी है।
फते कों बचाय फते पाई खानजादौ हन्य,
धन्य बदनेश नन्द तेरी बलिहारी है॥

शारदीय सीजन के शुरू होने पहिले ही,
शहर में आन पड़ी फीबर की छाबनी।
जुल्म जोर ज्वर केसे मजलूम पुरबासी,
अस्थि शेष हूये हुईं सूरत डराबनी।
तिल्ली औ जिगर ने भी मौका पा अटैक किया,
जिससे पिटीसी पीली तनकी प्रभा बनी।
शासक मलैरिया के शासन से शासित हो,
किसकी है ताब कहै शरद सुहाबनी॥

भरतपुर की नारी बृद्धा युबा बारी सब,
दर्श कों उमाहीं छांई छत्तन चौबारे की।
होंसी २ हंसानीं सीं ग्रीबन उठाय ऊंची,
ललचोंहे लोचनन जोहें बाट प्यारे कीं।
आई है सबारी जब सम्मुख सहर्ष उठीं,
केतीं बढ़ीं आगे केतीं दौरीं ओर द्वारे की।
उझकि झरोका केती झुकि झुकि झाँक झाँक,
झिझकी सी झांकी करैं ब्रज रख बारे की॥

मत का मदपीकर मत बनौ मत बाले,
छोड़ौ प्रान्तीयता को भी इसी में बुर्द बारी है।
मौके को देखौ समझ से भी काम लेना सीखौ,
बहुत कुछ खो चुके और खोने में ख्वारी है।

फूट का सिर फोड़ के एकता का सहारा लो,
एक स्वर से कहदो मादरे हिन्द प्यारी है।
बेटे हैं उसके हम शेर से पैंतीस कोटि,
राष्ट्र भाषा हिन्दवी है क़ौम हिन्दी हमारी है॥

भूलि निज गौरव क्यों धूल में पड़े हौ मित्र,
ऐसी क्या खुमारी सारी सुध बुध बिसारी है।
पड़ा देखि तुमको हा ठोकर दे विश्व सारा,
आगे से हटा के तुम्हें बढ़ गया अगारी है।
अब तौ उठि अपने अस्तित्वका प्रमाण दो,
पैंतीस क्रोड़ कंठों की गर्ज्जन से प्रचारी है।
हम हैं महान हिन्दी हिन्द है हमारा देश,
विश्वभर से वरिष्ट भाषा हिन्दी हमारी है॥

डंका दै असंका चढ्यौ दिल्ली गढ़ बंकापर,
लाल दरवाज्यौ तोड़ पैठौ मंझारी है।
हाट बाट घाट घर सबही लुटाय लीन्हे,
जोर समसेर के सों जेर कर भारी है।
भागे खानजादे मीरजादे शाहजादे छोड़,
होड़सी पड़ी हैं देखें भागै को अगारी है।
शाह कों अछत राखि लूटी बादशाही खूब,
सूरज महान सान तेरी बलिहारी है॥

मरठ्ठन के ठठ्ठन झपट्टन झट्ट चढ्यौ,
है कैं हरावल अम्बरेश के अगारी है।
अरिकौ अराव्यौ हेरि हरि सौ सुजान टूट्यौ,
मोरच्यौ मल्हारे ही सों लीनों बलधारी है।
घेरि दल दक्खन कौ लक्खन बिदारि डारे,
कोसन लों रेदि रेदि कीनी खूब ख्वारी है।
कच्छ कुल रच्छ कच्छपेश कह्यौ काच्छपी में,
तुझ सा न सूर सूजा दूजा बलहारी है॥

आया उधर से दल अहमद अफगानी का,
इधर से चमू चली भगवा निशान की।

पानीपत पाबनसू मोरचा बनाके डटे,
बैठे रण विज्ञ बात सोचैं अभियान की।
नाच उठी भारत की भावी सदासिब सीर्ष,
औंधी हुई बुद्धी उस जर्नल महान की।
होती न यों हीनदशा हिन्दी हिन्द हिन्दुबों की,
मानता जो भाऊ कहीं सम्मति सुजान की॥

१३१—बलदेव प्रसादः—आप जाति के ब्राह्मण और झाँसी जिलान्तर्गत मऊ-रानीपुर ग्राम के निवासी थे। आरम्भ में ये झाँसी में कानूनगो पद पर कार्य करते थे, किन्तु उच्च पदाधिकारियों से मत भेद होने के कारण अपने पद से त्यागपत्र देकर भरतपुर चले आए और सांतुरुक ग्राम (तै० कुम्हेर) में राज्यकीय पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगे। ये बाल ब्रह्मचारी और स्वभाव के बड़े अक्खड़ थे। हिन्दू आचार विचार में आपकी पूर्ण निष्ठा थी और विद्यार्थियों से किसी प्रकार की दक्षिणा या उपहार लेना अनुचित समझते थे। यद्यपि ये भगवान राम को अपना इष्ट मानते थे, किन्तु फिर भी कृष्ण विषयक साहित्य सृजन करने में अधिक अभिरुचि थी। बलदेवप्रसाद अपने समय के ख्यातिप्राप्त कवि थे और हिन्दी संस्कृत तथा उर्दू पर समान अधिकार रखते थे। इनके ३ ग्रन्थ उपलब्ध हुए हैं:—(१) विज्ञान भाष्करः—यह महाभारत का रामायण शैली पर हिन्दी में पद्यानुवाद है। इसकी भाषा बहुत मँजी हुई और व्याकरण सम्मत है। इसका बहुत कुछ भाग सांतुरुक निवासी पं० नवनीतलाल चतुर्वेदी के पास अभी तक सुरक्षित है और शेष बलदेवप्रसाद के वंशज कडेरलाल भौंढेले के पास है जो मऊ-रानीपुर झांसी में रहते हैं:—(२) पीयूष प्रवाहः—यह एक प्रकाशित खण्ड काव्य है जिसमें भगवान राम की भक्ति का सुन्दर ढंग से निरूपण किया गया हैः—(३) पं० बलदेव प्रसाद ने संस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव कृत गीत गोविन्द का भी हिन्दी में पद्यानुवाद किया है, जो इनके वंशजों के पास अभी तक सुरक्षित बताया जाता है। इनकी रचनाओं के उदाहरण देखियेः—

कवित्त

नख गंग धार भ्राजै तल सरसै विराजै,
सु यमुना आयु राजै ओघ अघ हारी को।
भूमि अति सुहावन सुजस वर पावन,
सुर मुनि हर्षावन भक्ति मुक्ति कारी को।

स्वारथ सुख दानि और परमारथ खानि,
लोक तय मुकट विश्राम दैन हारी की।
परम पद नसैनी है सुभग्र त्रिवेनी,
वलदेव पद वृष्टि श्रीमान् धनुष धारी को ॥

जाकौं शम्भु उमा सादर निशि वासर जपैं,
शारद शेष नारद नित्य ही गुना करै।
मरा के जपे वाल्मीक अजर अमर भये,
जाकौं महत्व सनकादि सदा सुना करै।
जाकौं कह् अजामिल गणिका गज उद्धरे,
कलियुग के पतित अधको हुना करै।
वदत 'बलदेव' श्रीमान् धनुषधारीजी,
राम नाम मुक्त जीह हंसिनी चुगा करै ॥

सवैया

हों अघ पुंज तू पाप प्रहारनि, हौं अति दीन दयालु भवानी।
मो सौ न और कहूँ कोउ निर्गुण, जगदम्वा करुणा गुण खानी ॥
याचक बलदेव आयौ है द्वार, और उदार न है तव सानी।
राम चरण रति याचक दै न करु विलम्ब गंग महारानी ॥

सागर तीर खड़े कपि वीर, अतिहि अधीर न धीर रह्यौ है।
देखि दुखी पति भालु कह्यौ तुम राम काज सब तार लह्यौ है ॥
शरीर विसाल भयौ विकराल कौतुक भूधर जाय गह्यौ है।
'बलदेव कूद चले हनुमान कच्छ्य कोल न मार सह्यौ है ॥

१३२—हीरालाल:—इनका जन्म कामां निवासी पं० सूरजलाल के यहां संवत् १९४२ वि० में हुआ। इनके केवल फुटकर छन्द पाये जाते हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

हाल हम गाते कामा का।
कर बिमल कुण्ड स्नान, कटै अघ या नर जामा का ॥
कामा नगरी सुघड़ बसाई, जहाँ खैलें कुमर कन्हाई।
जिनन दुख हरा सुदामा का, हाल हम गाते कामा का ॥

एक पेश नहीं पड़े किसी की, जब सिर पर आती गर्दिश।
बात बात में घर बाहर में, लड़बाती जन जन से गर्दिश।

गाम धाम सत्संग छुड़ाती, देत कष्ट लाखों गर्दिश।
बखत पड़े पै इस जहान में, भोगें अमीर गरीब सभी गर्दिश।
हीरालाल यों कहै चेतकर रहना, हजार नाच नचाती है गर्दिश॥

१३३—मंगलदत्त:—ये पहाड़ी निवासी पंडित रामनारायन के पुत्र थे। इनका जन्म सं० १९४० वि० तथा निधन १९८२ वि० में हुआ। ये उर्दू के अच्छे ज्ञाता थे और गज़ल लिखने में इनकी बड़ी रुचि थी। उदाहरण देखिये:—

बता ए मौत फिर क्या तेरा आना हो नहीं सकता।
हमारा तो अभी परलोक जाना हो नहीं सकता॥
तुझे देखें कि देखें प्यारे भारत के सुधारों को।
कि जिनसे आप अपने को छुड़ाना हो नहीं सकता॥
तू हट कर लौटजा कह लाख सुनता कौन है तेरी।
गिरे भारत को इससे अब गिराना हो नहीं सकता॥
नहीं यदि मानती है पूछती क्या काम हैं करने।
कहैं दो एक सुन सबका बताना हो नहीं सकता॥
खड़ा पैरों पै अपने अब करेंगे देश प्यारे को।
जगत से नाम भारत का मिटाना हो नहीं सकता॥
बनायेंगे सभी हम वस्तुएँ बस देश ही में अब।
विदेशी वस्तुओं में धन लुटाना हो नहीं सकता॥
कहाँ अवकाश इतना व्यर्थ की बाते करें जो यों।
यही सौ बात की है बात जाना हो नहीं सकता॥

करो हरदम हृदय से पाठकों गुन गान भारत का।
बढ़ाओं प्रेम आपस में बढ़ै सम्मान भारत का॥
बनो तुम भक्त हिन्दी के तुम्हारी मातृ भाषा है।
बिना इसके न अब सम्भव कि हो उत्थान भारत का॥
तुम्हारे उस प्रचुर धन से भरे घर अन्य देशों के।
नहीं तुम में रहा क्या स्वल्प भी अभिमान भारत का॥
अगर हो तो करो तुम मत विदेशी वस्तु का आदर।
करो ऐसा कि उन्नत हों कला विज्ञान भारत का॥
सुशिक्षा के बिना होती नहीं उन्नति कभी कुछ भी।
बढ़ाओ देश में इसको अगर हो ध्यान भारत का।

बनो विश्वेश के सेवक करो यह प्रार्थना उससे।
दया कर दो विभो ! फूलै फलै उद्यान भारत का॥

१३४—आचार्य सूर्यनारायन:—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में अगहन शुक्ला ३ संवत् १९४३ वि० को हुआ है। इनके पिता का नाम पं० खुशालीराम है। सन् १९१४ ई० में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने पर आपको संस्कृत पाठशाला का प्रधान अध्यापक नियुक्त किया गया जहाँ सन् १९५१ ई० तक कार्य किया। पंडितजी को पढ़ने लिखने में विशेष रुचि है और वृद्ध होने पर भी पढ़ते ही रहते हैं। आपके व्यक्तित्व में शिशु सारल्य और प्रौढ़ों के गाम्भीर्य का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। अभी सन् १९५५ ई० में आपने संस्कृत की आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप हिन्दी और संस्कृत दोनों ही के प्रकाण्ड विद्वान् हैं और दोनों भाषाओं में सुन्दर काव्य रचना करते हैं। यो तो आपकी कविताओं में सभी रसों का आभास मिलता है, किन्तु वीर और शृंगार रस पर विशेष अधिकार है। उदाहरण देखिए:—

ब्रह्मा के प्रति कवि की उक्ति (कवित्त)

तापन पै ताप हौं सहने कों तैयार यार,
मत राखै कसर जो होय तेरे बस की।
लिख दे दुख दारिद मन चाहे भलेही तू,
लिख दे अनेक रेख चाहै अपजस की।
लिख दे थिर जंगम की जौनि में जनम चाहे,
एक रेख तेरी पर हिये रहै कसकी।
मेरे तो लिलार भाई कबहूँ तू लिखियौ ना,
कविता सुनाय वौ सु नीरस कों रस की॥

शुद्ध शृंगार

रम्भा सी रसीली वाम कामकी कलोलन में,
झीने नव निचोलन में चन्द की कला सी है।
अमी मधुरिमा सी है अधर अमोलन में,
शम्भु कुच गोलन में गरल कालिमा सी है।
सुकवि 'दिनेशजू' की आशा सब पूरिवे कों,
चिन्तामणि खासी कैधों कल्प—लतिका सी है।
वैनन में सुधासी औ सुरासी है नैनन में,
पदमा सोदरा सी सिन्धु मथकैं निकासी है॥

हास में सुधा सी और चपलासी उजास में है,
लास अरु विलास में तो खासी मैनका सी है।
शील में उमा सी रंग रूप में रमा सी चारु,
काव्य रचना में तो सहायक शारदा सी है।
सुकवि 'दिनेश' जाकी मूर्ति के उपासी हैं,
वह मन-मन्दिर की उपास्य देवता सी है।
इन्दु की कलासी सिन्धु मथि कैं निकासी हरि,
मेरे जान ये तो इन्दु मथि के निकासी है॥

नेत्र और कृपाण का लेष

दोनों ही पानी दार दोनों ही की तीखी मार,
दोनों ही धार धर कटीली करी जाती हैं।
दोनों ही करती खून खूब ये हजारों ही का,
दोनों ही असर अपने मौके पै दिखाती हैं।
कहत 'दिनेश' दोनों कौंध जाती बिजली सी,
दोनों चोट करके आर पार हो जाती हैं।
मेरे जानि दोनों में अन्तर इतना ही यार,
असि चूक जाती आंखें काम कर जाती हैं॥

जवाहरसिंह की दिल्ली पर चढ़ाई

बब्बर के बंश में हुए शाह मोहम्मद जू,
ऐसे हूँ जब्बर कै चढ़ाई निज बरात हो।
दिल्ली दुलहिन एक लहिमा में ब्याह लई,
जाकों दहेज यहां अब तक लखात हो।
सूजा सपूत वीर जाहर है जवाहर तू,
बाप पै ते बाकी रहे नेगन चुकात हो।
प्यासी रणचंडी की प्यास के बुझान हेतु,
मानों तेज पानी की द्विधार बरसात हो॥

सवैया

कलधौति सी कान्ति लसै तन की, अधरान सुधा सुषमा अपनाई।
मृदु बैनन औ ऋज नैनन ने, सरलाई विहाय गही कुटलाई।
कच भारहू कौं न सम्हार सके, कुच भार कमान लौं देत लफाई।
करि कंचन कामिनी को सिगरो, मनु पीन उरोजन लीन चुराई॥

तन की द्युति देखि चपै चपला, तिहि सौरभ सौं जलजात लजाई ।
जिहि रूप अनूपम कों लखि कैं, रति रूपहु में दरशात फिकाई ।
कर ऊपर आनन कों धरिकें, तिय सोच रही प्रिय की निठुराई ।
विकसे अरबिन्द में चन्द मनों, अस सोय रह्यौ अब लों अलसाई ॥

कवित्त

प्रजा प्राण गाहक हो जो पै बलाहक तुम,
नाहक आसमान में वितान से तने रहो ।
जीवन खींच लेते मित्र द्वारा बहुकरों से ही,
देते न बूंद निज स्वारथ में सने रहो ।
स्वाँति वारि बर्षा बिन मरेंगे मनस्वी खग,
चाहे सिन्धु सम्पति सब तुम्हारे ही कने रहो ।
मघवा के इशारे से ऐसे उच्च आसन पै,
तुम इस कुशासन से कब तक बने रहो ॥

—:o:—

प्रकरण ५

वर्तमान-काल

साहित्य वाचस्पति गोकुलचन्द दीक्षित:—सम्वत् १९६९ वि० में श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के स्थापित होते ही यहाँ के हिन्दी प्रचार एवम् प्रसार कार्य ने एक नया मोड़ लिया और भाव तथा भाषा दोनों में आश्चर्यजनक परिवर्तन होने लगा। समिति के प्रधान मंत्री जगन्नाथदास अधिकारी और राज्य पदाधिकारी मयाशंकर याज्ञिक के प्रयत्नों के फलस्वरूप साहित्य सृजन का कार्य द्रुति गति से अग्रसर होने लगा। यदि एक ओर प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों की खोज होने लगी तो दूसरी ओर 'भरतपुर पत्र' जैसी पत्रिका को जन्म देकर गद्य प्रसार कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया। अधिकारी जगन्नाथदास प्रकाण्ड पण्डित, दूरदर्शी, समाज सुधारक और राष्ट्रवादी होने के साथ २ बड़े काव्य प्रेमी और हिन्दी प्रचारक भी थे। यह इन्हीं के संसर्ग का फल था कि तत्कालीन भरतपुर नरेश किशनसिंह ने हिन्दी को राज्य भाषा घोषित कर प्रत्येक राज्य कर्मचारी को उसका पढ़ना अनिवार्य कर दिया। इस प्रकार राजा और प्रजा दोनों से प्रोत्साहन पाकर हिन्दी का विकास तीव्र गति से होने लगा।

अपने आश्रयदाताओं के वीर रसात्मक चरितकाव्य तथा जन-साधारण को आकर्षित करने वाले शृंगार और भक्ति के फुटकर छन्द लिखने की जो परम्परा महाकवि सोमनाथ, सूदन और राम-काल से क्रमश: चली आ रही थी, उसमें राष्ट्रीय विचार धारा का बहुत अभाव था। इसका विकास वर्तमान काल में ही हुआ। अब वीर, शृंगार और भक्ति के पदों के साथ २ राष्ट्रीय उद्बोधन के पद्य भी बनने लगे; परिणाम स्वरूप ब्रजभाषा के स्थान पर धीरे २ खड़ी बोली का परिचलन होने लगा। गोकुलचन्द दीक्षित ऐसे ही संक्रमण काल में उत्पन्न हुए थे। उनका खड़ी और ब्रजभाषा दोनों पर समान अधिकार था। जिस प्रकार वे सुन्दर कविताओं द्वारा जनता का मनोरंजन करते थे उसी प्रकार गम्भीर और विचार युक्त लेखों द्वारा समाज के ज्ञान की अभिवृद्धि भी। हिन्दी

प्रचार के लिये आपने कई पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया और समिति के मंच से रस-दरवार, कवि-दरवार और कवि सम्मेलन आदि को आयोजित कर जनता में हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

गोकुलचन्द दीक्षित का जन्म इटावा जिले के लखना नामक ग्राम में सम्वत् १९४४ वि० मार्ग शीर्ष शुक्ला ११ को हुआ था। बचपन से मातृ-सुख से वंचित होने के कारण इनका पालन पोषण इनकी ताई ने किया। दीक्षितजी के पिता स्टेशन मास्टर थे, अतः उनको अधिकतर घर से वाहर रहना पड़ता था। एतदर्थ इनका शैशव मातृ-पितृ सुख से वंचित होकर नीरस एवम् कष्टमय व्यतीत हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा आपके पितामह पं० लालमणि दीक्षित के संरक्षण में आरंभ हुई, परन्तु किन्हीं कारणों से इनका पाठशाला जाना वन्द हो गया और ये घर पर ही शिक्षा प्राप्त करने लगे। थोड़े दिनों के पश्चात् इनको इटावा जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जहाँ इन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता रेलवे कर्मचारी होने के कारण, इनको भी रेलवे में ही नोकरी कराना चाहते थे, किन्तु दीक्षितजी को यह बात रुचिकर प्रतीत न हुई और ये भरतपुर चले आये।

यह युग आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार तथा प्रसार का था। संयोगवश दीक्षितजी एक आर्य समाजी साधु के सम्पर्क में आये और कट्टर आर्य समाजी वन गये। इन्हीं साधू से इन्होने संस्कृत का अध्ययन किया और कुछ दिनों के अनन्तर इस्लाम धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उर्दू फारसी का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। इन्हीं दिनों आपको भरतपुर में सारकारी नोकरी मिल गई जिससे यहीं स्थायी रूप से रहने लगे। राष्ट्रीय विचारों के पोषक होने के कारण सन् १९३० में आपको गिरफ्तार कर लिया गया और इनके लगभग १०००० पुस्तकों के संग्रह को पुलिस द्वारा नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। निदान सन् १९३१ में इन्हें राजकीय सेवा से मुक्त होने को बाध्य होना पड़ा। परिणाम स्वरूप आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किन्तु विद्या व्यसनी होने के कारण साहित्य सृजन में संलग्न रहे। कविवर चम्पालाल 'मंजुल' लिखते हैं:—

कविता-कुमुदनि मुदभरत, नव रस ढरत अमन्द।
'चन्द्र' नाम धरि चन्द्र लौं, उद्यौ 'गोकुलचन्द'॥

काव्य सृजन के अतिरिक्त ये असाधारण गद्य लेखक भी थे और ऐतिहासिक तथा शोध पूर्ण कार्यों में निरन्तर लगे रहते थे। इनकी लिखी हुई १३ पुस्तकें प्राप्त हुई हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं:—(१) ब्रजेन्द्र-वंश-भास्कर (भरतपुर का

इतिहास) (२) बयाने का इतिहास (३) चार यात्री (४) शृंगार बिलासनी (देव) (५) दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह (६) षड दर्शन सम्पति (७) वैशेषिक दर्शन (८) मीमांसा दर्शन (९) धर्मवीर पं० लेखराम (जीवनी) (१०) भारत संजीवनी (११) भगवती शिक्षा समुच्चय (१२) विदुर नीति (१३) बिहारी सतसई की टीका (चित्र काव्य)। इनकी कविता का उदाहरण देखिए:-

कवित्त

नपथ नभ निहारो लाल अबली सुमेघ चारु,
बिजुली चमकि निकट निसा आई है।
चकित चोट बूंदतें काम बेकली करत,
धुखाये निसाने केकी "चन्द्र" बैन भाई है।
रवि ढंकि तिमिर छपाकर मलीन कर,
आपु ही बली बन कैं अंधेर पन छाई है।
तल्प लखि आउ प्यारे ऐकली नवल बैस,
ननंद गै माय संग लीन सुधि नसांई है॥

१३६–किशोरीलाल:–ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर के हास्यरस के प्रसिद्ध कवि गिरिराज प्रसाद 'मित्र' के अग्रज थे। इनका जन्म श्रावण शुक्ला १ सवत् १९४५ को हुआ था; अतः इनका कविता-काल सम्वत् १९६२ से आरंभ होताहै। इनकी कोई पुस्तक तो नहीं मिलती, पर फुटकर कवित्त अवश्य पाये जाते हैं। आपकी कविता अधिकतर भक्तिपरक तथा उपदेशात्मक होती थी। भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से इनकीं रचनाएं उत्तम हैं। उदाहरण देखिये:—

दान घाटी वर्णन (कवित्त)

दारा देबतान की धर धर मनुज देह,
आबें जहाँ मोहन बिराजे बीच बाटी में।
भनत 'किशोर' संग गोपिन के गोरस लै,
षोड़स वर्षीय कला सोलह सौ छाटी में।
मोहन चराबें गैया संग सोहैं बल भैया,
ले लै साथ ग्वाल बाल मांगें दान हाटी में।
फूलन की टाटी में कै दान रस हाटी बीच,
मोक्ष हू को मोक्ष मिलै ऐसी दान-घाटी में॥

पावस वर्णन (कवित्त)

कज्जल बरन अंग भूत बीर केकी कीर,
त्रिविधि समीर स्वान बाहन सजायौ है।
भनत 'किशोर' नव अंकुर त्रिशूल सौहै,
खप्पर तलाब डौरू दादुर गुन गायौ है।
धनुष त्रिपुंड कच्छा सूखौ घन सौभित है,
नूपुरन घोर मोर शोरन मचायौ है।
करत सुगन्ध मधुपान करैं प्यारे अति,
पावस न होय क्षेत्रपाल बनि आयौ है॥

कोई लाजबान कोई कइयक बिधान पढ़े,
कोई अभिमान कोई ग्यान ना तजत हैं।
कोई बाग बावरीं तलाब कूप धर्म-शाला,
कोई ग्रह-नेह के सनेह सरसत हैं।
भनत 'किशोर' केते राज काज डूब रहे,
केते योग सिद्ध के उपाय दरसत हैं।
कहा धन धामें धर लेउगे सरा में,
भये जीरन जरा में तौऊ रामें ना भजत हैं॥

वरदे दरखास्त से मेरीं लगी, करके दया भक्ति हिये भरदे।
भरदे पुनि ज्ञान की ज्योति घनी, बस पूरन आस मेरी करदे॥
करदे मम मंगल काज सुपूरन, पापन केर बिथा हरदे।
हरदे दुःख द्वन्दन देबि अबै, तू 'किशोरहिं' मातु अभै बरदै॥

१३७—पन्नीलाल:—ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर राज्यान्तर्गत कामवन के निवासी थे। इनका जन्म वैशाख शु० १२ सं० १९५० वि० को हुआ था। आपका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हो सका है, केवल फुटकर कविताएं प्राप्त हुई हैं। इनकी कविताओं का विषय 'होरी' है। उदाहरण देखिए:—

दोहा

रंग मटकिया हाथ लें, खड़ी बराबर वाम।
होरी खेलें परस्पर, हिल मिल राधेश्याम॥

झूलना छन्द

होरी में कर ज़ोरी फोरी रंग की कमोरी, गोरी वैंया हूँ,
मरोरी, मुख मल दई मुरारी है।

तक मारी पिचकारी भर प्यारी पै डारी, फारी सारी,
खींच किनारी नारी सारी हिम्मत हारी है ॥
बाला नई नवेली, बोली होली छेड़ होली चोली,
तड़की श्याम अमोली होली देखी श्याम तुम्हारी है ।
जोड़ी लिये संग दंग मृदंग मौचंग चंग सखियन,
के सँग रंग खेलत बिहारी है ॥

दोहा

नई चूंदरिया रंग में, रंग दई नंद के छैल ।
हम रसिया पगिया रंगै, या अंगिया के गैल ॥

१३८—प्यारेलाल:—ये जाति के अग्रवाल वैश्य और डीग निवासी लाला घनीराम के पुत्र हैं। इनका जन्म सम्वत् १९५० वि० में हुआ। इनके पद वहुत ही सरल, सरस और भाव पूर्ण हैं। कुछ अवतरण देखिए:—

उमड़ौ है देश प्रेम कौ सागर ।
नव जीबन नव नेह दिखावत, नव युग करत उजागर ।
जाग जाग प्रिय नागरी, कहै ब्रजेश नव नागर ।
हिन्द वासनी, मृदुल हासनी, हिन्दी सब गुन आगर ।
तृषा ताप हर, प्यारे हिय की, प्याय पियूष भर गागर ।
उमड़ौ है देश प्रेम कौ सागर ॥

सवैया

सौख्य सुधा सरसावन कों संसर्ग समान सिला ही रहै ।
हंस हंस के हिलोरे लेत हिया नित हेत की ओर हिला ही रहै ।
रतिराज की मौज मनायवे को मन एक से एक मिला ही रहै ।
नित आपसी प्रेम के पालन को उर प्रेम-प्रसून खिला ही रहै ॥

कवित्त

अद्भुत आभासे अलौकिक तमासे जाके,
देत है दिखाय छटा जोवन नवीन की ।
दिल दोय एक कर पास करे दूरन को,
देत है सुधार प्रीति भव के भवीन की ।
हारि झखमारि विद्वान हू विचार रहे,
आशा निराशा भई खासा कवीन की ।
प्रणयी के पीछे जो प्राण ना पयान करे,
कौन परिभाषा ऐसे प्रेम परवीन की ॥

सवैया

चहुँ ओर निहारत दीसे नहीं कछु गुंजत काहै पै आन अली है।
निसि-कंत की ज्योति में ज्योति मिली जहं प्रेम के रंग में रंग रली है।
आई अहा ये सुगंध कहाँ सों सुरैन खिली कहा कंज कली है।
नद नन्द कौ नाम लियौ जवही तव जान परी वृषभान-लली है॥

१३६—हरिकृष्ण 'कमलेश':—ये डीग के निवासी और जाति के ब्राह्मण हैं। इनके पिता पं० घासीराम डीग के प्रसिद्ध मिश्रों में थे। 'कमलेशजी' का जन्म सं० १६५० वि० में हुआ। साहित्य प्रेमी होने के कारण आपने हिन्दी की अत्यन्त सराहनीय सेवाएं की हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार के लिए आपने डीग में हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना कराई, जहाँ समय २ पर साहित्यिक आयोजन होते रहते हैं। आप अधिकारी जगन्नाथदास के समय से ही कविता करते चले आ रहे हैं। सत्यनारायन कविरत्न और आपको रचना शैली में बहुत कुछ समानता पाई जाती है। 'कमलेशजी' एक उच्च कोटि के कवि हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। आपकी रचनाएं बड़ी ही सरस, मधुर तथा हृदय-स्पर्शनी होती हैं। सफल कवि होने के साथ २ आप कुशल-हस्त वैद्य भी हैं। इनकी रचना के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं:—

प्रेम

लगन लगाई।
विनु जाने आपुही अचानक निजकर कुबुधि विसाई।
जानत ही जिन नेह लगायौ निसि दिन जात सताई,
लोक लाज कुल की कछु बात न या मग यही भलाई।
कछु जादू के जाल जड़ीसी कै कछु भूल भुलाई,
तन मन स्वाभिमान सुधिविसरी मोहन-मंत्र लुभाई।
माधव की मधुरी मुरली धुनि सहजें हिये समाई,
निज जीवन प्रिय ऊपर वारौ रूप सुधा छकि पाई।
मगन रहत पीतम रस राची प्रेम-मंत्र मन लाई,
वारि दई हरि की छवि ऊपर त्रिभुवनकी ठकुराई।

मुरलिया

मुरलिया मोहन मंत्र भरी,
जमुना कूल कदम तर बाजत हरि के अधर धरी।
गोकुल की कुल बधुन जाहि सुन दोउ कुल गाज परी,
प्रेम-महानद मांहि बिलानी लाज जहाज भरी।

सप्त सुरन सों रनत प्रणव धुनि मुनि जन ध्यान हरी,
लहरत हरि की महर पवन कन कन सों सुधा झरी।
वस रस ही सरबस श्रुति मुखरित ज्ञान गरूर गरी,
जोग जज्ञ, तप जाप, नियम यम विधिहु निसार धरी।
जा वस सरबस दै व्रज गोपी प्रेम पुनीत धुरी,
धन्य भईं जेहि चरन कमल पै डोलत मुकति ढरी॥

१४०—रामचन्द्र विद्यार्थी:—आपका जन्म ज्येष्ठ कृष्णा ५ सम्वत् १९५२ वि० को पं० कल्लाराम के यहां हुआ। संस्कृत का अध्ययन करने के पश्चात् आपने भरतपुर के प्रसिद्ध वैद्य बिहारीलाल से वैद्यक सीखी और वही आपके जीवन यापन का साधन बन गई। श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, में होने वाले कवि-सम्मेलनों से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। इनका व्रजभाषा और संस्कृत दोनों पर समान अधिकार था और दोनों में ही सुन्दर रचनाएँ करते थे। आपकी भाषा बड़ी ही सरल, सरस और हृदय स्पर्शनी है; उसमें हर प्रकार के भावों को व्यक्त करने की अद्भुत शक्ति है। आपकी दो पुस्तकें (गंगा गुण मंजरी और गांधी स्तोत्रम्) प्रकाशित हो चुकी हैं; 'गांधी सत्यकम्' नामक तीसरी पुस्तक अभी तक अप्रकाशित है। उदाहरण देखिए:—

सवैया

सीस पगा न उपाहन पाद में, अंग में खादिहिकों अपनायगौ।
राजऽरु पाट तिया धन धाम, औ वैभव भंगुर पाठ पढ़ायगौ।
द्वापर दूध अजा कौ तज्यौ, कलि में वह मोहन के मन भायगौ।
है निपरे सिपरे मन कौ, धउरे पट कौ हियरे में समायगौ॥

इक तो भव सागर दुस्तर है, तन जीरन नौका चलैगी ही क्या।
कलि काल कराल परयौ मगरा, मग में मुख फारि रह्यौ नहिं क्या।
नहिं 'चन्द्र' प्रकाश अंधेरी निशा, बिषयौरी हवा प्रतिकूल न क्या।
गहिलै पद पंकज माधव के, मति! अन्त समै तू करेगी ही क्या॥

जिहिं भोगन ही कों प्रधान गिनै, अध बीच ही ते तिन छीन गती।
तनु रोग ग्रसै मन बुद्धि नसै, तरसै सुख कों वह हीन मती।
कहुँ दैव के कोप सों द्रव्य नस्यौ, सुख के बदले मिलें दुःख अती।
नर मूढ़! तू काल कौ ग्रास बन्यौं, तजि बासना लै भजि मोक्ष-पती॥

१४१—गिरिराज प्रसाद 'मित्र':—इनका जन्म आश्विन कृष्णा ७ सम्वत् १६५७ को भरतपुर निवासी नारायनलाल के यहाँ हुआ। आप अग्रवाल वैश्य हैं और व्यापार द्वारा जीविकोपार्जन करते हैं। भरतपुर के प्रसिद्ध कवि पंडित गोकुलचन्द दीक्षित इनके स्वीकृत काव्य गुरू वतलाये जाते हैं। 'मित्रजी' बड़े ही विनोदी जीव हैं और अद्भुत फक्कडपन से जीवन यापन करते हैं। आपकी रचनाओं में जन्मजात कवि की कविताओं का सा स्वाभाविक प्रवाह मिलता है। हास्य रस पर पूर्ण अधिकार होने के कारण इनकी कविताएं बड़े चाव से सुनी जाती है पत्तर खोलने से लेकर उच्च कोटि की भक्ति एवम् शृंगार परक कविताएँ भी आप स्वाभाविक रूप से बना लेते हैं। वीभत्स रस की कविताओं में भी इनके हास्य का पुट अनोखी जान डाल देता है। सँ० १६७८ से लेकर आजतक 'मित्रजी' ने सैकड़ों कवित्त, सवैये, छप्पय और कुंडलियों की रचना की है। आपकी दो पुस्तकें 'धडेका धड़ाका' और 'कमला माला शतक' मुद्रित हो चुकीं हैं; 'नारान्तक बध' नामक तीसरी पुस्तक अभी अप्रकाशित है। इनकी कविताओं के उदाहरण लीजिए:—

ऋतुराज में दीवान का रूपक (कवित्त)

आज गई वागन अनोखी छवि देखी तहां,
ऋतुराज साज के नवीन युग लायौ है।
वृक्षन की लौनी लता सुखद समीर प्यारी,
मोरन कौ नाच आज चित्त में समायौ है।
'गिरिराज' बानी कोकिलान की सुहानी,
सुनि अंग अंग मेरे में अनंग सरसायौ है।
सीस कौ सुहाग पायौ मेंहदी औ गुलाल लिये,
होरी कौ दिवान ये बसंत बन आयौ है॥

ग्रीष्म वर्णन

चन्दन कपूर सों पुताये घर द्वार सारे,
छाय दीने चारों ओर खस के छवीना है।
ताहू पे गुलाब जल छिरकात बार बार,
दीखै दुख दाई तोऊ जेठ कौ महीना है।
'गिरिराज' भूखकौ तो केवल ही नाम रह्यौ,
पानी की न प्यास बुझै देह भई झीना है।
वायु कौ न काम सब जिय कौ आराम गयौ,
छूटै नाँहि पंखा अंग सुखै ना पसीना है॥

शरद वर्णन

मत्त मदमाती सरिताकौ ना रह्यौ है मद,
रही नाँहि मारग में कीच की निशानी है।
मेघन की गर्जन है न दामिनि की दमकन है,
दादुर मंडली की सुनि आवत न बानी है।
झिल्ली झनकारें नाँहि मोर हूँ पुकारें नाँहि,
कूक कोकिलान की जहाँन सौं विलानी है।
दूर भई 'गिरिराज' चंचलता पावस की,
कढ़ि आये श्वेत बार रही ना जबानी है॥

हेमंत वर्णन

जूता होय पाँवन में रुई कौ पजामा होय
कोट टोपा रुई के हों कृपा भगवन्त की।
सौर होय गद्दा होय ओढ़िवे विछाइवे कूँ,
अग्नि कौ अंगीठा होय बैठक एकान्त की।
गुड़ होय तिल होंय गर्म गर्म बरे होंय,
नारि हो अनौखी प्यारे कन्त गुनवन्त की।
'गिरिराज' बाजरे की खीचरी में घीउ होय,
ऋतु का उखारें पूंछ शिशिर हिमन्त की॥

अन्योक्ति

सुवन समान स्वान हमने था पाला एक,
खुश होते थे जिसे मलकर न्हिलाने में।
गोदी में उठा के चिपटाते कभी चूमते थे,
सुख पाते थे लस्सी दूध के पिलाने में।
रबड़ी मलाई खोवा खुरचन मंगाई खाँड़,
स्वप्न में न राखी कमी जिसके खिलाने में।
देखा 'गिरिराज' आज अजब तमाशा मित्र,
काटने को आता वही आँख के मिलाने में॥

हास्य

मारे हैं मच्छरौं के दल के दल 'गिरिराज'
चैंटियों के व्यूहन के व्यूह हनि डारे हैं।
केंचुओं के कटक कटीले काटि डारे सब,
खैंचि खैंचि मक्खियों के पंखरे उखारे हैं।

गजब गिजाइन पै गरजि परे हैं टूट,
मारि मारि दुश्मनों के हौंसले विगारे हैं।
झींगुरों पै झपट झिली न झट भागे भीरु,
वीर हम बाँके ! जग जौहर हमारे हैं॥

दूर यदि हमसे रहोगी एक इंच प्यारी,
हमको भी दस इंच हट के ही पाओगी।
तोड़ कर नेही सो सनेह ना लहोगी लाहु,
'गिरिराज' करके गुमान पछिताओगी।
खिल उठती हैं कली पाकर हमारा संग,
मस्त मधुकर है फेरि चाह कर चाहौगी।
ऐंठी ही रहौ तो ऐंठ तुमको धरैंगी ऐंठ,
हमको कलपाओगी न आप कल पाओगी॥

सीस सिखा नहिं होगी भलै,
पर सुन्दर माँग बराबर होगी।
चाहत पाग की होगी नहीं,
नहिं टोपी की ख्वाहिस चित्त में होगी।
प्याली शराब की होगी जरूर,
औ पाकिट कैंची सों खाली न होगी।
शान निराली न होगी कभी,
गर मूंछ की पूंछ कटाली न होगी॥

१४२—रघुवरदयाल:—ये डीग निवासी दामोदरलाल के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १९५८ वि० में हुआ था। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं:—(१) श्री कृष्ण जन्म, (२) श्रवणकुमार और (३) लाखन की महतारी। इनके ख्याल, झूलना, लावनी और गजल आदि बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। उदाहरण देखिए:—

धर वेश छैल पनहारी, जल भरन चले बनवारी ॥ टेक
एक दिना उठ प्रात श्याम नें, ऐसौ मतौ उपायौ है।
नख शिख ते श्रृंगार बनाकर,नवल नारि वन आयौ है॥
रतन जटित इँढुरी सिर सोहै, कंचन की धर झारी।
धर वेश छैल पनहारी जल भरन चले बनबारी॥

मेरी टेर सुनो गिरधारी, रौबै द्रुपद सुता सुकमारी ।। टेक
पापी दुसासन पाप कमायो, सभा बीच मोय खैंच के लायौ ।
अब चाहत करन उघारी, मेरी टेर सुनों गिरधारी ।।
पाँचों पति ने मौन गह्यौ है, काहू के वल नाँय रह्यौ हैं ।
तुम ही क्यों लाज मुरारी, मेरी टेर सुनों गिरधारी ।।
मेरी लाज के आप रखैया, कष्ट हरो हे कृष्ण कन्हैया ।
धाओ बेग बनवारी, मेरी टेर सुनों गिरधारी ।।
तू नारायन है औ जग तारन, 'रघुवर' जन के काज सम्हारन ।
आइये गरुड़ सवारी, मेरी टेर सुनों गिरधारी ।।

१४३—रामप्रिया माथुर:—आपका जन्म सन् १९०१ में दीग के सम्भ्रान्त कायस्थ कुल. में हुआ था । आपके पिता सुप्रसिद्ध इतिहासकार मुंशी ज्वाला-सहाय थे जिन्होंने राजस्थान एवम् भरतपुर राज्य का शोध पूर्ण इतिहास लिखा है । पर्दे की प्रथा होने के कारण आपकी शिक्षा घर पर अपने पिता तथा भाई डा० काशीप्रसाद की देख रेख में हुई । इनका विवाह भी एक प्रसिद्ध कुल में हुआ । इनके पति धौलपुर निवासी डा० दीनदयाल वड़े ही साहित्य प्रेमी हैं और उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप इनकी काव्य प्रतिभा प्रस्फूटित हुई । इनकी भाषा सरल, मधुर और प्रसाद पूर्ण है । इनकी रचनाओं से इनकी सहृदयता, रचना कौशल और भाषा पर अधिकार अच्छी तरह प्रमाणित होता है । इनको समस्या पूर्तियों पर कई बार पदक भी मिले हैं । साहित्यानुराग के साथ २ आपको समाज सुधार में भी विशेष रुचि हैं । ये भरतपुर राज्य में 'ब्रज जया प्रतिनिधि समिति' की सदस्या भी रह चुकी हैं । स्त्री समाज को जागृत करने के लिये आपने सन् १९५० में धौलपुर में 'महिला-विद्या-मंदिर' की स्थापना की, जहाँ सैंकड़ों बालिकाएँ शिक्षा प्राप्त करती हैं । इनकी रचना के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

नारी के प्रति

किस चिन्ता में डूबी हो तुम, सोच रही हो क्या मन में ।
निर्निमेष नयनों से किस को, खोज रही हो क्षण क्षण में ।।
कहाँ सुमांगलीक प्रतिभा की, छटा छिपा ली जीवन में ।
मानब जीवन मर्यादा जो, श्रेष्ठ रही प्रतिपालन में ।।
छीन लिया अस्तित्व तुम्हारा, नकली रंग चढ़ाया है ।
अब जाना मायाबी जग ने, तुमको बहुत सताया है ।।

जिस स्वतंत्र भू पर प्रतिपालित, था ये समुचित आदेश।
महाशक्ति के करगत ही है, विश्व शान्ति का शुभ सन्देश॥
करो मान उस नारि वर्ग का, वो है महा शक्ति का वेश।
हुआ नहीं करता कदापि उस, शुद्ध शक्ति का भी निःशेष॥
वेदों ने इस परम्परागत, गुण का सुयश सुनाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

दुर्गा बन लक्ष्मी रानी ने, किया सुशोभित रण आँगन।
पद्मा पवित्र पतीव्रत को ही, समझी थी निज जीवन धन॥
मीरा की क्या कहूँ कहानी, अमर हुई वो योगिन बन।
मत बिसराओ उस गौरव को, करौ शीघ्र फिर आवाहन॥
उदासीनता, कायरता ने, नीचा सदा दिखाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

क्या कहती हो ? राह नहीं है, बाधाएं हैं अकथ अनेक।
किन्तु नहीं साहस दृढ़ता से, करो क्रान्ति का भी अभिषेक॥
कुछ परवाह नहीं जो आवे, कठिन वबंड एक से एक।
जमीं रहो उत्सर्ग भाव से, किन्तु तजो मत बिमल बिवेक॥
डर तब तुमको क्या है, तुमने निज कर्तव्य निभाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

क्रान्ति उठेगी प्रासादों से, जहाँ बिलासिता करती नृत्य।
जहां नारि के संग निरंकुश, निर्दयता का होता कृत्य॥
क्रान्ति उठेगी अस्तित्वों का, जहाँ मिटाया है शुचि सत्य।
रहा न जिनका बेद निहित निज, अधिकारों का भी अधिपत्य॥
क्रान्ति जननि है, अमर शान्ति की, सोता जगत जगाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

राम बियोग

हहरि हिराने से हेरित अहेरिन में,
तीरन में कौन तीर राम के पंवारे हैं।
त्यागि तृन नीर भे अतिशय अधीर कृश,
नैनि राह आनि स्याम भए अति कारे हैं।
नील जल माँहि नभ मंडल की छांह छुए,
धरन छितिज कहुँ धावत करारे हैं।

औध बन बासी मृग जीव तिन्हैं "राम प्रिया"
सूने से दिखात अब, सरजू किनारे हैं॥

औध हीं बिलोक अब, पावत न चित्त थिति,
बिकल बदन सो, बियोगन के मारे हैं।
सूने स्वर्ण धाम सब, राम बिन 'राम प्रिया'
नरक निबास ज्यौं निराट अंधियारे हैं।
मनुजन की कौन कहै, जीव और जन्तु सब,
औधि औधि आबन की आस निरबारे हैं।
कोऊ बिलखाए कोऊ धीरज बंधाय करैं,
कोऊ जप जोग जाँय सरजू किनारे हैं॥

केकि कंठ नाद बह, बाँसुरी निनाद जानि,
नाचती हैं गाबती हैं संग में सुमीता हैं।
ठांब ठांब देखती हैं, आयु कौ सरूप बह,
आपु ही के नेम और, प्रेम में पुनीता हैं।
देखि देखि स्याम रंग, क्रीड़ति हैं यमुना में,
नीर में अधीर हों, डोलती बिनीता हैं।
ऊधो कहै माधो जू, गोपिन के प्रेम तले,
कहा है बिराग और, कौन चीज गीता है॥

गेह कौ सनेह त्याग दीन्हौं अरु देह कौ हु,
मन में तिहारी मंजु मूरति की चिन्ता है।
जमुना दुकूलनि पर भेंटति हैं धाय धाय,
तरु सौं तमालन सौं, अतिशय बिनीता हैं।
लेहु स्याम लेहु स्याम, टेरती सम्हारती हैं,
दौननि में हाथ दधि, और नबनीता हैं।
गोपिन के नेम प्रेम आगे, हरि ऊधो कहै,
कहा है बिराग और कौन चीज गीता है॥

१४४—रावत चतुर्भुजदास साहित्याचार्यः—आपका जन्म एक प्रतिष्ठित चतुर्वेदी कुल में संवत् १९६०वि०में हुआ है। इनके पिता का नाम श्रीराधा-मोहन चतुर्वेदी था। ये बड़े ही हंस मुख और सरल प्रकृति के हैं। शैशव सेही आपको अभिरूचि काव्य सृजन की ओर थी परन्तु इसका प्रस्फुटन

विशेष रूपेण युवा काल में ही हुआ। आप व्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार रखते हैं और पद्य तथा गद्य दोनों में ही लिखते रहते हैं। इनकी रचनाओं में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों में सामंजस्य पाया जाता है, भाषा भावानुकूल वदलती रहती है। इन्होंने विविध विषयों पर अब तक लगभग ५१ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से अधिकाँश मुद्रित हो चुकी हैं। आपने भरतपुर स्थित राजकीय अद्‌भुतालय के अध्यक्ष पद पर रहते हुए हिन्दी की असाधारण सेवाएं की है। इस अद्‌भुतालय की सर्वतोमुखी उन्नति का श्रेय भी आपही को है। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

नैन मतवारे हैं (कवित्त)

अति अनियारे जग-जीवन के मोहबे कों,
कछु कछु झुके मुरे परम पियारे हैं।
लोकन सराहे वस जग कर लाये ऐसे,
नेह के झुलाये श्याम स्वेत रतनारे हैं।
'चतुर्भुज' परम प्रवीन मीन खंजन से,
अंजन लगाये दृग दृगन उजारे हैं।
मोहन के मंत्र तंत्र जगत जगायवे के,
सुन्दर सलौने लौने नैन मतवारे हैं॥

ललक उठे हैं लोल लोचन निहार बड़े,
परम प्रवीन कैंधौ रति के समारे हैं।
कारे कजरारे मारे मदन महीपजू के,
दृग अनयारे सब लोकनते न्यारे हैं।
'चतुर्भुज' चतुर कटीले नैन सैन वारे,
नेहके नवीन प्रिय प्रीतम के प्यारे हैं।
जग उजियारे कामदेव के दुलारे,
प्रेम-वारि देन हारे नैन मत वारे हैं॥

सवैया

कोमल पात सरोज समान यह प्रेम को नेम निवाहनों है।
रस में निसिवासर बास करै तऊ ऊंचो प्रवीन दिखावनो है।
दास 'चतुर्भुज प्रीति पतंग में चित्त की डोरि चढ़ावनो है।
पूछो कहा प्रिय प्रेम को पंथ कराल मराल सो धावनो है॥

मातु रही समझाय सतीसुन है गुनवंत वही शुभ नारी।
जो हर भांति सों प्रेम करै पति नेम धरैं घरनी घर वारी।

नारी कौ देव कह्यौ पति है परवीन भली यह जान दुलारी ।
नारि स्वतंत्र न हैं कबहू परतंत्र पिता पति पूत समारी ॥

(पानांजलि से)

पान मान का होता है वढ़ कर हीरे से ।
मर्मान्तिक पीड़ा मिटती जिसके मिलने से ।
जितना जितना मूल्य बढ़ाते हैं इसका हम ।
उतनी ही उन्नति करते गौरव वढ़ने से ॥

(आत्मोल्लास से)

यह मृत्तिका का पात्र जो फूटा प्रेम ललित ना पावोगी ।
खाली खपरों से क्या फिर तुम अपना दिल वहलाओगी ।
टुकड़े टुकड़े बिखरेंगे जो फैलेंगे हर जगह यहाँ ।
और तुम्हारे प्रेम मिलन की बात कहेंगे यहां वहाँ ॥

(सुमन सवैया से)

ना तुम हो कुछ भी प्रभुजी पर छोड़ तुम्हें कछु नाहि हमारो ।
हो तुम नाहि कहूँ जगमें पर लेत सदा जग तोर सहारो ।
रंगहु नाहिं न रूप विभो पुन फेर हमें तुम खूब निहारो ।
मो मन है भ्रम नाथ यही सब रंग रंगौ रहै लोक तिहारो ॥

(चतुर्भुज सतसई से)

ओछे घट उछरें बहुत, भरे न बोलें बोल ।
नीच कीच पांयन खुंदत, अमल कमल सिर डोल ॥
ढूंढो जाय बजार मैं, तीन बार मैं खूब ।
मंगल ना इतिवार है, बुद्धि बिलानी ऊब ॥
जब तक चिनगारी नहीं, चमकैगी तुम माँहि ।
तब तक तकते रहोगे, सदाँ और को छाँहि ॥

१४५—नन्दकुमार:—कवि भूषण पं० नन्दकुमार का जन्म कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा सम्वत् १९६० वि० में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम बिश्वम्भर नाथ था। आप अपनी गार्हस्थ परिस्थिति के कारण मैट्रिक परीक्षा नहीं दे सके और राजकीय मुद्रण-विभाग में सुलेखक का कार्य करते लगे। शनैः २ कठिन अध्यवसाय से आप मैनेजर के पद पर पहुँच गए। राजस्थान बनने पर और भरतपुर से प्रेस हट जाने पर ये जनरल इलेक्शन विभाग में रोल्स इंचार्ज नियुक्त हुए। उस कार्य के समाप्त हो जाने पर इन्होंने स्वेच्छा पूर्वक

राजकीय सेवा से अवकाश ग्रहण कर लिया। इसके अनन्तर ब्रह्म-निष्ठ १०८ मोहनदास महाराज से सन्यास की दीक्षा ग्रहण कर ये बाबा गोल मोल के आश्रम में निवास करने लगे और गुरुमुख दास कहलाने लगे। आपका अधिकाँश जीवन साहित्य समाज-सेवा में व्यतीत हुआ।

ब्रज भाषा तथा खड़ी भाषा पर समान अधिकार होने से इन्होंने दोनों ही में रचनाएँ की है। भरतपुर राज्य से प्रकाशित होने वाले भारत-बीर पत्र के प्रकाशन में इनका पूर्ण योग रहा। आपका गद्य परिष्कृत तथा अलङ्कारिक होता था। ये रामचरित मानस के अनुपम विद्वान थे और साथ ही श्री हिन्दी-साहित्य समिति के अनन्य भक्त भी। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य के अनेक अंगों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सफल हुई है। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें सती मोह, पाञ्चाली-पुकार तथा रम्भा शुक-सम्वाद विशेष ओजस्वी एवम् हृदय-ग्राही छन्दों में लिखे गये हैं। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

पाञ्चाली-पुकार से (छप्पय)

मम भक्तों की लाज, कहो किसके कब नापी।
अघ-घट अपना पूर्ण, किया करते हैं पापी।
जो मेरा हो चुका, लाज की फिर क्या चिन्ता।
इस रहस्य को जान, तजौ सारी दुश्चिन्ता।
सब संशय मन से दो हटा, देखो जो कुछ हो रहा।
इदमिथ्या जानों इसे, गूढ़ ज्ञान तुमको कहा॥

केवट सम्बाद से (मत्त गयन्द सवैया)

नाव चढ़ाय चल्यौ हरषाय, समोद लियौ पतवार उठाई।
गावत राग सुप्रेम भर्यौ, छबि-छाक छक्यौ न उमंग समाई।
माँगत दैब सों बारहि बार अपार बिभो यह पाथ बनाई।
खेवत नाव रहों इहि भाँति, रहैं असवार सदां रघुराई।
छाहं करें घन शीतल मन्द, सुगन्ध समीर बहै सुखदाई।
गंग उमंग भरी अबलीन सों श्रीपति पाद पखारन धाई।
कोटिन नैन किये मिसि मीनन, रूप पियूष पियै न अघाई।
धन्य हिये धर ते पद-पंकज, आजु भई जिनसो प्रगटाई॥

शान्ति-पथ-पथिक से (रोला)

लखि अशान्ति के चक्र चढ़ा, यह बिश्व चकाया।
द्वन्द दंड कर धारि नचाती इसको माया।
द्रष्टा बना बिलोक रहा माया-पति क्रीड़ा।
शान्त एक रस से हर्ष रंचक नहिं ब्रीड़ा।

तब यह शुद्ध बिचार तुरत ही मनमें आया।
शास्त्रों में वह अंश और अंशी में गाया।
फिर रसाल की डार आक फल क्यों कर फूला।
इतने ही से छोड़ अविद्या भागी तूला॥

मतैक्य से

कर्मोपासन ज्ञान सांख्य योगऽरु पशुपति मत।
वैष्णवादि जो मार्ग सभी है निज निज थल शत।
रुचि बिभिन्नता करहिं भिन्न गुरुमुख दरसावत।
सबहि ज्ञान में मिलहिं सबहि पद परम दिखावत।
जो जिहि रुचि अनुकूल हो सो पथ ताकौं श्रेष्ठ है।
न तु सब सालिग्राम हैं ना कोउ लघु ना जेष्ठ है॥

सर सरिता नद नारि कूप अगणित जल साधन।
सरल चलैं कै कुटिल अशुचि हों या अति पावन।
जल निधि जल कौ अधिष्ठान श्रुति संतन गायौ।
सो तासौं ही निकस ताहि में जात समायौ।
त्यों जग अरु जग मतनकौ अधिष्ठान भगवान हैं।
सब तिहि तक पहुँचात हैं गुरुमुख सावे महान हैं॥

श्री राधिका नख शिख से पद तल वर्णन (सवैया)

छीन करैं छबि सों छबिकी छबि छीन छपा करकी छपिया हैं।
जाप करैं जिनकौ निशि बासर कोटिन ही इनके जपिया हैं।
चाह भरे नित चाहि जिन्हैं पग तीन त्रिलोकन के नपिया हैं।
कीरति नन्दिनी के पग की थपिया कवि-कीरति की थपिया हैं॥

लंक वर्णन

हाँ जु कहौं न लखात कहूँ अरु ना जो कहों बड़ लागे कलंक है।
बेदहु भेद न पाय सकैं नहिं शास्त्र हु छान छुटैं मन शंक है।
भू नभ लौ बिन टेक सदा तन छेंक रहै दुविधा न निशंक है।
ब्रह्म समान अराधिका सी यह राधिका की बर सूक्षम लंक है॥

तिल वर्णन

कै जल जात के पात सुहात पराग छक्यौ अलि बैठ्यौ ललाम है।
कै बर हाटक पीठ निसंक निवास कियौ यह सालिगराम है।
कै सत औ रज के त्रिगुणी करिबे तम चिन्ह यहै अभिराम है।
कै प्रति रोम लली के बसै प्रगट्यौ तिल रूप वही घनश्याम है॥

वैनी वर्णन

कै भर चोप चली चित में वर पंकज पै चढ़ि कें अलि सैनी ।
पीय पियूष किधौं शशि पै चढ़ि लोर रही अहिनी अलसैनी ।
धार कलिन्द-सुता की किधौं जन के अघ ओघन जूहन छैनी ।
दैनी महा मुद मंगल की वृषभान लली की किधौं वर वैनी ॥

१४६—सांवलप्रसाद चतुर्वेदी:—आपका जन्म आश्विन शुक्ला ५ संवत् १९६१ वि० को ग्राम अभौर्रा (भरतपुर) में पं० अजयराम चतुर्वेदी के यहां हुआ । एक प्रतिभाशाली कवि होने के साथ २ आप निस्वार्थ जन सेवक एवम् लब्धप्रतिष्ठित नेता भी हैं । ये राष्ट्रीय आन्दोलनों में दर्जनों वार जेल जा चुके हैं और भरतपुर राज्य के आन्दोलन में वर्छे ओर भाले तक सहे हैं । महिला शिक्षा प्रसार में आपकी बड़ी अभिरुचि है । आजकल आप महिला विद्यापीठ भुसावर के अवैतनिक मंत्री हैं । काव्य के प्रति अनुराग तो आपमें बचपन से ही पाया जाता है, किन्तु काव्य सृजन की प्रेरणा सन् १९३९ से अंकुरित हुई, जब आप देश स्वातन्त्र के लिए कारागृह की कठोर प्राचीरों में बन्दी थे । चतुर्वेदीजी एक कुशल, ओजस्वी एवम् प्रतिभाशाली वक्ता भी हैं । गद्य और पद्य दोनों पर आपका समान अधिकार हैं । आपने अनेक पुस्तकें लिखीं हैं, जिनमें से (१) रण बांकुरा सूरजमल, (२) कृष्ण श्याम गायन और (३) समाज के शिकार मुद्रित हो चुकी हैं । आप बड़े ही सरस, भावुक और निपुण कवि हैं । इनकी कविता ओजपूर्ण और मर्मस्पर्शनी होती हैं । इन्होंने अपनी रचनाओं में 'श्याम' उपनाम अंकित किया है । आपकी कृतियों के कतिपय उदाहरण उद्धृत किये जाते हैं;—

॥ जन श्रुति ॥

जब कि बात दुनियाँ में फैली खटकी सबकी आँखों में,
प्रेम कहानी कवि जन गाते अब क्या डरना लाखों में ।
अब क्यों आँख चुराते प्रियतम ! किया प्रेम फिर डरना क्या,
प्रेम पंथ के पथिकों को है प्रश्न मरन जीवन का क्या ।
पागल दुनियाँ कुछ भी कहले करले अपनी मन मानी,
लेकिन कवि वर सदा लिखेंगे प्रेम-कहानी रस सानी ।
लज्जा लंगर तोड़ डाल दी नैया अब भव सागर में,
कर में बल्ली आशा की विश्वास महा नट नागर में ।
या तो पार लगेगा बेड़ा या विलीन हो जायेंगे,
एकी चित्त निरोध वृती हो शान्ति इसी में पायेंगे ।

जीवन की रक्षा केवल जीवन देकर के हो जाती,
अपनापन खोये बिन खोई वस्तु कभी ना मिल पाती ॥

॥ अभिलाषा ॥

प्रिय प्राण का पंछी मेरा छोड़ स्वर्ण सम यह पंजर,
उड़ जावेगा महा शून्य में तुम न बहाना दृग-निर्झर ।
निज नयनों की अश्रु सुरसरि को कर हृदय-देश में बन्द,
महा नीलिमा में प्रिय ! मुझको उड़ जाने देना स्वच्छन्द ।
ले विषाद की सघन कालिमा कोई न आवे मेरे पास,
सुन न सकूँ मैं करुण गीत-ध्वनि हिय में होकर व्यथित उदास ।
तुम केवल वस तुम रहना प्रिय कानों में कहना कुछ बात,
निज कर-कोर स्पर्श से पुलकितकरती रहना मेरा गात ॥

!! कवि से अपील !!

हम सोते है टकराती विप्लव की लहरें दीवारों से,
हे कवि जाग्रत करदो हम को अपने शब्दों की मारों से ॥
अब निर्झर के कलरब अलिकुल के मर मर शब्दों के वदले ।
वल वीरों की हुँकार सुनाओं दानवता का दिलदहले ॥
जब से यह भूषण हीन हुआ, भारत तवसे तकदीर फिरी ।
इस महावीर के हाथों से, उस दिन से ही शमशीर गिरी ॥

पाँचाल वही बंगाल वही, पर गत गौरव का ज्ञान नहीं ।
है पाटलीपुत्र महान वही, पर चन्द्र गुप्त की शान नहीं ॥
मद्रास वही मैसूर वही, पर वह टीपू सुलतान नहीं ।
है राजस्थान वही लेकिन, अब रजपूती अभिमान नहीं ॥
गायक अतीत की गाथाओं को गादो जीवन ज्योति जगे ।
मुरदों का मन भी मत्त बने, औ प्राणों की ममता दूर भगे ॥

श्रीराम कृष्ण के युक्त प्रान्त को निज मर्यादा सूझ पड़े ।
बुन्देल खण्ड आल्हा उदल का जीवन रण में जूझ पड़े ॥
गुजरात हो उठे सजग बचाले निज असि धारा का पानी ।
महिलाओं में से निकल पड़ें कितनी झांसी की रानी ॥
हे युग निर्माता तुम अपनी बीणा में भैरब राग भरो ।
हृदयों में भीषण आग भरो मानवता का अनुराग भरो ॥

१४७—कुम्भनलाल 'कुलशेखर':—आपका जन्म भरतपुर निवासी पं० कन्हैयालाल के यहाँ भाद्रपद कृष्ण ८ सम्वत् १९६१ को हुआ था। इनका उपनाम 'कुलशेखर' है और इसी नाम से भरतपुर में बिख्यात हैं। कबि 'कुलशेखर' कवि मुरली मनोहर के प्रिय शिष्यों में से हैं जिनकी प्रेरणा से सं० १९८१ से आप काव्य सृजन करने लगे। आपने ८ पुस्तकों की रचना की है, जिनके नाम इस प्रकार हैं:—(१) शृंगार सरोज, (२) बीर विलास, (३) विनय शतक, (४) अमृत ध्वनि-चालीसा, (५) पाकिस्तान विध्वंसक चालीसा, (६) बसन्त व होली शतक, (७) अद्‌भुत कहानी और (८) पिंगलसार प्रकाश, इन रचनाओं के पढ़ने से ज्ञात होता है कि आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। इनके वर्णनों में सजीवता और शैली में रोचकता पाई जाती है। वैसे तो आपने अनेक विषयों पर सुन्दर रचनाएँ की हैं, परन्तु बीर और शृंगार दो रसों पर आपकी कविताएँ बहुत सुन्दर बन पड़ी है और उन्हीं के कारण आपकी चारों ओर ख्याति फैली हुई है। आपकी भाषा परिष्कृत, परिमार्जित, व्यवस्थित और भावोपयुक्त है। निस्सन्देह 'कवि कुलशेखर' एक अभ्यस्त और निपुण कवि हैं। आपकी कविता के उदाहरण देखिए:—

बाँसुरी (सवैया)

पगड़ी सिर सोहत कुण्डल श्रौन, रह्यौ पटुका कटि गाँसुरिया।
हरि चन्दन भाल दृगंजनदै, नित राखत गोधन पाँसुरिया।
'कुल शेखर' माल सरोजन की, लटकै उर पै मृदु हाँसुरिया।
नट नागरिया गुन आगरिया, अधरा चढ़ पौढ़त बाँसुरिया॥

वेणी

अति भोर उठी अलसात तिया,
नब चन्द्र मुखी मुख धोय रही।
रसनायक भायक के बिछुरे,
मनमें कछु चिन्तित होय रही।
लट छूट परी कुच ऊपर सों,
'कुल शेखर' की मति जोय रही।
शिब के शिर मानहु प्रेम भरी,
सुख पाय सु व्यालिनि सोय रही॥

वसन्त (कुंडलिया)

बसन बसन्ती देख कें, जान्यौं बिरह बसन्त।
बस न कंत सों है अली, जानें कहाँ बसन्त।

जाने कहाँ बसन्त अंत बिरमाये कौने।
मैं बैठी मन मार रहै कोकिल नहिं मौने।
'कबि कुल शेखर' कहैं सखी वह है गुनबंती।
जा घर करै अनंद पिया कस बसन बसंती।।

वर्षा-बहार

उमड़ि उमड़ि चहुँ दिस जल भर भर,
जल धर फिरत घिरत छिति वन वन।
लहर लहर लहरत झुक झुक द्रुम,
पबन चलत तन लगत सबन सन।
'कवि कुल शेखर' चमक लखि चहकत,
कुसुम कलिन चटकत मन धन धन।
झहर झहर बद बद झर लगबत,
दनन दनन दन तड़ित तड़क घन।।

।। कंस बंध ।।

नटबर हलधर बीर बर, महाबली समरत्थ।
'कुल शेषर' कंसहि हनन हल मूसल लिय हत्थ।
हत्थद्धर शुभ चक्र बक्र पर कान्ति झलक्कत।
टिट्ढ पग्ग सिर बक्त भृकुटिहि हुब्ब हलक्कत।
युगुलभ्भ्रातहि भब्भय त्रातहि उर क्रुद्धद्धर।
तीरस्सम चल बीरग्गन लखि कुद्यौ नटवर।।

।। नरसिंह अवतार ।।

हरन कष्ट निज भक्त कौ दुष्टद्दलन समग्र।
'कुल शेषर' कढि खम्भ ते, गज्जत तज्जत अग्र।
अग्गप्पग धरि जिह्न तपक्कत भज्जक्कर गहि।
कट्टत दन्तन फट्टत अन्त पटक्कत पुनि महि।
टिड्ढ भ्रकुद्दहि तक्क अरिज्जंन कम्पत्थर थर।
तत्तडाक चिक्कार असुर मार्‍यौ जय नर हर।।

जवाहरसिंह का युद्ध कौशल (छप्पय)

गगन धुंधरित धूम धाम बहु धरा धसक्के।
धीर तजे रन धीर बीर सुन शब्द ससक्के।
भुन्नत कोप कृषानु भानु जिमि ग्रीषम कौ है।
तहं बिफरौ नर नाह जबाहर नाहर सौ है।

'कवि कुल शेषर' रण मत्तहू, दुहुकर में तरवार है।
नृप महाकाल बन कर रह्यौ बार बार पर बार है॥

॥ दिल्ली विजय ॥

प्रबल प्रतापी सूर सूजा कौ सपूत सिंह,
लूट लई जानै राजधानी हिन्द भर की।
कर की कृपान ते छिनाय लीने छत्र जिन,
झारे हैं गुमान प्रथा पाली बीर बर को।
कहै 'कुल शेषर' समस्त शत्रु सैन घिरी,
ठाडी चहुँ ओर जट्ट सेना बा बवर की।
कोल्हू मांहि तिल्ली पिलै त्योंही पेर दिल्ली दई,
हल्ला एक ही में सारी बादशाही सर की॥

होते जो न प्रणबीर प्रबल प्रताप सिंह,
मान से गुमानी कौं गुमान कौन हरतो।
हिन्दुन कें उपबीत चोटी कहूँ पाते नहीं,
सबल शिबाजी जो न शत्रुन सों अरतो।
कहै 'कुल शेषर' समस्त हिन्द बासी लोग,
यवन कहाते और निबाज़ी हौंन परतो।
उद्धत प्रचण्ड बल बण्डन के मान खण्डन,
होते ना जबाहर तो और कौन करतौ॥

१४८—छोटेलाल ब्रह्मभट्ट:—आपका जन्म भरतपुर निवासी खुन्नीलाल के यहां भाद्र पद कृष्णा ११ संवत् १९६२ को हुआ। आपकी काव्य रुचि जाग्रत करने में श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का बहुत बड़ा हाथ है। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व होने वाले कवि सम्मेलनो से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। आपका कविता काल सं० १९९० से आरम्भ होता है। इनकी कविता में ओज के साथ प्रवाह का अच्छा सामञ्जस्य पाया जाता है।

भैरव स्तुति (कवित्त)

मंडित उमंड बलबंड सुत चंडिका कौ,
राजत ब्रह्मंड पै प्रचंड भर पूरिया।
खंड-खंड खडग सों मलेच्छ-दल देत दंड,
गार के घमंड गर्व गर्जत गरूरिया।

'छोटे कवि' सेवक की आरत अवाज पाय,
धीरज धरायवे को धावत जरूरिया।
वांकुरा विकट वरदायक वटुकनाथ,
चमकत शुचारु सीस भूरी लटूरिया॥

हनुमत प्रतिज्ञा

स्वामी धीर धारौ उर काहे घवरावत हौ,
औषधि के लैन कों छलाँग मार जाउंगौ।
बूँटी की कहा है बात धरा सों उखार झट्ट,
द्रोनागिरि लाय पट्ट पास में गिराऊँगौ।
आज्ञा सिर धारूँ औ उबाँरू प्राण लक्ष्मण के,
'छोटे कवि' आऊं वेगि देर ना लगाऊंगौ।
सत्य मुख भाखूं काम एतौ जो न करूं नाथ,
तौ मैं माँत अंजनी कौ सुत ना कहाऊंगौ॥

क्रुद्धित हो लंक माँहि कूद हों निशंक है कें,
पाजी घननादै रस युद्ध कौ चखाऊंगौ।
झारूंगौ घमंड तन फार कर डारौं खंड,
प्रवल प्रचंड दंड मारकें नसाऊंगौ।
'छोटे कवि' झपट झडाक दस-कन्धर के,
दश शीश वीसों भुजा तोरकें गिराऊंगौ।
सत्य मुख भाखूं काम एतौ जो न करूं नाथ,
तौ मैं माँत अंजनी कौ सुत ना कहाऊंगौ॥

नीयत पै सावित वद नीयत विसार देउ,
छोड़ देउ दूसरों की चीज अपनावनी।
आठों याम नित्य ही दयाल रहौ दोनन पै,
काहू समय काहू कों न त्रास दिखरावनी।
'छोटे कवि' कहै मुख भाखौ ना विष के वैन,
सबही सों बात कहौ हिय हरषावनी।
तजके गुमान ध्यान लाओ परमेश्वर सों,
मानुष की देही ये न बार २ पावनी॥

१४९—प्रभुदयाल "दयालु":—कविवर 'दयालु' का जन्म फाल्गुण कृष्णा १ सम्वत् १९६३ वि० को भरतपुर निवासी पं० रामचन्द्र के यहां हुआ था। श्री
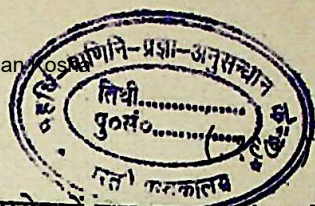
हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर, के विभिन्न कवि सम्मेलनों तथा अन्यान्य संस्थाओं के साहित्यिक समारोहों से आपको काव्य-सृजन की प्रेरणा मिली, जिसके फल स्वरूप आप सरस, भावुक और निपुण कवि हो गए। आपकी कविता बड़ी सरल तथा हृदयस्पर्शनी होती है। इनकी भाषा मधुर और प्रसाद पूर्ण है और कल्पना विषय के अनुकूल और सुन्दर कोटि की है। मातृभाषा हिन्दी की निश्छल सेवा करना ही आपके जीवन का ध्येय है। आजकल आप श्री हिन्दी साहित्य समिति, के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का भार सम्हाले हुए हैं। प्राचीन कवियों के जीवन वृत की खोज में आपका सराहनीय योग प्राप्त हुआ। आपकी कतिपय सरस रचनाएं निम्नलिखित हैं:—

अखियाँ (सवैया)

सित कंज सी चारु विलोकन ते, विधि के सम सृष्टि उपायौ करें।
हरि के सम प्रेम-पियूष सों पोष, 'दयालु' सुनीति जिवायो करें।
लखिकें करतूत कराल बनी, हरके सम भार नसायौ करें।
त्रिगुणी त्रय रंग रंगी अखियाँ, त्रय देव कौ रूप लखायौ करें॥

रस रास बिलास में मोरनीसी, नच चाहक-चित्त चुरायौ करें।
लड़तीं अड़तीं अति सूरसी ह्वै, मृदु चित्त में ये गढ़ जायौ करें।
बहु भाव भरीं बहु रूपिनी सी, नटती नटनीसी लखायौ करें।
करुणा की भिखारिनि ये अखियां, पाषाण हिये पिघलाओ करें॥

बसन्त वर्णन (कवित्त)

विविधि विटप नव पल्लव प्रसून युत,
सैनिक सों सीम दावी दिग औ दिगन्त की।
त्रिविधि समीर तीर छोड़त मनोज वीर,
कहरैं वियोगिन वानी वोलें हा हंत की।
कोकिला न कूकें ये चलत बन्दूकें बहु,
कमल पराग नहीं गैस है ये अंतकी।
राखौरी वियोगिन तन गाढ़े या जतन सों,
जीवन कों आई बन वाहनी बसंत की॥

ब्रज रखवारे की

बींसवी सदी में नृपति श्री कृष्णसिंह,
ह्वै कें प्रतापी राखी लाज जन्म धारे की।

बाढ़की कराल डाढ़ व्रजकों गहन लगी,
बिललानी प्रजा ज्यों शमन-गण मारेकी ।
भनत 'दयालु' ता समय भूप कृष्ण भये,
स्वयं बढ़ाई वहु धाम बल अंपारे की ।
व्रज कौं बचायौ दुख दारिद वहायौ सब,
याद ये रहैगी बात व्रज रखवारे की ॥

भक्ति परक (सवैया)

नैनन ते न लखे भगवान, न वैनन ते गुन गान कौ गायौ ।
कानन ते न सुनी हरि कीरति, पायन सों जनि तीरथ धायौ ।
देखन ते न भयौ हिय हर्ष, न हाथन ते दीवौहु सुहायौ ।
आवत जात बराबर है, जग देह धरे कौ कहा फल पायौ ॥

प्रताप की कृपाण-कीर्ति (कवित्त)

खुलते ही खोल खलवली मची खलक बीच,
झपैं पलक देख कर झलक आँख करकी ।
विद्युत प्रभासी भासी खासी वर पानिप सों,
चलै चंचला सी माल गूधक ही हरकी ।
भनत 'दयालु' सुनी कालकी सहोदरा सी,
बैरिन कों स्वर्ग दा संगनी समर की ।
एहो वर प्रताप तेरी वर्छी विजय रूपणी सी,
नीकी पतवारसी ही नोका युद्ध-सरकी ॥

१५०—राधारमण शर्मा "मोहन":—आपका जन्म माघ कृष्णा ३ सम्वत् १९६६ को पं० श्यामलाल बाशिष्ठ के यहाँ हुआ। आपके पिता को कविता से बड़ा प्रेम था। वे समय समय पर सुन्दर रचनाएं किया करते थे। अतः आपको काव्य-प्रेम पैतृक बिरासत में मिला। सच तो यह है कि काव्य रचना की प्रेरणा आपको सम्वत् १९९४ से श्री हिन्दी-साहित्य समिति के कवि-सम्मेलनों से मिली। आपने किसी ग्रन्थ की रचना तो नहीं की है, किन्तु श्रृङ्गार रस के फुटकर कवित्त और सवैये लिखे हैं। आपका सवैया कहने का ढंग इतना सरस है कि श्रोताओं को सुनने की इच्छा बनी ही रहती है। आपकी भाषा शुद्ध ब्रज-भाषा है; अलङ्कारों के स्वाभाविक प्रयोग ने रचनाओं को और भी अधिक चमत्कृत कर दिया है। आपकी सरस रचनाएँ अनेक बार कवि सम्मेलनों में प्रथम पुरस्कार से

पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपकी जीविका का मुख्य साधन वैद्यक है। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

गणेश-बन्दना (कवित्त)

गावैं तौ गावें कौन गुन गन गजानन के,
आनन हजार हू थकित भये सेस के।
देस के बिदेस के सुरेस की सभाके सबै,
प्रथम मनावें ऐसे तनय महेस के।
'मोहन' पढ़े हैं बेद भेदन अनेक भाँति,
सबसों बढ़े हैं सुख करन हमेस के।
ज्ञान के गढ़े हैं रिद्धि सिद्धिन मढ़े हैं मेरे,
चित्तमें चढ़े हैं चारु चरन गनेस के॥

शारदा-बन्दना

सलिल अमल मध्य पाण्डु पुण्डरीकन पै,
राजत सयानी मानी आदि शक्ति माया है।
चार भुज चारु जामें परम नबीना बीना,
पुस्तक औ माला चौथे अभय सुहाया है।
ब्रह्मा की सुता है और कविन बिधाता बिश्व,
प्रेम युत ध्याया जासु आसु फल पाया है।
'मोहन' सुकवि उर अजिर बिराजौं आय,
तेरे गुण-गान का हुलास हिय छाया है॥

सुषमा मयी अहीरनी सवैया

सुचि नूपुर मंत्र निनादन सों, दुख-दुन्दन व्यूह बिदीरनी तू।
मृदु-हास हुलास बिलास भरी, गुन जोबन रूप जखीरनी तू।
'कवि मोहन' के मन के बन की, निरद्वन्द विहारिनि कीरनी तू।
जग-नायकै चेरौ बनाय लियौ, अरी बाहरी बाह अहीरनी तू॥

श्री राधिका महिमा

सरसावनी सुक्ख-समूहन की, दुख द्वन्दन ब्यूहन चूरनी तू।
हरसावनी मोहन के मन की, जनकी सब इच्छन पूरनी तू।
'कवि मोहन' रूप सुधा मद सो, मन मोहन कौ मद झूरनी तू।
जगनायक की अधिनायक है, घनश्याम की मत्त मयूरनी तू॥

शिव-रूप भारत (कवित्त)

शोभित है भाल पै हिमाचल त्रिपुंड सम,
स्वेत हिम-आभा मानों चन्द्र चटकारौ है।

शुचि तिरबैनी रूप गल उपबीत राजै;
मध्य बिंध्यमाला कटि मेखलाहि प्यारौ है।
बायें अंग शक्ति गौरी एकता बिराजै गोद,
दांये में गनपत जबाहर दुलारौ है।
'मोहन' सुकवि ऐसो अभय बरद चढ्यौ,
छाजै शिव रूप शुभ्र भारत हमारौ है॥

पंकज के प्रति उत्प्रेक्षा

सभी जानते हैं तेरा जन्म नीच कीच से है,
सभ्यता के नाते तुम्हैं पंकज पुकारते।
गाऔ गुन कवियों के मान्यता दिलाई तुम्हैं,
पुष्प सरताज बने जिनके अधार ते।
छाऔं न गरूर क्रूर कठिन करौ ना कर्म,
धर्म को न त्यागौ अरे भागौ अपकार ते।
रवि की मिताई ते न होयगी भलाई कछू,
बच ना सकोगे मीत सीत के तुषार ते॥

मतबारे नैन

चतुर चुटीले चमकीले औ चुभीले चारु,
चाब चढ़े चंचल चलाक चटकारे हैं।
लालची लुभीले लोल ललित लजीले लाल,
लाड़ले लड़ाके लहरी लोक लाज बारे हैं।
'मोहन' सुकवि सदां सरस सजीले सुखी,
समुचित शान्ति दा सयाने सुख सारे हैं।
मंत्र मोहनी से मानी महत मनोज्ञ एरी,
मैन मतबारे तेरे नैन मतबारे हैं॥

सवैया

शुचि राबरे प्रेम पयोनिधि की बह लोल अमोल हिलोरिनी है।
सब काम किलोल कलान भरी नग नागर मान मरोरनी है।
'कबि मोहन' बिश्व बिमोहनि है जन की मन आश बटोरनी है।
ब्रज चन्द्र हौ आप भले अरु बो मुख चन्द्र की चारु चकोरनी है॥

कुन्द कली कचनार कनेर कुमोदिनि सी कुसुमाकर सी।
कामद काम दुधा कमला कल कल्पलता करुणाकर सी।

कोमल कंज मुखी कर कंज कबिन्द कहैं कमला कर सी।
कोबिद केलि कलान कढ़ी कमनीय कलत्र कलाधर सी।।

१५१—नानिगराम:—ये जाति के ब्राह्मण और पं० शिवलाल के आत्मज हैं। इनका जन्म संवत् १९६६ वि० में हुआ। ये हिन्दी साहित्य समिति के पुराने कर्मचारी हैं। समिति के कवि सम्मेलनों में भाग लेने के कारण इनको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

निभाइये जू (सवैया)

अलिकैं अपनो मन श्री पति के पद पद्म पुनीत लुभाइये जू।
बहि पीत पटा छवि छोरन की छहरानि में नैन चुभाइये जू।
सुख है जग में कवि नानिग कितौ जेहि लागि हियो भरमाइये जू।
कर लीने मनोरथ पूरे सबै अब आनंद कंद निभाइये जू।।

वरसाय रही

छाय रही घिर कें ये घटा महि मंडल पै घहराय रही।
डारत बूंद नहीं नभ सों निशि बासर त्रास दिखाय रही।
नानिग राम महान तपावत ताप कृषि कुम्हिलाय रही।
क्यों घनश्याम—सुधा—धर सों विष की वर्षा वरसाय रही।।

१५२—जयशंकर चतुर्वेदी "जय":—आपका जन्म बयाना (भरतपुर) में १७ मार्च सन् १९११ को हुआ। ये पं० भोजराज के सुपुत्र हैं। आपकी काव्य रचना की ओर प्रवृत्ति सन् ३२ से हुई। आपके चाचा शोभाराम चतुर्वेदी आपको समय समय पर काव्य सृजन की प्रेरणा देते रहते थे। पहले पहल इनकी तुकवन्दियों में हास्य-प्रधान रचनाएं होती थीं। शनैः २ विचारों में परिवर्तन हुआ और ये सामयिक गम्भीर विषयों पर भी रचनाएं करने लगे। आप में निर्भीकता के साथ साथ एक मस्त मनमौजी पन है। भगवती विजया की तरंग में आप कैसे भी गम्भीर वातावरण में हास्य रस का रंग बाँध देते हैं। आपकी सुमधुर रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

लाला की भैंस (कवित्त)

हुड़क उठी लाला ने भैंस एक मोल लई,
चिकनी चट्ट मोटी चारु चाल छवि न्यारी है।
वोंकि वोंकि ववकै सुनैं जो स्वर बेंडका तो,
दूध दुहने में करै आफत विचारी है।

यातें घृत दूध दही का विधि निकारें 'जय',
यही सोच भारी मति गई आज मारी है।
कहैं जाय लोगन सों दूध की न बात करौ,
गोवर करै भारी याते भैंस हमें प्यारी है॥
तारी जाय घरते लोग तारी दै हंसी करें,
वेचन में याके एक आफत यह भारी है।
भारी घर वारी कौ उराहनौ मिलै है 'जय',
भैंस कों विचारी देत रोज रोज गारी है।
जानें ना अनारी दिन द्वैक में हमारे यहाँ,
ईंधन कंट्रोल होय आँखिन अगारी है।
यासों कहों वासों नेंक गुस्सा कम खर्च करो,
गोवर करै भारी यासों भैंस हमें प्यारी है।

भंगड़ी की अभिलाषा

मेरी तपस्या पर प्रसन्न जो हुए हो नाथ !,
दीजै वरदान खूब मौज में छनी रहै।
शक्ति हू शरीर में अपार होय दीन वन्धु !,
थारी इमरतीहू की आगे ही धरी रहै।
भूख दिन दूनी और रात चौगुनी ही होय,
पुआ पै पुअन की लगी पूरी झरी रहै।
एती अभिलाष मेरी पूरी करौ दीनानाथ,
ओंडेसे सकोरा में रबडी हू भरी रहै॥

भोजन प्रतियोगिता--विजयी

हौड़ बदी लाला ने खाने की हमारे साथ,
वैठ गये खोलकें मिठाई के पिटारे हैं॥
गरम इमरती कलाकन्द सुफेनी काढ़ि,
चमचम रसगुल्ला खीर मोहन निकारे हैं।
मठरी मलाई मेबावाटी औ मक्खन बड़े,
दहीबड़े वड़े बड़े व्यंजन हू रुचारे हैं।
विजया भवानी की कृपासों सब चाट गये,
दुहूँ भाँति लाला होड़ हारे विचारे हैं॥

लालाजी के पेट में हवेली का निर्माण

कीचड़ सी गाढ़ी भाँग गारे कौ जु काम करे,
चकती कलाकन्द की ईंट करी मात है।

कर कर चिनाई भीत ऊंची सी बनाई 'जय'
साँक कौ पटावौ दै पूरी करी छात है।
गरम इमरती के झरोखे चहुँ ओर दिये,
जाली लगावन हेतु पुआ ओर घांत है।
भंगड़ी महाराज नेंक मनमें बिचार करौ,
पेट में तुम्हारे ये हवेली चिनी जात है॥

गीत

कौन अपना है, पाराया कौन है ?

आजका युग-पात्र तो छल से भरा, वह घृणित अचार से कब कब डरा।
अब दुहाई न्याय की है बंचना, साधु जीवन हायरे! सपना बना।
चकितसा मानव विचारा मौन है ॥ कौन अपना......
नित्य परिबर्तन यहाँ का खेल है, नियति का उसमें अनौखा मेल है।
विवशता यद्यपि, तथापि बिबेक है, और दृढ़ता का सहारा एक है॥
भर रहा दस सेर जीता धौन है ॥ कौन अपना......
स्वप्न का आलोक चिर होता नहीं, गत हुआ फिर प्राप्त क्या होता कहीं।
सृजन चिर आलोक करना धर्म है, विज्ञ साधक का यही तो कर्म है॥
साधना की एक आशा मौन है ॥ कौन अपना......
दूर चलना है बड़ी मंजिल कड़ी, राहमें कंटक बनी माया अड़ी।
है न जल बिश्राम भोजन हर घड़ी, शीत, वर्षा घाम की सिर पर झड़ी॥
तदपि राही वीर! वीर अविकल गौन है ॥ कौन अपना......

१५३—चम्पालाल 'मंजुल':—आपका जन्म लगभग १९११ ई० में भरतपुर के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। संयोगवश शैशव में ही इन्हें विद्याकला के केन्द्र छत्रपुर जाने का सुयोग मिल गया। छत्रपुर के तत्कालीन नरेश श्री विश्वनाथसिंह जू देव के उदार आश्रय में रहकर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। वैसे तो साहित्य के प्रति इनकी शैशव से ही अभिरुचि थी, किन्तु पं० श्यामबिहारी मिश्र (दीवान), पं० शुकदेवबिहारी मिश्र (दीवान), पं० हरिप्रसाद (वियोगी हरि), प्रसिद्ध आलोचक लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलाबराय एम० ए० आदि साहित्य मनीषियों का सम्पर्क पाकर वह साहित्यिक अभिरुचि अधिक बलवती हो गई। आपने तीन ग्रन्थों की रचना की है, जिनके नाम इस प्रकार हैं:—(१) काव्येन्दु (२) अन्योक्ति माधुरी तथा (३) मंजुल शतक। इन पुस्तकों के अतिरिक्त शृङ्गार, वीर तथा भक्ति के सैकड़ों सरस सवैये और कवित्त हैं। (१) काव्येन्दु:—नायका भेद का ग्रन्थ हैं। इसे देखकर सन् १९३० में खजुराहो

नामक ऐतिहासिक स्थल पर एक बंगाली बहुल विद्वत् मंडल के सभापति श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलाल षड्दर्शनाचार्य ने इनको 'कवि शेषर' की उपाधि प्रदान की। इसी अवसर पर छत्रपुर नरेश ने स्वर्ण पदक देकर इन्हें सम्मानित भी किया। (२) मंजुल शतकः—एक ही समस्या पर विविध विषयों के १२७ सरस दोहों का एक संग्रह है। इसमें समस्या पूर्ति की चरम साधना स्पृहणीय है। इस पर स्वाध्याय सदन सोलन से स्वाध्याय के संस्थापक अमृत बागभवाचार्य द्वारा आपको १२५) का पुरुस्कार मिला है। (३) अन्योक्ति माधुरीः—इसमें २०० कुण्डलियों का संग्रह पुष्पों तथा अन्य वस्तुओं पर अन्योक्तियों के रूप में हुआ है। इसकी प्रत्येक अन्योक्ति चुटीली और प्रभावोत्पादक है। कवि की काव्य साधना का प्रौढ़ रूप इसमें पूर्णतया परिलक्षित होता है। भाड़े की टैक्सी, ट्राम तथा ट्रक आदि अनेकों आधुनिक वस्तुओं की अन्योक्तियों द्वारा कवि इसमें अपने विनोदी स्वभाव का पूर्णरुपेण परिचय देता है।

'कविवर मंजुल' एक रससिद्ध कवि हैं; आपकी शृङ्गारिक रचनाएँ अनुपम तल्लीनता लिये हुए हैं। अलंकारों की स्वाभाविक छटा विशेष चमत्कारिक है। आपके सवैयों के कहने का सरस ढंग श्रोताओं पर अपनो अमिट छाप छोड़ जाता है। मुक्तक कविता में जो स्वाभाविकता और सौन्दर्य होंना चाहिये वह मंजुल कवि के दोहों में परम उत्कर्ष को पहुँच चुका है। इनके दोहों को पढ़ने से हृदय कलिका थोड़ी देर के लिये खिले बिना नहीं रहती और मुख से सहसा वाह वाह निकल पड़ती है। इनकी भाषा सशक्त और भावानुकूल है। कल्पना की समाहार शक्ति के साथ साथ आपकी भाषा में समास शक्ति भी पाई जाती है, जिस कारण इनके मुक्तक बहुत ही सुन्दर एवं सफल बन पड़े हैं। कहीं कहीं तो वे रस के छोटे २ छींटे से प्रतीत होते हैं। कविवर मंजुल का ब्रज भाषा और खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार है। इनकी भाषा में शोकर्म दोष कहीं भी दिखलाई नहीं पड़ता। ये वास्तव में एक उत्कृष्ट कवि हैं। इनकी सरस रचनाओं के उदाहरण देखिए:—

काव्येन्दु से–ज्ञात नव योवना-लक्षण (दोहा)

योवन आगम निज बदन, जान परत है जाय।
ताहि 'ज्ञात नव योवना' कह मंजुल कविराय ॥

यथा उदाहरण (सवैया)

दृग अंजन रंजन कै मुख चन्द कों, घूँघट ओट लुकान लगी।
कुच-नूतन कंचुकि माहि कसै, विहंसै मन मोद बढ़ान लगी।
'कवि मंजुल' चाल भई गरुई, रति बात सुनें अनखान लगी।
लरकाई के खेल बिहाय लली, दिन द्वै कहि ते सकुचान लगी ॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चाले की चरचा चलत, चली लली सकुचाय।
अलि ओटक सुनि सुनि अमित, आनंद उर न समाय ॥

कुलटा लक्षण

वहु पुरुसन सों हित करै, कामवती जो बाम।
तासों कुलटा कहत हैं, 'मंजुल' कवि मति धाम ॥

यथा उदाहरण (सवैया)

मदमत्त गयंदन की गति सों, हरुवें हरुबें पग धारिये ना।
बिचकाय के आंगुरो आनन सों, पट घूंघट कों निरबारिये ना।
'कवि मंजुल' भोंह सरासन सों, दृग तीच्छन तीर निकारिये ना।
चिक चीरकें चन्दमुखी, हँसकें, अविलोक बटोहिन मारिये ना ॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चितब्त चहुं दिशि चलतमग, घूंघट पट निनवार।
नगर छैल लाखन हने, तरुनि नैन शर मार ॥

मंजुल शतक से-प्रेम वर्णन

ऊधौ ! कोउ कैसें सुनें, इतै जोग की बात।
प्रेम-प्रभा सों ज्ञान-तम, छिन छिन में छिन जात ॥
हटकें हूँ मानें न यह, मेरौ मन मृग-जात।
नेह बधिक मृदु गान सुनि, छिन छिन में छिन जात ॥
हरि छबि-निधि लहरन परत, चलत नेह की बात।
लंगर लाज-जहाज कौ, छिन छिन में छिन जात ॥
हिय बिहंग कुल कान के, उपबन उड़ नहिं पात।
नेह-बाज की झपट सों, छिन छिन में छिन जात ॥

रूप वर्णन

झाँकि झाँकि खिरकी तरुनि, फिरकी लों फिर जात।
मनहुँ तड़ित घनसों निकसि, छिन छिन में छिन जात ॥
मन पट क्यों अंकित रहैं, लोक वेद की बात।
तिय सुसमा सरि सलिल सों, छिन छिन में छिन जात ॥

नेत्र वर्णन

दृग दोउ चितचोरी करत, पर कुच पकरे जात।
चोरन ढिंग बस साहु सुख, छिन छिन में छिन जात ॥
नैन भेदिया चपल चल, उर-पुर पैठत जात।
गूढ़ भेद मन-नृपति कौ, छिन छिन में छिन जात ॥

नैन-नकब जन उर-सदन, भेदत दुरि दिन रात।
धीर, धरम-धन धरन की, छिन छिन में छिन जात॥

बेसर वर्णन

बेसर अधरन डुलि करत, रखबारी दिन रात।
तउ अधरा रस सजन सों, छिन छिन में छिन जात॥
उर बिधाय नित मुकत हू, पर उर बिध बिध जात।
वेसर संग लह सुजन गुन, छिन छिन में छिन जात॥

विविध

अभिनव उकसौंहे उरज, उघरि करें उतपात।
या सों कंचुलि मिसि मुकति, छिन छिन में छिन जात॥
कटि गुरुता इमि कुचन सों, बर बस चोरी जात।
मनहुँ ठगन सों कृपन-धन, छिन छिन में छिन जात॥
पायजेब पायन परसि, पाय जेब इतरात।
पै धुनि गुन बिपरीत सों, छिन छिन में छिन जात॥
झलकत जोबन झलक तन, शिशुता भाजी जात।
जिमि सुराज लहि लोक दुख, छिन छिन में छिन जात॥
बुध जन ढिंग बस इन्दिरा, नेंन न ठिक ठहरात।
जिमि सुकबिन सों मूढ़ नृप, छिन छिन में छिन जात॥
जो कृपा न नेंकहु करै, बहै कृपनि कहात।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत, छिन छिन में छिन जात॥
मेरो तेरी करत ही, है आयौ परभात।
हरि भजबे की बाबरे !, छिन छिन में छिन जात॥

अन्योक्ति माधुरी (कुंडलिया)

एरे चातक चपल चल, वाही नेह निकेत।
जहाँ सदा विहरत रहै, घन दामिनी समेत॥
घन दामिनी समेत, सतत रस–प्रभा पसारै।
स्वाँति नखत के बिना, स्वाँति घट अविरल ढारै।
'मञ्जुल जीवन जगै, पाय जीवन जिहि नेरे।
मान सिखावन मोर, चपल चल चातक एरे॥

यह भारे की टैक्सी, नहिं अनुगामिन कार।
रे पंथी ! कैसे करें, यासों मंजिल पार॥
यासों मंजिल पार करन की क्यों हठ ठानै।
ठौर ठौर पै ठहर नये पंथी उर आनै।

कह "कवि मञ्जुल" चलै न इत कछु गुन वारे की ।
विन धन करैं न प्रीत टँक्सी यह भारे की ॥
जैयो वंज कमायवे, अरे बनिक वा देस ।
रहै न टोटे कौ जहाँ, रंचक हू परवेस ।
रंचक हू परवेस पाय, सत लोगन माहीं ।
बेचहू मोल अमोल माल जेतौ तो पाहीं ।
"मञ्जुल" विभव वढ़ाय, सतत साँचौ सुख पैयो ।
बहुरि न आवागमन होय, वनकें इमि जैयो ॥
रे चन्दन ! तेरौ कहा, आदर करें किरात ।
देत सदा सठ दुसह दुख, काट काट तुअ गात ।
काट काट तुअ गात, बेच कौड़िन में आवें ।
काठ काठ सब एक, भेद कछु समझु न पावें ।
कह 'कवि मंजुल' रहैं न, नित घिरि घेरि विपति घन ।
देखि दिनन कौ फेर, अरे चुप रह रे चन्दन ॥
आवत पावस ही वढ्यौ, गुलाबाँस तो बंस ।
रे छलिया छल रूप धरि, छले सुमन अवतंस ॥
छले सुमन अवतंस, प्रसंसित रहे न कोई ।
अपनी आव्र दिखाय, आब सबही की खोई ।
'मंजुल' वैभव हेरि हेरि, हिय में हरसावत ।
अरे ! बोल कित जाय, बहुरि सरदागम आवत ॥

अभिलाषा (सवैया)

क्षण एक भी प्रेम की साधना में, न वियोग का अन्तर आता रहै ।
चिर सिञ्चित 'मंजुल' भावना का, तरु फूला फला सरसाता रहै ।
शुचि भक्ति से जीवन जाग्रत हो, इस जीवन का फल पाता रहै ।
मन-भृङ्ग सदा हृदयेश्वर के, पद-पङ्कज पै मडराता रहै ॥

किसी जन्म में भूल न भूलूँ तुम्हें, जन जान दया दरसाते रहो ।
'कवि मंजुल' नेह की लौनी लता, उर अन्तर में उपजाते रहो ।
चरणों से वियोग न हो क्षण को, इतना उर धीर धराते रहो ।
उस पंथ की धूल बनाना मुझे, जिस पंथ से प्रीतम आते रहो ॥

१५४–शिवचरणलाल:– आपका जन्म १२ जून १६१२ ई० में भरतपुर निवासी पं० मुकुन्दराम के यहाँ हुआ । आप यहां के प्रसिद्ध कवि कुलशेखर

के शिष्य हैं। आपका उपनाम "महेश" है। इनका बृजभाषा पर स्पृहणीय अधिकार है। शृङ्गार रस के कवित्त और सवैयों में आपकी भाषा की सजावट अत्यन्त ही सरस एवं सुन्दर होती है। भावों का चित्रण एक सरस सजीवता उत्पन्न करता है। शब्दालङ्कारों का प्रयोग तो बड़े ही सुन्दर एवम् चमत्कृत ढंग से हुआ है; सभी रचनाएं अति मधुर एवं हृदयस्पर्शी हैं। इनकी रचनाओं में भाषा शांकर्य का दोष देखने में नहीं आता। आपकी सरस रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

नैन-वर्णन (सवैया)

तब नैनन नैन सनेह कियौ, अब नैनन नैन दुरावत हैं।
निस-बासर नैन रहे टक लाग, न नैन कहूँ लखि पावत हैं।
इन नैनन चैन परै न 'महेश' सु मोहन को अकुलावत हैं।
बिलखावत हैं कलपाबत हैं, नित आँसुन सों भरि आवत हैं॥

मंद हंसैं तिरछौंही चितै, चलि चाल गयन्दन के मुख मोरैं।
खंजन गंजन सी अंखियां लखि, छैलन के मन मैन मरोरैं।
नूपुर की झनकार करैं, इतरात 'महेश' चली अति भोरैं।
सैन चलाय नचावत लंक यों, कामिन के चित कामिन चोरैं॥

शुक्लाभिसारिका (कवित्त)

चोंकत चकित चली चाँदनी में चन्दमुखी,
चितै चितै चारों ओर चोरीसी करत जात।
पायन के रंग रंगराती रंगे रंग भूमि,
अरुनाई अंग मुख अंबुज दरत जात।
भूषन चमक चारु चाँदी से चमकैं चीर,
मुरकि 'महेश' मन मोहनें हरत जात।
हीरन के हार हिय ढुरत अमंद दुति,
बारन ते मुक्ता हजारन झरत जात॥

कृष्णाभिसारिका

श्याम सरस सारी तैसी कंचुकी सम्हारी कारी,
मृग मद लेपन सों अंग छवि छुपि जात।
भूषन दमक दुति दाब पट अम्बरी सों,
खरकत पात त्यों उलूकन डरत जात।
सौरभ सुगंध पाय अबली अलि वृन्दन की,
घेरत सिमट छाया छत्र सी करत जात।

कीरति कुमरि कारे करत मनोरथन,
मुदित 'महेश' कारे कान्ह सों मिलन जात ॥

माँग-वर्णन

वैनी पीठ ढुरत लुरत यों नितम्बन पै,
कंचन सिला पै मनु पन्नगी सुहाई है।
मनिन जटित मंजु बंदनी यों राजै भाल,
राहु के डरन चौकी चन्द्रमा लगाई है।
सुकवि 'महेश' नील कंचुकी उरोजन पै,
सम्पुट सरोज पै मनोज छवि छाई है।
पाटिन के बीच माँग सेंदुर यों सोभित है
मानों भानुजा में धार सारदा सुहाई है ॥

'फाग-वर्णन

डारैगी कमोरी भरि केसर सुरंग रंग,
धमक धमार गाय सोर चहुँ पारैगी।
पारैगी सुपाटी सीस भाल में लगाय बेंदी,
अंजन अंजाय तन चूंदरी सुधारैंगी।
धारैगी सुकंचुकी सम्हार कटि लहंगा कस,
राबरे 'महेश' गुन गौरब बगारैगी।
मारैगी गुमान मूठि मेलिकें गुलाल लाल,
देखत ही लाल तोहि लाल कर डारैंगी ॥

बसन्त पंचमी में नटी का रूपक

फूले फूल कलित दुकूल बहु रंगन के,
गुंजरत भौंर त्यों मंजीर झनकंत की।
त्रिविध समीर बीन बाँसुरी सितार बाजैं,
होत कल गान कोकिलान किलकंतकी।
सुकवि 'महेश' चाँटी चातक मृदंग देत,
झूमें आम बौर सो लचक लौनी लंक की।
आनन गुलाब औ सुबास मई सौरभ सों,
नाचत नटीलों आवै पंचमी बसंत की ॥

१५५–रावजी यदुराजसिंहः–आपका जन्म रावराजा रघुनाथसिंह के यहा २९ नवम्बर सन् १९१३ ई० को हुआ। आपको काव्य प्रतिभा विरासत रूप में मिली क्योंकि आपके पिता रावराजा रघुनाथसिंह के यहां अनेक कवियों का

आवागमन बना रहता था तथा अनेकों कवियों को आपसे स्थायी वृत्तियां भी मिलती थीं। उनके सत्संग का प्रभाव आपके शिशु हृदय में कविरूप में आविर्भूत हो गया। प्राचीन कवियों के काव्य-ग्रन्थों का इन्होंने गम्भीरतम अध्ययन किया है। उसी के परिणाम-स्वरूप इनकी सर्वाधिक रचनाएँ ब्रजभाषा प्रधान हैं। आपकी रचनाओं का एक मात्र लक्ष्य श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाओं का वर्णन है। आपकी शृङ्गार रस सम्बन्धी रचनाएँ अत्यधिक श्रुति मधुर हैं। कवियों के सम्पर्क से पिङ्गल का ज्ञान भी आपको प्रचुर मात्रा में है; इसी कारण पिङ्गल की दृष्टि से इनकी रचनाएँ दोष-मुक्त हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में 'रसिक छैल' उपनाम रक्खा है। आपका ब्रज-भाषा तथा खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार है। अनुप्रासों की स्वाभाविक एवं सरस छटा श्रोताओं के हृदय-पटल पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है। इन्होंने राधाकृष्ण सम्बन्धी अनेकों छोटी बड़ी लीलाएं लिखी हैं; इनके अतिरिक्त फुटकर कवित्त और सवैया भी प्रचुर मात्रा में लिखे हैं। रसास्वादन के लिये आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं:—

वसन्त–वर्णन (घनाक्षरी)

पीरे आभूसन औ वसन्ती ही वसन नीके,
पीरौ ही मृदंग लै बसन्त राग गावैरी।
पीरौ सुरंगी रंग कनक पिचकारि डारि,
पीरौही गुलाल उड़ि अकास बीच छावैरी।
'रसिक छैल' पीरी सेज चढ़िकें पिया प्यारौ,
पीरी परी मोहि आहि हृदय लगावैरी।
काम–जुर जारै तन तपन बुझावै सखी,
ऐते हों साज तव वसन्त मन भावैरी॥

रूप–वर्णन

चंचल चितौन सों चटाक चित चोर चोर,
चन्द्रमुखी चोखी चन्द्रहास सी चलावती।
हेर हेर हँसन सु हियरा हिरानों हाय,
हटकें हठीली हाथ होठन हलावती।
रसिक छैल" राजै रंगीली रली रूप रासि,
रीझे रिझवारन कों रोकत रलावती।
जगमग जोति जुरी जोवन के जोर जाकी,
जर जर कीनों जग जरन जलावती॥

लक्षिता—नायिका

सरकी भाल बेंदी नैन कैसे उनीदे आज,
छत है कपोल वढ़ी लालिमा अधर की।
धरकी है छाती कुच कोर कढ़ी आँगी खुली,
काँपत हैं गात महदी छूटी क्यों कर की।
करकीं हरी चूरी फिरें अति घबरानी सी,
ढीले सिंगार सेज साजी किन सुघर की।
घरकी न सुधि बुधि रही है "रसिक छैल",
रात कित जागी लट खूट गई सरकी॥

ग्रीष्म की आवश्यकता

शीतल पवन चालै चन्दन विजन हालै,
कंठ बीच मुक्त—माल टाटी नये खसकी।
बरफ कौ पानी पुष्प—सेज सुखदानी अति,
दासी हू सुजानी करें बात प्रेम जसकी।
"रसिक छैल" गंधन सुवासित भई गैल,
ऊंचे महल तिनपैं जोति खिली ससिकी।
अतर गुलाब कौ सिंचाव चहुँ ओर चाय,
चारु ऐते हों साज सुघर नारि भरी रसकी॥

विरहनी ब्रजाङ्गना (सवैया)

हहिसें कहियो विनती हमरी, सब अंग जरें विरहाझरसें।
झर सें इत मेह छहै दुखिया, मन 'छैल' न प्रीत करें परसें।
पर सें मन मूरत को तुमरी, इक नेह लहैं अपने वरसें।
वरसें कब प्रेम-घटा हम पै लगि अंक हमें जियमें हरसें॥

कविकी अभिलाषा

अपना पथ है दोही क्षण का, मैं किससे क्या पहचान करूं ?
जिनसे मेरा कुछ काम नहीं, वे काम पूछते हैं मेरा।
जिनको नहिं अपना नाम याद, वे नाम पूछते हैं मेरा।
फिर उनको परिचय देकर के, क्यों परिचयका अपमान करूं ?
इस जीवन में हंसते हंसते, आते देखे आने वाले।
अरु रोने का निष्कर्ष लिये, जाते देखे जाने वाले।
फिर किस पद-ध्वनि से बच निकलूं, किस पद-ध्वनि का सम्मान करूं ?

जिस जीवन में साहित्य नहीं, उस जीवन ने क्या चक्खा है ?
जिस जीवन में कुछ राग नहीं, उस जीवन में क्या रक्खा है ?
फिर ऐसे नीरस जीवन पर, मैं क्यों मन में अभिमान करूं ?
प्रभु से है विनय यही मेरी, जब अन्त समय मेरा आवै।
कवि-वृन्द खड़ा कुछ कहता हो, अरु शान्ति चतुर्दिक छाजावै।
हों गुंजित स्वर से 'छैल' ये अम्बर, ऐसे में मैं प्रस्थान करूं ॥

१५६—मदनलाल गुप्त "अग्र":—आप भरतपुर निवासी लाला कैलाबख्श बजाज के आत्मज और जाति के अग्रवाल वैश्य हैं। इन्होंने हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनका जन्म भादों सुदी ५ संवत् १९७० को हुआ, अतः आपका कविता-काल सं० १९८६ से आरंभ होता है। आप एक कर्मठ व्यक्ति हैं और अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझते हैं। समिति के नवीन भवन के निर्माण में आपका स्पृहणीय योग रहा है। इनको वाल्यकाल से ही हिन्दी साहित्य समिति और हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग है। गत तीन वर्षों से आप समिति के प्रधान मंत्री पद पर कार्य कर रहे हैं और इससे पूर्व उप-मंत्री तथा उप-प्रधान पदों पर भी काम कर चुके हैं। आपकी कविता के प्रति बड़ी अभिरुचि है। आपकी अनेक सरस रचनाएं समय २ पर साधुसर्वस्व, लोक-धर्म, माहेश्वरी, हिन्दू-पंच, जाटवीर, अग्रवाल और सैनिक आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आपकी रचनाओं के उदाहरण देखिए:—

पत राखन हारौ

कुरु राज सभा विच द्रौपदि कौ, पट खैंच सकौ न दुशासन हारौ।
तज वाहन पायन धाय परौ, छिन में गज को सब सँकट टारौ।
सुरराज डुबाय सकौ न ब्रजैं, मिस कौतुक छूंगरि पै गिर धारौ।
नंद नन्दन सौ नहिं 'अग्र'! लखौ, जग दीनन की पत राखन हारौ॥

कृतघ्न मधुकर

परम रम्य आराम जिसे हे भ्रमर न तू तजता दिन रैन।
रंग-बिरंगे मधुरसा भीने पुष्पों पर करता है चैन॥
सुध बुध खो बैठा है सारी बना फिरे मत वाला सा।
दिखता है छल छिद्र हीन क्या? सीधा भोला भाला सा॥
किन्तु न तेरे भावों में है लेश मात्र सच्चाई का।
कौने कौने में चरचा है तेरी कलमषताई का॥

वही वाटिका होगी इक दिन वही सरोवर शीतल नीर।
किन्तु भूलकर भी क्या? मधुकर फटकोगे तुम उसके तीर॥
प्यार तभी तक है बस जब तक, मधु मकरन्द सहित हैं फूल।
अरे स्वार्थी! और कृतघ्नी, तेरी इस बुद्धि पर धूल॥
इतने पर जो तुम्हें बैठने देते उन वृक्षों को धन्य।
पास बिठाने योग्य नहीं है वरना तू है नीच जघन्य॥

१५७—श्रीनिवास ब्रह्मचारी:—आपका जन्म दीग (जिला भरतपुर) के प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में २८ दिसम्बर सन् १९१४ को हुआ। अपने पूर्वजों की भाँति आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करके आप सन् १९३५ से अब तक निरंतर जनता की सेवा करते चले आ रहे हैं। सन् १९४१ से इनको अभिरुचि कविता पढ़ने एवम् लिखने की ओर अग्रसर होने लगी। प्रारंभ से ही आपका झुकाव वीर रस की कविताओं की ओर अधिक रहा है। ब्रह्मचारीजी बड़े सरस और भावुक कवि हैं। इनकी भाषा भावानुकूल मधुर एवम् सरल है। उदाहरण देखिए:—

॥ विषमता ॥

यह विषम बेल फूली जगमें, प्रति दिन ही फलती जाती है।
दीनों के वक्षस्थल पर ये, काँटों का जाल बिछाती है॥१॥
उत बैभव शाली भवन बनें, रचि पचि कर अधिक सजाये हैं।
सोने के कलश शिखर पर धर शशि मंडल भी शर्माये हैं॥
फटिक शिला के चौक बने, बहु रंगन सों भर बाये हैं।
है स्वर्ग स्थल इस मृत्यु लोक में, जग मग जोति जगाये हैं॥
इनमें रहने वालों को नहिं. फिर याद किसी की आती है। यह विषम बेल॥१॥
इत बनी झोंपड़ी छोटी सी, मिट्टी के ढेलों पर छाई।
एक केड़ी मेड़ी हथगढ़ सी, टूटी हैं इसमें चरपाई॥
इसमें मिट्टी का दीप जले, नहिं मिटे अंधेरा दुखदाई।
एक भूखे नगे मानव को येही ढक लेती है भाई॥
युग युग कीं विषम अवस्था का सच्चा इतिहास बताती है। यह विषम॥२॥
उतमें भारी हैं कारबार, अरबों खरबों का माल रहै।
मील और गोदामों का, धरती पर फैला जाल रहै॥
उड़ते इनके ही वायुयान, कारों का कारोबार रहै।
मानव कहलाने का केवल, इनको ही अधिकार रहै॥
इतना अपार बैभव पाकर, नीयत चोरी में जाती है। यह विषम बेल॥३॥

इत में मजदूरी मिले नहीं, खेती बाड़ी की आस नहीं।
कोई उद्योग नहीं इनका, एक पैसा तक भी पास नहीं॥
प्रति युग में पिसते आये हैं, जीवन की शेष ना स्वांस रही।
इतने अस्थी पंजर सुख, मानव की इनमें वास नहीं॥
भूखे नंगे रहकर मरना, इनकी ही साख बताती है। यह विषम ।।४॥
एक बनाता शून्य एक लाखों का अंक बनाता है।
एक बड़ा है मालदार दूजा कंगाल कहाता है॥
एक कमाता हाड़ पेल कर, दूजा बैठा खाता है।
एक पड़ा नीचे पिसता है, एक चढ़ा ही जाता है॥
यह नहीं होता सहन आज की जनता समता चाहती है॥ यह विषम ॥५॥
करलो करनी जो भी करनी, दीनों के साथ तुम्हारी है।
ये जुल्म ढहाने की अनीत कब तक करती रखबारी है।
एक दिना नहीं एक दिना, आती सब ही की बारी है।
स्वाहा करतो है बाँसों के जंगल को एक चिनगारी है।
तुम स्वयम् देखते जाओगे चींटी पर्वत को ढाती हैं। यह विषम ॥६॥

१५८—गोपाललाल माहेश्वरी:—ये जाति के वैश्य और भरतपुर निवासी दुर्गाप्रसाद बोहरे के पुत्र थे। इनका जन्म लगभग १९७२ वि० में हुआ था। ये बड़े ही होनहार कवि थे और छोटी ही अवस्था में इन्होंने "साहित्योपाध्याय" 'हिन्दी कोबिद' 'साहित्य भूषण' 'हिन्दी एडवान्स' तथा 'हिन्दी प्रभाकर' आदि कितनी ही परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लीं थीं, किन्तु दुःख है कि केवल २१ वर्ष की अवस्था में सं० १९९३ वि० में इनका स्वर्गवास हो गया। भरतपुर को इनसे जो आशाएँ थी वह पूर्ण न हो सकीं। आप 'चन्द्र' उपनाम से रचनाएँ करते थे। आपकी कविताओं के दो संग्रह 'सूक्ति चन्द्रोदय' तथा 'सुमन सरोज' आपके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुके हैं। आपका गद्य पद्य दोनों पर ही समान अधिकार था। गद्य की भी कई पुस्तकें मुद्रित हो चुकी हैं। शेष संग्रह जिसमें "अन्योक्ति पंचदशी" 'अन्तर्ध्वनि' 'अलंकार चन्द्रोदय' और हृदय की गूंज' आदि हैं नष्ट हो चुकी हैं। कुछ थोड़ा सा फुटकर संग्रह हमें प्राप्त हुआ है, किन्तु जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह इन्हें उच्च कोटि का कवि सिद्ध करने को पर्याप्त है। इनकी कविताओं में सरसता माधुर्य और प्रसाद गुण स्पष्ट दिखाई देते हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

सवैया

जीवन दानि सुजान महा परजन्य यथोचित हूँ अवगाहौ।
स्वारथ के मिस के परमारथ ताप मिटाय अनन्द उमाहौ।

रावरी ग्रास मयूर करें बक सारस के कुल की जय चाहौ।
'चन्द्र' पपीहा को दोष कहा जु बियोगिन के सिर माँढ निबाहो हौ।।

मकरन्द के लाभ मलिन्द गयौ सरसीरुह कोश सजीवन की।
छक नाहि सक्यौ ग्रसमंजस में दुविधा परि 'चन्द्र' छपा छन की।
दल टारे नहीं पर प्रेम के ग्राँसुन ग्रास बिलास खिलै खन की।
करि खैंच सनाल लियौ मुख मेल रही ग्रलि के मन में मन की।।

रूप ग्रनूप निकाई लखे मन की गति ग्रौर की ग्रौर फिरेरी।
'चन्द्र' कलंकी कलाधर सी छबि राशि संभारत भाव भरेरी।
ग्रंचल ग्रोट में चोट करें दृग चंचल चारु चुटैल घनेरी।
बेगहि बूढ़ि गई पखियाँ ग्रखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी।।

हिय लाय के सांवरि मूरति कौं नहिं ग्रन्य सरूप बिसारिव हों मैं।
लहि के पद पंकज माधव के मन ग्रौर सु वस्तु न राखिहौं मैं।
छबि धाम गुपाल बसौ उर, ग्रंतर 'चन्द्र' कहा ग्रभिलाखि हौं मैं।
ग्राने नित नेन चकोरन तें मुख चन्द्र सुधारस चाखिहौं मैं।।

कवित्त

छाई दुति ग्रानन ग्रनंग की विशाल कहा,
रुरपरी सारी सुघराई त्रिभुवन की।
तोरन प्रसून फुलवाई मांहि ग्राई बाल,
नीची भई नार लह लतिका द्रुमन की।
कर कोमलाई लहि मति बिचलाई जिन,
सुलभ लजाई कोमलाई पदमन की।
तोरत संभार फूल वाल ग्रलबेली कहूँ,
ग्रांगुरी न चुभि जाय पांखुरी सुमन की।।

गज हों न नाथ किन्तु ग्रधम ग्रजामिल हों,
रसना रुचिर राम नाम राग रागैना।
पामर हौं गिद्ध नहीं जोगी जती सिद्ध नहीं,
पापन पहार तें सुबुद्धि मन जागै ना।
जासौं जग जीवन है ताहि कों बिसारें मन,
कलुष कलंक पंक छोह कहूँ पागैना।
दीन हों कलंकी हों कलंकिन सों काज तुम्हें,
ग्रंक गहि लेहु तौ कलंक ग्रंक लागै ना।।

१५९–शिवदत्त शर्मा एम० ए०:–आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत नगर कस्बे में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में ३० जनवरी सन् १९१८ ई० को हुआ। आपने आगरा विश्व विद्यालय से एम० ए० तथा एल० एल० बी० की परीक्षाएं उत्तीर्ण की और इनके पश्चात् साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य-रत्न की उपाधि प्राप्त की। आपकी बाल्य-काल से ही काव्य के प्रति बड़ी अभिरुचि है। विद्याध्ययन के अनन्तर यह अभिरुचि और भी अधिक बलवती होती चली गई। प्रौढ़ एवम् बाल साहित्य द्वारा तो आपने हिन्दी की सेवा की ही है, किन्तु विकास साहित्य की श्री वृद्धि करके आपने अपनी अप्रतिम प्रतिभा का विशेष परिचय दिया है। आपके लेख, समालोचनाएँ कहानियां, गद्यगीत तथा कविताएं सरस्वती, साधना, कमला, साहित्य संदेश और बानर आदि मासिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी लिखी हुई चार पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं:—(१) वृजेन्द्र वैभव, (२) यमुने, (३) जै चम्बल, और (४) राजस्थान नहर। शर्माजी गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार रखते हैं। परिष्कृत एवम् परिमार्जित होने के साथ २ आपकी भाषा सर्वत्र भावानुकूल है। नि:सन्देह आप एक कुशल, अभ्यस्त एवम् प्रतिभा–सम्पन्न कवि हैं। आपकी रचनाओं के देखने से प्रतीत होता है कि अतीत में आपकी विचार धारा प्रगतिवादी साहित्य की ओर भी प्रवाहित हुई थी। 'मजदूर' नामक कविता आपके इसी दृष्टि कोण की प्रतीक है। आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

बस एक गीत

बस एक गीत, बस एक गीत !
लिख दो कवि भरकर अपना उर।
यह व्यथित व्यथा क्रंदन आतुर।
जिसमें प्राणों की हार–जीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !
खुल जाँय ग्रंथियाँ उलझन की।
बँध जाँय परस्पर जन जन की।
भोली भाली भावनातीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !
कोई न किसी से द्वेष करे।
विकृत अपना उद्देश्य करे।
होवे पुनीत निज मनोतीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !

वृजभाषा—मंजरी

(१)

उषा सुन्दरी ने दियौ, नव शिशु रवि उपजाय
गाय गीत विहगावली, मुकता लता लुटाय

(२)

मधुबाला कलि प्रिया ने, प्यालौ धरयौ भराय
दूरागत थाम्यौ अमित, रवि पिय पिय पिय जाय

(३)

भरत जोत जागरन की, करत अनय विध्वंस
उतरत आवत अवनि पर, सुर गंगा कौ हंस

(४)

मीत भए केतिक विहग, गा मघु मधु संगीत
को सुनिहै अब विटप वर, यह पतझर कौ गीत

(५)

लुट्यौ विपिन सिंगार यह, छुट्यौ बसंत विहार
बिन पालें पालें परयौ, अलि कलि के पतझार

(६)

बसन छुटाए छोह तें, परची तपनि अटूट
ग्रीषम कुल ललतान की, लीन्ही लाजहु लूट

(७)

इतरावत काके बलन, काम अनय चहुं कोद
ग्रीषम ! सूरज सखाहू, छिपिहै बदरी गोद

(८)

कैसे गाऊं और का हौं हारी हरबार
पीतम तेरेइ तार में, अरुझे तंत्री तार

(९)

किमि चाल्यौ ? कर ना कंप्यौ, 'नाँही' लिखत निशंक
गयौ न डस क्यौं कागदै, अरी लेखनी डंक

(१०)

अत्याचार हिमंत कौ, सकी न प्रकृति बिलोक
डार्यौ परदा कुहर कौ, छयौ धुंआ सो सोक

(११)

का उजियारौ लै करूं, जीय जरावन हार
अंधियारौ घनश्याम की, सुरत करावन हार

(१२)

पीर पराई देखि कैं, अब न बनहु बेपीर
चीर देहु हमरे हरी, अब न देहु उर चीर

(१३)

तुम अंधियारे में दुरे; मो पै करि परकास
मोहि बुलावहु कै उतै, कै आवहु प्रिय पास

(१४)

रजनी ने रवि को दियौ, श्याम हलाहल प्याय
रवि शव पर विहगावली, बिलख बिलख बिल्लाय

(१५)

आजा कंठ गुंजाय जा, वीणा स्वर सुप्रशंस
मैया नेंक हंसाय जा, मेरो मानस हंस

हम भारतीय

हमें चाहिएं नहीं रंग की आज कथाएं ।
हमें चहिएं नहीं आह की आज व्यथाएं ।
हमें चाहिएं नहीं प्रणय की प्रणत प्रथाएं ।
हमें चाहिएं नहीं कामिनी दाएं बाएं ।
हमें चाहिए आज असि, विष डूबी जो हो खरी ।
क्रोध रक्त दृग चाहिएं, नहिं चितवन वह मदभरी ॥

(२)

हमें शक्ति दो शस्त्रभार हम सिर पर झेलें ।
हम बढ़ते ही जाँय शत्रु को और पछेलें ।
तलवारों पर चलें और तीरों पर खेलें ।
हम समीर से बढ़ें विजय श्री को हंस ले लें ।
हमें चाहिए स्वर्ण दिन, नहीं रजत की शर्वरी ।
क्रोध ज्वलित दृग चाहिएं, नहिं चितवन वह मदभरी ॥

(३)

हम है सिंह सपूत वीरता के व्रतधारी ।
तीर तोल कब सके हमें हम इतने भारी ।
हम न माँजते रहे अस्त्र लख युद्ध तयारी ।
घलाघली में सर्व प्रथम थी निज गति न्यारी ।
प्रलय नृत्य कारिणि रही थी अपनी असि किन्नरी ।
मोह सकी असि ही हमें, रक्त रंजिता मदभरी ॥

(४)

जागो जागो वीर वंश के वंशज जागो ।
ऐसे बढ़ो कि शत्रु कहें बस–'भागो भागो' ।
रण केहरि ! हे वीर ! जगो मजबूतो ! जागो ।
जगो सपूतो ! भारत के वर पूतो ! जागो ।
आज युद्ध का प्रात है, नहीं शांति निशि सुखकरी ।
रक्त बिन्दु दो भाल पर, त्यागो निंदिया मदभरी ॥

(५)

अत्याचारी वर्ग धरा पर से हट जाए ।
अनाचारियों की लोथों से भू पट जाए ।
ऐसी दो हुँकार व्योम-मंडल फट जाए ।
विजय–पताका उठे धरा अम्बर सट जाए ।
रणबंका निज देश की, दिखे शक्ति प्रलयंकरी ।
तब चूमो तुम चाव से, निज असि शोणित–मदभरी ॥

१६०–डा० रांगेय राघवः–आप स्वामी रंगाचार्य के आत्मज और भरतपुर राज्यान्तर्गत वैर कस्बे के निवासी हैं। वैर एक ऐतिहासिक एवम् दर्शनीय स्थान है और अपनी नैसर्गिक शोभा के लिये प्रसिद्ध है। आपके पूर्वज तामिल देश से आकर स्थायी रूप से यहाँ बस गये थे। सेण्ट जोन्स कालेज आगरे से एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर, आपने सन् १९४९ में पी–एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। शैशव काल से ही आपकी अभिरुचि साहित्य सृजन की ओर रही है। आप एक प्रौढ़ लेखक हैं। इनके अनेक लेख तथा ग्रन्थ कई प्रान्तीय सरकारों द्वारा पुरुष्कृत हो चुके हैं। आपकी कुशल लेखनी द्वारा अनेक सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास, काव्य, रूपक, आलोचना और कहानियाँ आदि उद्भूत हो चुकी हैं, किंवहुना आपकी लेखनी से कोई विषय अछूता नहीं रहा। आपकी अनूदित, सम्पादित और मौलिक रचनाओं की संख्या ८० के लगभग है। इनके रूप छाया नामक प्रवन्ध काब्य में प्रसाद की कामायनी का सा आस्वादन मिलता है। आपकी सरस एवं कोमलकांत पदावली का माधुर्य नीरस मानस को भी आप्लावित कर देता है। पदों की श्रुति मधुर वर्ण मैत्री विशेष श्लाघनीय है। पद २ पर अलंकारों का स्वाभाविक चमत्कारपूर्ण प्रयोग वर्णनों में चार चांद लगा देता है। आपकी रूप छाया पुस्तक से एक उदाहरण प्रस्तुत है:—

सुन्दरियों की पलकें उसके,
पथ में बिछती थीं दिवस रात

थी रत्नदीप की ज्वालशिखा सी
तृष्णा जलती सांझ प्रात
वह रीझ गया अप्सरा रूपसी
रंभा का लावण्य देख
भाया न उसे जग में कुछ भी
खिच गई भुवन में ,वही रेख

भर आह समुज्वल प्राङ्गण में
वह रहा घूमता विकल प्राण
मलयानिल में से आता था
रंभा-तन का ही गंध-घ्राण
तब सालस लालस हो अधीर
वह चला खोंजने उसे, भूल
रे भूल गया वह सकल विश्व
सुधि तंतु पकड़ ज्यों गया भूल ॥

रंभा संध्या में चली, देख चमत्कृत भूमि,
पवन विलोड़ित लड़खड़ा गिरा आज था झूम।
वह सौंदर्य्य कि ज्वालामुखि की तृष्णा सुन्दर
नील गगन की पृष्ठ भूमि पर स्वर्णिम मनहर।
भुवन मोहिनी रूप सोभिनी चली अचानक
सृष्टि काव्य का सूक्ष्म रूप वह मधुर कथानक,
देखा त्रिभुवन अकह श्वास ले झूमा झूमा
यौवन की वह अपरिमेय गाथा ले सूना।
किया रुप निर्माण बिधाता ने सुख भरने
किंतु स्वयं वह दाह बना, ज्वाला सी भरने
पुण्डरीक के साथ उगी दो कल्हर कलियाँ
स्वर्ण मृणाल झूलते धीरे भर नव छवियाँ,
रक्त कमल थे पुलक रहे, पल्लब चलदल थे
झीने श्वेत बसन में सुन्दरि अंग मचलते,
बोला नूपुर एक सृष्टि ने शीश झुकाया
मुस्काई पल एक कि सबने वन्दन गाया
स्वयं काम ने झुक चरणों में लाली रंग दी
रति ने उस लावण्यमयी में लज्जा भर दी।

तब काँपी वह सृष्टि मेघ में सौदामिनि सी
त्रिभुवन कसका देख देख कर चिर मोहिनिसी,
मुस्काई जब दशन प्रभा से, ज्योति सिक्त सी
कुंद कुंद बन गई सृष्टि सत्ता विमुक्त सी।
जिधर नयन चल गये हुआ जड़ जंगम सहसा
पग धरते ही काम हो गया मूर्छित अकुला
वाणी हुई अवाक् कि विधिना सर्जन भूला
यमने रोकी मृत्यु, फूल जीवन का फूला।
सिंधु तरंगित हुआ श्वास पर उठते गिरते,
कुच युग की स्पर्धा में उर्म्मिजाल से उठते
अगजग व्यापी गंध घ्राण पर तृप्त नहीं था
जला रहा था रूप, किंतु वह दृप्त नहीं था।
किंतु रूप वह देखकर नल कूबर नत शीश
छिपा नहीं अपनी सका मनमें उठती टीश।

१६१—विश्वबन्धु शास्त्री:—आपका जन्म २५ अप्रैल सन् १६२४ को अलीगढ़ जिले के उखलाना नामक ग्राम में हुआ। आपके पिता का नाम श्री चुन्नीलाल आर्य था। इन्होंने श्री बिरजानन्द साधु आश्रम अलीगढ़, गुरुकुल विश्व विद्यालय बृन्दावन तथा वाराणसी विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर इन्होंने पंजाब और भरतपुर के कई विद्यालयों में आचार्य पद पर कार्य किया। सन् १९४९ में आप भरतपुर पधारे और तब से अब तक यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपने लगभग २०० रचनाएँ सृजन की हैं, जो सभी सामाजिक अथवा राष्ट्रीय विषयों पर हैं। आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी होने के कारण आप विभिन्न प्रान्तों में आर्य समाज का प्रचार करते रहते रहते हैं। शास्त्रीजी उच्च कोटि के कवि, वक्ता एवम् दार्शनिक हैं। आपके तर्क युक्त ओजस्वी भाषण बड़े ही सारगर्भित एवम् अतीव प्रभावोत्पादक होते हैं। अभ्यस्त और निपुण कवि होने के कारण आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण देखिए:—

॥ मैं तू और वह ॥

मैं अधिक पास, वह अधिक दूर, दोनों तू मैं ही लीयमान।
मैं अनातीत का रूप और वह भूतकाल, तू वर्तमान।
तू के युग में सत्ता मैं वह 'तू' में हम दोनों भासमान।
है सृष्टि पूर्व्व 'मैं' और अन्त'वह'मध्य तत्व 'तू' का विधान।

मैं का स्तर, इन्द्रिय से अगम्य, वह का स्वरूप शून्यायमान।
तू के घेरे में आ दोनों, दोनों ही हो जाते-प्रमाण।
मैं बन जाता 'तू'-'तू वह' तब, 'वह' सर्व्वगम्य है 'अहं' रूप।
वह बन जाता 'तू' 'तू मैं' तब, 'मैं' सूक्ष्म भूत 'वह' का स्वरूप।
'मैं वह में' 'वह मैं' में आकर, दोनों हो जाते साम्यप्राण।
है अनिर्वाच्य सर्व्वोच्च गान।

दिवाली

दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत-गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥
नहीं ध्यान तुमको किसी का,
नहीं ज्ञान तुमको किसी का।
नहीं मान तुमको किसी का,
नहीं भान तुमको किसी का।
दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥
गगन छत्त जिनकी निराली,
तनी चाँदनी तार वाली।
दिशाएँ चतुष्कोण जिनकी,
शयन-सेज है भूमि खाली।
उन्हें यह दिखाने चले हो, उन्हें यह सिखाने चले हो।
उन्हें लक्ष्य करके हंसी का, अहा! मुस्कराने चले हो॥
न तन ढक सकें ये बिचारे,
न मन रख सकें ये दुलारे।
न इनकी कोई शेष इच्छा,
स्व-इच्छा से स्वयमेव हारे।
उन्हें तुम सताने चले हो, उन्हें तुम चिढ़ाने चले हो।
बढ़ाने को दुख दर्द उनका, उन्हें तुम दुखाने चले हो॥
तड़पते हैं बच्चे ठिठुर कर,
काट देते हैं दिन तो सिकुड़कर।
भूख से पीठ में पेट सटकर,
हो गये एक, दोनों सिमटकर।
तुम उन्हें तड़पड़ाते चले हो, तुम उन्हें फाड़ खाने चाले हो।
सिसकती मनुजता को सचमुच, घात कर, आज ढाने चले हो॥

नही क्या चिरन्तन के शिशु ये,
न शूकर या कूकर से पशु ये।
न सौहार्द इनसे तुम्हारा–
भक्ति में वह सके नाँहि अंसुये।
धन दिये पर बहाने चले हो, घर में लक्ष्मी बुलाने चले हो।
लक्ष्मि-स्वामी श्रमिक को न जाना, व्यर्थ में जगमगाने चले हो॥

चमक है पुम्हारे घरों पर,
चमक है तुम्हारे दरों पर।
चमकते हैं चेहरे तुम्हारे,
चमक नारि के जेवरों पर॥
क्रूरता को मनाने चले हो, शूरता को भगाने चले हो।
हड्डियाँ ऋषि दधीची की देखो, आज तुम आजमाने चले हो॥
जान कर आँख मूंदो न भाई,
आ रही क्रान्ति, देखो न आई।
दियों की नई रोशनी में–
न दे तल-अंधेरा दिखाई।

अन्तरात्मा सताने चले हो, धर्म-ढाँचा मिटाने चले हो।
नेह भर मृतिका दीपकों में, नेह दिल से भुलाने चले हो॥
दिवाली मनाने चले हो, सुखी-गीत गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो, सुधा-घर बसाने चले हो॥

१६२–तुलसीराम चतुर्वेदी:–आपका जन्म वैशाख कृष्णा २ सम्वत् १९८२ को भरतपुर में हुआ। यहाँ के प्रसिद्ध कवि जयशंकर चतुर्वेदी के आप कनिष्ट भ्राता हैं। १९४३ में स्थानीय कालेज से एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप दिल्ली चले गये और वहां अर्जन और अध्ययन दोनों साथ साथ करने लगे। प्रारम्भ में आपने रिजर्व बेंक में और तत्पश्चात् राशनिग विभाग में काम किया। इसी बीच आपने पंजाब विश्वविद्यालय से क्रमशः प्रभाकर एवं बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्ही दिनों आप पत्रकारिता के क्षेत्र में आगये। 'विश्वमित्र' दैनिक नई दिल्ली में काम करते हुए आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से १९५२ में हिन्दी एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी समय दिल्ली में नया दैनिक पत्र "जन सत्ता" आरम्भ हुआ और आप उसके सम्पादकीय विभाग में चले गये। छात्र-जीवन में ही साहित्यिकों के सम्पर्क के कारण साहित्य की ओर आपकी

विशेष रुचि हो गई थी। आपके सहपाठी स्वर्गीय इन्दुभूषण शर्मा के साथ आपकी साहित्य साधना अनवरत रूप से चलती रहती थी।

प्रधान रूप से तो आप राष्ट्रीय कविताएँ किया करते हैं, किन्तु भरतपुर के शृंगार रस के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल 'मंजुल' के शिष्य होने के कारण शृंगारिक रचनाएँ भी बड़े चाव से कहते हैं। आपके कोकिल कण्ठ से सवैयों की कल-कूक बड़ी प्यारी लगती हैं। स्वयं मंजुलजी, जिन्होंने प्रारम्भ में उन्हें सवैया कहना सिखाया कभी कभी उनसे सवैया सुनते सुनते मग्न होकर कह उठते हैं— "उस्ताद तुलसीराम, तुमकूं सवैया कहवौ सिखायौ तो हमने पर अब ऐसी मन में आवैं है कि तुमसें हम सीख लेंय"। इनकी कृतियों के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं:—

मानव (सवैया)

जिसनें कभी वन्दिनी मा की स्वतंत्रता, साध का प्याला पिया न पिया।
जिसने अधिकार की साधनामें, अधिकार का त्याग किया न किया।
'तुलसी' जिसने कभी डूबते को, तिनके का सहारा दिया न दिया।
वह मानव मानवता के लिए, किसी देश में आके जिया न जिया॥

गायक

जिसने रस हीन हृदय को कभी, रस धार से पूर्ण किया न किया।
जिसने शिथिलाङ्ग में रागिनी से, नव रक्त-प्रवाह किया न किया।
"तुलसी" जिसने मुरदा बने देश को, जीवन दान दिया न दिया।
उस गायक ने स्वर साधना में, प्रतियोग किसी से किया न किया॥

वारिद

जिसनें जल-हीन सरों में तृषातुर, मीन का त्राण किया न किया।
सदा जोहते बाट किसान के खेत को, सिञ्चित जाके किया न किया।
जिसने नभ में घिर के कवि को, कविता का प्रसाद दिया न दिया।
उस वारिद ने वन दानी महा, कभी किञ्चित दान दिया न दिया॥

'मरु के उर में सोई सरिता'

मरु के उर में सोई सरिता, झर झर कल कल रव क्या जाने?
जो अपने जीवन भर के सब, अरमान कुचलता मान रहा।
जिसका जीवन असफलता में, गति मय होते निष्प्रण रहा।
जिसके परिणाम निराशा, वह आशा आलिङ्गन क्या जाने?
जिसने शैशव से यौवन तक, पीड़ाओं का जग देखा हो।
जिसके ललाट में लिखी एक, विकृत अभाव की रेखा हो।
वह जिसने दुख मय जग देखा, वैभव संसृति को क्या जाने?

जिस उर-बीणा के छिन्न हुए, सब तार भिन्न सब ताल हुए।
सब तारों के अपनी डफली, अपने अपने ही राग हुए।
उस टूटी बीणा का कोई, फिर झंकृत करना क्या जानें ?
कितनी वरसातें आती हैं, घन घोर घुमड़ घिर आते हैं।
अवनी तल पर कितने घन-दल, जल वर्षायें कर जाते हैं।
नक्षत्र स्वांति के विना किन्तु, चातक जल-वर्षण क्या जाने ?
जिसके जीवन का श्री गणेश, अभिशाप और चिन्ताएँ हों।
जिसके वक्षस्थल पर लटकीं, दुर्बलता की मालाएँ हों।
क्रन्दन जिसका संगीत बने, वह प्रणय-रागनी क्या जाने ?

शिवाजी की समाधि

अति सफल साधना की प्रतीक, यह किसकी अमिट निशानी है ?
किस यशः काय की पत्थर के, अक्षर से लिखी कहानी है ?
प्रासादों के बल-वैभव से, जिसका वैभव गौरव महान,
वह कौन आज रच रहा यहां, विश्वम्भर का अन्तिम बिधान ?
कितनी चिर निद्रा में सोया, ले सका न अबतक अंगड़ाई।
रे जग के कवि क्या समझेगा, उसके अन्तर की गहराई।
यौबन उत्ताल तरंगें ले, जब एक दिवस था फूट पड़ा।
यह महाराष्ट्र का राष्ट्र पथिक सब तोड़ नियंत्रण छूट पड़ा।
अनियंत्रित अविचल आतुर ये, जिस ओर गया जग झूम उठा।
मद मस्त हुआ मतबाला सा, अभिलाषाका मुख चूम उठा।
उसके इंगित पर एक एक, मरहठ्ठा पठ्ठा झूम गया।
वोरों ने अपने खड़गों से, लिख दिया एक इतिहास नया।
लिख दिया कि बीरों के दिचार, साम्राज्य नष्ट कर देते हैं।
लिख दिया सँगठन से मनुष्य, सब शक्ति प्राप्त कर लेते हैं।
लिख दिया कि कंटक चुनने पर, फूलों के कुंज विकसते हैं।
लिखदिया कि संकट सहने पर, सुख-सौरभ स्वयं विहंसते हैं।
लिख दिया कि मानव के प्रयास, निष्फल न कभी हो सकते हैं।
लिख दिया कि वीरों के प्रहार, असफल न कभी हो सकते हैं।
लिख दिया कि मन की कमजोरी, कायरता का पहला पद है।

१६३—इन्दु भूषण 'इन्दु':—ये जाति के सूर्यद्विज ब्राह्मण और पं० कुम्भनलाल के आत्मज हैं। इनका जन्म ज्येष्ठ कृष्णा ८ संवत् १९८२ वि० को

भरतपुर में हुआ। बाल्य काल से ही इनको काव्य सृजन के प्रति विशेष रुचि थी। ये बड़े प्रतिभा सम्पन्न और होनहार कवि थे, किंतु कराल काल ने इन्हें अल्पायु में ही ग्रस लिया। इनकी सरस रचना प्रस्तुत है:—

समस्या सुजान की

कोषतें कढ़त काटे, क्रूर दुष्ट भुंडन को।
कौशल दिखाय रण, रक्षा करै मान की।
काट काट रुंडन को मुंडन उड़ावे नभ।
भीत भये भाजैं अरि चिन्ता करैं जानकी।
देखकर कौतुक लें जुग्गिन समाज संग।
आई रण चण्डी प्यासी शत्रु रक्त पान की।
थर थर काँपी जाहि लखि के पठान सैन।
काल जोभ तुल्य खडग ऐसी हो सुजान की॥

कवित्त

कोऊ तो रहै है मस्त पढ़न लिखन माहिं,
कोऊ निज गृहस्थ के काज में ग्रस्यौ रहै।
जात है बगीची कोऊ होत ही प्रभात नित्य,
कोऊ निज देवन की पूजा में धस्यौ रहै।
कोऊ नर उठत ही चाय दूध पान करैं,
बिस्कुट मलाई कोउ खान में फंस्यौ रहै।
मेरे जान सर्व श्रेष्ठ वही है विश्व माहिं,
जाके डर भंग युत मोदक वस्यो रहै॥

जन्म भूमि

भारत मेरी जन्म भूमि है मै इसका उत्थान करूंगा।
विस्मृति सागर में विलुप्त गौरब का फिर निर्माण करूंगा।
मैं हूँ प्रचंड सी अग्नि शिखा दुश्मन स्वाहा करने वाली।
दानवता के उच्छेदन हित जग मुझको ही कहता काली।
मैं शंकर का वह कोधानल जन जिसको लख त्रासित होते।
मैं परशु राम का परशु प्रवल जिससे नरपति दासित होते।
अपनी प्रलयंकर विभूति से रिपु समूह का मान हरूंगा।
हुआ अन्त हा राष्ट्र हितों का स्वार्थ पूर्ति का फाग मचा है।
पाशवता की मूर्त्ति बने पर मानवता का स्वांग रचा है।
सिंहों की सन्तान किन्तु स्वानों का सा व्यवहार लिया है।

रोटी के कतिपय टुकड़ों पर देश द्रोह स्वीकार किया है।
मृतवत् सिंहों में फिर से नव जीवन का संचार करूंगा।
काम उपासक बने शस्त्र-पूजक जो कभी कहाते थे।
अपने अतुल पराक्रम से जो शत्रु हृदय दहलाते थे।
डूब रहे निज वासनाओं के परिपूरण में वीर यहाँ है।
नहीं जानते पराधीन को यह बिलास अधिकार कहाँ है।
प्रणय केलि रत प्रेमी मन को प्रलय राग से आज भरूंगा।
मैंने सीखा है शलभों से देश हितों पर जल मरना।
पराधीन मां की वेदी पर अपने को स्वाहा करना।
हूँ गुलाम मैं मुझे आज सन्तोष शान्ति की चाह नहीं है।
माँ बन्दी है मौन रहूँ मैं क्या पुत्रों का धर्म यही है।
बीणा के सोये तारों में फिर से मैं झंकार भरूंगा।
गीता का वह कर्म योग मुझको कर्मण्य बनायेगा।
असुर बिनासक राम रूप मुझको प्रकाश दिखलायेगा।
राणा और शिवा की गाथा अमित शक्ति देंगी तनमें।
गुरुओं का बलिदान भरेगा अमर ज्योति मेरे मन में।
संचय कर इस विकट शक्ति का बन्दी जन स्वाधीन करूंगा।
आवो रण का हुआ आज आह्वान अरे बीरो आवो।
आवो माँ की है पुकार इसका चिर उपकार चुकावो।
स्वातंत्र्य दीप पर तुच्छ कीट सम स्वाहा करदो निज तन को।
दासताओं की शृंखलाओं से मुक्त करो बन्दी जन को।
मुक्ति दिलाकर जननी का जगतीं में गौरव मान करूंगा।

१६४–सम्पूर्णदत्त मिश्र एम० ए०:–आपका जन्म सम्वत् १९८४ में पं० गोपाललाल मिश्र के यहाँ भरतपुर में हुआ। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत के अनुसार आप बाल्यकाल से ही कुशाग्रबुद्धि है। कुछ विशिष्ट मंत्रों के जप से तथा भगवती त्रिपुर सुन्दरी की उपासना से आप में कवित्व शक्ति जागी। फलस्वरूप आपने संस्कृत में काव्य रचना आरंभ कर दी।

२५ वर्ष की आयु में आपने 'ऋतूल्लास' नाम का एक संस्कृत काव्य लिखा। इसको पढ़ते समय अनेक मर्मज्ञों को महाकवि कालिदास के मिठास की स्मृति हो आती है। सन् १९५९ ई० में उत्तर प्रदेश सरकार ने संस्कृत के लिये सारे देश से जिन बारह ग्रन्थकारों को पुरस्कृत किया उनमें राजस्थान से आपको 'ऋतूल्लास' के लिये पुरस्कार मिला। श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य ने 'ऋतूल्लास' से

प्रसन्न होकर आपको 'कवि पुण्डरीकम्' पदवी से पुरस्कृत किया। ३१ वर्ष की आयु में आपने संस्कृत में 'सूक्तिपंचामृतम्' नाम का एक दूसरा काव्य लिखा। आप संस्कृत और अंग्रेजी दोनों के एम० ए० हैं। आप इंगलिश में भी कविताएँ लिखते हैं। इस समय आप बसेड़ी गाँव में इंगलिश के कार्यवाहक सीनियर टीचर हैं। आपके संस्कृत विषयक भाषण और संस्कृत गीत 'आल इण्डिया रेडियो' जयपुर, से १९५३ ई० से प्रसारित होते आ रहे हैं। ब्रज भाषा और खड़ी बोली दोनों पर आपका समान अधिकार है। अपने सुधासिक्त सुमधुर कंठ से आप कविता सुनाने का ऐसा समा बाँध देते हैं कि किसी का मन तनिक भी ऊबने नहीं पाता। आपकीभाषा शैली बहुत ही रोचक, सरल तथा प्रसाद-गुण पूर्ण है; भाषा विषयानुकूल परिवर्तित होती जाती है। दार्शनिक भावों के गहन एवं गंभीर विषय की अभिव्यक्ति गंभीर भाषा में ही हुई हैं। आपकी रचनाओं के कुछ उदाहरण निम्नाँकित हैं:—

सवैया

सुचिता के अलीक नगारन कौं सुनि कैं कब लौं सचु पाइये जू ?
कथनी करनी की असंगति सौं कब लौं पुनि ना उकताइये जू ?
इन कैतव की करतूतन पै कब लौं नहिं कोप जनाइये जू ?
दुरनीति परे इन मीतन सौं कब लौं निज नेह निभाइये जू ?

बहु देखि चुके, नहिं सेस कछू, अब तौ तुरतैं जगि जाइये जू।
इनकी मति कीरति की बतियाँ मति ना कितऊं पतियाइये जू।
कहि देउ न खोलि कैं एकु दिना मन में कछु संक न लाइये जू।
हम तौ तुम कौं न निभायंगे जू तुम हू हम कौं न निभाबये जू॥

परिवार के पेट में पाहन दै पुनि केतिक हू पढ़ि जाइये जू।
गुन मान गुरू जन के उर में बरु केतिक हू चढ़ि जाइये जू।
नहिं जौ लौं किन्हैं अधिकारिन के पदपंकन में गढ़ि जाइये जू।
नहिं न्याव की आस बिसास कछू कहु का बिरते पै निभाइये जू॥

निज हानि घनेरी उठाइकें हौं समुझी गति लोगन की बतियान में।
मुख तें कछु और बघारि रहे कछु औरहि धारि रहे छतियान में।
पुनि खाइ कें धोके पै धोके सरासर सोर सर्‌यौ सिगरे दुखियान में।
मिस न्याव के घाव करें मुखिया ये परेखे बसे रिस की अंखियान में॥

दीखत ये जो वड़े रे गुनी गनिका संग वास करैं वगियान में।
दीखत ये जो वड़ेरे धनी धन की धक व्याप रही छतियान में।

दीखत ये जो दिलद्री दुखी दवते रहिं स्वारथ की कंखियान में।
पापी पराजय रास करै वस तापस की रिस की अंखियान में॥

परिणाम

जव रात घूमने जाता मैं, जव रात घुमाने जाता मैं।

(१)

शारद हिम कर की आभा में, कोठी को जगती पाता मैं।
कुछ कम्पित सी पुष्पित वल्ली, चुप चाप सहारा लिये हुए।
शशि का प्रसाद पा जाने को, निज तन्तु करों को किये हुए।
जव लेती थी अंगड़ाई सी, मैं खड़ा हो गया छाया में।
ना जाने क्या क्या सोच गया, उस मोहकता की माया में।
पर छोड़ा वहां निवास नहीं, अब, तोड़ चुका हूँ नाता मैं।

(२)

अच्छा तो लो, फिर सुन ही लो, मैं उसे छोड़ आगे वढ़ता।
भावों के सुखद सरोवर में, जी भर कर उतराता चढ़ता।
यह कौन धमक कर धीमे से, कानों में कहती चुप रहना।
मैं जो कुछ तुम्हें सिखाती हूँ, उसको सव से मत कह देना।
उस प्रकृति-नटी की भङ्गी पर, वोलो क्या भेंट चढ़ता मैं ?

(३)

चांदनी पटक दी चन्दा ने, पत्तों ने गोदी में ले ली।
क्या बुरा किया बेचारों ने, जो रच पच कर सिर पर झेली।
पर चञ्चल को सन्तोष कहां, रहने का एक उरस्तल में।
मैं गोरी हूँ ये काले हैं अङ्कित कर चली धरा तल में।
तव कितनों की विधि लेखा पर, वहते आँसू पी जाता मैं।
नर के एकान्त समर्थन में, नारी को गाली देने का।
मेरा कोई कर्तव्य नहीं, ना मैं इसमें रस लेने का।
पर पेड़ों के नीचे पड़ क्या, चांदनी नहीं दिखलाती है।
उन्नत पुरुषों की भी कैसे, नारी सीमा वन जाती है।
वैसे, ऐसे प्राकृत-बन्धन, से, कभी नहीं चकराता मैं।

(४)

माना पत्ते काले न सही, पर कालों से क्या कुछ कम हैं।
इतना तो मान सकोगे ही, वे नहीं चन्द्रिका के सम हैं।
जव हम वालाओं के सम्मुख, लावण्य चकित रह जाते हैं।
क्या दोष कौमुदी का पत्ते, काली छाया दिखलाते हैं।
ऐसे सर्गों की संगति में, कुछ सार समझ मुसकाता मैं।

(५)

हारा सा बैठ अंधेरे में, बेलों की कुञ्जों के नीचे।
मैं सोचा करता ढीले से, मानस के तार तनिक खींचे।
यौवन, माधुर्य, मनोहरता, युग युग पर्यन्त चले जाते।
उद्यान, चांदनी, सुन्दरियां, नित नये पुराने हो जाते।
इस वैयक्तिक नश्वरता पर, बस सोच सोच रह जाता मैं।

१६५–राधाकृष्ण गुप्त 'कृष्ण':– आपका जन्म श्रावण शुक्ला ३ सम्वत् १६८५ वि० में लाला मदनलाल के यहाँ भरतपुर में हुआ। भरतपुर हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप कवि भूषण पं० नन्दकुमार के शिष्य हो गए। आपकी काव्य-रचना का आरम्भ विभिन्न कवि-सम्मेलनों की समस्या पूर्ति से हुआ। इन्होंने केवल 'रस परिचय' नाम का एक (छन्दोवद्ध) ग्रन्थ लिखा है, जिसमें रसाङ्गों की पूर्ण व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाएं, कवित्त तथा सवैयों के रूप में, सर्व साधारण के मनोरंजन की सामग्री बनी हुई हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। वर्तमान खड़ी बोली में भी आपकी अनेकों रचनाएं हैं। इनकी भाषा शैली की एक मुख्य विशेषता यह है कि इनकी प्रत्येक रचना भाषा-शाङ्कर्य दोष से मुक्त हैं। आपकी सरस रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं:—

गणपति वन्दना (छप्पय)

जै मोदक प्रिय चन्द्र भाल, जै मंगल दायक।
जै गणपति गण ईश, गौरि-नन्दन सब लायक।
बक्र तुंड जै जै त्रिनेत्र, शुचि एक दन्त जय।
लम्बोदर गज बदन सदन, रिधि सिद्ध कंत जय।
जै आदि देव 'कवि कृष्ण' कह खण्ड-परसु-मुख चन्द जय।
जै जनन सकल संकट हरन, भुवन भरन आनन्द जय॥

भक्त की अभिलाषा (कवित्त)

वृन्दावन वीथिन में बांसुरी बजात कहूँ,
द्वारे नन्दराय नन्द गाम मिल जायंगे।
बरसाने भूप-वृषभानु के सुभौन कै तो,
मथुरा कै गोकुल सुधाम मिल जायंगे।
'कृष्ण कवि' कालिन्दो-कूल के कदम्ब तरें,
लला लली ललित ललाम मिल जायंगे।

ब्रज धाम धाम की परिक्रमा दियें जा प्यारे,
काहू चक्कर में श्यामा श्याम मिल जायंगे ॥

रसना को भगवद् भजन की प्रेरणा (सवैया)

उड़ि जाय है जानें न जानें कबै, तनते यह यह प्रान घड़ी भरके।
'कवि कृष्ण' जु कीरति पुन्यन की, सु करी न करी करनी करके।
पुनि जन्म जरूर मिलै न मिलै, महि पै विधि के बस में परके।
विष हैं जग के रस री रसना ! रट तो रट नाम हरी हर के॥

प्रिय के प्रति उलाहना

सुख भाग लिखे न कवों इनके, अंसुवा दिन रैन झरेके झरे रहैं।
'कवि कृष्ण जू' कल्पना के कल-सिन्धु में अंग तरंग तरेके तरे रहैं।
चख चारहु होंत वियोग के चित्र विचित्र विचार अरेके अरे रहैं।
प्रिय लाख मिलौ मिलिवौ है कहा, हिय के अभिलाख भरेके भरे रहैं॥

नेत्र-वर्णन (कवित्त)

शीतलता शशि की लै रवि की लै ओप और,
चंचलता चंचला की चोर चारु ढारे हैं।
मंजुल तर कंज की मेल मृदु मादकता,
पेल प्रेम सागर सकेलि सज संवारे हैं।
'कृष्ण कवि' कृपान पै करारी कर सान कोर,
बोर कें त्रिबेनी में तिरंग निरधारे हैं।
प्याले भर सुधाके पुनि मैन के मसाले भर,
विधि ने बनाये युग नैन मतवारे हैं॥

चन्द्र

चन्द्र ! तज तुझको तृषित चकोर,
लखा कब तकता परकी ओर।
परुषता तेरी किन्तु निहार,
सदा देखा चुगता अंगार।
द्रवित होना तो इससे दूर,
रहा तू अपने मद में चूर।
यही कारण है अहो मयंक
लगा ये अविचल तुझे कलंक॥

१६६—रमेशचन्द्र चतुर्वेदीः—आपका जन्म कुम्हेर तहसील के अन्तर्गत ग्राम सांँतरुक में श्री नवनीतलाल चतुर्वेदी के यहाँ श्रावण कृष्णा३ सम्वत् १९८६

में हुआ। आपको शैशव से ही संगीत-मय वातावरण मिला था क्योंकि आपके पितामह पं० नवलकिशोर भगवद् भक्त, सत्संगी तथा गायन वादन-कला में अत्यधिक दक्ष थे। इस वातावरण का कवि के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि साहित्य एवम् संगीत के प्रति उसके हृदय में अगाध अभिरुचि उत्पन्न हो गई। सर्व प्रथम आपकी रचनाओं का श्री गणेश ब्रज-भाषा से होता है, परन्तु युग के प्रवाह में प्रवाहित होकर आप खड़ी बोली में कविता करने लगे। अध्यापक होने के कारण, आप सरल किन्तु स्वाभिमानी कवि हैं। कवि-हृदय होने के नाते आप निर्भीक भी उच्च कोटि के हैं। कविताओं का विषय-वर्णन इतना स्वाभाविक है कि सत्य साकार हो उठता है। आप राष्ट्रीय विचार धारा के गीतों के लिये अधिक विख्यात् है उदाहरण देखिए:—

बसन्त

(१)

गाने को गा दूंगा गायन, नूतन बसन्त आवाहन में।
कैसे उल्लास भरूँ लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन में।
पीली चादर को ओढ़ प्रिये !, आ पहुँचा है मधु-मय बसन्त।
पर उनके हृदयों से पूछो, जिनके विदेश में बसें कंत।
काश्मीर से आई थी, चिट्ठी, पांचें को आऊंगा।
पर हाय आज भी जा न सका, अब कैसे मुंह दिखलाऊंगा।
कितनी बुद बुद होती होगी, उस सेनानी जन के मन में।
कैसे उल्लास भरूं, लेकिन-मैं अपने निर्धन जन मन में।

(२)

जब आ पहुँचे ऋतु-राज स्वयं, सरसों क्यों पीला रंग हुआ।
किसके वियोग में बतला दे, प्रेयसि ! ये तेरा ढंग हुआ।
ओ आम्र मंजरी ! बतला दे, तू इतना क्यों इठलाती है ?
क्यों झूम झूम कर मुझको भी, प्रियतम की याद दिलाती है।
कोयल के स्वर क्यों गूंज रहे हैं, दूर वहाँ निर्जन वन में।
कैसे उल्लास भरूं लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन में।

(३)

जो सारी दुनियाँ में सरसों, वो कर लाते मधु-मय बसन्त।
उन दुखियारे कृषकों के दुख, का-आज नहीं है आदि अन्त।
नंगे भूखे मानव तन ने-जब सहन किया भीषण हिमन्त।
उन कृषकों की झोंपड़ियों में बारह महिने रहता बसन्त।
है बसान्त भी उनके मन में, जो आज सुखी हैं जीवन में।
कैसे उल्लास भरूं ? लेकिन-मैं अपने निर्धन जन मन मैं।

(४)

कैसे मनती विजया दशमी, कैसे मनता रक्षा-बन्धन ?
कैसा होता वैभव-विलास, कैसा होता सुख-मय जीवन ?
हम भूल चुके हैं दीवाली, हम भूल चुके हैं अब बसन्त।
श्रमिकों की आहों से जलकर, आने वाली होली अनन्त।
जो आग लगा देगी भीषण, शोषक शासक के मन मन में।
कैसे उल्लास भरूं ? लेकिन, मैं अपने निर्धन जन मन में।

अध्यापक

यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(१)

हैं फटी पन्हैयाँ पांवों में, मैलीसी पहने धोती है।
है ओछक बंडा सा कुरता, पिचकी सी पहने टोपी है।
माथे पर आटा दाल बंधा, जनु विश्व-व्यथा का भार लिए।
मर मर के भी जो इस जग में, जीने का ही अधिकार लिए।
पंचास मील गांव से दूर, अरु बेतन भी मिलता पचास।
वह चला जा रहा सन्यासी, लेता लम्बे लम्बे उसास।
रिमझिम रिमझिम बरसात लगी, टूटा छाता पग फिसल गया।
घोंटू के बल गिर पड़ा पट्ट, अरु आटा सारा बिखर गया।
कैसी बीती अध्यापक पर, यह कहते दिल दहलाता है।
यह करुण कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(२)

बन गए आज शिक्षा-मंत्री, संसार कह उठा वाह वाह।
सम्मान युक्त बहता आता, बल-वैभव का अविरल प्रवाह।
पर भिख मंगे अध्यापक को, क्यों कर जग देवै धन्यवाद।
क्यों कर हो इसका अभिवादन, क्यों कर हो इसका साधुवाद।
यह शिक्षक तो विलकुल असभ्य, यह पागल भूखा नंगा है।
जग बलि-वेदी पर प्राण दान, तक देकर भी भिख मंगा है।
देखो शिक्षक का उर टटोल, कितने अरमान लपेटे हैं।
जग को अपना सब कुछ देकर, इसने अभिशाप समेटे हैं।
हमसे पढ़कर अ आ इ ई, अब हम पर हुकम चलाता है।
यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(३)

लेती है रिश्वत रोज़ पुलिस, डाक्टर भी मौज उड़ाते हैं।
रेलवे के टी० टी० गार्ड सभी, रिश्वत का पैसा खाते हैं।

महक्मे माल के चपरासी भी, रोज रुपये घर लाते हैं।
दुनियाँ तो यहाँ तक कहती है, मंत्री भी रिश्वत खाते हैं।
पर हाय भिखारी--अध्यापक, जब डंडा-चौथ मनाते हैं।
शिक्षा-विभाग के अधिकारी, तब कैसी आँख दिखाते हैं ?
यदि दीन दुखी अध्यापक को, जनता श्रद्धा से करै दान।
उस पर भी है प्रति-वन्ध कड़ा, यह कैसा है उलटा विधान।
जिन्दगी मौत के झूले में, अध्यापक दिवस विताता है।
यह करुण-कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(४)

यदि शिक्षक अपनी दुख-गाथा, अधिकारी तक पहुँचाते हैं।
तो बदले में उन दुखियों से, अप-शब्द कह दिये जाते हैं।
छै छै महिने में दें वेतन, फिर भी अहसान जताते हैं।
दुनियाँ के ठुकराये शिक्षक, तब मन मसोस रह जाते हैं।
यह निष्क्रय सरकारी ढांचा, एक दिन अवश्य ही टूटेगा।
इस असंतोष का पुत्र कभी, विप्लव वन करके फूटेगा।
अरे स्वार्थ की मूर्ति शासकों, जड़ें तुम्हारी हिलती हैं।
जब मनें तुम्हारी दीवाली, तब यहाँ होलियाँ जलती हैं।
सोचो समझो अपने मन में, अध्यापक से कुछ नाता है।
यह करुण--कहानी है उसकी, -जो अध्यापक कहलाता है ?

१६७—छुट्टनलाल 'सेवक':—आपका जन्म अगहन वदी ६ संवत् १६८७ वि० को हुआ। आप आशुकवि कुलशेखर के शिष्यों में से हैं। प्राकृतिक उपमानों से युक्त रूपकों द्वारा आप कवित्तों में एक मधुर भाव क्रम उपस्थित कर देते हैं। आपकी भाषा प्राचीन-परिपाटी की टकसाली ब्रज-भाषा है, किन्तु किसी किसी स्थल पर खड़ी बोली की झलक भी देखने को मिलती है। आपकी रचनाओं में से कतिपय छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं:—

बसन्त और गणेश का रूपक (कवित्त)

पीरे पीरे फूलन कौ माथे पै मुकट राजै,
लाल लाल फूलन के कुण्डल सुहाये हैं।
सेत सेत फूलन के ऊपर चमर छत्र,
सेत ही सु फूलन के दत्त दरसाये हैं।
फूलन के हार गल 'सेवक' सम्हारत हैं,
सुमन बसन्ती वस्त्र भूषन बनाये हैं।

कोकिल कपोत कीर विरद सुनावत हैं,
आज रितुराज गन राज बन आये हैं ॥

बसन्त पंचमी में नटी का रूपक

फूल बसन्तिन की चुंदरी,
करि घांघरि फूल गुलाबन भाई ।
भूषन पीतहि फूलन केर,
सुहावत नाचत मोद महाई ।
भौंर मृदंग बजावत हैं,
मिल कोकिल कीरन ताल लगाई ।
'सेवक' साज नटी नव सी,
यह आज बसन्त की पंचमी आई ॥

शरद यामिनी के कृष्ण-रास का वर्णन

मधुर सुरन कान्ह बांसुरी बजाई सुनि,
ब्रज वनितान बृन्द कानन सिधारे हैं ।
फरस बिछे हैं स्वच्छ चांदनी के ठौर ठौर,
बीणा भेरि साथ तहाँ बाजत नगारे हैं ।
'सेवक' सम्हारत हैं काज सब दौर दौर,
दोय दोय गोपी बीच आप रूप धारे हैं ।
शारद निशा में लखि रास तहाँ मेरे भूमें,
आनंद मगन भये नैन मतवारे हैं ॥

भगवान राम के रूप का वर्णन

हीरन जटित सोहै माथे पै मुकट मंजु,
आनन की ओप कोटि काम हू लजाई है ।
एक कर धनु दूजौ अभय प्रदान करै,
पीठ कौ तूनीर सदा भक्तन सहाई है ।
सिंहासन राजें राम साथ सिय मातजी कें,
नख सिख सिंगार सब सुघर सुहाई है ।
'सेवक' सुख दाता औ भ्राता भव-सागर के,
मेरे मन ऐसी प्रभु मूरत समाई है ॥

१६८—गोपालप्रसाद 'मुद्गल':—आपका जन्म २ जुलाई सन् १९३१ को भरतपुर जिलान्तर्गत डीग कस्बे में पं० रघुनाथप्रसाद के यहाँ हुआ। अपने पिता के अनुरूप आप भी सरल स्वभाव और परिश्रम शील हैं। डीग हाई स्कूल से

हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप शरणार्थी बालकों को शिक्षा देने के लिये प्राथमिकशाला छत्ता (दीग) में अध्यापक नियुक्त हुए। तभी से अध्यापन कार्य कर रहे हैं और साथ में विद्याध्ययन भी। हिन्दो की एम० ए० परीक्षा तथा बी० ऐड की ट्रेनिंग करने के पश्चात् आपको वैर की उच्चतर माध्यमिक शाला में वरिष्ट अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया है।

मुद्गलजी को बचपन से ही काव्य के प्रति विशेष अभिरुचि है। आपकी सर्व प्रथम कविता 'भारत भू की भव्य पताका प्रमुदित होकर लहराए' १५ अगस्त सन् १९४७ को लिखी गई। इस कविता की प्रशंसा से कवि हृदय को प्रोत्साहन मिला और वे सुन्दर रचनाएँ करने लगे। यद्यपि मुख्यतया आप श्रृंगार रस के ही कवि माने जाते हैं किन्तु आजकल सामाजिक समस्याओं को लेकर भी आप लिखने लगे हैं। आपकी रचनाएँ बहुत सरल सरस और प्रभावोत्पादक होती हैं। कविताओं के अतिरिक्त आपने कई नाटक भी लिखे हैं जिनमें 'प्रायश्चित' 'दहेज' तथा 'निर्दोष' अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कवि और नाटककार होने के साथ २ आप निबन्ध और कहानी लेखक भी हैं। ब्रज-भाषा और खड़ी बोली दोनों पर ही आपका समान अधिकार है। आपकी कविताओं के उदाहरण देखिए:—

कवित्त

आवैरी अनन्द तेरे अंगना के माहि आज,
तोहू तो है संग सखि काहू कौ न भावैरी।
भावैरी मोहे तेरों सोच सखि छाँडिय अब,
चातक सी ह्वै के रट काहे कूं लगावैरी।
गावैरी सबेरे ही सबेरे काग मुंडरी पै,
बाँह कर ऊंची अजमालै उडि जावैरी।
जावैरी न खाली साँचौ सगुन है प्रभाती को,
धीर धर आली आन हारौ आज आवैरी॥

सखी

आवैरी अनंग अंग अंगन के माहि जब,
पिय बिन संग सखि काहू को न भावैरी।
भावैरी इकन्त नहिं सूझै कोऊ पन्थ अन्त,
कन्त ढिग मेरो मन दौरि २ जावैरी।
जावैरी न लैवे तू तो बातन बनावै बड़ी,
आज कल कहिके मोहे काहे कलपावैरी।

पावैरी न जीते मोय सखि समझाऊं तोय,
जो वे औधि बीते आनहारो नाँहि आवैरी ॥

गीत

घन जाओ विरहन मत जारो रे।
डर मारो घर नाँय घरवारो रे॥

(१)

काहे घिर २ आत मेरो जिया घबरात
पिय बिन दिन रात नैन नीर बरसात
तापै तू हू ड़रपात बन कारो रे। घन जाओ······॥१॥
कजरारे कर शोर मत कानन तू फोर
कहूँ तोते कर जोर नैंक मानो कही मोर
जाओ देश जहं पियारी को पियारो रे। घन जाओ······॥२॥
तेरी बुंदियन मार मोकूं हुई दुसवार
तापै शीतल बयार और बीजुरी प्रहार
अब तुम्हीं कहो कैसे हो गुजारो रे। घन जाओ······॥३॥
इक सी में काँपै गात दूजे मदन सतात
तीजै रैन डस खात चौथे तूहूँ घुमडात
जान इकली बिरहन मत मारो रे। घन जाओ······॥४॥
घन पिय ढिग जाओ डार बूंद समझाओ
पिय विरहन बुलाओ काहू विधि दै आओ
संग लाओ गुण गाऊं मैं तिहारो रे। घन जाओ······॥५॥

कवि से

गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लेना।
गाओ अवनि के गीत, गगन के फिर गा लेना।
जब मानवता की रक्षा को चपला सी खड़ग बुलाती है।
तव क्या स्वर लहरी तान और पायल झनकारें भाती हैं।
अब सुरा सुन्दरी पानें को श्रृंगारी छन्द न भाते हैं।
क्योंकि होली के गीत दिवाली को नहीं गाये जाते हैं।
अब हीरा पन्ना शाल दुशाला गिलम गलीचों के मत गा।
अब गा मानव के गीत मदन के फिर गा लेना।
गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लेना।
गाओ अवनि के गीत अमन के फिर गा लेना ॥१॥

कैनेडी की विजय पर

ढलते सूरज को कौन झुकाता है माथा
आते सूरज को सभी सलामी देते हैं
लाख नयन चुम्बन करते उस व्याहुल का
जब सहमे २ वह डोली को आती है।
पर उड़ जाने पर रंग गुलाबी गालों का
कोई भी नजर न उस पर चंवर ढुलाती है।
गिरते हुओं की कौन खुशामद करता है
उठती रेखों की सभी गवाही देते है।
ढलते सूरज..................................॥१॥

१६९—गोपेश शरण शर्मा:—इनका जन्म भरतपुर (राजस्थान) के एक सूर्य्यद्विज परिवार में आषाढ़ शुक्ला २ (रथ-यात्रा) सम्वत् १९८९ विक्रमी को हुआ। इनके पिता पं० गोपाल शरण शर्मा पैंशनर हैं तथा भरतपुर के एक प्रसिद्ध कवि एवं शायर हैं। ये सन् १९५३ ई० में महारानी श्री जया कालेज, भरतपुर से बी० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। अब ये एम० ए० बी० एड हैं तथा हिन्दी के सीनियर टीचर हैं।

अपने पिता के कवि एवं शायर होने के कारण उनके सत्संग से इनके अन्दर बाल्य-काल से ही साहित्य प्रेम और विशेष कर कविता का अंकुर प्रस्फुटित होने लगा। विद्यार्थी जीवन में अनुकूल वातावरण मिलने के कारण उसका पोषण होता रहा। फलस्वरूप ८ वीं कक्षा से ही कुछ-कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया। वातावरण के अनुरूप अधिकाँश फुटकर कविताएँ खड़ी बोली में ही लिखीं, यद्यपि समस्या पूर्ति के संबंध में यदा-कदा ब्रज भाषा में भी कतिपय कवित्तों की रचना की। कवि होने के साथ साथ आप एक कुशल वक्ता एवं लेखक भी हैं। उदाहरण देखिए:—

अब चाँद अपना हो रहा है!

चाँद चौकीदार ने सूरज बुलाया व्योम में जब,
कुपित होकर के कुमुदिनी सो गई दे पत्र घूँघट।
निशा की नीरव घड़ी में रश्मि कर से उठा कर फिर,
कर लिया मुख सामने, आये हृदय में भाव घिर—घिर।
कुमुदिनी का क्रोध सारा शीघ्र सपना हो रहा है,
लहर को संकेत है—अब चाँद अपना हो रहा है।
शून्यता वश जब हृदय की, गगन का मुख नील जाना,

उदधि ने निज अंक का बालक दिया कर्तव्य माना ।
पर अमा की निशा को शिशु को छिपाया व्योम ने जब,
जलधि उर होकर सशंकित धड़कने फिर-फिर लगा तब ।
पूर्णिमा को इन्दु का जब मुसकराना हो रहा है,
ऊर्मि कर उठते मचल अब चाँद अपना हो रहा है ।
प्रेम की पीड़ा समझने को-जलन को जानने को;
धधकते उर से विरह की वह विकलता मानने को ।
चोंच में लेकर चकोरी जब लगी अंगार चुगने,
शुभ्र शीतल सी छटा की लग गई तब आस करने ।
विहंसते निर्मल निशाकर का निकलना हो रहा है,
तब चकोरी ने कहा अब चाँद अपना हो रहा है ।
नेह की बातें निराली चन्द्र आकर्षित हुआ है,
तन धरा पर मन गगन का मीत बन पुलकित हुआ है ।
बुद्धिवादी मानवों की विज्ञता विज्ञान से मिल,
सरसता को सोखती सी, शुष्कता के साथ हिल-मिल ।
चल पड़ी उड़कर गगन को शब्द कितना हो रहा है,
हम हुए उसके, कहा अब चाँद अपना हो रहा है ।
ठीक है तुम चाँद को अपना बना कर ही रहोगे,
प्राप्त करने में उसे जो यातना होंगी, सहोगे ।
पर धरा पर तुम कलंकों को कहीं लेकर न आना,
ज्योत्स्ना आई स्वयं तुम कालिमा को ले न आना ।
देखना स्थल वही जिनसे चमकना हो रहा है,
स्वच्छ मन करके दिखाना-चाँद अपना हो रहा है ॥

विकास

अज्ञान निशा हो दूर जागरण जाग पड़ा
स्वतंत्र्य सूर्य प्रकटित स्वदेश उठ हुआ खड़ा
दासत्व शृंखला शिथिल, सुलभ निःश्वास जगे
जगमगी भूमि भारत, सशंक सब शोक भगे
अधिनियम-नियम निज बने चेतना जाग उठी
लो ! प्रजातंत्र प्रत्यक्ष वेदना भाग उठी
हिमगिरि के निर्झर झर-झर कर, हो मुक्त झरे
वह उठीं नदी इठला-इठला उन्माद भरे
धन-धान्य सजग हो उठा-उठा श्रम मानव का

विकसित स्वदेश प्रत्यूष घुटा दम दानव का
निस्साधनता हो दूर जुटे उठ सब साधन
बन गये श्रमिक कृषकों के क्रन्दन, आराधन
वह प्रकृति नटी अपना यौवन उन्माद लिये
खुल पड़ी देश के लिये मधुर संवाद लिये
श्रमिकों के कल हल, कल पाकर किलकार बढ़े
अँगड़ाई फसलें, भू के अंकुर उठे गढ़े
उच्छृङ्खलता नदियों की रोकी बांधों ने
सिंचन अनुकूल किया विद्युत् दी बाँधों ने
विद्युत् कण द्रुत गति लिये चले विद्युत् देने
उन गाँवों को निश अंधकार जो थे पहने
ग्रामों की कुटियां अब भवनों में बदल उठीं
डांवर की सड़कें धूसर पथ पर पिघल उठीं
'तमसो मा ज्योतिर्गमयो' का संदेश लिये
शिक्षक स्वदेश के अपना सद् उपदेश लिये
चल पड़े चेतना ग्राम ग्राम को देने को
भोली जनता से, क्या विकास है ? कहने को
जो सोये हो भारत वासी अब तो जागो
अरविन्द समान खिलो–उठलो, आलस त्यागो

१७०–रामबाबू वर्मा:–इनका जन्म कार्तिक शुक्ला ५ संवत् १९८९ वि० को भरतपुर में श्री शिवचरनलाल स्वर्णकार के यहाँ हुआ। ये अधिक पढ़े लिखे तो नहीं हैं, किन्तु कवियों के संसर्ग में रहने से कविता की ओर रुचि हो गई। इनके काव्य गुरु श्री कुम्भनलाल 'कुल शेषर' हैं। आपकी रचनाओं में भाषा और रस का धारावाही प्रवाह मिलता है। ये 'रघुराय' उपनाम से कविता करते हैं। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

मानवता

अब क्षीर नीर की भांति सभी भाई मिल मेल करो मन में।
फिर शब्द सूत बांधौ सब का मन-मुक्ता बिखरे कन २ में।
उर अन्तर के कपाट खोलो सब पाप पुंज को क्षार करो।
निज द्वेष भाव का भेद त्याग सब समता का व्यवहार करो।
'रघुराय' सभी सामर्थ बान बन जन समाज कल्याण करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

कवित्त

चूमत रहत सिंधु कंज मंजु चरनन,
कों सुकीर्ति गान गगन बुलिन्दी है।
हृदय विशाल औ उदार दुग्ध धार सदां,
सर्व सुख देनी नित्य गंग औ कलिन्दी है।
'रघुराय' जेते जीव मनुज दनुज देव,
गर्व सों सकल सृष्टि कहत कविन्दी है।
हिमगिर अमन्द शीश मुकट विराजत है,
भारत मां भाल पर विंदी सम हिन्दी है॥

सवैया

मानुषता जन के मन हो जनता सब भांति सुशील लखावै।
शाँति सदां उर बास करै सब के मन मोद अपार दिखावै।
द्वेष न हो जग में 'रघुराय' न चिंतित हों नहिं कोई दुख्यावै।
होय सुराज्य तवै परि पूर्ण जवै दिन देखन कों यह आवै॥

घनाक्षरी

मान मरयादा मैंड़ टूट जाती रामविन, गुरू विन गूढ़ ज्ञान भूरि कौन भरतो।
सिन्धु के मथैया देव दानव विकल होते, शंभु जो न होते विष पान कौन करतौ।
बूढ़ जाते ब्रज के पुरंदर प्रकोप समै, कान्ह जो न होते भूमि भार कौन हरतौ।
'रघुराय' सृष्टि के समूह सव नष्ट होते शेष जो न होते तौ धरा को कौन धरतौ॥

सवैया

सुख वन्त शुशील सुहाग वती सजनी सब साज सजे सरसी।
हिय हार हजारन हीरन के हथ फूलन हेम छटा बरसी।
'रघुराय', ललाट लसै विंदिया दमकै दुति दामिनि सी दरसी।
रति रंभहु रूप लजात वधू विकसी परिपूर्ण कला धरसी॥

"तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो"
सोने का समय व्यतीत हुआ मैं आज जगाने आया हूँ।
माँ के लालों की किस्मत की यहाँ व्यथा सुनाने आया हूँ॥
सीधे सच्चों का काम कहाँ जहाँ दगा फरेबी छाई हो।
लूटा खोंसी गुंडे वाजी सब के मन माँहि समाई हो॥
मानव मानव का रक्त चूंसना पाप श्रोत को वाद करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

जो कभी स्वर्ग थी भारत भू वह आज नर्क दिखलाती है।
सोने चाँदी के टुकड़ों पर यहाँ इज्जत बेची जाती है॥
ऊँची मीनारें एक ओर नहिं झोंपड़ियाँ रहने को हैं।
अम्बर अम्बर सम एक ओर नहिं वस्त्र शीत सहने को हैं॥
मानव के निर्मल जीवन पर मत दानवता के वार करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥
माया के वशीभूत होकर क्यों दीन जनों को रुला रहे।
दया धर्म की आड़ लगा क्यों स्वर्ण-सत्य को जला रहे॥
स्वामी के नाते सेवक पर तुम नाना जुल्म ढहाओ ना।
अपना अस्तित्व जमाने को मनमाना कर्म कराओ ना॥
रक्षक के नाते भक्षक बन जन जन से मत खिलवाड़ करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

१७१—हरिश्चन्द्र 'हरीश':—तरुण पीढ़ी के उदीयमान कवि 'हरीश' का जन्म नगला कल्यानपुर के पं० ईशवरीप्रसाद के यहाँ कार्तिक कृष्णा १, सम्वत् १९८९ में हुआ। प्राथमिक शिक्षा (हिन्दी, उर्दू, संगीत) स्वर्गीय पंडित वीर नारायण के देख रेख में घर ही पर हुई। पंडित जी ग्रामीण जिकड़ी भजन आदि बनाया करते थे; अतः सन् ४५ से आपको भी जिकड़ी भजन बनाने का चसका लग गया। कौलेज जीवन में आपकी काव्य-प्रतिभा का संस्कार और निखर उठा। अनेकों कवि सम्मेलनों में भाग लेकर आपकी ख्याति को एक विशेष सम्मान की प्राप्ति हुई। आपने एम० ए० तथा साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग में नौकरी कर ली थी, किन्तु खेद की बात है कि आप भगवती सरस्वती की सरस रचनाओं के सुरभित सुमनों से समुचित अर्चना करने से पहले ही संसार से प्रयाण कर गए। स्थानीय कवि समाज को आपका अभाव सदैव ही खटकता रहेगा।

आपने सर्व प्रथम ब्रज-भाषा में रचना आरम्भ की, किन्तु युग के प्रवाह के साथ खड़ी बोली में भी रचना करने लगे। आप कवित्त और सवैया भी बनाते थे जिनको बड़े सरस एवं प्रभावोत्पादक ढंग से सुनाते थे। आपकी रचनाओं में कला पक्ष और भाव पक्ष दोनों का निर्वाह बड़े ही आकर्षक ढंग से हुआ है। जीवन के पिछले प्रहर में आप महाकवि 'निराला' के परम भक्त हो गये थे और उन्हीं की रचना शैली अपनाली थी। आपकी रचनाओं में दार्शनिक गाम्भीर्य के साथ २ सरलता भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं और प्रसाद गुण का सर्वत्र प्राधान्य परलक्षित होता है। इनके प्रेम-पीड़ा की कसक श्रोताओं को भी कसका देती थी:—

प्राण ! तुम आओ
आगया नीम में बौर, प्राण ! तुम आओ।
टहनी टहनी के अधरों पर,
है मुसकाहट छाई।
सोये सोये पात पात ने,
ली उठकर अंगड़ाई।
हरे भरे यौवन को छूकर, महक उठी पुरवाई।
झूमें भौरों के झौंर, प्राण ! तुम आओ।
अंबा-जमुनी ने पहनी,
चिकनी असमानी सारी।
और कंठ में उनके,
कोकिल ने भरदी किलकारी।
लो पलाश जल गया, न बुझ पायेगी यह चिनगारी।
बरसें रस-मधु के दौर, 'प्राण ! तुम आओ।
आज नहा कर नभ-गंगा में,
निखर गईं ताराएं।
मंद मंद मुसकान,
नील अंचल में बिखरी जाएं।
जिन्हें लूटने चला पवन, पर पांव नहीं पड़ पाए।
सूनी है मन की ठौर, प्राण ! तुम आओ।
उधर छोंकरे की खुशबू में,
अग जग डूबा जाता।
पर जाने क्यों उससे,
मेरा मनवा ऊवा जाता।
बड़े भाग से अरी बावरी, आज महूरत आया।
हो जाय न यों ही भोर, प्राण ! तुम आओ।

बरसात

बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।
उट्ठा वो शोर मोर का,
बदली को चूमने।
पुर बाई आई नीम की-
बाँहों में झूमने।
राहों खेतों के दाह को,
सहलाने लगी छांह।

बादल घिरे कि और ही रंगत बदल गई।
दो बूंद क्या पड़ीं,
मैं अमृत में नहा गया।
गद गद खड़ा रहा,
न इधर ही उधर गया।
किरणों से रहा कब गया,
घटा का घूंघट उठा।
वहाने को मेरे साथ वे, सावत मचल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।
दादुर उछल पड़े–
कि हमें गाने भी तो दो।
झींगुर मचल पड़े–
कि हमें जाने भी तो दो।
अंकुर भी क्या फूटे,
मिट्टी के अरमा निकल पड़े।
दो ही दिनों में सृष्टि की सूरत वदल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।
तरु तरु ने पात पात ने,
पाया नया जीवन।
निखरे धरा के गात धुल,
छाया नया जीवन।
जागा किसान, श्रमका–
नव उल्लास ज़ग उठा।
हर खेत की हर क्यार की, किस्मत बदल गई।
बादल हुए कि और ही रंगत बदल गई।

प्रकाश के नेता

जब हंस कर चन्दा सोयेगा,
जब हंस कर सूरज जागेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा,
बोलो प्रकाश के नेताओं !
जब मधुर जीत के गीत–;
दिशायें गायेंगी दिल खोलकर।

कलियों के घूंघट उठा,
डालियाँ देखेंगी हिल डोलकर।
उड़ झूम झूम कर भंवर,
बजायेंगे बीणा नव रस भरी।
सुन कोयलिया की तान–
हिय का कन–कन भर भर आयेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो मधु-ऋतु की लतिकाओ !
बादल बरसा कर प्यार,
बुझायेंगे जब धरती की तपन।
बोलेंगे पपिया मोर–
नयन हरयावल में होंगे मगन।
ऐटम के शीतल प्राण,
खिलायेंगे खुशबू को गोद में।
सौ शरदों तक बिस्तार–
मोद के जीवन का हो जायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो सावन की सरिताओं !
हिम कर न बढ़ा पायेगा,
सरसों की सारी की ओर जब।
दिन कर न कहा जायेगा,
तिनकों के रतनों का चोर जब।
फसलें अम्बर की ओर,
न फैलायेंगी अपने हाथ जब।
तूफानों के आगे—,
फूलों का माथ नहीं झुक पायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो, जन भाग्य विधाताओं ?

रुबाइयाँ

भृङ्ग का गुंजन कली पर जा अड़ा है।
शलभ का क्रन्दन शिखा पर जा चढ़ा है।
कौन अपने प्राण को छोड़े अकेला।
यह गगन इस भूमि को घेरे खड़ा है।

क्या बड़ों बदली को, जो छू स्वर्ग को।
आशियाँ पर, बिजलियाँ देती गिरा।
है बड़ी वह दूब, जो मिट्टी पै रह।
ऊबे, उजड़े मनको, कर देती हरा।

क्या देखता है, कोयल है काली,
तू उसके सुर की बहार को देख।
क्या देखता है, सागर है खारी,
तू उसके मोती की धार को देख।

क्या देखता है, है जेब खाली,
है देह खाली, है भाग खाली ।

हों आँख तो तू इस आदमी के, आदमियत के दुलार को देख।
दुख विषमता का भगे, सुख में पगे दुनियाँ।
कर्म में अपने लगे—उत्साह से दुनियाँ।
भर चुकी लय खूब, वीणा-वादिनी, तू अब—
एक सुर ऐसा उठा, जिससे जगे दुनियाँ।

१७२—दीनदयाल गोयल 'सुधाकर':—आपका जन्म भरतपुर में एक माध्यमिक स्थिति के परिवार में पहली जनवरी सन् १९३३ को हुआ। आपके पिता का नाम किशनलाल गोयल है। तेरहवी कक्षा पास कर आप अध्यापक हो गये और उसी अध्यापन कार्य में आपने एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। आप इस समय 'राजकीय बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भरतपुर' में अध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आपको बचपन से ही अंताक्षरी एवम् व्यंगात्मक काव्य से अधिक रुचि है। आपकी भाषा सरल, सरस और मधुर है। उदाहरण देखिए:—

समस्या—'निर्माण करो'

हे इस युग के भगवान, हमारा भी तो कुछ उपकार करो।
दो दिला नोकरी लड़के को, कुछ थोड़ा सा एहसान करो॥
हम बहुत दूर से आये हैं, तुम से सब कुछ आशा लेकर।
तुम बहुत गरीबनिवाज प्रभो, लिखा अखबारों के ऊपर॥
केवल इतना ही नहीं प्रभो, दो चार चिट्ठियाँ लाये हैं।
तुम निकट हमारे संबन्धी, हम पता लगा यह लाये हैं॥

मेरी चाचीं की भुआ कीं, लड़की की जो दौरानी है।
उसके भी कुटुम्ब की लड़की, तुम्हरे कुटुम्ब में व्याही है।।
नाते में जीजा लगते हो, कुछ साले का तो ख्याल करो।
गर कोई खाली जगह नहीं, दो चार नई निर्माण करो।।

संका—एक दिन माइन्ड में यह बात आई,
क्यों नारी ने दो चोटी हैं लटकाई ?
समाधान—हिन्दुओं का देश भारत वर्ष है।
सिर पै चोटी रखना ही हमारा धर्म है।।
चोटी हमारी जान थी ईमान थी।
विश्व न्यौछावर करें यह हिन्दुओं की आन थी।।
लेकिन—अंगरेजी फैसन का हम पर था भूत सवार हुआ।
चोटी मिलवाई वालों में सब आन बान का काम हुआ।।
लेकिन भारत की नारी यह कब सह सकती थी।
चोटी का अपमान भला कब कर सकती थी।।
इसी लिये उसने प्रतिभा रखने को नर की।
अपनी संतति में यह रीति चलाई।
और नारि ने दो चोटी हैं यों लटकाई।।
एक नर की एक अपनी ?

अमर प्रीति

प्रीति अमर बन गई शमा की और शलभ की

चली उसासें संदेशा देने प्रियतम को।
चली बदलिया निशि की व्याकुलता कहने को।।
किसी वियोगिन की आंखों से अश्रु टपकते।
आशा प्लावित नेत्र वरसने को थे कहते।।
वरसी बदली रोक न पायी व्यथा हृदय की।
धार एक बन गई अश्रु की और और अश्रु की।।
व्यथा अमर बन गई अश्रु की और हृदय की।
प्रीति अमर बन गई अश्रु की और हृदय की।।

अरे दूर हो शलभ निकट नहिं आना मेरे।
मिल कर मुझसे प्राण जलाना अपने मेरे।।

तुम चकोर की तरह देखते रहो चाँद को ।
रजनी की ही तरह निभाते रहो प्रीति को ।।
पर परवाना धाया चाह लिये मिलने की ।
मिलन राख बन गई प्रेम की और प्रीति की ।।
राख अमर बन गई शमां की और शलभ की ।
प्रीति अमर बन गई, शमाँ की और शलभ की ।।

१७३–गौरीशंकर 'मयंक':–'मयंक' नाम से संबोधित श्री गौरीशंकर का जन्म भरतपुर के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में १४ जून, १९३४ ई० को हुआ। महान् आर्थिक संकट से अविराम संघर्ष करते हुये, आपने भरतपुर के महारानी श्रीजया कालेज से बी० कौम परीक्षा उत्तीर्ण की। आपको बाल्यावस्था से ही काव्य सृजन की रुचि है। आपकी भाषा व शैली सुगम, सरस, प्रवाहमयी एवं हृदयाकर्षक है। आप करुण एवं हास्य रस के जाने माने कवि हैं। उदाहरण देखिए:—

हिन्दी

हिंदी–भाषा हिन्द राष्ट्र की,
नई नवेली दुलहन है।
करो सुमंगल आरती ।।
अँगरेजी उर्दू सौतें हैं।
कहती इसका रँग काला है ।।
भारत के घर का काम।
कभी नहीं इससे चलने वाला है ।।
गूँगी सी अछावत भावों को।
मुखर नहीं कर सकती है ।।
लँगड़ी सी, राकिट युग गति के।
भी साथ नहीं चल सकती है ।।
कोई नहीं समझ सकता।
अंतर में भरी क्लिस्टता ।।
फिर भी सौत हमें डसने को।
नागिन सी फुफकारती ।।

—: गणतंत्र दिवस :—

जनता का शासन, जनता के लिये कि जनता द्वारा ।
जब जाता जहाँ चलाया, जाता गणतंत्र पुकारा ।।

छब्बीस जनवरी जिसको, हमने गण शासन पाया।
भारत के कवियों द्वारा, युग युग जायेगा गाया॥
आजादी की वेदी पर, अगणित बलिदान हुए जब।
हमने स्वतंत्रता पाई, हमको गणतंत्र मिला तब॥
उस दिन से सभी बने हैं, हम अपने भाग्य विधाता।
सुख दुख उन्नति अवनति के हम खुद ही उत्तर दाता॥

गणतंत्र दिवस

अज्ञान अशिक्षा से उठ, दायित्व सभी पहिचानें।
व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊंचे, हम राष्ट्र हितों को मानें॥
उपजायें अन्न अधिक हम, औद्योगिक वस्तु बनायें।
अरबों का माल विदेशी, हा! क्यों प्रति वर्ष मगायें॥
व्यक्तिगत क्रिया अनुप्राणित, जब राष्ट्र हितों से होंगी।
बस होगी तभी स्वरक्षित, नव आजादी की डोंगी॥
दल के दल दल से बचकर, सब कार्य करें सहकारी।
तो क्षण में हल हो जायें, ये विकट समस्या सारी॥
यदि ज़ाति धर्म गुट बंदी, भाषायी भेद भुलादें।
अरु विजयी विश्व तिरंगा, जन गन मन में लहरादें॥
तो सत्य अहिंसा सेवा, से शांति शीघ्र आयेगी।
नेहरू की चिर अभिलाषा, भी पूरी हो जायेगी॥

विकास की एक कल्पना

अमरीका चाहे धन से, रशिया का गला दबाना।
औ रशिया चाह रहा है, निज साम्यवाद फैलाना॥
व्यापारी चाह रहे हैं, इन दोनों का लड़वाना।
बिना युद्ध के कैसे, हो ओवर लोड खजाना॥
ना जाने कभी किधर से, कोई राकेट चल जाये।
और उस दिन ही यह दुनियाँ, भव-सागर से तर जाये॥

१७४—शक्तिस्वरूप त्रिवेदी एम० ए०:—आपका जन्म पं० नत्थीलाल त्रिवेदी के यहाँ सं० १९९३ में हुआ। आप कवि और लेखक दोनों एक साथ हैं। आपके पिता नत्थीलाल स्वयं कवि हैं; अतः आपको काव्य-कला के प्रति अभिरुचि विरासत के रूप में प्राप्त हुई। श्री हिन्दी साहित्य समिति एवम् स्थानीय कालेज द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलनों से आपकी काव्य सृजन शक्ति अधिक पुष्पित एवं पल्लवित हुई। आपका स्पृहणीय व्यक्तित्व एवम् कविता कहने का ढंग

अत्यधिक प्रभावोत्पादक है। आपने कोई ग्रन्थ तो नहीं लिखा, किन्तु फुटकर रचनाएं बहुत की हैं। आपकी समस्त रचनाएं खड़ी बोली में हैं। नवीन शैली में प्रेमपरक रचनाएं अधिक श्रुति–मधुर हैं। वर्णन–शैली में दार्शनिक-गाम्भीर्य का अभाव होते हुए भी आपकी रचनाएं सरस हैं। आपका 'भू–दान' पर लिखा हुआ निबन्ध राजस्थान सरकार द्वारा पुरष्कृत हो चुका है। दो रचनाएं उदाहरण रूप में प्रस्तुत हैं:—

प्रेम गीत

मत प्यार मेरा ठुकराओ।

तुमने मन में प्यार बसा कर, एक नया संसार बसाया,
मधुर बना जीवन बेला को, नैनों से अमृत छलकाया,
जीवन में सुधा बहा कर अब, विष काहे बरसाओ॥ मत०
क्यूं जीवन को उलझन मय, ये बना गई मधु-हाला,
अधरों में भरा हुआ है, तेरे आसव का प्याला,
तुम बनकर साकीबाला, दीवाना मुझे बनाओ॥ मत०
तेरे सपनों में आकर, अपने गीतों को गाऊं
तुम थिरक थिरक कर नांचो, मैं मन की ताल बजाऊं,
मैं साज बना हूँ तेरा तुम रागिनी बन जाओ॥ मत०

क्यूं जग को गीत सुनाऊं?

अपने अंतर की ज्वाला को, अवसादों की मधुहालों को,
जग से लेने खुशियाँ मोल, बोल क्यूं उसकी भेंट चढ़ाऊं॥ क्यूं०
अवसाद मेरे अपने तो हैं, है अपनी आहों की गहराई,
फिर दो क्षरण को बन मत्त अरे, क्यूं जग की भाषा में इठलाऊं॥ क्यूं०
पथ दर्शाता मेरे ये पत्ते हैं, ये कोयल काली है,
इन की बासंती का मधु लें, मैं जीवन अर्ध्य चढ़ाऊं॥ क्यूं०
क्यूं बेकल है जग के पीछे, तेरा जीवन है अनमोल,
ये सांसें दो चार घड़ी हैं, जिन पर तू भरमाया,
माया के निष्ठुर झौंके ने मन का दीप बुझाया,
आहुति देकर प्रेम रूप की अंतर के पट खोल॥ क्यूं०
रात अंधेरी ने जीवन में अंधकार फैलाया,
ज्योति अन्तंध्यान हो गई, भाई मन को छाया,
विषम साधना हुई न पूरी, रही हिलोरें डोल॥ क्यूं०

१७५—कमलेश जैन:—कमलेश जैन का जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त

जैन परिवार में २१ अप्रैल सन् १९४० को हुआ। आपके पिता श्री प्यारेलाल गुप्ता स्थानीय सैशन जज के यहाँ पेशकार हैं। मैट्रिक परीक्षा के अनन्तर आपने विशारद और शास्त्री परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। कमलेश जैन प्रतिभा सम्पन्न कवियित्री हैं। इनके कविता-पाठ का ढंग बहुत सुन्दर है। आपको रचनाओं पर कई बार पुरष्कार भी मिले हैं। उदाहरण देखिए:—

सहकार करो सहयोग करो

जब अनावृष्टि हो जाती हो, आत्मा किसान खो जाती हो।
मुन्नो नन्ही रो जाती हो, रोते-रोते सो जाती हो।
तब पीड़ित तापित मानव का—
सन्ताप हरो, उपकार करो ॥ सहकार०
जब धूं धूं करती दोपहरी, जब जग लेता निद्रा गहरी।
बस जगना है किसान प्रहरी, संकट सुन-सुन आत्मा सिहरी।
तब उसके खून-पसीने का—
कुछ तो मन में आभार भरो ॥
मिल, निश-दिन जो कि चलाता हो, जो देह स्वकीय गलाता हो।
मर-पच कर दिवस बिताता हो, मिल-मालिक सतत सताता हों।
शिशु-शव गज टुकरी को तरसें,
उस शव का जय-जय कार करो ॥
जग का भोला शिशु सा प्राणी, भोला सा मन, भोली वाणी।
दाने में प्राण प्रतिष्ठा की, यह दान रूप या नादानी।
जब वह, भूखा, जग खाता तब,
उसका कुछ तो उपचार करो ॥
यह धरती सबको भरती है, यह सब बच्चों पर मरती है।
यह सबको सब कुछ करती है, फिर क्यों सन्तति दुख भरती है ?
राहो पर पड़े ठिठुरतों से--
कुछ कपड़ों का व्यापार करो ॥
अपनी आहें खा जीते हों, अपने शोणित को पीते हों।
दो टूक हृदय को सीते हों, भरते-भरते भी रीते हों।
उस व्यथित-श्रमित शोषित जन के—
श्रम-कण से निज अभिसार करो।
श्रम का फल श्रमिक नहीं पाते, कुछ लोग उन्हें खाये जाते,
फिर भी गंवार ही कहलाते, सान्त्वना प्राप्त कर सकुचाते।

ये हैं दधीचि के अस्थि शेष,
इनको प्राणों से प्यार करो ॥

१७६—मोतीलाल अरीड़ा:—आपका जन्म भरतपुर के एक प्रतिष्ठित खत्री परिवार में सं० १९७२ वि० को हुआ। आप यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी लाला रामस्वरूप बजाज के आत्मज हैं। आप आगरा कालेज के एफ० एस-सी० कक्षा तक विद्यार्थी रहे हैं। इनको बचपन से ही हिन्दी और हिन्दी साहित्य समिति से विशेष प्रेम है। समिति के नवीन भवन निर्माण में आपने अनिर्वचनीय सहयोग दिया है। आप गत तीन वर्ष से समिति के उपप्रधान पद पर कार्य कर रहे है। विनोदी एवम् सरस स्वभाव के होने के कारण आपकी कविताएं हास्य-रस प्रधान होती हैं। आप 'पत्नीवाद' के अनुयायी हैं और अपनी मधुर रचनाओं द्वारा उसका प्रचार भी करते रहते हैं। 'मंगलानन्द' उपनाम से इन्होंने 'पत्नी स्तोत्र' नामक पुस्तक लिखी है। आपकी सरस रचना के उदाहरण प्रस्तुत हैं:—

गृह बाधा सारी मिट जाये, धन धान्य भरा फिर घर होगा।
मनको सुख शांति मिल जाये, तो गम होगा न फिकर होगा॥
खुद कामों में जी लग जाये, फिर कभी न दर्दे सर होगा।
जब देवीजी ही खुश होंगी, तब किस साले का डर होगा॥

इक नगर पिता का कहना है, भ्रष्टाचारी वह नर होगा।
जो पत्नी भक्ती से विमुख है, राष्ट्र को क्या हित कर होगा॥
गीता प्रेमी भी कहते हैं, यह गीता का उपदेश सुनो।
जो पत्नी की सेवा करता है, उसे क्यों न भक्त निष्काम गिनो॥

पत्नी भक्ती का इसी लिये, घर २ प्रचार करना होगा।
पत्नीव्रत का अवलम्बन कर, अपना सुधार करना होगा॥
समाज में पैदा हुआ दोष, उसका विकार हरना होगा।
जो उन्नत राष्ट्र बनाना है, निर्माण चरित्र करना होगा॥

पत्नी भक्ति के साधन से, क्या चीज नहीं नर पा सकता।
कितना यह सुलभ उपाय मिला, जो घर को स्वर्ग बना सकता॥
जो ऐसा सुगम तरीका भी, ना अमल में अपने ला सकता।
वह मूर्ख नहीं तो फिर क्या, गृह लक्ष्मी जो न मना सकता॥

१७७—बृजेन्द्रबिहारी:—आपका जन्म १३ अगस्त सन् १९३९ को भरतपुर निवासी पं० घनश्यामलाल के यहाँ हुआ। आपने स्थानीय कालेज से बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की है। हिन्दी साहित्य समिति के कवि-सम्मेलनों में भाग लेने के परिणाम स्वरूप आप सुन्दर रचनाएँ लिखने लगे हैं। आप प्रगतिशील कवि और सफल गीतकार हैं। आपकी रचनाएं सरस और प्रभावोत्पादक होती हैं। उदाहरण देखिए:—

चीन के नाम

(१)

हर द्वारे पर हाहाकार मचाता क्यों
सोने सी मिट्टी में जहर मिलाता क्यों
अंगड़ाते आंचल में धूल सजाता क्यों

(२)

मेरा तेरा मानवता का नाता है
क्यों आगी रखकर उसको भड़काता है
अरे जिन्दगी का क्यों मोल घटाता है

(३)

अगर इसी स्वर में तुम गाये जाओगे
हर घर को शमशान बनाये जाओगे
फूलों पर अंगार बिछाये जाओगे

(४)

गीतों के हरबोल बनेंगे गोलियां
जो लूटीं साजन घर जाती डोलियां
पुछती गईं अगर माथे को रोलियाँ

(५)

तो धरती का हर बेटा लड़ जायेगा
ऊंचा अम्बर धरती में गढ़ जायेगा
हर खारा मोती ऐटम बन जायेगा

(६)

इसीलिये मत छेड़ो हंसती फुलवाड़ी
साजन के घर को जाती ब्याहुल लाड़ी
मत खींचो तुम रेखायें तिरछी आड़ी

(७)

आज कहाँ हिन्दी चीनीं भाई भाई
पंचशील के नेताओं के हमराही
मानवता के हामी ओ चाउ एन लाई

(८)

मत सोचो बगिया बीरान बना दोगे
धरती पर तुमसे इन्सान वसा लोगे
तिब्बत भारत को शमशान बना दोगे

(९)

तिब्बत पर हर 'वार' की आवाज है
मेरी मां के प्यार की आवाज है
मुझको नेहरू से बेटे पर नाज है

(१०)

हर पठार कश्मीरी केशर क्यारी है
नेफा की हर वस्ती दिल्ली प्यारी है
हम भाई भाई माँ एक हमारी है

(११)

ज्वार-बाजरे की दुलहिन सी वलियों को
घूंघट से मुसकाती कोमल कलियों को
सत्य अहिंसा से मुखरित इन गलियों को

(१२)

भारत लोहु-लुहान नहीं होने देगा
मरघट का सामान नहीं होने देगा
परदेशी ईमान नहीं होने देगा

(१३)

कंचन चंघा ज्वाला मुखी बनाओ ना
तिस्ता की लहरों में ज्वार उठाओ ना
दुनियां में बारूदी जाल बिछाओ ना

(१४)

अभी देश में फटी दरारें बाकी हैं
अंधियारे की बन्द किबारें बाकी हैं
परदेशी पतझार बहारें बाकी हैं

(१५)

मत छेड़ो चुपचाप हिमालय रहने दो
बढ़ता हुआ कारवां पथ पर बहने दो
तुम्हें बुद्ध का बेटा घर घर कहने दो

(१६)

अगर उठा तूफान दबाना मुश्किल है
हर दिल के अंगार बुझाना मुश्किल है
धरती का शृंगार बचाना मुश्किल है

(१७)

मत सोचो तुम मेरा द्वार जला दोगे
चीनी मिट्टी पर त्यौहार मना लोगे
अपनी मां के घावों को सहला लोगे

(१८)

मेरी तेरी मां की धड़कन एक है
घुटती सांसों की उत्पीड़न एक है
साधों की चादर की चिलमन एक है

(१९)

सुन लो नहीं सांस की कीमत घट जाए
दुनिया की किस्मत खीमों में बट जाए
बारूदी बांहों में मौत सिमट जाए

(२०)

मुझे ख्याल है कुछ सिन्दूरी मांगों का
मेरे तेरे बीच पुराने धागों का
दो युद्धों में धधकी विषमय आगों का

(२१)

इसीलिये तेरे घर भेज रहा पाती
लुट न जाए जिससे मानवता की थाती
जल न जाए धरती की दूध भरी छाती

———
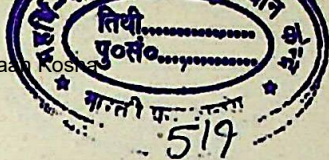
कवि नामावलि (अकारादिक्रम)

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
अखैराम	२६	गौरीशंकर मयंक	२४८
अजीतसिंह (रावराजा)	१२५	गंगाधर	५९
अमृतकौर (महारानी)	६९	गंगाप्रसाद	१६४
इन्दुभूषण	२२५	गंगाबख्श	१३५
उदयराम	४६	घनश्याम	१४५
ऊपरराय	१५१	चतुराराय	४५
कन्हैयालाल	१५४	चतुर्भुज मिश्र	११०
कमलेश जैन	२५०	चतुर्भुजदास चतुर्वेदी	१८६
काशीराम	१२०	चम्पालाल 'मंजुल'	२०३
किशोरीलाल	१७६	छत्रमल	११६
कुम्भनलाल 'कुलशेषर'	१९३	छुट्टनलाल	२३४
केशव	३४	छोटेलाल भट्ट	१९५
कृष्णदास	१५०	जयदेव	७०
कृष्णलाल	१७	जयशंकर चतु.दी	२०१
कृष्णलाल	१५२	जसराम	५८
गणेश	५८	जीवाराम	१०५
गिर्राजप्रसाद 'मित्र'	१८१	जुगलकिशोर	१४३
गिरिराजकुंवर (माजी)	१५८	जुलकरन	३५
गुलाब मिश्र	१५५	टह्कन	१४
गुलाबसिंह (धाऊ)	११९	ठाकुरलाल	१३६
गुलाम मोहम्मद	४८	तुलसीराम चतुर्वेदी	२२३
गोकुलचन्द दीक्षित	१७४	दत्त	३४
गोधाराम	४३	दिगम्बर	१३५
गोपाललाल माहेश्वरी	२१४	दीनदयाल	२४६
गोपालसिंह जमादार	९०	देव (महाकवि)	४२
गोपालप्रसाद मुद्‌गल	२३५	देवीदास	१०२
गोपेशशरण	२३८	देवीराम	१४०

नाम	पृष्ठ	नाम	पृष्ठ
देवेश्वर	५०	वीरभद्र	३७
दैवीप्रकाश अवस्थी	१६५	बंशीधर	४७
धनेश	६२	ब्रजचन्द	४१
धरानंद (घासीराम)	७०	ब्रजचन्द	६२
धौंकल मिश्र	५४	बृजेन्द्रबिहारी	२५३
नत्थीलाल	१४०	ब्रजेश	५६
नथुआसिंह	८३	भागमल	५५
नवलकिशोर	१४६	भूधर	३६
'नवीन' (गोपालसिंह)	८७	भोलानाथ	४०
नरहरिदास	६३	भोलानाथ	८४
नानिगराम	२०१	मणिदेव	११४
नंदकुमार	१८८	मदनलाल गुप्त 'अग्र'	२१२
पतिराम	३२	माधौराम	२१
पद्म	६०	मुकुन्द	१४३
पद्माकार (महाकवि)	५१	मुरलीधर	३६
पन्नीलाल	१७७	मुरलीधर	५३
प्यारेलाल	१३६	मुरलीधर जमादार	१४७
प्यारेलाल	१७८	मूलराय	५०
पीरू	१२६	मोतीराम	४०
प्रभूदयाल 'दयालु'	१६६	मोतीराम	६५
प्रसिद्ध	६०	मोतीलाल अरोड़ा	२५२
बटुकनाथ	८६	मोहनलाल	४४
बदनसिंह (महाराज)	२०	मंगलदत्त	१७०
बलदेव	८६	मंगलसिंह	१४४
बलदेवसिंह (महाराज)	६८	यदुराजसिंह (रावजी)	२०६
बलवन्तसिंह (महाराज)	६७	युगलकिशोर	१११
बलदेवप्रसाद	१६८	रघुवरदयाल	१८३
बहादुरसिंह कर्नल	१५२	रमेश	६१
बालकृष्ण	४६	रमेशचन्द्र चतुर्वेदी	२३१
बालमुकुन्द	१३८	रसनायक	६३
बिहारी	८५	रसरासि	८२
बिहारीलाल	१४१	रसानन्द	६८

नाम	पृष्ठ
राजेश	४७
राम	३८
राधाकृष्ण	२३०
राधारमन वैद्य	१९८
रामकृष्ण	९१
रामचन्द्र विद्यार्थी	१८०
रामदयाल	१३४
रामद्विज	१२८
रामधुन	१२८
रामनारायण	१३८
रामप्रिया माथुर	१८४
रामवख्श	१०८
रामवख्श	११७
रामबाबू वर्मा	२४०
रामलाल	७२
रामानन्द	१०७
रूपराम	१०३
रंगलाल	२६
रंगलाल	३९
रांगेय राघव (डाक्टर)	२१९
ललिताप्रसाद	८४
लक्ष्मीनारायण	१०७
लक्ष्मीनारायन काजी	१५६
लाल	२८
लाल	९४
विश्वबन्धु शास्त्री	२२१
वैद्यनाथ	९६
सत्यनारायन कविरत्न	१६०
सम्पूर्णदत्त	२२७
साधूराम	१३४
सांवलप्रसाद चतुर्वेदी	१९१
सुखदेवगंगाकिशोर मिश्र	६२
सुन्दरलाल	९३
सुन्दरलाल	१५८
सुधाकर	३८
सूदन (महाकवि)	२३
सूरतराम	५४
सूर्यनारायन शास्त्री	१७१
सेवाराम	१०९
सोभ	३३
सोमनाथ	१
शक्तिस्वरूप त्रिवेदी	२४९
श्यामलाल	१४३
शिवराम	३१
शिवचरणलाल	२०७
शिवदत्त शर्मा	२१६
शोभनाथ	४२
शोभाराम	१२३
शंकरलाल	१५९
श्रीधर	९५
श्रीनिवास ब्रह्मचारी	२१३
हनुमन्त	११५
हरिप्रसाद	१५
हरिवंश	३०
हरिनारायन ठाकुर	१३०
हरिकृष्ण कमलेश	१७९
हरिश्चन्द्र हरीश	२४२
हीरालाल	१६९
हुलासी	५०

———

शुद्धि---पत्र

खेद है, प्रूफ की यथोचित व्यवस्था न होने के कारण प्रस्तुत पुस्तक में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं। निम्नांकित भूलें अधिक भ्रमोत्पादक हैं; पाठक कृपया सुधारलें:—

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२५	वरगन	वर्णन
३	२६	प्रकृष्ट	उत्कृष्ट
५	१	कविदंन	कविदन
१४	२६	'जयमनश्वमेध'	'जैमिनाश्वमेध
१८	१५	सस	सम
,,	२६	ठिग	ढिग
१६	३	सू आनंद	सु आनंद
,,	७	तैत्तिरीत	तैत्तरीय
२२	२३	वाभन	वामन
२३	१३	ये	थे
२६	५	कविताऐं	कविताएं
३०	८	रूचि	रुचि
३१	१८	रूपैया	रुपैया
३२	१५	बिव	शिव
,,	२५	कृतृत्व	कर्तृत्व
३३	२०	नायका	नायिका
३४	७	रहीं	नहीं
,,	२१	परे	परें
३६	३०	कवि	कवियन
३८	२६	सूरजभल्लसुत	सूरमल्ल सुत
४७	१०	कछु	कछू
६०	३	फिर गिन	फिरंगिन
७३	३	प्रधिक	अधिक
७४	८	छप्द	छन्द
७६	६	सून्द्र तमन्नं सगन्नं तगन्नं	सूद्र' तगन्नं सगन्नं नगन्नं
७६	२५	उदहरण	उदाहरण

७६	३२	पद	पदन
७७	६	सोइ	सोई
७८	२६	हरि	ढुरि
८३	१४	भूल्लौ	भूल्यौ
९७	१८	प्रभाकर	प्रभा-भर
११४	३०	तह्न	तहं
११५	२	अतिश्य	अतिशय
११५	७	अमराव	अमरख
११५	१०	बधे	बध
११६	२५	प	पै
११८	९	बन	बान
१३८	११	नीत	नील
१३९	२८	तीछत	तीछन
१५०	६	ताघरी	ता घरी
१६२	५	पृष्ट	पृष्ठ
१७५	२८	उद्यौ	उदयौ
१८९	१३	किसके	किसने
१८९	१८	इद मिथ्या	इद मित्थम्
१९६	७	जाउंगौ	जाऊंगौ
२०४	११	अन्योक्तयों	अन्योक्तियों
२०४	२३	शोकर्म	शांकर्य
२११	१७	चाय	चारु
२११	१८	चारु	(निकालिये)
२१५	२	निवाहो हो	निबाहौ
२२४	२९	निष्प्रण	निष्प्राण
२२४	३०	अलिगन	आलिंगन
२२४	३१	शैशन	शैशव
२३४	१७	हालियां	होलियां
२३४	३०	दत	दन्त
२३९	२६	स्वतंत्र्य	स्वातंत्र्य
२४८	१५	हिंरी	हिन्दी

———

महारानी श्री जया कालिज, भरतपुर के दर्शन विभा
अध्यक्ष तथा हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि एवं साहित्यक

डा० रामानन्द तिवारी "भारतीनन्दन" द्व

"भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि" का

卐 अभिनन्दन 卐

"भारतवर्ष के इतिहास में भरतपुर वीरों द्वारा रक्षित दुर्जेय दुर्ग के लिए ही नहीं वरन् रससिद्ध कवियों द्वारा रचित काव्य के लिए भी स्मरणीय है। ब्रजमण्डल के अन्तर्गत स्थित राजस्थान का यह प्रदेश ब्रज-भाषा के सरस और ओजस्वी कवियों की वाणी से गुंजितरहा है। विक्रम की पिछली शताब्दी के लगभग दो सौ कवियों का उदाहरणों सहित परिचय इस 'भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि' में संकलित है। भरतपुर प्रदेश का यह काव्य हिन्दी साहित्य की अनमोल निधि है। इस प्रदेश की काव्य-निधि का यह प्रतिनिधि संग्रह प्रकाशित कर 'हिन्दी साहित्य समिति' ने एक अत्यन्त अभिनन्दनीय कार्य किया है इस सफल और सुन्दर उद्योग के लिए 'भरतपुर कवि-कुसुमाञ्जलि' के सम्पादक एवं 'हिन्दी साहित्य समिति' के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम० ए०; पी-एच० डी० तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशक एवं 'हिन्दी साहित्य समिति' के प्रधान मन्त्री श्री मदनलाल गुप्त सभी साहित्य प्रेमियों की बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह 'कवि-कुसुमाञ्जलि' हिन्दी साहित्य के अनुरागी मधुपों को भरतपुर के दिव्य काव्योपवन की ओर आकर्षित कर सकेगी।"

मुद्रक—नूतन प्रिन्टिंग प्रेस, भरतपुर।